राष्ट्रभाषानो गूजराती कोश

संपादक
मगनभाई प्रभुदास देसाई



नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अमदावाद

गूजरात विद्यापीठ ग्रंथावली—१२

राष्ट्रभाषानो गूजराती कोश

संपादक
मगनभाई प्रभुदास देसाई



नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अमदावाद

मुद्रक अने प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, अमदावाद

पहेली आवृत्ति, मे, १९३९

किंमत १–८–०   प्रत २०००

देशना अप्रतिम राष्ट्रभाषाप्रचारक

पूज्यश्री गांधीजीने

निवेदन

राष्ट्रभाषाने शिक्षणमां स्थान होवुं जोईए एम गांधीजी दक्षिण आफ्रिकाथी हिंद आव्या त्यारथी सतत कहेता आव्या छे. एटले, राष्ट्रीय शिक्षणनी शरूआतथी तेमां तेने अनिवार्य स्थान आपवामां आव्युं छे; अने ते मुजब, विद्यापीठनी स्थापनाथी राष्ट्रभाषाना शिक्षणने तेमां स्थान रह्युं छे. बल्के, विद्यापीठनां ध्येयोमां ज ए विषे एक कलम छे के, " विद्यापीठमां राष्ट्रभाषा हिंदी-हिंदुस्तानीने आवश्यक स्थान हशे. " अने तेनी ज साथे ए भाषानी व्याख्यानी स्पष्टता करवा नोंध मूकवामां आवी छे के, " हिंदी-हिंदुस्तानी ए भाषा के जे उत्तरना सामान्य हिंदु मुसलमान बोले छे अने देवनागरी अथवा फारसी लिपिमां लखाय छे. "

१९३० थी '३४ ना युद्धना दिवसो बाद, ई. स. १९३५ मां विद्यापीठे नवेसर पोतानुं काम शरू कर्युं त्यारे राष्ट्रभाषाने अंगे एक वधु काम पण तेणे उपाडयुं; अने ते पोताने स्थानेथी बने तेटली राष्ट्रभाषाप्रचारने मदद करवानुं. आने अंगे १९३६ मां विद्यापीठ मंडळे एक कार्यदिशा पण आंकी हती, अने तेमां गुजरातनी प्रजाने उपयोगी थाय एवो नानकडो राष्ट्रभाषानो कोश करवो, एवुं एक कार्य हतुं. आ कोश ते अनुसार करवामां आव्यो छे.

गुजरातमां राष्ट्रभाषाप्रचारनुं काम एक रीते जोईए तो साव सहेलुं छे. अ–हिंदीभाषी प्रान्तोनी भाषाओमां गुजराती भाषा कदाच हिंदुस्तानीनी साथे घणी ज मळती आवे छे. बेना शब्दभंडोळमां तद्भव अने तत्सम शब्दो ठीक ठीक प्रमाणमां सरखा छे, अथवा फेरफार छे तो एवो जूजजाज के भणेलो गुजराती वाचक सामान्य हिंदी शब्दोनो अर्थ कल्पी शके. एटलुं ज नहि, गुजरातमांथी हिंदी लेखको पण पाक्या छे. वळी, व्रजभाषा साथेनो तेनो सांस्कृतिक संबंध सैकांथी एकसरखो चालतो आवेलो छे. राष्ट्रभाषाना स्वयंसिद्ध प्रचारक समा साधुसंन्यासीओ गुजरातनां गामडांमां हमेश फरता रह्या छे अने तेओए हिंदी साथेनो तेनो संपर्क सतत चालु राखेलो छे. अने तेथी गुजरातमां गिरिधर करतांय कदाच तुलसी-रामायण वधारे वंचाय छे. कबीर अने दादुनां भजनो तेमना पंथ मारफते हजी जीवतां रहेलां छे. आ उपरांत गुजराती वेपारी पण करोडोनी भाषाने कामचलाउ जाण्या वगर ओछो ज रहे एवो छे? गुजरातना मुसलमान राजाओना काळमां फारसी अरबीनी असर पण तळपदी भाषामां ओछी ऊतरी नथी. एटले, गुजरातने माटे राष्ट्रभाषाप्रचारकार्य सहेलुं छे एमां प्रश्न नथी.

पण तेथी ज कदाच ए विषे उपेक्षा थवानो पण भारे भय रहे छे. मात्र वेपार के मुसाफरीनी सवड पूरतो ज परिचय जरूरी छे एम जो मनाय, तो तेटला परिचयथी आपणे एक बोली जरूर शीखी लई शकीए. परंतु राष्ट्रभाषा एवी बोली मात्र नथी. तेणे तो हिंदनी एकतानुं अने आपणी हिंदी संस्कृतिनुं वाहन बनवानुं छे. प्रजाना राजकारणनी भाषा तो आज आपणी नजर सामे ते बनी रही छे. अनेक प्रांतीय साहित्य–प्रवाहो ए ज मोटी राष्ट्रगंगामां मळवाना छे. आज आपणां प्रांतीय साहित्यो सहेजे बनी जतो परस्पर संबंध कदाच साधे छे. पण तेनी कोई नीतिरीति के नियमबद्ध पद्धति आपणे हजी नथी विकसावी. ए काम पण आगळ जतां राष्ट्रभाषाने ज माथे आवशे एमां कोईने शंका छे?

राष्ट्रभाषानुं आवुं स्वरूप होवाथी तेने आपणे एक बोली मात्र रूपे जाणीने निरांत वाळीए, तो सांस्कृतिक प्रगतिमां गुजरात पाछळ ज पडे एमां शंका नथी. एटले भाषा तरीके तेनुं अध्ययन थवुं जोईए, वधवुं जोईए, अने विकसवुं जोईए. तेने माटे बे दिशाओ देखाय छे:—(१) प्रौढ वर्ग हिंदीप्रचारनी परीक्षाओ आपवाने निमित्ते भाषानो शास्त्रीय अभ्यास शरू करे; (२) शाळाना विद्यार्थीओना अभ्यासक्रममां राष्ट्रभाषाने स्थान मळवुं जोईए;—जे सुधारो, में शरूमां कह्युं ए प्रमाणे, गांधीजी आफ्रिकेथी देशमां आव्या त्यारथी कहेता आव्या छे. प्रौढ वर्गोनी शरूआत गुजरातमां थई छे ए सौने खबर छे. तेनी गति दिवसे दिवसे वधशे एमां शंका नथी. अने सुखनी वात छे के, केळवणीना महासभावादी प्रधानोए शाळामां हिंदुस्तानी शिक्षणनी बीजी बाबतने पोताना कार्यमां स्थान आप्युं छे.

आ उपरांत एक त्रीजो वर्ग पण जरूरनो छे, अने ते उपरना बे वर्गोने मददरूप एवा राष्ट्रभाषाना प्रचारको अने तेना शिक्षकोनो. आ वर्गनी उत्पत्ति पण आजे गुजरातमां प्रारंभिक दशामां ज छे. जेम जेम आपणी राष्ट्रीय अस्मिता वधती जशे अने तेथी करीने राष्ट्रभाषानी किंमत वधारे ने वधारे जोता जईशुं, तेम तेम आ शिक्षक-प्रचारक-वर्ग वधवुं ज जोईशे—ते वधशे ज. अने ए वर्ग उपरना बे वर्गोने पछी पहोंची वळशे.

राष्ट्रभाषानो आ गुजराती कोश आ त्रण वर्गोने लक्षमां राखीने करवामां आव्यो छे. शाळानो विद्यार्थीवर्ग कदाच आ कोशने एकदम न पण अपनावी शके, परंतु राष्ट्रभाषाप्रेमी प्रौढ लोक अने ते भाषाना शिक्षकवर्गने आ कोशथी पूरती मदद मळशे एम मानुं छुं. हिंदीमां अर्थो आपता कोशो आज घणा छे. परंतु ते कोशो आपणे माटे बे रीते ऊणपवाळा छे: एक तो, शीखवानो प्रारंभ करनारने हिंदीमां ज आपेला अर्थो बरोबर न फावे; ते अर्थो जो गुजरातीमां आपवामां आवे तो सरळता पडे. बीजुं, प्रचलित हिंदी कोशोमां राष्ट्रभाषानी दृष्टि राखीने

अने जरूर विचारीने शब्दो संघरायेला नथी होता. तेमां हिंदी साहित्यनी जरूर ध्यानमां राखेली होय छे,—अने ते योग्य ज छे. तेथी करीने ते कदमां मोटा अने अन्यभाषाभाषीने माटे बिनजरूरी विस्तारवाळा थई पडे छे. आथी ते कोशो प्रारंभना अभ्यासमां काम दई शकता नथी.

आ कोशथी आ ऊणपो आपोआप टळे छे. तेमां शब्दोनी पसंदगी राष्ट्रभाषाना स्वरूपने बरोबर ख्यालमां राखीने करवामां आवी छे. फारसी अरबी शब्दो जे सामान्य रीते उत्तरना हिंदु-मुसलमानोमां बोलाय छे तेमने पण आ कोशमां स्थान आपवामां आव्युं छे. आ कामने अंगे विद्यापीठना सेवक भाई गिरिराजजी तथा पं० सुरेशचंद्रजीनी मदद लीधी छे. भाई गिरिराज दिल्ही प्रांतना छे अने उर्दू सारी पेठे जाणे छे, ए आ कामने माटेनी तेमनी योग्यता बतावबा पूरतुं छे. पं० सुरेशचंद्रजी युक्त प्रांतना वतनी छे अने वृन्दावन, अयोध्या वगेरे विभागोनी हिंदीथी परिचित छे. आ बेउ भाईओए मळीने, हिंदी-हिंदुस्तानीनी व्याख्यानी दृष्टिए शब्द–पसंदगी करवामां कीमती मदद करी छे. तेथी ज आ कोशनुं काम संतोषप्रद ने सहेलुं तथा झट बनी शक्युं छे.

कोशनो विस्तार नाहक वधे नहि तेटला माटे, शब्दो लेवामां ए धोरण राख्युं छे के, जे शब्दो समान रूपे ने समान अर्थमां गुजरातीमां पण चालता होय, तेमने आ कोशमां आपवा जरूर नथी. ए नियमथी, मोटा भागना संस्कृत शब्दो, 'पूछना, मीचना, आदमी, खरीदवुं, खबरदारी,' वगेरे जेवा शब्दो आ कोशमां नथी संघर्या,—संघरवा जरूरना पण नथी. परंतु, जे शब्दोनी जोडणीमां के अर्थमां के लिंगमां फरक होय तेवा लीधा छे. जेम के, 'आत्मा, असर'मां गुजराती हिंदुस्तानीमां लिंगफेर छे; 'पहोंचवुं, पहुँचना' 'महसूल, महेसूल'मां जोडणीफेर छे; 'सगीर' 'संकीर्ण' वगेरे जेवा अनेक शब्दोमां अर्थभेद छे. लिंगफेरने अंगे एक वस्तु नोंधवी जोईए : हिंदीमां नपुंसकलिंग नथी. एटले जे शब्दो गुजरातीमां नपुंसक लिंगना छे अने हिंदुस्तानीमां पुल्लिंग छे तेमने छोडी दीधा छे: ए लिंगफेरवाळा शब्दो लीधा नथी.

शब्दोना अर्थोनो विस्तार करवामां पण, गुजरातने केवा कोशनी आजे जरूर छे ते ख्यालमां राखीने चालवाथी, आपोआप केटलुंक लाघव साधी शकायुं छे.

तुलसी, कबीर, सुरदास जेवा भक्त-कविओ जे आपणे त्यां लोकप्रिय छे तेमना शब्दोने जो घटतुं स्थान आपवामां आवे तो कोशनी उपयोगिता सहेजे वधी जाय. ए ख्यालथी ते कविओना शब्दोने स्थान आपवामां आव्युं छे. पण तेनो अर्थ एम नथी के, तेमना अभ्यासीने ते कविओनां लखाणोना बधा ज शब्दो आ कोशमांथी मळशे. उपर जणाव्युं एम, आ शब्दसंग्रहनी पसंदगी करवामां गुजरातनी तात्कालिक जरूरने मुख्यत्वे नजर सामे राखवामां आवी छे. अने तेथी ज ते संग्रह आवडो नानो ने माफक किंमतनो करी शकायो छे.

राष्ट्रभाषाप्रचारने माटे लेवाती परीक्षाओनां तथा गुजरात विनय मंदिरनी सात श्रेणीओमां चालतां पाठयपुस्तकोना शब्दो आ कोशमां आवी जाय ते हेतुथी ते पुस्तको जोई जवामां आव्यां छे. ते उपरांत पण केटलुंक सामान्य वंचातुं साहित्य जोवामां आव्युं छे. बाकी, शब्दपसंदगी माटे, मुख्यत्वे, उपलब्ध कोशोमांथी सीधी विणामणी करवामां आवी छे. अने तेम करवाने माटे 'हिंदी शब्दसागर'नी नानी, मोटी ने मध्यम ए त्रण आवृत्तिओ, काशीविद्यापीठनो 'हिंदीशब्दसंग्रह,' रेवरन्ड बेट कृत हिंदीभाषानो (अंग्रेजी) शब्दकोश, श्री. रामचंद्र वर्मा कृत 'उर्दु-हिंदी शब्दकोश', इंडियन प्रेसनी 'Hindustani English Dictionary', पं. रामनरेश त्रिपाठी कृत 'हिंदुस्तानी कोश' तथा बीजा केटलाक कोशोनो उपयोग करवामां आव्यो छे. ते सर्व ग्रंथोना विद्वान संपादकोनो आ स्थळे हुं आभार मानुं छुं.

हिंदी शब्दोना गुजराती अर्थो आपवामां एक ए ख्याल पण राख्यो छे के, मूळ हिंदी शब्दने मळतो जो गुजराती शब्द होय, अने ते अर्थमां, तो तेने नोंधवो. आथी करीने तुलनात्मक भाषाभ्यासीओने थोडीघणी सामग्री आ कोशमांथी मळशे एम मानुं छुं. केटलाक तद्भव शब्दो जे बेउ भाषामां समान रूपे ने समान अर्थमां छे ने जे, हुं उपर कही आव्यो एम, आ

कोशमां नथी संघर्या, ते अलग वीणी काढया होय तो सारुं, एम एक संमान्य मुरब्बीनी सूचना हती. ए रसिक काम तो हवे आथी अलग रूपे क्यारेक करवा उपर छोडवुं जोईए. अत्यारे तो, कोशनो उपयोग करनारने तेना विना कशी अडचण नथी पडवानी एटलुं समाधान छे.

उपरनी मर्यादामां रहीने काम करतां, लक्षावधि जेवडा हिंदी शब्द सागरमांथी १५३२० शब्दो आ कोशमां समाया छे. ते उपरांत, बेउ भाषामां तत्सम एवा संस्कृत तथा अन्य शब्दो, जे आ कोशमां छोडी दीधा छे, ते उमेरो तो एटला ज बीजा थाय, एमां शंका नथी. एटले के, कुल ३० हजार उपर शब्दो जेटलुं काम आ कोशथी सरशे एम गणाय. कोशमां नोंधेला शब्दो साथे व्याकरण अने केटलीक व्युत्पत्ति आपवामां आवी छे. तथा शब्दोनी साथे तेमना रूढ शब्दप्रयोगो पण नोंध्या छे. तेमां पण जे रूढिप्रयोगो गुजरातीमां पण ते ज रूपे चाले छे — अने तेवा घणा छे— तेमने नथी आप्या, केम के गुजराती वाचकने ते परिचित ज छे.

हिंदी 'शिक्षणपत्रिका'ना तंत्री श्री काशीनाथजी त्रिवेदी तथा कांगडी गुरुकुलना भूतपूर्व अध्यापक पं० प्रभुलालजीए आ कोशना काममां मागी मदद आपी छे, एने माटे संस्था बेउ भाईओनी आभारी छे.

गुजरातमां हिंदीप्रचारने अंगे, आ कोशनुं काम थया पछी बे काम नजर आगळ रहे छे:—शाळाना विद्यार्थीओने माटे राष्ट्रभाषानी क्रमिक वाचनमाळानां त्रणेक पुस्तको, अने प्रौढ विद्यार्थीओ माटे राष्ट्रभाषानी सरळ मार्गोपदेशिका के स्वयंशिक्षिका जेवुं पुस्तक. शाळाओमां ज्यां राष्ट्रभाषा शरू करवामां आवे छे त्यां योग्य वाचनमाळाने अभावे, हिंदी जेमनी मातृभाषा छे एवां बाळकोने माटे तैयार थयेली वाचनमाळा चलाववी पडे छे. आमां एवी असंगतता आवे छे के, हिंदी बाळक जे ६–७ वर्षनुं होय छे तेने माटेनी चोपडी १०–११ वर्षथी मोटा गुजराती बाळकने भागे आवे छे. तेथी नीपजता विषय अने जमावटना भेदने लईने रसक्षति थाय छे तथा राष्ट्रभाषाने छाजे एवी भाषा अने शैली तथा विषयोनी पसंदगी नथी

मळती. आ दोष टाळवा माटे गुजराते पोताने उपयोगी थाय एवी वाचनमाळा घडवी जोईए.

एवुं ज उपरोक्त मार्गोपदेशिका माटे पण छे. बे भाषाओनी तुलनामां तेना पाठो गोठववा ने घडावा जोईए. तो ते सरळ अने शीघ्रफलदायी बने. आ काम हवे पछी, बने छे तो, विद्यापीठ हाथ धरवा चाहे छे. तेने अंगे जेओ अमने मदद करी शके एम होय ते सौ पासे अमे तेनी मागणी करीए छीए. आ कोशने अंगे पण एवी ज मागणी करीए छीए. तेनो उपयोग करनारा अमने सुधारावधारा तथा उपयोगी सूचनाओ आपशे तो तेमनो साभार स्वीकार करी, नवी आवृत्ति जो कोशना भाग्यमां हशे तो, तेमां उपयोग करीशुं.

गूजरात विद्यापीठ — मगनभाई प्रभुदास देसाई

ता. ३०-४-'३९

अनुक्रमणिका

राष्ट्रभाषानुं स्वरूप

[आ लखाण गांधीजीनां लखाणोमांथी संकलित करीने मूक्युं छे. ज्यांथी ते लेवामां आव्युं छे ते स्थान नीचे टीपमां जणाव्युं छे.

—संपा०]

१

हिंदी भाषानी व्याख्यानो थोडोक ख्याल करवो आवश्यक छे. हुं घणीये वार तेनी व्याख्या करी चूक्यो छुं के, हिंदी भाषा ते भाषा छे के जे उत्तरमां हिंदु अने मुसलमान बोले छे, अने जे नागरी के फारसी लिपिमां लखाय छे. आ हिंदी साव संस्कृतमय नथी, तेम साव फारसी शब्दोथी भरपूर नथी. जे माधुर्य गामडियानी बोलीमां मने देखाय छे ते लखनौना मुसलमान भाईओनी बोलीमां के प्रयागजीना पंडितोनी बोलीमां जणातुं नथी. ए ज भाषा श्रेष्ठ कहेवाय के जे जनसमूह सहेलाईथी समजी शके. भाषानुं मूळ करोडो मनुष्योरूपी हिमालयमांथी मळशे, अने तेमां ज रहेशे. हिमालयमांथी नीकळती गंगा अनंत काळ सुधी वह्या करशे, तेम गामडियानी हिंदीनुं गौरव रहेशे; अने जेम नाना पहाडोमांथी नीकळतां झरणां सुकाई जाय छे, तेम ज संस्कृतमय अने फारसीमय हिंदीनी दशा थशे.

हिंदु मुसलमान वच्चे जे भेद करवामां आवे छे ते कृत्रिम छे, तेवी ज कृत्रिमता हिंदी अने उर्दू भाषाना भेदमां रहेली छे. हिंदुओनी बोलीमांथी फारसी शब्दोनो सर्वथा त्याग करवो अथवा मुसलमानोनी बोलीमांथी संस्कृत शब्दोनो सर्वथा त्याग करवो आवश्यक नथी. बेनो

स्वाभाविक संगम, गंगायमुनाना संगम जेवो शोभायमान अने अचळ रहेशे.[१]

२

सन '१८मां ज्यारे तमे मने आ ज पद (हिंदी सा. संमेलननुं प्रमुखपद) आपेलुं त्यारे पण में एम ज कह्युं हतुं के, हिंदी ए भाषानुं नाम छे जे हिन्दु अने मुसलमान कुदरती रीते वगर प्रयत्ने बोले छे. हिन्दुस्तानी अने उर्दूमां कशो फरक नथी. देवनागरी लिपिमां लखाय त्यारे ते हिन्दी, अने अरबीमां लखाय त्यारे उर्दू कहेवाय छे. जे लेखक के वक्ता वीणी वीणीने संस्कृत के अरबी फारसीनो ज प्रयोग करे छे ते देशनुं अहित करे छे. आपणी जनतामां प्रचलित थई गया होय एवा बधी जातना शब्दो राष्ट्रभाषामां आववा जोईए. श्री. घनश्यामदास बिरलाए कह्युं छे ते बराबर ज छे के, जुदी जुदी प्रांतीय भाषाओमां जे शब्दो रूढ थई गया छे अने जे राष्ट्रभाषामां आववाने लायक छे ते राष्ट्रभाषावादीओए लई लेवा जोईए. दरेक व्यापक भाषामां ए ग्रहणशक्ति रहे ज छे. एटला माटे तो ते व्यापक बने छे. अंग्रेजीए शुं नथी लीधुं? लेटीन अने ग्रीकमांथी केटलाये शब्दप्रयोगो अंग्रेजीमां लेवाया छे. आधुनिक भाषाओने पण तेओ छोडता नथी. ए बाबतमां एमनुं निष्पक्षपणुं प्रशंसापात्र छे. हिन्दुस्तानी शब्दो अंग्रेजीमां ठीक ठीक आवी गया छे. केटलाक आफ्रिकाथी पण लेवाया छे. एमां एमनो 'मुक्त व्यापार' (फ्री ट्रेड) कायम ज छे. पण मारा आम कहेवानी मतलब ए नथी के प्रसंग विना पण आपणे बीजी भाषाओना शब्द लईए, जेम आजकाल अंग्रेजी भणेला जुवानो करे छे. आ व्यापारमां विवेकदृष्टि तो राखवी ज पडशे. आपणे कंगाल नथी, पण कंजूस पण नहि बनीए. खुरसीने खुशीथी 'खुरसी' कहीशुं, एने माटे 'चतुष्पाद पीठ' शब्दनो प्रयोग नहि करीए.[२]

---

१. ई. स. १९१८ना 'हिंदी साहित्य संमेलन'ना प्रमुखपदना व्याख्यानमांथी

२. २०-४-१९३५ना हिन्दी सा० संमेलनने प्रमुखस्थानेथी.

३

महासभानी कल्पना प्रमाणेनी हिंदुस्तानीनुं चोकस रूप हजी घडावुं रह्युं छे. महासभानुं कामकाज ज्यां सुधी केवळ हिंदुस्तानीमां ज न चाले त्यां सुधी ए बनवानुं नथी. महासभाए महासभावादीओना उपयोग माटे शब्दकोशो नियत करवा पडशे, अने एक खाताए शब्दकोशो द्वारा बहारना नवा शब्दो पूरा पाडवा पडशे. ए भगीरथ काम छे. पण आपणे जो खरेखर जीवती, विकसती अखिल भारतीय भाषा जोईती होय तो ए काम करवा जेवुं छे.

* * *

हिंदुस्तानीनुं चोकस स्वरूप घडवा माटे हिंदी अने उर्दू ए बंनेमांथी शब्दो लेवा जोईए. तेथी महासभावादीए ए बंने भाषानुं भलुं इच्छवुं जोईए, अने बंनेनी साथे बने एटलो संसर्ग राखवो जोईए. अनेक प्रांतीय भाषाओथी समृद्ध एवा विकसता राष्ट्रनी विविध जरूरियातोने पहोंची वळवा आ हिंदुस्तानीमां एकेक शब्दना घणा पर्यायो होवा जोईशे. बंगाळना के दक्षिणना श्रोतावर्गो आगळ बोलेली हिंदुस्तानीमां संस्कृतमांथी ऊतरी आवेला शब्दोनो मोटो भंडोळ होवो जोईशे. ए ज भाषण पंजाबमां अपाय तो तेमां अरबी के फारसीमांथी आवेला शब्दोनुं घणुं मिश्रण हशे. मोटे भागे झाझा संस्कृत शब्दो न समजनार मुसलमानोना बनेला श्रोतावर्गमां पण एम ज करवुं पडशे.

* * *

इस्लामने तेनी पोतानी विशिष्ट संस्कृति छे तेम ज हिंदुधर्मने तेनी पोतानी छे. भविष्यनुं हिंदुस्तान ए बेना संपूर्ण अने सुखद संयोगरूप हशे. ए रळियामणो दिवस ज्यारे आवशे त्यारे एमनी सर्वसामान्य भाषा हिंदुस्तानी हशे. पण छतां उर्दूनो विकास चालु रहेशे ने तेमां अरबी फारसी शब्दोनुं प्राधान्य हशे. अने संस्कृत शब्दभंडोळना प्राधान्यवाळी हिंदीनो पण विकास चालु रहेशे. तुलसीदास अने सुरदासनी भाषा मरी

न शके, तेम ज जे भाषामां शीखलीए लख्युं तेनो पण नाश संभवतो नथी. पण ए बेने सारामां सारी जाणनाराओ हिंदुस्तानीमां तो बरोबर पावरधा हशे.[१]

४

"महासभावादीओए राष्ट्रभाषानो उल्लेख करती वेळाए केवळ 'हिंदुस्तानी' शब्दनो ज प्रयोग करवो जोईए."

उपली सूचनाने हुं खरा अंतःकरणपूर्वक स्वीकारुं छुं. राष्ट्रभाषानुं नाम फक्त एक ज छे अने ते 'हिंदुस्तानी'.[२]

५

हिंदी वा हिंदुस्तानीनो राष्ट्रभाषा तरीके फेलावो करवानी हिलचाल साथे आने (एक लिपिने) गूंचवी न नाखवी जोईए. ए काम घणुं धीमुं धीमुं पण स्थिरताथी चाली ज रह्युं छे. एक लिपिनो वपराश एक भाषाना फेलावाने सरळ बनावशे. परंतु ए बंनेनुं काम अमुक हद सुधी ज साथे साथे चालशे. हिंदी वा हिंदुस्तानीनी योजना प्रांतिक भाषाओनुं स्थान लेवानी नथी; एनो हेतु एमां पूर्ति करवानो अने आंतरप्रांतीय उपयोगमां आववानो छे. ज्यां सुधी हिंदु–मुस्लीम विद्वेष चालु छे त्यां सुधी ए फारसी लिपिमां लखायेली अने फारसी या अरबी शब्दोना वधारा पडता भरावावाळी उर्दूनुं वा देवनागरीमां लखायेली अने संस्कृत शब्दोना वधारे भराववाळी हिंदीनुं रूप ले छे. पण ज्यारे बंने कोमोनां हृदय एक थशे त्यारे एक ज भाषानां ए बे रूपो एकबीजामां मळी जशे अने ए बेना परिणामरूप एवी, पोताना पूर्ण विकास अने अर्थशक्ति माटे आवश्यक होय एवा संस्कृत, फारसी, अने अरबी वा बीजा शब्दोवाळी एक भाषा आपणने मळशे.[३]

१. ३०–१०–'३८ना ह०बं०मांथी
२. ह०बं० २५–१२–३८मांथी
३. जुओ 'खरी केळवणी' पा. ४१६

६

एक ज भाषाने माटे देवनागरी अने उर्दू बंने लिपिओ हुं सहन करुं छुं ए वस्तु विसंगत छे ए हुं जाणुं छुं. पण मारी ए विसंगतता नरी बेवकूफी नथी. अत्यारे हिंदु मुसलमान वच्चे घर्षण चाले छे. शिक्षित हिंदु अने मुसलमान एकबीजा प्रत्ये बने एटलां वधारे आदर अने सहिष्णुता बतावे एमां डहापण छे ने ए जरूरनुं पण छे. एटले देवनागरी के उर्दू लिपि वच्चे विकल्प राखेलो छे. सद्भाग्ये प्रांत प्रांत वच्चे घर्षण नथी. एटले आ सुधारो, जेनाथी प्रांतो वच्चे अनेक रीते स्नेहसंबंध वधवानो छे, ते इष्ट छे. अने ए पण याद राखवुं जोईए के आपणी प्रजानो बहु मोटो भाग छेक ज निरक्षर छे. एना पर, मात्र खोटी भावना के विचारनी मंदताने कारणे, जुदी जुदी लिपिओ शीखवानो बोजो नांखवो ए आपघात करवा बरोबर छे.+

७

हुं मानुं छुं के—

१. हिंदी, हिंदुस्तानी अने उर्दू ए त्रणे शब्दो एक ज भाषाना—जे उत्तरमां हिंदु तेम ज मुसलमान बोले छे अने देवनागरी अथवा फारसी लिपिमां लखे छे — तेना वाचक छे;

२. आ भाषा, जे हिंदु अने मुसलमान बंने वापरता, तेने माटे, 'उर्दू' शब्दनी उत्पत्ति थई ते पहेलां, 'हिंदी' ए ज नाम वपरातुं.

३. 'हिंदुस्तानी' शब्द पण ए ज भाषा सूचववाने पाछळथी वपरावा लाग्यो.

(एनी तारीखनी मने खबर नथी).

४. हिंदु अने मुसलमान बंनेए उत्तरना आमवर्गना करोडो लोको समजे एवी भाषा बोलवानो प्रयास करवो जोईए.

५. ते छतां घणा हिंदु केवळ संस्कृत शब्दो ज वापरवानो आग्रह राखशे, ने ते प्रमाणे केटलाक मुसलमान केवळ फारसी के अरबी शब्दोथी

+ १६–८–'३६ना 'हरिजनबंधु'मांथी

भरेली भाषा वापरशे. ज्यां लगी बे कोममां एकबीजाने विषे अविश्वास ने अळगापणुं छे, त्यां लगी आ वस्तु आपणे सही लेवी पडशे. जे हिंदुओ अमुक विषयना मुसलमानोना विचारो समजवा मागता हशे ते फारसी लिपिमां लखेली उर्दू शीखशे; अने ते ज प्रमाणे जे मुसलमानो अमुक विषयना हिंदुओना विचार समजवा मागता हशे ते देवनागरी लिपिमां लखेली हिंदी शीखशे.

६. आखरे ज्यारे आपणां हृदय एक थशे, सौ पोतपोताना प्रांतोने बदले समस्त भारतवर्षने पोतानो देश गणी तेने विषे अभिमान धरावशे, अने जेवी रीते आपणे एक ज वृक्षनां फळने जुदां जुदां छतां एक गणीने स्वादथी खाईए छीए, तेम सर्व धर्मो एक ज मूळमांथी उद्भवेला छे एवुं समजशे ने आचरशे, त्यारे आपणे प्रांतिक उपयोगने माटे प्रांत-भाषाओने कायम राखीने, आखा राष्ट्रने माटे एक लिपिमां लखाती एक राष्ट्रभाषा वापरता थईशुं.

७. कोई पण प्रांत के जिल्ला के कोम पर हिंदीनी कोई पण एक लिपि के एक प्रकार पराणे लादवानो प्रयत्न करवाथी देशनुं हित बगडे एम छे.

८. राष्ट्रभाषानो प्रश्न धार्मिक मतभेदोथी अलग रीते विचारवो जोईए.

९. रोमन लिपि हिंदुस्ताननी राष्ट्रलिपि न थई शके, न थवी जोईए. हरीफाई केवळ फारसी अने देवनागरीनी वच्चे ज होई शके. देवनागरीमां जे स्वभावसिद्ध गुण छे तेनो विचार कोरे मूकीए तोपण, ए हिंदुस्ताननी राष्ट्रलिपि थवी घटे छे, केम के घणीखरी प्रांतिक लिपिओ देवनागरीमांथी उद्भवी छे ने तेथी एमने माटे ए ज लिपि शीखवामां सौथी वधारे सुगम छे. छतां ए लिपि मुसलमानो पासे, एटलुं ज नहीं पण ए लिपि न जाणनार बीजा सौनी पासे, पराणे स्वीकारावावानो प्रयत्न न ज थवो जोईए.×

× ४–७–'३७ ना 'हरिजनबंधु'मांथी

कोश वापरनारने सूचनाओ

१. कोशमां वपरायेली संज्ञाओनी समजूती आ प्रमाणे छे :

पुं० पुंल्लिंग (नाम)
स्त्री० स्त्रीलिंग (नाम)
वि० विशेषण
अ० अव्यय
स० सर्वनाम
अ०क्रि० अकर्मक क्रियापद
स०क्रि० सकर्मक क्रियापद

(प.) एटले के मुख्यत्वे पद्यमां वपराय छे
ब०व० बहुवचन
ए० व० एकवचन
अ. अरबी
फा. फारसी
सं. संस्कृत
तु. तुर्की
इं.,अं. इंग्रेजी

२. शब्दनो क्रम गोठववामां अनुनासिक के अनुस्वारवाळो अक्षर ते वगरना अक्षरनी अगाउ मूकवामां आव्यो छे. एटले, दा०त० कंस, कंद वगेरे 'कई'नी पहेलां आवे. ते सिवाय बाकीनी गोठवणी कक्कावारीना सामान्य रखाता क्रममां छे.

३. शब्दना पेटामां तेना रूढिप्रयोग तथा तद्भव ने झट समजाय एवा शब्दो मूक्या छे. जेम के,

(१) 'कँचेरा'नुं स्त्रीलिंग 'कँचेरिन' ते शब्द जोडे [स्त्री० **–रिन**] एम करीने बताव्युं छे.

(२) 'कफ़न' शब्दमां '–को कोड़ी न होना' एटले के 'कफ़न को कोड़ी न होना' रूढिप्रयोग आप्यो छे.

(३) वि० साथे तेनुं स्त्रीलिंगरूप कौंसमां स्त्री० करीने टांक्युं छे. जेम के, **काहिल** वि० [स्त्री० –ली]. मूळ शब्द परथी बनतुं नाम आप्युं छे त्यां कौंसमां [नाम, . .] करीने आप्युं छे. जेम के, **गिड़गिड़ाना** [नाम, –हट] एटले के, **गिड़गिड़ाहट. गिलकार** [नाम, –री]; **लँगडा** वि० [अ०क्रि० –ना] एटले के '**लँगडाना**' वगेरे. तेम ज क्रियापद, विशेषणनुं पण समजवुं.

४. मूळ शब्दना विकल्प होय तो तेमने आखा लखवाने बदले, शक्य होय त्यां, नीचे प्रमाणे टूंकावीने मूक्या छे. जेम के,

तिकोना(–निया)=तिकोना,तिकोनिया
तिरछ(–छा)ई=तिरछई,तिरछाई
रिझा(०व)ना=रिझाना,रिझावना

एटले के, आ — संज्ञा तेनी पूर्वेना अक्षरने बदले लेतां थता शब्दनो अने आ ० संज्ञा तेमां उमेरीने बनता शब्दनो विकल्प सूचवे छे.

अ

अँकवार स्त्री० गोद; छाती. –**देना,** –**भरना**=भेटवुं; छाती सरसुं लगाववुं

अँकाई स्त्री०आंकवुं ते;जुओ 'अँकाव'

अँकाना स०क्रि० ('आँकना'नुं प्रेरक) अंकाववुं; अंदाज कढाववो (२) परखाववुं;परीक्षा करावavी

अँकाव पुं० आँकवानुं काम(२)अंदाज; अटकळ

अँकुड़ा पुं० आंकडो

अँकुड़ी स्त्री०नानो आँकडो

अँकुस पुं०अंकुश

अँखुआ पुं० [सं. अंकुर] बीजमांथी फूटतो अंकुर के कूंपळ

अँखुआना अ०क्रि०अंकुर फूटवो;ऊगवुं

अँगड़ाई स्त्री०शरीर फाटवुं ते(जेम के ताव आवता पहेलां)(२)आळसथी के शरीर जकडाईने अक्कड थयुं होय तेथी शरीरनां अंगो ताणता फेलाववां ते. – **तोड़ना**=आळसु बेठा रहेवुं; काम न करवुं

अँगड़ाना अ०क्रि०शरीर फाटवुं (२) आळस काढवा के अंगो अकडावाथी शरीर ताणवुं–खेंचवुं

अँगरखा पुं० अंगरखुं; ' अंगा '

अँगरा पुं० अंगारो

अँगराना अ०क्रि०जुओ 'अँगड़ाना'

अँगवना स०क्रि०(प.) सहवुं; खमवुं; वेठवुं

अंगा पुं० अंगरखुं

अंगार पुं० [सं.] अंगारो.–**उगलना**= अंगारा जेवा बोल काढवा;आग वर्षाववी. –**पर पैर रखना**= जाणीजोईने नुकसान के मुश्केली-मां ऊतरवुं. **लाल अंगारा**= वि०लालचोळ; खूब गुस्से थयेलुं

अंगिया स्त्री० [सं. अंगिका, प्रा० अंगिया] चोळी; स्त्रीनो कबजो
अँगीठा पुं० [सं. अग्नि+स्था] मोटी सगडी. **अँगीठी** स्त्री० सगडी
अंगुर पुं० अंगुल; आंगळ
अंगुरी स्त्री० अंगुली; आंगळी
अंगुल पुं०[सं.] आंगळ
अंगुली स्त्री०[सं.]आंगळी
अंगुश्त पुं०[फा.] आंगळी
अंगुश्तनुमाई स्त्री० [फा.] आंगळी–देखामणुं;बदनामी; कलंक; लांछन
अंगुश्तरी स्त्री०[फा.] 'अंगूठी'; वींटी
अंगुश्ताना पुं. [फा.] दरजी आंगळी पर पहेरे छे ते अंगूठी
अँगूठा पुं०[सं.अंगुष्ठ]अंगूठो.–**चूसना**=खुशामत करवी (२)तावे–अधीन थवुं. –**दिखाना**=टिक्को बताववो; कांई करवा के देवा ना कहेवी; **अंगूठे पर मारना**=तुच्छकारवुं; परवा न करवी
अँगूठी स्त्री० 'अंगुश्तरी'; वींटी
अंगूर पुं०[फा.]अंगूर–लीली द्राक्ष
अंगूरी वि०अंगूरनुं बनेलुं के तेना रंगनुं (२) पुं०आछो लीलो रंग
अँगोछना अ०क्रि० अंगूछाथी शरीर लोहवुं [टुवाल
अँगोछा पुं० अंगूछो; अंग लोहवानो
अँचरा पुं०अंचल; साडीनो छाती पर आवतो भाग; पालव
अँचला पुं०साधुओ धोतियाने बदले वींटे छे ते कपडानो टुकडो
अँचवना स०क्रि० जुओ 'अचवना'
अंजर-पंजर पुं०[सं.पंजर] पांसळी के तेनो माळो (२) अ०आसपास; नजीक. –**ढीला होना**=शरीरना सांधा ढीला थवा; सुस्त के शिथिल थवुं
अँजवाना स०क्रि० 'आंजना'नुं प्रेरक; अंजाववुं (अंजन, सुरमो इ०)
अँजाम पुं०[फा.] आखर; अंत (२) परिणाम. –**देना**,–**करना**,–**पर पहुँचना**=पूरुं करवुं; तिपटाववुं
अंजाम-कार अ० आखरे; छेवटे
अँजुरी(–ली), **अंजुली** स्त्री० अंजलि; खोबो
अंझा पुं०[सं. अनध्याय]अणोजो; छुट्टी
अँटना अ०क्रि० समावुं; बरोबर आवी रहेवुं; पूरतुं होवुं
अंटा पुं० गोळो (२) मोटी कोडी–कोडो (३) 'बिलियर्ड'नी रमत
अंटाचित अ०चत्तापाट–लांबुंछट पडेलुं
अंटी स्त्री०बे आंगळीओ वच्चेनी जगा के गाळो (२)ओटी(३)(दोरानी) आंटी के ते उतारवानुं अटेरण(४)

आंटी; विरोधभाव. **—करना**= छेतरी लेवुं(२)अटेरवुं. **—रखना**= छुपाववुं; दबावी राखवुं

अंडस स्त्री०कठिनता; मुश्केली; संकट

अँतड़ी स्त्री०आंतरडुं. **—जलना**=खूब भूख लागवी. **—गले में पड़ना**= कशी आपत्तिमां फसावुं. **अंतड़ियों का बल खोलना**=बहु दिवसो बाद खावानुं मळे त्यारे खूब पेट भरीने खावुं

अँतरा पुं०आंतरो;गाळो (२) एकांतरो ताव(३)खूणो(४)वि०एक छोडीने बीजुं

अंतरा अ०वच्चे;मध्यमां (२) पासे; नजीक(३)विना; सिवाय (४)पुं० संगीतनो अंतरो(५)सवार सांज वच्चेनो समय-दिवस

अंतरीप पुं०[सं.] टापु; द्वीप(२)भूशिर

अंदरी(—रूनी) वि० [फा.] अंदरनुं; भीतरनुं

अंदाज़ पुं० [फा.] अन्दाज; अडसट्टो; अटकळ; अनुमान (२) ढब; ढंग; रीत (३) भाव; चेष्टा. **—करना, —लगाना**=अन्दाज काढवो

अंदाज़न् अ०[फा.] अडसट्टे;अंदाजथी

अंदाज़ा पुं०[फा.] अंदाज;अटकळ

अंदेशा पुं० [फा.] चिंता;फिकर (२) अंदेशो; संशय (३) डर; आशंका (४) दुविधा;डामाडोळपणुं

अंधड़ पुं०आंधी; तोफान [माणस

अंधखोपड़ी स्त्री०मूर्ख; अक्कल वगरनुं

अंधा वि०(२)पुं० आंधळो.**—बनना**= जाणीजोईने ध्यान पर न लेवुं; आँख आडा कान करवा. **अंधे की लकड़ी या लाठी**=एकमात्र आधार(२)एकनो एक छोकरो. **—दीया**=मंद बळतो दीवो

अंधाधुंध स्त्री०अंधाधूंधी

अँधेरा पुं०(२)वि०अंधारुं. **—गुप या घुप**=अंधारुं घोर;गाढ अन्धकार. **मुँह अँधेरे, अँधेरे मुँह**=भर-भांखळे;मळसके

अँधेरी पुं०अंधकार(२)अंधारी रात(३) 'अँधड़';आंधी (४)बळद घोडानी आंख पर बंधातो पडदो.**—डालना या देना**=आँखमां धूळ नाखवी; दगो देवो; छेतरीने खाडामां नाखवुं.**—कोठरी**=पेट; गर्भ; कूख (२)गुप्त भेद

अंबर पुं०[अ.]एक सुगंधी चीज जे वहेल मांछलीमांथी मळे छे (२) एक अत्तर

अँबराई स्त्री०,**अँबराव** पुं०(सं. आम्र+राजी) अमराई;आंबावाडियुं

अंबारी स्त्री० 'अमारी'; हाथीनी अंबाडी
अँबिया स्त्री० नानी काची केरी; मरवो
अंबिया पुं० [अ. 'नबी'नुं ब०व०] नबी अने पेगम्बरो
अँबिरथा अ०(प.) वृथा; व्यर्थ
अंस पुं० अंश; भाग; खंड
अंसर पुं०[अ.] जुओ 'अन्सर'
अकड़ स्त्री० अकडाट; अकडावुं ते (२) अकडाई; एंट; जीद(३) घमण्ड; शेखी (४) धीटपणुं; धृष्टता
अकड़ना अ० क्रि० अकडावुं ('अकड़' जुओ) (२) मिजाज करवो (३) शेखी मारवी (४) हठ करवी
अकड़ू (–ड़ैत) वि० 'अकड़'वाळो (जुओ 'अकड़'); अभिमानी; घमंडी
अकनना स० क्रि० (प.) सांभळवुं
अकबक स्त्री० बकबकाट; नकामो लवारो (२) गभराट; धडक (३) वि० निस्तब्ध; अवाक
अकबकाना अ० क्रि० गभरावुं (२) चकित थवुं [महान
अकबर वि०[अ.] सौथी मोटुं; महानमां
अकबरी स्त्री० एक प्रकारनी मीठाई (२) लाकडा परनुं एक प्रकारनुं नकसीकाम
अक़बाल पुं० जुओ 'इकबाल'
अकर वि० करवामां कठण (२) कर के महेसूलमां माफ (३) कर–हाथ विनानुं
अकरकरा पुं० (सं. आकरकरभ) अक्कलगरो
अकलखुरा वि० आपमतलबी; एकलपेटुं
अक़लन् अ०[अ.] अक्कलमां; समजमां
अक़लीम स्त्री०[अ.] देश; प्रांत
अकवन पुं० 'आक'; आकडो
अकसना स० क्रि० अकस—वेर, द्वेष, खार राखवो [शपथ
अक़साम पुं०[अ.] प्रकार (२) कसम;
अकाउंट पुं० [इं.] हिसाब; नासुं
अकाउंटेंट पुं० [इं.] नासुं लखनार; हिसाबनीस
अकाज पुं० नुकसान; अकार्य (२) खोटुं-बूरुं काम (३) अ० अकाज; व्यर्थ; नकासुं
अकाजना अ० क्रि० नुकसान जवुं (२) मरवुं (३) स० क्रि० हानि करवी
अक़ायद पुं०[अ.] 'अक़ीदा'नुं ब०व०
अकारथ अ० व्यर्थ; निष्फळ; निरर्थक
अकाली पुं० काळो फेंटो बांधतो एक नानकपंथी
अकास पुं०(प.) आकाश
अक़ीक़ पुं. [अ.] अकीक पथ्थर
अक़ीदत स्त्री०[अ.] धार्मिक श्रद्धा (२) कोई धर्मनी मूळ मान्यता जे वगर कोई ए धर्मनो न गणाय

अक़ीदा पुं०[अ.]दृढ विश्वास (२)धर्म; मजहब [बुद्धिमान

अक़ील पुं०[अ.](स्त्री०–ला) अक़लमन्द;

अकुलाना अ०क्रि० [सं.आकुल]जल्दी करवुं; उतावळा थवुं(२)गभरावुं; अकळावुं

अक़ूबत स्त्री०[अ.]दंड; सजा

अकूत वि० बेसुमार; अपरिमित

अकेला वि०(स्त्री०अकेली) एकलुं(२) अपरिणीत (३) पुं० एकान्त; निर्जन स्थान. –दम=एक ज प्राणी. –दुकेला=एकलदोकल

अकेले अ०एकल;एकाकी (२) मात्र; फक्त. –दुकेले=अ० साव एकलुं

अक्का स्त्री०[सं.]माता (२)मोटी वहेन

अक्खड़ वि०मनस्वी;उद्धत(२) झगडाखोर (३) असभ्य (४) नीडर (५) आखाबोलुं

अक्खर पुं०(प.)अक्षर

अक्टोबर,अक्तूबर पुं०ऑक्टोबर मास

अक़्द पुं०[अ.]संबंध (२)सगाई; शादी (३) एकरार

अक़्ल स्त्री०[अ.]अक्कल;बुद्धि; समज. –का दुश्मन,–का पूरा=बेवकूफ; मूर्ख. –खर्च करना=विचारवुं; बुद्धि लगाववी. –का चरने जाना =बुद्धि–समज न होवी

अक़्लमन्द वि० [फा.] अकलमन्द; समजदार; बुद्धिमान

अक़्लमन्दी स्त्री० समजदारी;बुद्धिसत्ता

अक्षोनी स्त्री०(प.) अक्षोणी;अक्षौहिणी

अक्स पुं० [अ.] छाया; प्रतिबिंब (२) चित्र; छबी; तसवीर

अक्सर अ० अकसर; प्रायः ('अकसर' पण लखाय छे)

अक्सरियत स्त्री० बहुमती

अख़ज़ पुं०'अख़्ज़'; ग्रहण करवुं ते

अख़बार पुं. [अ. 'खबर'नुं ब०व०] अखबार; छापुं

अखरना स०क्रि० खटकवुं;कठवुं (२) दुःखदायी के बूरुं लागवुं

अख़लाक़ पुं० [अ.]आदत(२) स्वभाव (३) नीति के सदाचार

अखाड़ा पुं०[सं. अक्षवाट]अखाडो(२) सभा;दरबार;रंगभूमि (३) तमासगीरोनी के गानारवगाडनारनी मण्डळी [अन्त; समाप्ति

अख़ीर पुं०[अ.] 'आखिर'; आखर;

अखौट(–टा) पुं० घंटीनो खीलडो

अख़्ख़ाह! अ०अहा;आश्चर्य-सूचक शब्द

अख़्तियार पुं० 'इख्तियार'; अखत्यार

अख़्ज़ पुं०[अ.]लेवुं ते;ग्रहण; 'अख़ज़'

अगंड पुं०[सं.]कबंध; हाथपग वगरनुं धड

अगड़बगड़ वि०(२) पुं० अगडंबगडं; ढंगधडा वगरनुं;नकामुं ('अगडं-बगडं' पण लखाय छे.)

अगर पुं०[सं०अगरु] अगर; चंदन

अगर अ० [फा.] जो; यदि.—**मगर करना**=विवाद करवो; तर्क दोडावा (२)गडबड गोटाळामां नाखवुं

अगरचे अ० [फा.] जोके

अग़राज़ स्त्री०[अ.'गरज'नुं ब०व०] मतलब; हेतु (२) जरूरियातो

अगरी स्त्री० आगळी; उलाळी

अग़लब अ०[अ.] घणुं करीने; प्रायः; घणो संभव छे के

अगल-बगल अ० [फा.] आसपास; आमतेम; बे बाजुए

अगला वि०[सं. अग्र]आगलुं; आगळनुं(२)पूर्वनुं; पहेलांनुं (३)प्राचीन; पुराणुं (४) आगळ पर आवनारुं; आगामी (५) पुं० (स्त्री०अगली) पूर्वज (६) आगेवान

अगवना अ०क्रि० [हिं.आगे] आगळ वधवुं; तैयार थवुं

अगवाई स्त्री०सामे—आगळ जईने सत्कार करवो ते; 'अगवानी' (२) पुं० आगेवान; अग्रेसर

अगवान पुं० 'अगवानी' करनार (जुओ 'अगवानी')

अगवानी स्त्री० सामे जईने सत्कार करवो ते (२) विवाहमां जानने सामे लेवा जवानो विधि (३) पुं० आगेवान

अगहन पुं० अग्रहायण; मागशर मास

अगहनिया वि०मागशरमां थनारुं(धान)

अगहनी स्त्री०मागशरमां लेवाती फसल

अगहुड़ अ०(प.)आगळ

अगाऊ वि०अगाउथी; 'पेशगी'. उदा० 'उसको अगाऊ कुछ दाम दे दो' (२) अ०(प.) आगळ; अगाडीथी

अगाड़ी अ०अगाडी; आगळ (२)पुं० वस्तुनो अगाडीनो भाग (३) घोडानी अगाडी

अगाड़ू अ०अगाडी

अगिन वि०अगणित (२) स्त्री०अगन; [अग्नि

अगिनबोट पुं०आगबोट

अगुआ पुं०आगेवान; मुखी; नेता(२) पंचात वगेरे करीने विवाह गोठवनार

अगुआई स्त्री० आगेवानी; सरदारी

अगुआना स०क्रि०आगेवान बनाववो के ठराववो(२)अ०क्रि०आगळ वधवुं

अगोरना स०क्रि० राह जोवी (२) रखवाळी करवी

अगोरिया पुं० रखेवाळ

अघट वि०अघटित; अयोग्य(२)दुर्घट;

दुष्कर(३)अक्षय; घटे नहि एवुं (४)एकरस; स्थिर
अघवाना स०क्रि०'अघाना'नुं प्रेरक
अघाई स्त्री० संतोष; तृप्ति; धरावुं ते
अघाट पुं०कायमी भोगवटानी–वेची न शकाय एवी मालकीनी जमीन
अघाना अ०क्रि० धराईने खावुं (२) संतोष पामवुं(३)प्रसन्न–खुशी थवुं
अचंभा पुं० अचंबो; आश्चर्य
अचकन पुं०एक जातनो लांबो कोट
अचवन पुं०आचमन(२)जमीने हाथ मों धोई कोगळा करवा ते
अचवना स०क्रि० 'अचवन' करवुं (जुओ 'अचवन')
अचांचक,अचानक अ०[सं.अज्ञानात्] अचानक; ओचिंतुं
अचार पुं० 'आचार'; अथाणुं
अचीता वि० (स्त्री०,–ती) अणधार्युं; आकस्मिक(२) अचिंत्य; बेसुमार
अचैन पुं०बेचेनी; व्याकुलता
अच्छा वि०[सं०]स्वच्छ; निर्मळ
अच्छा वि०(स्त्री०अच्छी)उत्तम;उमदा (२)तन्दुरस्त; नीरोग(३)अ०सारुं; 'हा, ठीक' अर्थसूचक उद्गार. अच्छे आना=बरोबर अवसर पर आववुं ['अच्छा' होवुं ते
अच्छाई स्त्री०, अच्छापन पुं०उत्तमता;
अच्छा बिच्छा वि०सारुं सारुं; चूंटेलुं (२)नीरोग
अछूत वि० अस्पृष्ट(२)नवुं;ताजुं;पवित्र (३)अस्पृश्य(आ अर्थ आधुनिक छे)
अछूता वि०जुओ 'अछूत' १,२, अर्थ
अज़ [फा.]'थी' अर्थनो प्रत्यय. उदा० 'अज़–तरफ़'=तरफथी
अजज़ा पुं० [अ. 'जुज़'नुं ब०व०] टुकडा; अंश; भागो [दादा
अजदाद पुं०[अ.]पूर्वज; वडवा; बाप-
अजनबी वि०[अ.] अज्ञात; अपरिचित (२)अजाण्युं(३)परदेशी
अजनास पुं०[अ.] वस्तुभाव; जणस (२)घरवखरी; सरसामान
अज़-बर अ०[फा.] याददास्त परथी
अज़मत स्त्री०प्रताप;महत्ता(२)चमत्कार
अज़माइश स्त्री० अजमायश; 'आज़-माइश' [अजमाववुं
अज़माना स०क्रि० 'आज़माना';
अज़मूदा वि० 'आज़मूदा'; अजमायेलुं
अजल स्त्री०[अ०] मोत
अजल-गिरिफ्ता,अजल-रसीदा वि० जेनुं मोत आव्युं होय ते
अज़ल स्त्री० [अ.] अनंत अनादि होवुं ते (२) आराम (३) मूळ; ऊगम. रोज़े-अज़ल=(सृष्टिनी) उत्पत्तिनो दिन

अज़ली वि० [अ.] शाश्वत
अजवाइ(-य)न स्त्री० अजमो
अजस पुं० अयश; अपयश
अज़हद अ०[फा.] हद उपरांत; बहु
अजहूं(-हू) अ०(प.) हजी पण;हमणां पण; आज पण
अजान वि०अज्ञान; अणसमजु(२)पुं० अज्ञानता; अजाण
अज़ान पुं०[अ.] बांग; अज्ञान
अज़ाब पुं०[अ.]दु.ख(२)संकट(३)पाप
अजायब पुं० [अ.] अजब—विचित्र वस्तु ('अजीब'नुं ब०व०)
अजायब-खाना,-घर पुं० म्यूझियम
अजिन पुं० [सं.] मृगचर्म
अजी अ०[सं. अयि] बोलाववा माटे-नो 'हे' 'ए' ए भावनो उद्गार
अज़ीज़ वि०(२)पुं०[अ.]अजीज;प्यारुं (२) सगुंसंबंधी [विलक्षण
अज़ीब वि० [अ.] अजब; विचित्र;
अज़ीम पुं०[अ.] वृद्ध अने पूज्य(२) वि०विशाळ; बहु मोटुं [पीडन
अज़ीयत स्त्री० [अ.] अत्याचार; पर-
अजीरन,अजीर्ण पुं०अजीरण; अपचो
अजूबा वि०[अ.] अजायब;अद्भुत
अज़ो पुं० [अ.अज्व]भाग; हिस्सो
अजोता पुं०[अ+जोतना]चैत्री पूर्णिमा (आ दिवसे बळद जोडाता नथी)
अज़्म पुं०[अ.] निश्चय
अज़्म-बिल-जज़्म पुं०[अ.] दृढ निश्चय
अटंबर पुं०ढेर;ढगलो [(२)संकोच
अटक स्त्री० अटक; अडचण; रुकावट
अटकना अ०क्रि० अटकवुं; रोकावुं(२) लाग्या रहेवुं; वळगवुं (३) विवाद करवो;झघडवुं
अटकर स्त्री०,अटकरना स०क्रि०जुओ 'अटकल', 'अटकलना'
अटकल स्त्री० अटकळ; अनुमान (२) अंदाज [मानवुं
अटकलना स०क्रि० अटकळवुं; अनु-
अटकल-पच्चू पुं० कपोळकल्पना(२) वि०उटपटांग; ख्याली (३) अ० अध्धर; अंदाजथी [के धन
अटका पुं०जगन्नाथजीने चडावातो भात
अटपट वि० (स्त्री० अटपटी) अटपटुं; अघरुं;कठण;गूढ (२) उटपटांग; ठेकाणा वगरनुं
अटपटाना अ०क्रि० अटकवुं;लथडावुं; गूंचावुं;गभरावुं [नी चोपडी
अटलस पुं०एटलास;भूगोळना नकशा-
अटाला स्त्री०[सं.अट्टाल] ढगलो (२) सरसामान(३)कसाईवाडो
अटेरन पुं० अटेरण(२) घोडाने चक्कर फेरववानी रीत (३) कुस्तीनो एक दाव

अटेरना स०क्रि० अटेरणथीं सूतर उतारवुं;अटेरवुं(२)खूब दारू पीवो

अट्ठा पुं० गंजीफानो अठ्ठो

अट्ठाईस वि०अठ्ठावीस;२८

अट्ठानवे वि०अठ्ठाणुं;९८

अट्ठावन वि०अठ्ठावन;५८

अट्ठासी वि०अठ्ठयासी;८८

अठखेली स्त्री० विनोद; खेल (२) चपळता (३) मस्तानी चाल

अठत्तर वि०'अठहत्तर'; इठ्ठोतेर;७८

अठन्नी स्त्री०आठआनी

अठवन्ना पुं०वणवानो ताणो जेनी पर लपेटी रखाय छे ते वांस के लाकडी('अठवाडुं' सरखावो)

अठमासा पुं० अषाढथी महा सुधी खेडाती रहेती शेरडीनी जमीन के खेतर [गीनी

अठमासी स्त्री०आठ मासानो सोनैयो;

अठवाँसा पुं०जुओ 'अठमासा'(२)वि० आठ मासे जन्मेलुं

अठवारा पुं०अठवाडियुं

अठहत्तर वि०'अठत्तर';इठ्ठोतेर

अठारह वि०अढार;१८

अठासी वि०इठ्ठयासी;'अट्ठासी'

अठोतरी स्त्री०१०८ दाणानी जपमाळा

अड़ंगा पुं० रुकावट; विघ्न.–डालना, –लगाना=अडचण करवी; वचमां आववुं(२)अडंगो;कुस्तीनो एक दाव(३)स्त्री०जथाबंध माल थाय के वेचाय ते धाम

अड़ पुं० हठ; जीद

अड़चन(–ल) स्त्री०अडचण; मुश्केली

अड़तालीस वि० ४८; अडताळीस

अड़तीस वि० ३८;आडत्रीस

अड़दार वि० अडियल(२)मस्त

अड़ना अ०क्रि०अडवुं;रोकावुं (२) हठ करवी;मंड्या रहेवुं

अड़बंग वि०पुं०ऊंचुंनीचुं;असमान(२) विकट;दुर्गम(३)विलक्षण;अनोखुं

अड़सठ वि०अडसठ; ६८

अड़ान स्त्री०थोभवानी जगा; पडाव

अड़ाना स०क्रि०अटकाववुं;रोकवुं (२) वचमां वस्तु नाखी रोकवुं; ठांसवुं; सीडवुं(३)पुं०एक राग;अडाणो

अड़ियल वि०अडियल(२)सुस्त;जड

अड़ूसा पुं०[सं. अटरूष]अरडूसो

अडोल वि०अडग;स्थिर

अड़ोसपड़ोस पुं० आडोशपाडोश; आसपास

अड़ोसीपड़ोसी पुं० आडोशीपाडोशी; आडोशपाडोशमां पासे रहेनार

अड्डा पुं० [सं. अट्टा] थोभवानी जगा (२)अड्डो (३)केन्द्र;धाम(४)पंखीने वेसवा पांजरामां होय छे एवी

आडी(५)नाडुं वणवा के भरतकाम जेवामां वपरातुं लाकडानुं चोकठुं
अड्रेस स्त्री० [इं] सरनामुं; ठेकाणुं
अढ़तिया पुं०[हिं. आढ़त] आडतियो; दलाल [काम कहेवुं
अढ़वना स०क्रि०(प.)काम वळगाडवुं;
अढ़ाई वि०अढी
अढुक पुं०ठोकर [अढेलवुं
अढुकना अ०क्रि० ठोकर खावी (२)
अढ़ैया पुं० अढी शेरनुं तोल या माप (२)अढियानो गडियो
अतर पुं० [अ. इत्र] अत्तर
अतरदान पुं०[फा. इत्रदान]अत्तरदानी
अतरसों अ०[सं.इतर+श्वः]परम दिवसथी पहेलांनो दिवस के ते पछी आववानो दिवस;त्रीजे दिवसे
अतवार पुं० [अ. 'तौर' नुं ब०व०] रहेणीकरणी;चालचलगत
अता पुं० [अ.] दान; भेट. –करना= आपवुं. –लेना=अपावुं; मळवुं
अताई वि०[अ. अता] दक्ष; प्रवीण (२) पक्कुं; चालाक (३) जाते कुदरती बक्षिसथी शीखी ले एवुं
अताब पुं० 'इताब' जुओ
अतालीक़ पुं० [तु.] उस्ताद; शिक्षक
अतिया पुं० [अ.] भेट-दाननी चीज
अतिरिक्त अ०[सं.]सिवाय; बाद करतां (२) वि० अतिरिक्त; वधारेनुं
अतीस पुं०[सं.] एक वनस्पति-औषधि
अतुराई स्त्री० आतुरता; जलदी (२) चंचळता; चपळता [थवुं
अतुराना अ०क्रि० आतुर के उतावळा
अत्तवार पुं०आतवार;रविवार;'इतवार'
अत्तार पुं० [अ.] अत्तारी; अत्तरियो
अथक वि० अथाक; न थाके एवुं; अविश्रांत
अथमना, अथवना अ०क्रि० आथमवुं
अथरा पुं० (स्त्री० अथरी) माटीनुं कूंडुं
अथ च अ० [सं.] अने; वळी
अथाई स्त्री० मंडळीने बेसवानो चोतरो; ओटलो (२) मंडळी
अथान (–ना) पुं० अथाणुं
अथाह वि० अथाग; अपार (२) अगाध; अति ऊंडुं (३) पुं० ऊंडो खाधरो (४) समुद्र
अथिर वि० (प.) अस्थिर
अथोर वि० (प.) थोडुं नहीं; बहु
अद(–दा)ग वि० डाघा वगरनुं; निष्कलंक
अदद स्त्री० [अ.] संख्या के तेना अंक
अदन पुं० [अ.] आदमने बनावीने जे बागमां खुदाए राखेलो मनाय छे ते बाग
अदना वि० [अ.] मामूली; सामान्य

(२) क्षुद्र; नम्र; अदनुं —व आला =नानां मोटां बधां

अदब पुं० [अ.] अदब;विवेक; आदर. —करना=आदरथी वर्तवुं; मान आपवुं. —देना=विवेक शीखववो (२) शिक्षा करवी; दंडवुं

अदबदाकर अ०अवश्य; जरूर; टेकथी

अदम पुं० [अ.] अभाव; न होवुं ते. उदा० अदम पैरवी=केसमां जरूरी पेरवी न करवी ते. अदम सबूत=प्रमाणनो अभाव

अदरक पुं० आदुं

अदल पुं० [अ.] न्याय; इन्साफ

अदल-बदल पुं० अदलाबदली; फेरफार

अदवान स्त्री० खाटलाना वाणने तंग करवानी दोरी (पांगतनी)

अदविया(०त) स्त्री० [अ.] 'दवा'नुं ब०व०

अदहन पुं० [सं. आदहन] आधण

अदा वि०[अ.] चूकतुं; चूकवेलुं (२) स्त्री०हावभाव; नखरां(३)ढंग

अदाग वि० 'अदग'; निष्कलंक; पवित्र

अदायगी स्त्री०अदा—चूकते थवुं ते

अदालत स्त्री०[अ.] अदालत; कचेरी (२)न्यायाधीश

अदालती वि०अदालतने लगतुं (२) अदालतमां लडनार

अदावत स्त्री०[अ.]अदावत; वेर

अदावती वि० वेरी; अदावत राखनार

अदीठ वि०[सं. अदृष्ट] न दीठेलुं(२) गुप्त; छूपुं [शिक्षक

अदीब पुं०[अ.] विद्वान; पंडित (२)

अदीम वि०[अ.]नष्ट(२)अप्राप्य

अदू पुं०[अ.] शत्रु; वेरी

अदेखी वि०अदेखुं; देखी न शके एवुं

अदेस पुं०आज्ञा(२)(साधुओमां)प्रणाम

अदेह वि०[सं.]अदेही(२)पुं० कामदेव

अधंग पुं०अर्धांग; पक्षाघात

अधंगी वि०अर्धांगनुं रोगी

अध वि०[सं. अर्द्ध] (समासमां) अर्धुं. उदा० 'अधकचरा'

अधकपारी(—ली) स्त्री० आदासीसी

अधकहा वि०अस्पष्ट के अर्धुं कहेलुं

अधन्ना पुं०,अधन्नी स्त्री० ढबु; मोटो पैसो; अर्ध आनो

अधपई स्त्री०[हिं. आधा+पाव] अर्ध पाशेर (बंगाली) जेटलुं माप के तोल; पाशेरी के पाशेरो

अधबीच अ० अधवच; वच्चोवच

अधमरा,अधमुआ वि० अधमूउं

अधवा स्त्री०[सं.]विधवा

अधसेरा पुं०अच्छेरो

अधाधुन्ध अ०अंधाधूंधी होय तेम

अधावट वि०अर्धुं उकाळेलुं (दूध)

अधिकाई स्त्री० (प.) अधिकता (२) वडाई; महिमा
अधिकाना अ०क्रि०अधिक थवुं; वधवुं
अधित्यका स्त्री० [सं.] पहाडी उच्च प्रदेश; 'टेबल लेन्ड'
अधिया स्त्री०अर्धो भाग (२) अर्धनी भागीदारी(३)पुं०अर्धो भागीदार
अधियाना स०क्रि०अर्धुं करवुं; अर्धु अर्धु वहेंचवुं
अधियार पुं० जुओ 'अधिया'
अधियारिन स्त्री०'अधियार'नुं स्त्री०
अधियारी स्त्री० अर्धी भागीदारी
अधिवेशन पुं०[सं.]अधिवेशन; बेठक
अधूरा वि०अधूरुं;अपूर्ण. –**कर देना**= कमजोर करी देवुं. –**जाना**=गर्भ-पात थवो.–**होना**=अणसमजु होवुं
अधेड़ वि० आधेड
अधेला पुं० अधेलो; अर्धोजी
अधेली स्त्री० आठआनी; अरधो
अधोतर पुं० एक जातनुं जाडुं कपडुं
अन नकारवाचक उपसर्ग (हिंदी शब्दोमां, गुजराती 'अण' पेठे, वपराय छे. उदा०अनगढ़)
अन-अहिवात पुं० विधवापणुं; रंडापो
अनइस वि० बूरुं; खराब; 'अनैस'
अनकरीब अ० [अ.]नजीक; पासे
अनख पुं०[सं०अन्+अक्ष] क्रोध (२) ईर्षा; द्वेष (३) नजर न लागे ते माटे करातुं काजळनुं टपकुं
अनखाना अ०क्रि० गुस्से थवुं; चिडावुं
अनखाहट पुं० क्रोध; नाराजगी
अनगढ़ वि०(स्त्री,–ढ़ी) घडया वगरनुं (२)स्वयंभू (३) बेडोळ; अणघड
अनगना वि०अगणित (२) पुं०गर्भनो आठमो मास
अनगिना वि० अगणित;'अनगना'
अनजान वि० अजाण; नादान (२) अज्ञात; अपरिचित
अनजाने अ० अजाण्ये;वगर समज्ये; असावधानीमां
अनत अ०(प.) अन्यत्र; बीजे स्थाने (२) [सं.] वि० न नमेलुं
अनदेखा वि० न देखेलुं; 'अदीठ'
अनन्नास पुं० अनेनास फळ
अनपच पुं० अजीर्ण;वदहजमी
अनपढ़ वि० अभण;निरक्षर;मूर्ख
अनबन पुं० अणबनाव
अनबोल(०**ना**,–**ला**) वि० मूंगुं (प्रायः पशु माटे)
अनब्याहा वि०(स्त्री०,-ही)अविवाहित; [कुंवारुं
अनबि(–बे)धा वि० वेध्या वगरनुं; अविद्ध
अनभल पुं०भलुं नहि ते; अहित. –**ताकना**=बूरुं ताकवुं

अनमन(–ना) वि० (स्त्री०,–नी) अन्यमनस्क; उदास; खिन्न

अनमिल वि०(स्त्री०,–ली)मेळ वगरनुं; असंवद्ध

अनमेल वि०मेळ वगरनुं;'अनमिल' (२)सेळभेळ वगरनुं; विशुद्ध

अनमोल वि०अमूल्य; उत्तम

अनरस पुं० रसहीनता (२)अरुचि(३) अणबनाव. –पड़ना=अणबनाव थवो

अनवट पुं० अणवट; स्त्रीनुं अंगूठियुं

अनवासना स०क्रि०नवुं वासण पहेल-प्रथम वापरवुं

अनसुना वि०(स्त्री०,–नी)न सांभळेलुं. **अनसुनी करना**=सांभळ्युं ना सांभळ्युं करवुं; ध्यान न देवुं

अनहोनी वि०स्त्री०असंभव (२) स्त्री० असंभव–विलक्षण वात

अनाकानी स्त्री० आंख आडा कान करवा ते (२)आनाकानी

अनाड़ी वि० (सं. अनार्य्य) अनाडी; नादान; अणसमजु

अनाप-शनाप पुं०नकामो बकवाट

अनामा स्त्री०अनामिका

अनायत स्त्री०[अ०] कृपा;महेरबानी

अनारी वि०जुओ 'अनाड़ी'(२)अनार-दाडमना रंगनुं; लाल

अनाह पुं०[सं.]पेट चडवानो एक रोग

अनी स्त्री० [सं.अणि] अणी(२)वस्तुनो आगळनो भाग(३)समूह; झुंड(४) सेना (५) [हिं. आन=मर्यादा] ग्लानि; खेद

अनीक पुं०[सं.]युद्ध(२)सेना (३) वि० [अ+हिं. नीक=अच्छुं] बूरुं;खराब

अनीठ वि०[सं. अनिष्ट] (प.) अनिष्ट; अप्रिय (२) खराब

अनीस पुं०[अ.] दोस्त (२) प्रेम के सहानुभूति राखनार

अनुनय पुं०[सं.] विनंती; प्रार्थना(२) मनाववुं ते

अनुभव पुं०[सं.]अनुभव (२) लागवुं, प्रतीत थवुं ते. –करना=खबर पडवी; मालूम थवुं

अनुसंधान पुं०[सं.]शोधखोळ; तपास

अनुसंधानना स०क्रि०(प.)खोळवुं(२) विचारवुं

अनूठा वि०[सं. अनुत्थ] (स्त्री०,–ठी) अनूठुं;अद्‌भुत(२)अद्वितीय;उत्तम

अनेरा वि०[सं. अनृल] (स्त्री०, –री) नकामुं;निष्प्रयोजन; व्यर्थ

अनैस वि०'अनइस';बूरुं

अनोखा वि० [सं. अन्+ईक्ष] अनोखुं

अन्ना स्त्री०[तु.] माता(२)धाव

अन्सर पुं०[अ.]मूळ तत्त्व

अपंग वि०अपंग;लूलुं(२)अशक्त
अपकाजी वि० स्वार्थी; मतलबी
अपघात पुं० [सं] आपघात(२) हत्या; हिंसा (३) विश्वासघात
अपढ़ वि० 'अनपढ़'; अभण
अपन सर्व०(प.)आपणे
अपना सर्व०[सं.आत्मनः](स्त्री०,–नी) पोतानुं (त्रणे पुरुषमां वपराय)(२) पुं० स्वजन. **अपनी अपनी पड़ना** =पोतपोतानी पडी होवी. **अपने तक रखना**=कोईने न कहेवुं
अपनाना स०क्रि० अपनाववुं; पोताने अनुकूळ के वश करवुं;पोतानुं करवुं
अपनापन पुं०, **अपनायत** स्त्री० अपनाववुं ते (जुओ 'अपनाना')
अपनेआप अ०आपोआप;पोतानी मेळे
अपाहिज वि० लूलुंलंगडुं; अपंग; काम न करी शके एवुं(२)आळसु
अपि अ० [सं.] वळी;पण(२)जरूर
अपितु अ०[सं.] परन्तु(२)बल्के
अप्रैल पुं० एप्रिल मास
अफ़आल पुं० [अ. 'फेल'नुं ब०व०] कृत्यो; करणी
अफ़ई पुं० [अ.] काळो नाग
अफ़ग़ान [अ.] अफघान; काबुली
अफ़ज़ल वि० [अ.] उमदा; सर्वोत्तम
अफ़ज़ाइश स्त्री० [फ़ा.] वृद्धि; वधारो
अफ़तारी स्त्री०उपवासनुं–रोजानुं पारणुं
अफ़्यून स्त्री० [फा.] अफीण
अफरना अ०क्रि० पेट भरीने खावुं; धरावुं (२) अफरावुं (३) 'ऊबना'; अरुचि थवी
अफरा पुं० आफरो
अफलातून पुं. [अ.] प्लेटो (२) बहु अभिमानी माणस [खबर
अफ़वाह स्त्री० [अ.] अफवा; ऊडती
अफ़शा वि० जुओ 'इफ़शा'
अफ़सर पुं० ऑफिसर
अफ़साना पुं० [फा.] कहाणी; कथा
अफ़सुरदा वि०[फा.] दुःखित;मूंझायेलुं
अफ़ीम स्त्री० अफीण
अफ़ीमची, अफीमी पुं०अफीणियो; अफीणनो व्यसनी
अफ़ू. पुं०[अ. अफ्व] क्षमा;माफी
अफ़ूनत स्त्री०[अ.]बदबो; दुर्गंध
अब अ० आ वखते;हमणां; हवे.–**तब होना या लगना**=मरणघडी आववी.–**तब करना**=आज काल करवी; बहानुं काढी ढील करवी
अबखरा पुं०[अ.]बाफ; बराळ
अबतर वि० [फा.] बूरुं; खराब (२) बगडेलुं; भ्रष्ट [बगाड
अबतरी स्त्री० खराबी (२) अवनति;
अबद स्त्री०[अ.]अनंतता;असीमता

अबदी वि०[अ.] अनंत;अमर

अबरक पुं०[सं. अभ्रक] अबरख

अबरा पुं० [फ़ा.] 'अस्तर'नुं ऊलटुं; उपलुं कपडुं

अबरी स्त्री०[फ़ा.]एक जातनो चीकणो कागळ(२)एक पीळो पथ्थर

अबरू स्त्री० आंखनी भमर; 'अब्रू'

अबलक़(-ख़) वि० [अ.] काबरचीतरुं; सफेद अने काळा के लाल रंगनुं

अबवाब पुं० [अ.] ('बाब'नुं ब०व०) अध्याय (२) एक मुसलमानी कर

अबस अ० [अ.] व्यर्थ; नाहक

अबा पुं०[अ.] डगला नीचे पहेरवानुं ढीलुं कपडुं

अबादान, अबादानी जुओ 'अवादान,' 'अवादानी' [पक्षी

अबाबील स्त्री०[फा.]काळा रंगनुं एक

अबीर पुं०[अ.] अबील

अबीरी वि०[अ.] अबीलना रङ्गनुं(२) पुं० तेवो रङ्ग

अबुहाना अ०क्रि०धूणवुं; 'अभुआना'

अबे अ०(नाना के ऊतरता माणस माटे संबोधन) ए, अल्या.-**तबे करना** =निरादरसूचक बोलवुं

अबेर स्त्री०(प.)[सं. अवेला]विलम्ब

अबोला पुं०रिसाईने न बोलवुंते; अबोला

अब्बा पुं०[फा.] बाप

अब्बास पुं० [अ.] एक फूलझाड

अब्र पुं०[फा.]अभ्र; वादळ

अब्रू स्त्री० [फ़ा.] जुओ 'अबरू'

अभिसरना अ०क्रि० (प.) जवुं(२)इष्ट जगाए के प्रियने मळवा जवुं

अभी अ०(हिं. अब+ही) हमणां ज; अवघडी

अभुआना अ०क्रि०[सं. आह्वान] भूत आव्युं होय एम धूणवुं ने हाथ पग हलाववा

अमका पुं०[सं. असुक]असुक; फलाणो

अमचूर पुं० आमचूर [बचाव

अमन पुं०[अ.]शांति;चेन (२) रक्षण;

अमन-अमान पुं० सुखशांति;सुखचेन

अमराई स्त्री०, **अमराव** पुं० अमराई; आंबावाडियुं

अमराज पुं०[अ. 'मर्ज'नुं ब०व०]रोग

अमरू पुं०एक जातनुं रेशमी कपडुं

अमरूत (-द) पुं०[फ़ा. ?] जामफळ

अमरैया पुं०(प.) अमराई;आंबावाडियुं

अमलतास पुं०गरमाळानी सींग

अमला पुं० [अ.] कचेरीमां काम करनार; अमलदार

अमली वि०[अ.]अमलमां आवनारुं; व्यावहारिक(२)अमल करनारुं(३) नशेबाज;केफी [मोतो

अमवात स्त्री० ब०व० [अ.] मरणो;

अमहर पुं० काची छोलेली केरीनी सूकी चीर;चीरियुं

अमानत स्त्री०[अ.]अनामत राखवुं ते के तेम राखेली वस्तु

अमानतदार पुं०अनामत राखनार; जेने त्यां अनामत रखाय ते

अमाना अ०क्रि० समावुं; पूरुं मावुं (२)फुलावुं; गर्व करवो

अमानी स्त्री०[अ.]मजूर पासे रोजी के पगार पर जाते काम कराववुं ते (२) वि० [सं.] मान वगरनुं; निरभिमानी;नम्र

अमारी स्त्री०[अ.] अंबाडी

अमावट स्त्री०केरीना रसने सूकवीने करेलो पापड (२) एक जातनी माछली

अमाल पुं०[अ.]हाकेम;अमल करनार

अमामा पुं०[अ.] जुओ 'अम्मामा'

अमावस स्त्री०अमास;अमावस्या

अमिताभ पुं०[सं.]बुद्धदेव

अमिट वि०(स्त्री०,–टा)मटी न शके एवुं;स्थायी(२)अटल; अवश्यंभावी

अमिय पुं०[सं. अमृत]अमृत;अमी

अमिली स्त्री०'इमली'; आमली (२) मेळ न होवो ते;अणबनाव

अमी पुं०(प.)अमी; अमृत [अमलदार

अमीन पुं० [अ.] अदालतनो एक

अमीराना वि०[अ.] अमीरना जेवुं; अमीरी

अमृतबान पुं०माटीनुं रोगान करेलुं वासण (घी, अथाणुं इ० राखवानुं)

अमोला पुं०आंबानो नवो छोड

अमौआ पुं०केरीना सूका रस जेवो रङ्ग के तेवा रङ्गनुं कपडुं

अम्दन् अ०[अ.]जाणीजोईने;इरादाथी

अम्माँ स्त्री०अम्मा;मा

अम्मामा पुं०(अ.)एक प्रकारनो मोटो (मुसलमानी) फेंटो

अम्र पुं०[अ.]वात;अर्थ;मुद्दो; कहेवानी मतलब; विषय (२)आज्ञा; विधि. –व निही=विधिनिषेध

अम्हौरी स्त्री० अळाई

अयान वि०(स्त्री०,–नी)अजाण;अज्ञान (२) [सं.] वाहन वगरनुं; पगपाळुं

अयानत स्त्री०[अ.] सहायता

अयाल पुं० [फा.] घोडा के सिंहनी केशवाळी; याळ

अयाँ वि०[अ.]साफ;स्पष्ट

अय्याका वि०[अ.]विलासी; विषयी

अय्यार पुं०[अ.]खंधो, चालाक माणस

अरंड पुं०एरंडो

अरंड-ककड़ी स्त्री० एरणकाकडी; पपैयुं

अरई स्त्री०हांकवानी परोणी

अरक़् पुं०[अ.]अर्क; कस(२) परसेवो.

-उतारना,-खींचना,-निकालना =अर्क काढवो. अरक अरक होना =पसीनाथी भींजाई जवुं; परसेवो परसेवो थई जवुं [करनार

अरकाटी पुं०गिरमीटियाओनी भरती

अरग,अरगजा पुं०[सं.अगरु] अरगजो

अरगजी वि०अरगजाना जेवा रंग के सुगंधवाळुं

अर(-ल)गनी स्त्री० वळगणी

अरग़वानी पुं०[फा.]लाल रंग (२) वि० घेरुं लाल

अरगाना अ०क्रि० (प.) चूप रहेवुं

अरघा पुं०[सं. अर्घ]अर्घ्य आपवानुं एक पात्र (२) शिवलिंग जेमां स्थापित कराय छे ते

अरथी स्त्री०ठाठडी

अरदना स०क्रि० [सं. अर्द] कचडवुं; मर्दन करवुं [पटावाळो

अरदली पुं०[अं. ऑर्डरली]चपरासी;

अरदास स्त्री०[फा. अर्ज़दाश्त]विनंती; प्रार्थना; अरजी (२) भेट

अरना पुं०(स्त्री०,-नी) जंगली पाडो (२) सुकाई गयेलुं छाण, जे बाळवामां वपराय छे (३) अ०क्रि० जुओ 'अड़ना'

अरनी स्त्री०[सं.अरणी]अरणीनुं झाड

अरबा वि०[अ.] चार; ४

अरबाब पुं०ब०व०[अ.] मालिक

अरमान पुं०[फा.] इच्छा; चाह; होंश

अरराना अ०क्रि० अरर एवो शब्द काढवो; अरेराटी छूटवी

अरवा पुं०ताको; गोख

अरवाह स्त्री०ब०व० [अ.] अरवा; आत्मा(२)फिरस्ता; देवदूतो

अरवी स्त्री०एक कन्द; अळवी

अरसट्टा पुं०अडसट्टो; अंदाज

अरसना-परसना स०क्रि०स्पर्शवुं; भेटवुं

अरसा पुं०[अ.] अरसो; समय; मुदत

अरहट पुं०[सं. अरघट्ट]रहेंट

अरहन पुं०[सं. रंधन] (शाक, कढीमां नंखातो) चणानो लोट

अरहर स्त्री०तुवेर

अराक पुं०[अ.इराक] इराक देश के त्यांनो घोडो

अराज़ी स्त्री०[अ.]जमीन(२)खेतर

अरी अ० [सं. अयि?] स्त्री माटेनुं संबोधन; 'हे'

अरीज़ा वि०[अ.] निवेदित; अरज करायेलुं (२)पुं०अरजी

अरु अ०(प.)अने; 'और' [खावुं

अरोगना स० क्रि० [प.] 'आरोगना';

अर्क़-रे-ज़ी स्त्री० [अ+फा]खूब महेनत

अर्ज़ स्त्री०[अ.] विनंती; अरज; प्रार्थना (२)पुं०पनो;चोडाई(३)जमीन

अर्ज़दाश्त स्त्री० [फा.] अरजी; विनंतीपत्र
अर्ज़ी स्त्री० [अ.] अरजी; 'अर्जदाश्त'
अर्थात् अ० [सं.] याने; एटले के
अर्श पुं० [अ.] मुसलमानो माने छे ते सौथी ऊंचुं - खुदानुं धाम. **-पर चढ़ाना**=खूब तारीफ करवी. **-पर दिमाग़ होना**=बहु अभिमान होवुं
अलंग पुं० बाजू; तरफ
अल [सं.] वींछीनो डंख; झेर
अलकतरा पुं० [अ.] डामर
अलख वि० अलख; अगोचर. **-जगाना** =पोकारीने प्रभुस्मरण करवुं; अलख जगाववी
अलखधारी, अलखनामी पुं० 'अलख' 'अलख' पोकारी भिक्षा मागनार एक जातनो साधु
अलगनी स्त्री० जुओ 'अरगनी'
अलग़रज़ी वि० [अ.] बेपरवा
अलगाई स्त्री० अलगपणुं
अलगाना अ० क्रि० अलग थवुं; छूटुं पडवुं (२) स० क्रि० अलग करवुं; हठाववुं [जातनी वांसळी
अलग़ोज़ा पुं० [अ.] अलगोजा-एक
अलपाका पुं० आलपाको; 'आलपाका'
अलफ़ाज़ पुं० [अ० 'लफ्ज'नुं ब० व०] शब्दो (२) पारिभाषिक शब्द
अलबत्ता अ० [अ.] अलबत्त; बेशक
अलबम पुं० [फा.] 'आल्बम'; चित्रो संघरवानी पोथी
अलबेला वि० (स्त्री०,-ली) [सं. अलभ्य+हिं. प्रत्यय ला] अलबेलुं; फांकडुं (२) सुन्दर; अनोखुं
अलबी-तलबी स्त्री० अरबी फारसी के कठण उर्दू
अलम पुं० [अ.] दुःख (२) झंडो
अलमस्त वि० [फा.] अलमस्त; मदमत्त; चकचूर (२) मस्तानी; बेफिकर
अलमारी स्त्री० अलमारी; कबाट
अलमास पुं० [फा.] हीरो [वगरनुं
अलल-टप्पू त्रि० अलेलटप्पु; ठेकाणा
अलल-बछेड़ा पुं० [हिं. अल्हल+बछेड़ा] घोडानो वछेरो (२) अल्लड आदमी
अललाना अ० क्रि० चीस पाडवी; गळुं फाडीने बोलवुं
अलवाँती वि० स्त्री० [सं. बालवती] प्रसूता
अलवाई वि० स्त्री० एक बे मासनी वियायेली (गाय, भैंस); 'बाखडी'-थी ऊलटुं
अलवान पुं० [फा.] ऊनती चादर
अलसान, अलसानि (प.) स्त्री० आळस; सुस्ती (२) शिथिलता [सुस्त थवुं
अलसाना अ० क्रि० आळसमां पडवुं;
अलसी स्त्री० [सं. अतसी] अळसी

अलसेट स्त्री० (प.) ढील (२) अडचण (३) झगडो
अलसेटिया वि० 'अलसेट' करनारुं
अलसौंहा वि०(स्त्री०–ही)आळसयुक्त; सुस्त [परोढिये
अलस्सुबाह अ० [अ.] वहेली सवारे;
अलहदा वि० [अ.] इलायदुं; अलग
अलान पुं०[सं. आलान] हाथीनुं अलान
अलानिया अ०[अ.] खुल्लंखुल्ला; स्पष्ट
अलापना अ०क्रि० बोलवुं; वातचीत करवी (२) गावुं
अलामत पुं० [अ.] निशानी; चिह्न
अलार पुं० 'अलाव' जुओ (२) [सं.] कमाड
अलाल वि० आळसु (२) नवरुं; नकामुं
अलालत स्त्री०[अ.] बीमारी; 'अलील' परथी नाम
अलाव पुं० [सं. अलात] अलाव; आगनो ढेर; तापणी
अलावा अ० [अ.] सिवाय
अलिंजर पुं०[सं.]माटीनो पाणीनो घडो
अलिंद पुं० [सं.अलीन्द्र] भमरो (२) [सं.]घरना द्वार आगळनो ओटलो के छजुं
अली पुं० [सं. अलि] भमरो (२) [सं.आली] सखी (२) पंक्ति
अलील वि० [अ.] बीमार
अलुमीनम पुं० एल्युमिनियम धातु
अलोना वि० [सं. अलवण] अलूणुं; फीकुं; अस्वाद
अल्कत वि० [अ.] रद के समाप्त करेलुं
अल्काब पुं० [अ.] इलकाब
अल्ल पुं० [अ. आल] अटक; उपनाम
अल्लाना अ०क्रि० जुओ अललाना
अल्लम गल्लम पुं० नकामो बकवाद; अगडंबगडं
अल्लाह पुं० [अ.] अल्ला; ईश्वर
अल्लाहताला पुं० खुदा-ताला
अल्लाह–बेली श०प्र० [अ.] ईश्वर सहाय छे. (विदाय वेळानो बोल)
अल्–विदा पुं० [अ.] रमजानना छेल्लो शुक्रवार [ठीक
अल्–हक अ० [अ.] खरेखर (२) हा;
अल्हइत पुं०'आल्हा'छंदनुं गीत गानार
अल्हड़ वि० अल्लड; नादान
अवगतना स०क्रि० [सं. अवगत] समजवुं; विचारवुं
अवगाहना अ०क्रि० नाहवुं (२) डूबकुं मारवुं (३) स०क्रि० ऊंडा ऊतरी विचारवुं; तपासवुं
अवघट वि० विकट; दुर्गम; कठण
अवचट अ० 'औचट'; अचानक (२) पुं० मुश्केली; संकडामण
अवटना स०क्रि० 'औटना'; उकाळवुं

अवडेर पुं० झंझट; बखेडो; गरबड; फेर; चक्कर [फसाववुं

अवडेरना स०क्रि० फेर–चक्करमां नांखवुं;

अवडेरा वि० चक्करमां नांखे एवुं; झंझटवाळुं; गरबडियुं

अवन पुं०[सं.] रक्षण (२) (प.) अवनि

अवरेखना स० क्रि० लखवुं; चीतरवुं (२) अनुमानवुं; कल्पवुं; मानवुं

अवरेब पुं० 'औरेब'; वक्रगति (२) कपडानो वांको काप (३) कठिनाई (४) झगडो; खेंचताण

अवलंघना स० क्रि० लांघवुं

अवसि अ० अवश्य

अवसेर स्त्री०[सं. अवसर] विलंब;ढील (२) चिंता; फिकर (३) हेरानगत

अवसेरना स०क्रि० पजववुं; दुःख देवुं

अवाँ(–वा) पुं० 'आवाँ'; कुंभारनी भठ्ठी

अवाई स्त्री० (हिं० आना) आववुं ते

अवाम पुं० [अ.] आम-जनता

अवाम–उन्नास पुं० 'अवाम' जुओ

अवायल वि० [अ.] प्राथमिक; शरूनुं ('अव्वल'नुं ब०व०)

अवार पुं० [सं.] नदीनो आ किनारो; 'पार'थी ऊलटुं [अवेज

अवेज पुं० [अ. एवज़] (प.) बदलो;

अवेर स्त्री० ढील; मोडुं थवुं ते;वार

अव्वल वि० [अ.] अवल; पहेलुं (२) उत्तम; श्रेष्ठ (३) पुं० शरूआत; आदि. उदा० 'अव्वल से आखिर तक'

अशकुन पुं० अपशकन

अशख़ास [अ. 'शख्स'नुं ब० व०] घणा माणसोनुं टोळुं; जनसमूह

अशजार पुं० [अ.] झाडी; वृक्षसमूह

अशिया स्त्री० [अ.] चीजो; वस्तुओ

अशरफ़ पुं० भलो माणस; मोटेरो

अशराफ़ वि० शरीफ; भलुं (माणस)

अश्क पुं० [फा.] आंसु

अस वि० (प.) आवुं; आ प्रकारनुं (२) समान; तुल्य

असबाब पुं० [अ.] चीज;वस्तु;सामान

असर पुं० [अ.] असर; प्रभाव

असरार अ० लगातार; सतत

असल वि० [अ.] खरुं; साचुं (२) उच्च; श्रेष्ठ (३) शुद्ध; भेळसेळ वगरनुं (४) अकृत्रिम (५) पुं० जड;मूळ;पायो

असलह पुं०[अ.] शस्त्र;हथियार

असलियत स्त्री०[अ.] साच;तथ्य(२) मूळतत्त्व; सार (३) जड; मूळ

असली वि०खरुं (२) मूळ;मुख्य (३) शुद्ध; निर्भेळ

असवार पुं० सवार

असा पुं०[अ.] सोटो; दंडो

असाढ़ पुं०[सं. आषाढ] अषाढ मास

असामी पुं०[अ. आसामी] आसामी; व्यक्ति(२)देणदार(३)सांथियो(४) अपराधी(५) स्त्री० वेश्या; रखात (६) नोकरी;जगा

असालत स्त्री०[अ.]कुलीनता (२) सत्य

असालतन् अ०[अ.] स्वयं;खुद

असास पुं०[अ.] जड;पायो;मूळ

असासा पुं० [अ.] असबाब;माल; सम्पत्ति

असिस्टंट वि० [इं] मददनीश; सहायक

असीर पुं०[फा.] केदी

असील वि०[अ.] खानदान(२)सुशील

असीस स्त्री०(प.)आशिष

असीसना स०क्रि०आशिष देवी

असु पुं० (प.) अश्व(२) अ० आशु; शीघ्र(३)[सं.] प्राण

असूझ वि० अंधकारमय (२) अपार (३) विकट;कठण

असूल पुं०जुओ 'उसूल' तथा 'वसूल'

असेसर पुं०[इं.] एसेसर

असोज पुं० [सं. अश्वयुज्] आसो मास

अस्तबल पुं०[अ.] तबेलो;घोडाशाळ

अस्तर पुं०[फा.] नीचेनुं पड के थर (२) कपडानुं अस्तर

अस्तरकारी स्त्री०[फा.] चूनाथी धोळवुं के प्लास्टर करवुं ते

अस्तुति स्त्री० स्तुति(२)[सं.]निंदा;बूराई

अस्तुरा पुं०[फा.] अस्तरो

अस्नान पुं०(प.) स्नान

अस्प पुं०[फा.] अश्व

अस्पताल पुं० इस्पिताल;हॉस्पिटल

अस्मत स्त्री०[अ.] पापभीरुता (२) स्त्रीनुं पातिव्रत्य

अहक स्त्री०(प.) इच्छा

अहकना अ०क्रि० प्रबळ इच्छा करवी

अहक़र वि०[अ.]अति तुच्छ

अहकाम पुं०[अ. 'हुक्म'नु ब०व०] आज्ञाओ; हुकमो

अहतमाल पुं०[अ.]भय;आशंका

अहद पुं०[अ.]वायदो;करार(२)सलाह

अहदनामा पुं०[फा.] करारनामुं (२) सुलेहनामुं

अहदी वि० [अ.] आळसु (२) नवरुं; नकामुं(३)पुं०अकबरना समयनो एक सिपाही जेने बोलावे त्यारे ज कामे आवे, बाकी बेठो रहेतो

अहना अ०क्रि०[सं. अस्]होवुं(आनां 'अहैं' 'अहा' एवां ज रूपो वर्तमान छे)

अहमक़ वि०[अ.] बेवकूफ; मूर्ख

अहरन स्त्री० [सं. आधरण] एरण

अहरा पुं०[सं.आहरण]जेरणांनो ढग के तेनी आग (२) पाणीनो मोटो

जमाव ज्यांथी खेतरोमां पाणी लेवाय [कूंडी

अहरी स्त्री०परब(२)होज के पाणीनी

अहल पुं०[अ.]व्यक्ति; जण(२)मालिक

अहलकार पुं० [फा.] काम करनार; गुमास्तो; नोकर [नोकर

अहलमद पुं०[फा.]अदालतनो एक

अहवाल पुं०[अ.]हेवाल;समाचार(२) दशा; हालत [उपकार

अहसान पुं० [अ.] अहेसान; भलाई;

अहाता पुं० [अ.] वाडो (२) चारे तरफनी वाड के दीवाल

अहारना स०क्रि०आहार करवो (२) चोटाडवुं(३)कपडामां आर नाखवो

अहाहा अ० हर्षनो उद्गार

अहिनी स्त्री० [सं. अहि]सापण

अहिवात स्त्री०हेवातण;स्त्रीनुं सौभाग्य

अहिवाती वि०स्त्री० सौभाग्यवती; सधवा [गोवाळ

अहीर पुं०[सं.](स्त्री० –रिन)आहीर;

अहेर पुं०[सं.आखेट]शिकार के तेनो भोग थनार प्राणी

अहेरी पुं० शिकारी (ते जातनो के शिकार करनारो माणस)

अहोरा-बहोरा पुं०विवाहनी एक रीत (जेमां कन्या सासरे जई ते ज दहाडे पाछी पियर आवे छे) (२)अ०(प.)वारंवार

आ

आँकड़ा पुं० आँकडो; संख्या

आँकना स०क्रि० आंकवुं;परीक्षा करवी

आँकर वि०[सं. आकर] ऊंडुं (२) घणुं (३)[सं. अक्रय्य] मोंघुं

आँकुस पुं० अंकुश

आँकू पुं० आँकनारो

आँगन पुं० आंगणुं; घरनो चोक

आँख स्त्री०आंख(२)दृष्टि;नजर;ध्यान (३) विचार; विवेक (४) परख; पिछान (५) कृपादृष्टि (६)संतान; वाळक. **–आना या उठना**=आंख आववी. **–उठाना**=जोवुं ताकवुं (२)बूरुं ताकवुं. **–उलट जाना**= (मरती वखते) आंखनी पूतळीओ ऊंचे चडी जवी. **–खुलना**=आंख ऊघडवी(२) भ्रम टळवो; समजवुं. **–गड़ना**=आंख दुखवी (२) टक टक ताकवुं (३) इच्छाथी आंख

चोटवी. **आँखें चार करना, चार आँखें करना**=आंख सामे आववुं. **–चुराना या छिपाना**=आंख आडी करवी; सामे न जोवुं. **आँखें डबडबाना**=अ० क्रि० आंखमां आंसु आववां (२) आंखमां आंसु लाववां. **–निकालना**=आंख काढवी. **–बचाना**=सामे न आववुं; कतरावुं. **आँखें बिछाना**= प्रेमथी स्वागत करवुं (२) वाट जोवी. **–भर देखना**=बरोबर जोवुं. **–मारना**=आंखो मारवी; इशारो करवो. **–में चरबी छाना**= गर्वथी छकी जवुं. **आँखों में फिरना**=ध्यान पर चडवुं; याद रहेवुं. **आँखों में रात काटना**= कष्ट के चिंताथी रात जागवुं. **–लगना**=ऊंघथी आंख मळवी (किसीसे) **आँख लगना**=प्रेम थवो. **–लड़ना**=प्रेम थवो. **–सेंकना**= नेत्रसुख लेवुं. **–होना**=परख होवी; समज के विवेक होवो

आंगी स्त्री० जुओ 'अंगिया'

आंची स्त्री०बारीक कपडे मढेली चाळणी

आंच स्त्री० [सं. अर्चिस्] आंच;गरमी (२) आग (३) तेज (४)आघात; चोट (५) हानि; अनिष्ट (६) विपत; संकट (७) प्रेम; महोबत

आँचल पुं० अंचल; छेडो; पालव; 'अंचरा' (२) जुओ 'अँचला'

आँजना स०क्रि०आंजवुं;अंजन लगाववुं

आँट स्त्री० अंगूठा ने तर्जनी वच्चेनो हथेळीनो भाग (२) वेर (३) ओटी;गांठ (४) गड्डो; पूळो (५) दाव;जोग

आँटना अ०क्रि० जुओ 'अँटना'

आँट-साँट स्त्री० दावपेच; प्रपंच

आँटी स्त्री० आंटी (२) ओटी (३) सूतरनी आंटी (४) गिल्ली

आँठी स्त्री० [सं. अष्टि; प्रा. अट्ठि]दहीं, कफ इ०नो लोचो (२) गांठ (३) गोटली

आँत स्त्री० आंतरडुं

आँदू पुं० [सं. अंदू] बेडी; बंधन

आँधरा वि० आंधळुं

आँधी स्त्री० आंधी; जोरथी हवा वाई, धूळ धूळ थई जवी ते; सखत वावाझोडुं(२)वि० आंधी जेवुं तेज

आँब पुं० आंबो के केरी

आँबाहलदी स्त्री०'आमाहलदी';आँबा-हळदर

आँयबाँय स्त्री० 'अंडवंड';नकामी वात

आँव पुं० आम;काचो मळ

आँवठ पुं० धार; किनार

आँवड़ा वि० (प.) ऊंडुं
आँवल पुं० गर्भनी ओर [नाळ
आँवल-नाल स्त्री० जन्मेला बालकनो
आँवला पुं० [सं. आमलक]आमळुं
आँवलोहू पुं० आमनो रोग; मरडो
आँवाँ पुं० जुओ 'अवाँ'
आँसी स्त्री० मीठाई, जे मित्रोमां वहेंचाय छे [उद्गार
आँहाँ अ० आंहां, "ना" देखाडतो
आइ स्त्री० (प.) आयु
आइंदा वि० [फा.]आवनारुं;आगंतुक (२) पुं० भविष्य(३)अ० आगळ; भविष्यमां; हवे पछी
आई स्त्री० [हिं. आना] मृत्यु (२) 'आना'नुं भूतकाळ स्त्री० रूप(३) जुओ 'आइ'
आईन पुं० [फा.] नियम; कायदो
आईना पुं० [फा.] आयनो; आरसी. –होना=स्पष्ट होवुं. आईने में मुँह देखना=पोतानी लायकात विचारवी–जोवी [लगतुं
आईनी वि० [फा.] कानूनी; कायदाने
आक, आकड़ा पुं० आकडो
आकन पुं० खेडेला खेतरमांथी वहार फेंकेल घास झांखरां इ०
आक़बत स्त्री०[अ.] सांपराय; मरण पछीनी अवस्था;परलोक
आकला वि० आकळुं (स्त्री०–ली)
आकली स्त्री०आकुळता;व्यग्रता;बेचेनी
आका पुं०[सं. आकाय] भठ्ठी; चूलो
आक़ा पुं० [अ.] मालिक;धनवान;शेठ
आक़िल वि०[अ.]बुद्धिमान;अकलमन्द
आखर पुं०(प.) अक्षर
आखा पुं० जुओ 'आंधी' (२) वि० [सं. अक्षय] आखुं;पूरुं
आखातीज स्त्री० अखात्रीज
आख़िर वि०[फा.] अंतिम (२) पुं० आखर;अंत(३)अ० अंते;आखरे
आख़िरकार अ०[फा.] आखरे;अंते
आख़िरत स्त्री० [अ.] मरणदिन (२) कयामत (३) परलोक
आख़िरी वि० [फा.] आखरी;अंतिम
आखेट पुं० [सं.] शिकार
आखोट पुं० [सं. अक्षोट] अखरोट
आखोर पुं० [फा.] ओगाट(२)नकामी रद्दी वस्तु (३)वि०नकामुं; रद्दी
आग स्त्री०आग;ताप.–होना,–बबूला (बगूला) होना या बनना= क्रोधमां आवी जवुं
आगम पुं० [सं.] आगमन(२)भविष्य-काळ(३)बननारी वात(४) वेद; शास्त्र(५)वि०आगामी.–बांधना= आवनारी वात नक्की करवी. –करना=उपाय करवो

आगमजानी वि० भविष्यवेत्ता

आगमना पुं० [सं. आगमन] आगळ जनारी सेना(२) पूर्व दिशा (३) वि० (स्त्री० –नी) आगमनार–आगळ झूकनार; साहसिक

आगम-सोच(–ची) वि० अगमचेती-वाळुं;आगळनुं विचारनार; दूरदर्शी

आगर पुं०[सं. आकर] खाण (२)ढग; ढेर (३)निधि (४) मीठानो अगर (५)[सं. आगार] घर (६) छाज; छापरुं(७)वि०[सं. अग्र] श्रेष्ठ(८) दक्ष; चतुर

आगरी पुं० अगरियो

आगमी पुं० जोषी;भविष्य जोनार

आगल पुं०[सं.अर्गल] आगळो(२)वि० आगलुं (३) अ० आगळ; अगाउ

आग़ा पुं०[तुर्की] शेठ;आका

आगा पुं०कोई वस्तुनो आगलो भाग (२)छाती(३)मोढुं(४)कपाळ;माथुं अंगरखानो आगळनो भाग

आग़ाज़ पुं० [फा.] प्रारंभ; शरूआत

आगापीछा पुं०दुविधा;आनाकानी(२) परिणाम

आगाह वि० [फा.] वाकेफ

आगाही स्त्री० [फा.] जाण; खबर

आगिल(–ला) वि० (प.) आगळनुं; आगलुं (२) भविष्यनुं

आगे अ०'आगळ' जेवा बधा अर्थमां प्रयोग थाय छे

आचार पुं० [फा.] जुओ 'अचार'

आजकल अ०आजकाल;आ दिवसोमां. –लगना = मरण पासे आववुं

आज़म वि० [अ. अअज़म]बहु मोटुं; महान; मुख्य

आज़मंद वि० [फा] लालचु; लोभी

आज़मा वि०[फा.] अजमावी जोनार; परीक्षक [कसोटी

आज़माइश स्त्री० [फा०] अजमायश;

आज़माना स०क्रि०अजमाववुं; पारखवुं

आज़मूदा वि०[फा.]अजमावेलुं

आजा पुं० [सं. आर्य] (स्त्री० –जी) बापना बाप; दादा

आज़ाद वि० [फा.] आझाद, स्वतंत्र (२)बेफिकर(३) नीडर (४) स्पष्ट-वक्ता (५) उद्धत

आज़ादगी, आज़ादी स्त्री० आझादी

आज़ार पुं०[फा.]आजार;रोग(२)दुःख; तकलीफ

आजिज़ वि० [अ.] दीन; नम्र (२) सपडायेलुं; सपटामणमां आवेलुं

आजिज़ी स्त्री० [अ.] दीनता

आज़ुर्दगी स्त्री०[फ़ा.]दुःख;खेद

आज़ुर्दा वि०[फा.]खिन्न;दुःखी

आटना स०क्रि०दबाववुं;ढांकी नांखवुं

आटा पुं०आटो;लोट(२)भूको. **आटे दाल का भाव मालूम होना** =संसारव्यवहारनी गम होवी

आठ वि० आठ; ८. **आठ-आठ आँसू रोना**=खूब रोवुं. **आठों गाँठ कुम्मैत**=सर्व वाते संपूर्ण(२) चतुर (३) धूर्त

आड़ स्त्री० आड; पडदो (२) रक्षण; आशरो (३) रोकाण;प्रतिबंध (४) पियळ; आडुं तिलक (५) पुं० वींछीनो डंख

आड़न स्त्री०ढाल

आड़ना स०क्रि० रोकवुं(२)मना करवी (३)आडमां मूकवुं;गीरववुं

आड़ा वि० आडुं;वांकुं; वच्चे आवतुं. **आड़े आना**=आडा आववुं; रोकवुं; दखल करवी. **आड़े हाथों लेना** =व्यंगोक्तिथी कोईने शरमाववुं

आड़ू पुं० एक खटमधुरुं फळ; 'पीच'

आढ़ पुं० स्त्री० आड; ओथ (२) अंतर; आंतरो. **–आढ़ करना**= आजकाल करवुं;ढील करवी;टाळवुं

आढ़त स्त्री० आडत के तेनो माल रहेतो होय ए स्थान

आढ़तिया पुं० आडतियो; 'अढ़तिया'

आत(–ति)श स्त्री०[फा.]आतस;अग्नि

आतशक पुं०[फा.]चांदी; गरमी; उपदंशनो रोग

आतशकी वि० चांदीनुं रोगी

आतश-खाना पुं० पारसीनी अगियारी

आतश-दान पुं० [फा.] सगडी

आतश-परस्त पुं० [फा.] अग्निपूजक; पारसी

आतिश स्त्री० आतश; आग (२) गुस्सो

आतिशबाज़ी स्त्री० आग साथे खेलवुं ते (२) आतसबाजी; दारूखानुं

आत्मा स्त्री० [सं.] आत्मा

आथना अ०क्रि० (प.) होवुं

आदत स्त्री०[अ.]स्वभाव;प्रकृति(२)टेव

आदतन् अ० [अ.] आदतने लईने; स्वभावतः

आदमज़ाद पुं०आदमनुं संतान;आदमी; [माणस

आदमियत स्त्री० [अ.] मनुष्यत्व

आदमी पुं० [अ.] माणस (२) नोकर; सेवक. **–बनना**=सभ्यता शीखवी

आदाब पुं० [अ. 'अदब'नुं ब०व०] नियम (२) अदब; मर्यादा (३) नमस्कार; सलाम. **–अर्ज़ करना**= प्रणाम करवा. **–व अलक़ाब**= अदब अने विवेकनां विशेषणोनी भाषा, जेवी के पत्रमां वपराय छे.

आदिल वि० [फा.] अदल; न्यायी

आदी वि०[अ.] आदतवाळुं; टेव पडेलुं

आधा वि०[स्त्री०–धी]अर्ध. –तीतर आधा बेटर=दोदश; रफेतफे. –होना=अर्धु थई जवुं; दूबळुं थवुं. आधी बात=जरा पण घसाती, अपमानकारी वात. आधोआध= अर्धोअर्ध

आधासीसी स्त्री० आधाशीशी

आन स्त्री० [सं. आणि=सीमा] मर्यादा (२)सोगन(३)आण (४) ढंग; रीत (५) क्षण; जरा वार (६) प्रतिज्ञा; टेक (७) अदब; मर्यादा. –की आनमें=झटपट.

आनन-फानन अ० [अ.] झटपट

आनना स०क्रि० आणवुं; लाववुं

आन-बान स्त्री० ठाठमाठ

आना पुं० आनो (२) अ०क्रि० आववुं (३)आवडवुं. आये दिन=प्रतिदिन. आ धमकना,निकलना=अचानक आवी पहोंचवुं. आया गया= अतिथि. आ रहना=पडी जवुं. आ लगना=पहोंचवुं (२) आरम्भ थवो;बेसवुं. आ लेना=पकडी लेवुं (२) आक्रमण करवुं

आनाकानी स्त्री० ध्यान पर न लेवुं ते (२)वात टाळवी ते(३)कानफूसियां करवां ते (४) आनाकानी

आप सर्व० स्वयं; खुद (त्रणे पुरुषमां) (२) 'तमे' के 'ते' ने स्थाने आदरवाचक उपयोग थाय छे

आपस स्त्री० संबन्ध; भाईचारो (छठ्ठी, सातमी विभक्तिमां प्रायः वपराय छे) [भाईचारो

आपसदारी स्त्री० परस्पर व्यवहार;

आपसमें अ० परस्पर; अंदरेअंदर

आपा पुं० पोतानुं अस्तित्व(२) अस्मिता; अहंकार (३) सुधबुध; भान (४) स्त्री० मोटी बहेन (मुसलमानोमां)

आपाधापी स्त्री० पोतपोतानी चिंता के कामनुं ध्यान (२) खेंचताण

आपापंथी वि० मनस्वी; कुपंथी

आपुस पुं० जुओ 'आपस'

आफ़त स्त्री० [अ.] आपत्ति; कष्ट; मुसीबत. –उठाना=दुःख सहवुं. –का परकाला=होशियार(२)आ-काश पाताल एक करनार; भारे उद्योगी (३)उधमातियुं; उपद्रवी. –ढाना=उधमात, दंगो मचाववो (२)तकलीफ–दुःख देवुं.–मचाना =उधमात मचाववो (२) उतावळ करवी. –लाना=पीडा के झंझट ऊभी करवी

आफ़ताबा पुं० [फा.] पाणीनुं एक प्रकारनुं वासण

आफ़्तावी स्त्री० [फा.] मोटुं छत्र(२) दारूखानानी एक जात (३) घर सामेनी नानी ओसरी (४) वि० गोळ (५) सूर्यने लगतुं

आफ़ियत स्त्री० [अ.] क्षेमकुशळ

आफ़िस पुं० ओफिस; कार्यालय

आब स्त्री० [फा.] चमक; कांति(२) शोभा (३) पुं० पाणी

आबकारी स्त्री०[फा.]शराब गाळवानी जगा (२)मादक पदार्थो बाबतनुं सरकारी खातुं

आबख़ोरा पुं [फा.] प्यालो; कटोरो

आबगीना पुं० [फा.] आयनो

आबगीर पुं०[फा.]तळाव(२)वणकरनो कूचडो

आबजोश पुं०[फा.] मुनक्का जेवी एक द्राक्ष (२) सूप;सेरवो (३) पाणी ऊकळवुं ते

आबदस्त पुं० [फा.] जाजरूमां लई जवानुं पाणी के ते वापरवुं ते. —लेना=शौच जईने धोवुं

आबदाना पुं०[फा.] अन्नजळ;निर्वाह

आबदार वि०[फा.]चमकदार;पाणीदार

आबदीदा वि० [फा.] अश्रुपूर्ण

आबनाए स्त्री० [फा.] सामुद्रधुनी

आबनूस पुं० [फा.] अबनूस;सीसम जेवुं एक काळुं लाकडुं; 'एबनी'. —का कुन्दा=सीसमनो ककडो; अति काळुं माणस [पावुं ते; पाण

आबपाशी स्त्री०[फा.] (खेतरमां) पाणी

आबरवाँ स्त्री० [फा.] एक जातनुं बारीक मलमलनुं कपडुं (२)पुं० वहेतुं पाणी

आबला पुं० [फा.] छालुं;फोल्लो. —पड़ना=फोल्लो पडवो

आबशार पुं०[फा.] झरणुं (२) धोध

आबहवा स्त्री०[फा.]आबोहवा;हवापाणी

आबाद वि०[फा.] वसेलुं;वस्ती वाडी वगेरे वाळुं;समृद्ध

आबादान वि० 'आबाद' जुओ

आबादानी स्त्री० 'आबादी' जुओ

आबादी स्त्री० [फा.]वस्ती; जनसंख्या (२) वसवाटनी जगा

आबिद पुं०[अ.] इबादत करनार;भक्त

आबी वि० [फा.] पाणीनुं(२) फीकुं; आछा रंगनुं(३)पुं० दरियानुं मीठुं

आबेरवाँ पुं०[फा.] जुओ 'आबरवाँ'

आबेबका,आबेहयात पुं० [फा.]अमृत

आभ स्त्री० आभा;शोभा(२)पुं०आव; पाणी (३)अभ्र;आकाश

आभरण(–न) पुं० [सं.] आभूषण(२) भरण-पोषण

आभार पुं० [सं.] बोजो; भार (२) गृहस्थजीवननो भार (३) आभार

आम पुं० [सं. आम्र] आंबो के केरी (२) आम;जळस (३) वि० [अ.] सामान्य;मामूली (४) जाणीतुं; प्रसिद्ध (वस्तुनी साथे वपराय छे)

आमख़ास पुं० राजानी खास बैठक; दीवानेआम

आमद स्त्री०[फा.] आववुं ते(२)आवक

आमदनी स्त्री०[फा.]आमदानी;आवक (२) आयात; परदेशथी आवतो माल [पाक देती जमीन

आमन स्त्री०शियाळु पाक (२) एक ज

आमनस्य पुं०[सं.]वैमनस्य

आमना-सामना पुं०सामासामी आवी जवुं ते; बाझंबाझा

आमने-सामने अ०आमन-सामन;एक बीजानी सामे; मांहोमांहे

आम-फ़हम वि० [अ.+फा.] आम जनताने समजाय एवुं; सरळ

आमला पुं० 'आँवला'; आमळुं

आमादगी स्त्री० [फा.] तैयारी

आमादा वि० [फा.] तैयार; तत्पर

आमाल पुं० [अ.] करणी; कर्म

आमास पुं० [फा.] सोजो

आमाहलदी स्त्री० जुओ 'आँवाहलदी'

आमिख पुं०जुओ 'आमिष'

आमिल पुं०[अ.]नोकर; गुमास्तो (२) सिद्ध पुरुष

आमिष पुं०[सं.]मांस(२)प्रिय, भोग्य वस्तु(३)लोभ;लालच

आमी स्त्री०नानी केरी;मरवो

आमीन अ०[अ.]तथास्तु

आमूदा वि० [फा.] सजेलुं; ठीकठाक करी गोठवेलुं

आमेज़ वि०[फा.]मिश्रित(प्राय: समास मां. उदा०दर्द-आमेज़)

आमेज़िश स्त्री० [फा.] मिलावट; मिश्रण; मेळ

आमोख्ता पुं०[फा.] तैयार करेलो पाठ के लेसन. –करना या पढ़ना= जूनो पाठ फरी करी जवो

आय स्त्री०[सं.]आय;आवरो;आमदानी

आयत स्त्री०[अ.]निशानी(२)कुराननी आयत

आयद वि०[अ.]आरोपित

आयसु स्त्री०(प.) आदेश; आज्ञा

आया स्त्री०आया(२)अ०[फा.] प्रश्नार्थक 'शुं'

आयात पुं०[सं.]परदेशथी थती आयात

आरंभना अ०क्रि० शरू थवुं (२) स०क्रि०शरू करवुं

आर पुं०[सं.]काचुं लोढुं (२) पित्तळ (३)किनारो(४)पैडानो आरो(५) स्त्री०[सं. अल]परोणानी आर(६) वींछी के माखीनो डंख (७)

[सं. आरा] मोचीनी आरी (८) [अ.] तिरस्कार (९) वेर (१०) लाज; शरम

आरज वि०[सं. आर्य्य] (प.) आर्य

आरज़ी वि० [अ.] अनावश्यक; अवास्तविक

आरज़ू स्त्री०[फा.]इच्छा(२)विनंती

आरन पुं० (प.) वन; अरण्य

आर-पार पुं० बेउ किनारा (२) अ० आरपार; सोंसरुं

आरस पुं० आळस (२) स्त्री० आरसी

आरसी स्त्री०आरसी;दर्पण(२)स्त्रीओनुं हाथनुं एक घरेणुं

आरा पुं०[सं.]करवत(२)मोचीनी आर

आराइश स्त्री० [फा.] सजावट (२) लग्नमां कागळनी फूलवाडी करे छे ते

आराज़ी स्त्री० [अ.] जमीन; खेतर

आराम-कुरसी स्त्री०[फा.+अ.]आराम खुरसी [(२)आळसु

आराम-तलब वि० [फा.] आरामप्रिय

आरास्ता वि० [फा.] सजेलुं

आरिफ़ वि०[अ.]संतोषी(२)पुं० साधु

आरियत स्त्री० [अ.] उछीनुं मागी आणवुं ते [चीभडुं

आरिया स्त्री० [सं. आरू] आरियुं;

आरी स्त्री० आरी; नानी करवत (२) परोणानी आर (३) मोचीनी आरी (४)[सं.आर] बाजू;तरफ (५) कोर

आल पुं० हरिताल (२) झंझट; पंचात (३) [सं. आर्द्र] भीनाश (४) [अ.] दीकरीनी संतति (५) वंश

आल-औलाद स्त्री० [अ.] बाळबच्चां; परिवार

आल-जंजाल स्त्री० झंझट; जंजाळ

आलकस पुं० आळस (वि० –सी; अ०क्रि० –सना)

आलपीन स्त्री० (पो० आलफिनेट) टांकणी; पीन

आलबाल पुं० आलवाल; क्यारो

आलमारी स्त्री० जुओ 'अलमारी'

आलसी वि० आळसु

आला पुं० [सं. आलय] ताको; गोख (२) वि० [अ.] उत्तम; श्रेष्ठ (३) पुं० [अ.] ओजार (४) [सं. आर्द्र] भीनुं

आलाइश स्त्री० [फा.] गंदकी; मळ

आलात पुं० [अ.] ओजारो; साधन-सामग्री; उपकरण

आलापना स०क्रि० गावुं; सूर काढवो

आलापाला पुं० झाडनो आलोपालो

आलि स्त्री० [सं.] सखी (२) वींछी (३) भमरी (४) हार; पंक्ति

आलिम वि० [अ.] पंडित; विद्वान

आली स्त्री० [सं.] सखी (२) वि०स्त्री०

(हिं. आला) भीनी (३) वि० [अ.]
उच्च; उत्तम [विशाळ; भभकदार
आलीशान वि०[अ.]आलेशान; भव्य;
आलू पुं० [सं.] वटाटो
आलूचा पुं० [फा.] जरदाळु—आलुनुं
झाड के फळ
आलूदा वि० [फा.] खरडायेलुं
आलूबुखारा पुं० [फा.]आलु;जरदाळु
आल्हा पुं० एक छन्द (२) एक वीर
पुरुषनुं नाम [सत्कार
आव-आदर, आव-भगत पुं० आदर-
आवर्दा वि० [फा.] आणेलुं (२)कृपा-
पात्र (३) स्त्री० आवरदा
आवज(–झ) पुं० [सं. आवाद्य, प्रा.
आवज्ज] एक जातनुं पुराणुं वाद्य
आवाँ पुं० कुंभारनो निभाडो
आवागमन पुं० आवागमन; आववुं
जवुं; जन्ममरण
आवाज़ स्त्री० [फा.] ध्वनि; अवाज
(२)बोल.–उठाना=विरोध करवो.
–देना,मारना=जोरथी पोकारवुं;
बूम मारवी.–में आवाज़ मिलाना
=स्वर मेळववो(२)हामां हा भणवी
आवाज़ा पुं० [फा.] कटाक्ष; टोणो.
–कसना, –फेंकना, –मारना,
–सुनाना=टोणो मारवो
आवाजाही स्त्री०आववुंजवुं;आवागमन

आवारगी स्त्री० [फा.]बदमासी;कुमार्ग
(२)रखडेलपणुं [चोपडो
आवारजा पुं० [फा.] जमाउधारनो
आवारा वि० [फा.] नकामुं; रखडेल
(२) वंठी गयेलुं (३) बदमास;
कुमार्गी [भटकणुं
आवारागर्द वि०[फा.]रखडेल;नकामुं;
आवेज़ा पुं० [फा.] लटकतुं आभूषण;
एरिंग [खुल्लुं
आशकार वि० [फा.] प्रकट; जाहेर;
आशना वि० [फा.] परिचित(२)प्रेमी
(३) प्रेमपात्र; यार
आशनाई स्त्री० जाणपिछाण (२) प्रेम
(३) अनुचित संबन्ध
आशर पुं० [सं] राक्षस
आशिक पुं० [अ.] आशक; आसक्त
आशियाँ, आशियाना पुं० [फा.]
पक्षीनो माळो (२) झूंपडुं
आशुग वि० [सं] जलदी जनारुं (२)
पुं० वायु (३) बाण
आशुफ़्तगी स्त्री० [फा.] हालहवाल;
बेहाली;परेशानी [गभरायेलुं
आशुफ़्ता वि० [फा.] बेहाल; परेशान;
आशोब पुं० [फा.] आंखनी पीडा
आस स्त्री० आशा (२) लालच;कामना
(३) आधार; भरोसो (४) [फा.]
दळवानी घंटी

आसकत स्त्री०[सं.अशक्ति](वि०–ती; क्रि० –ताना) सुस्ती; आळस
आसते अ० आस्ते; धीमे
आसना अ०क्रि० [सं. अस्] होवुं
आसनी स्त्री० नानुं आसन
आसरना स०क्रि० (प.) आशरो लेवो; आशरवुं
आसरा पुं० आश्रय;आशरो
आसा स्त्री० आशा(२)पुं० [अ.असा] राजाओनी आगळ रखाती छडी
आसमान पुं०[फा.]आसमान;आकाश. –के तारे तोड़ना=कठण के अशक्य काम करवुं. –टूट पड़ना=अचानक विपत्ति पडवी. –पर चढ़ना=मगरूरी करवी. –सिर पर उठाना=उपद्रव मचाववो. दिमाग आसमान पर होना=बहु अभिमान थवुं
आसा पुं० चोब;सोना चांदीनी छडी (२)स्त्री०(प.)आशा [आराम
आसाइश स्त्री० [फा.] आसाएश;
आसान वि०[फा.] सहज;सरळ
आसानी स्त्री० [फा.]सरळता;सुगमता
आसार पुं० [अ.] चिह्न;लक्षण (२) चोडाई; पहोळाई (३) स्त्री० [सं.] मूसळधार वृष्टि
आसी पुं० [अ.] वैद;तबीब
आसूदगी स्त्री०[फा.] जुओ 'आसूदा'मां
आसूदा वि० [फा.] संतुष्ट(२)संपन्न; खातुंपीतुं (नाम,–दगी स्त्री०)
आसेब पुं०[फा.] भूतप्रेत वळगवुं ते (२) दु:ख; पीडा; बला
आस्तीन स्त्री०[फा.] कपडानी बांय. –का साँप=मित्र थईने शत्रुता करनार;'मारे–आस्तीन'
आसुन पुं० (प.) आश्विन मास
आह अ० पीडा, शोक, खेद इत्यादि सूचक उद्गार(२) स्त्री० दु:ख के क्लेश सूचक शब्द; हाय. –पड़ना=कोईनी हायनो शाप लागवो. –भरना=निसासो नाखवो. –लेना=कोईनी हाय लेवी; सतावबुं [खटकारो
आहट स्त्री० पगनो गणसारो;आववानो
आहन पुं०[फा.] लोढुं (वि० –नी)
आहर पुं० [सं. अह:] समय (२) [सं. आहव] युद्ध(३)[सं. आहाव] नानुं तळाव;तळावडी
आहरी स्त्री० नानी तळावडी
आहाँ स्त्री० [सं. आह्वान] हांक(२) पोकार [पणुं(२)कोमळता
आहिस्तगी स्त्री० [फा.] मंदता;धीमा-
आहिस्ता अ० [फा.] आस्ते;धीमे; 'आसते' (२)वि० धीमुं(३) कोमळ

आहुक पुं०[सं.] एक राजा; कृष्णनो वडवो

आहू पुं०[फा.] मृग(२)खोड;ऊणप

आहै अ०क्रि० (प.) छे;'आसना'नुं वर्तमान काळनुं रूप

आह्वय पुं०[सं.] नाम;संज्ञा

इ

इंक स्त्री० [इं.] शाही

इंग पुं० [सं.] इशारो;चिह्न (२)हालवुं चालवुं ते (३) हाथीदांत

इंगला स्त्री० इडा नाडी (योग)

इंगलिश वि० [इं] अंग्रेजी (२) स्त्री० ते भाषा

इंगलिस्तान पुं० इंग्लॅन्ड

इंगुर पुं० जुओ ईंगुर

इँगुरौटी स्त्री० सिंदूरनी डबी

इँचना अ०क्रि०एंचवुं;खेंचवुं; 'ऐंचना'

इंजन पुं० एन्जिन; इंजीन

इंजीनियर पुं० इजनेर [करार

इंजील स्त्री० यहूदीनुं धर्मपुस्तक; जूनो

इंडुरी स्त्री०,इंडुवा पुं० ऊढण; उढाणी

इंतक़ाम पुं० [अ. इंतिकाम] बदलो; प्रतिशोध; सामुं वेर लेवुं ते

इंतक़ाल पुं०[अ.]अन्तकाल; मोत(२) एकथी बीजी जगाए जवुं ते

इंतख़ाब पुं० [अ.] चूंटणी; पसंदगी

इंतज़ाम पुं० [अ.] प्रबन्ध;बन्दोबस्त

इंतज़ार पुं० [अ.] इन्तेजारी; राह;वाट

इंतहा पुं० [अ.] अंत; हद

इँदारा पुं० कूवो

इंदुर पुं० [सं. इन्दूर] उंदर

इंद्र वि० [सं.] विभूतिमान (२)श्रेष्ठ; मोटुं (३) पुं० इन्द्रदेव

इंद्री स्त्री० इन्द्रिय. –जुलाब पुं० पेशाब वधारे एवी दवा

इंसाफ़ पुं० [अ.] इन्साफ; न्याय (२) फेंसलो. –पसंद=न्याय मागनारो

इक वि० एक

इकइस वि० 'इक्कीस'; एकवीस;२१

इकट्टा वि० [सं. एकस्थ](स्त्री० –ट्ठी) एकत्र; एकठुं; जमा

इकतरा पुं० एकांतरो ताव [लगातार

इकतार वि० एकतार;बरोबर(२)अ०

इकतारा पुं० एकतारो

इकतीस वि० एकत्रीस; ३१

इक़दाम पुं० [अ०] अपराध करवानी तैयारी (२) इरादो

इकबारगी अ० सहसा; एकदम; 'एकबारगी' [(२) ऐश्वर्य
इक़बाल पुं० [अ.] 'एकबाल'; भाग्य,
इकराम पुं० [अ.] दान; इनाम(२) आदर [स्वीकृति
इक़रार पुं० [अ.] एकरार; वायदो;
इकला वि०एकलुं; 'अकेला'
इकलाई स्त्री०एकलापणुं (२) साफाना जेवुं एक झीणुं वस्त्र(रेशमी प्राय:)
इकलौता पुं०एकनो एक छोकरो
इकल्ला वि०एकवडुं(२)एकलुं
इकसठ वि० एकसठ; ६१
इकसाम पुं० जुओ 'अकसाम'
इकहरा वि० 'एकहरा'; एकवडुं
इक्का वि० [सं. एक] एकाकी; एकलुं (२) अद्वितीय(३) पुं० गंजीफानो एक्को (४) एको–गाडी (५) एकलवीर; एक्को
इक्का–दुक्का वि० एकलदोकल
इक्कावन वि० ५१; 'इक्यावन'
इक्कासी वि० 'इक्यासी'; ८१
इक्कीस वि० एकवीस; 'इकइस'
इक्यावन वि० ५१; एकावन
इक्यासी वि० ८१; एकाशी
इख़राज पुं० [अ.] निकास(२) खर्च
इख़राजात पुं० [अ. 'खर्च'नुं ब०व०] खर्च; व्यय
इखलाक पुं० जुओ 'अखलाक'
इखलास पुं० [अ.]एखलास;मैत्री;प्रेम
इख़्तराअ पुं० [अ.] अखतरो(२)शोध
इख़्तसार पुं० [अ.] संक्षेप
इख़्तियार पुं० [अ.] अखतियार; अधिकार; सामर्थ्य
इख़्तिलाफ़ पुं०[अ.]विरोध;अणबनाव
इच्छना स०क्रि० (प.) इच्छवुं; चाहवुं
इज़्तराब पुं० [अ. इज़्तिराब]गभराट (२) बेचेनी [संयम
इज़्तिनाब पुं० [अ.] परहेजी (२)
इजमाल पुं० [अ.] समस्त; समष्टि(२) सहियारी मालकी [अमल
इजराय पुं०[अ.]जारी करवुं(२)व्यवहार;
इजलास पुं० [अ.] बेठक (२)कचेरी
इज़हार पुं० [अ.] जाहेरात;प्रकाशन (२) साक्षी; जुबानी
इजाज़त स्त्री० [अ.] आज्ञा; हुकम(२) परवानगी; हुकम
इज़ाफ़ा पुं० [अ.] चडती; वृद्धि (२) बचत [मलत्याग
इजाबत स्त्री० [अ.]मंजूरी;स्वीकार(२)
इज़ार स्त्री० [फा.] इजार; पायजामो
इज़ारबंद पुं० [फा.] इजारबन्द; नाडुं. –का ढीला=छूटी काछडीनो; कामी [ठेकेदार
इजार(–रे)दार वि०[फा.] इजारदार;

इजारा पुं० [अ.]इजारो(२) अधिकार
इठलाना अ० क्रि० वेडशी मारवी(२) नखरां करवां (३) जाणीजोईने मोडुं करवुं(नाम, इठलाहट स्त्री०)
इत अ० [सं. इतः] आ बाजू; अहीं
इतना(–नों) वि०(स्त्री० –नी)आटलुं
इतनेमें अ० एटलामां [बंदोबस्त
इतमाम पुं०[अ. इहतिमाम]'इंतजाम';
इतमीनान पुं०[अ.]विश्वास (वि० –नी)
इतराना अ० क्रि० घमंड करवो (२) 'इठलाना' (नाम, इतराहट स्त्री०)
इताअत स्त्री० [अ.] आज्ञापालन
इतवार पुं० आतवार; रविवार
इताब पुं० [अ.] कोप; कफगी
इतेक वि० 'इतना'; आटलुं
इत्तफ़ाक़ पुं० [अ.] इत्तिफाक; मेळ; एकता (२) संजोग, अवसर. –पड़ना=संयोग आववो; मेळ खावो. –से=संजोगवश
इत्तफ़ाक़न् अ० [अ.] संजोगवशात्; अकस्मात्; 'इत्तफ़ाक़से'
इत्तफ़ाक़िया वि० [अ.] आकस्मिक
इत्त(–त्ति)ला स्त्री०[अ.]खबर;सूचना
इत्तसाल पुं० [अ.] मेलाप (२)संबंध
इत्तहाद पुं० [अ.] एकता (२) दोस्ती
इत्तिला स्त्री० जुओ 'इत्तला'
इत्तिहाम पुं० [अ.] दोष; आक्षेप; तहोमत –देना=दोष देवो; आक्षेप मूकवो
इत्र पुं० [अ.] अत्तर
इत्रफ़रोश पुं० [अ.] अत्तर वेचनार
इधर अ० आ बाजू; अहीं. –उधर अ०=अहीं तहीं (२) आसपास. –उधर करना=ऊलट सूलट करवुं; रफेदफे करवुं; फेंदी नांखवुं. –उधर की बात=सांभळेली वात; अफवा (२)ठेकाणा वगरनी वात. –की उधर करना या लगाना= अहींनीं वात त्यां करवी; सलाडा करवा.–की दुनिया उधर होना= असंभव वात बनवी. –उधर में रहना=व्यर्थ समय खोवो.–उधर होना=आघापाछा थवुं(२)बगडवुं; भेलाई जवुं
इन स० 'इस' नुं ब०व०
इनसान पुं० [अ.] इन्सान; मनुष्य
इनसानियत स्त्री० माणसाई
इनाम–इकराम पुं० इनाम अकराम; बक्षिस अने आदरमान
इनायत स्त्री० [अ.] कृपा; अनुग्रह(२) अहेसान; आभार; अनुग्रह (३) भेट; एनायत
इनारा पुं० 'इँदारा'; कूवो
इनेगिने वि० गणतर; थोडुंक; चुनंदा

इन्कशाफ़ पुं० [अ.] जाहेर के खुल्लुं थवुं के पकडावुं ते
इन्क़िलाब पुं० [अ.] क्रान्ति
इन्किसार पुं० [अ.] नम्रता
इन्तहा स्त्री. जुओ 'इंतहा'
इन्शा स्त्री० [अ.] लेखनशैली
इन्ह स० (प.) 'इन'; आ
इफ़रात स्त्री० [अ.] अधिकता
इफ़लास पुं० [अ.] गरीबी; दरिद्रता
इफ़शा वि० [अ.] जाहेर; खुल्लुं
इबरत स्त्री० [अ.] समज; बोध
इबरानी वि०[अ.]यहूदी(२)स्त्री० हिब्रू
इबलीस पुं० [अ०] सेतान
इबारत स्त्री० [अ.] शैली
इब्तदा, इब्तिदा [अ.]स्त्री० आरंभ; जन्म (२) मूळ; ऊगम
इब्न पुं० [अ.] पुत्र
इब्नत स्त्री० [अ.] पुत्री
इमकान पुं० [अ.] शक्ति
इमरती स्त्री० [सं. अमृत] एक मीठाई
इमदाद स्त्री० [अ.] मदद [तेवुं
इमदादी वि० मदद जेने मळती होय
इमराज़ पुं० 'मराज़'नुं ब०व०; रोगो
इमरोज़ अ० [फा.] आज
इमला पुं० [अ.] श्रुतलेखन
इमली स्त्री० आमली
इमशब अ० [अ.] आज राते
इमसाल अ०[फा.] आ साल
इमाद पुं० [अ.] थांभलो(२)आधार; विश्वास
इमामदस्ता पुं० खांडणी–पराई
इमामबाड़ा पुं० ताजिया डुबाडे के तेनो उत्सव ज्यां करे ते स्थान
इम्त(–म्ति)ना पुं०[अ.] मनाई;निषेध
इम्तियाज़ पुं०[अ.]विवेकबुद्धि; पारख
इम्तिहान पुं० [अ.] परीक्षा
इम्दाद स्त्री० [अ.] जुओ 'इमदाद'
इयत्ता स्त्री० [सं.] सीमा; हद;मर्यादा
इरशाद पुं० [अ.] आज्ञा; हुकम
इरसाल पुं० [अ.] (पत्र) मोकलवो ते (२) भरणुं (महेसूली)
इर्तकाब पुं० [अ.] कोई अपराध करवो ते (२) कोई काम माथे लेवुं ते
इर्द-गिर्द अ०आसपास; चोतरफ;'गिर्द'
इर्शाद पुं० जुओ 'इरशाद'
इलज़ाम पुं० [अ.] दोष; अपराध; कलंक. –लगाना, –देना=दोष देवो; कलंक लगाडवुं
इलहाक़ पुं० [अ.] संबन्ध; मेळाप
इलहाम पुं० [अ.] ईश्वरी अवाज; अन्तरनाद
इलाक़ा पुं० [अ.] संबंध; क्षेत्र;लागतुं वळगतुं होवुं ते (२) जमीनदारी (३) राज्य

इलाक़ेदार पुं० [फा.] जमीनदार
इलाज पुं० [अ.] दवा; चिकित्सा (२) उपाय; युक्ति
इलावा अ० जुओ 'अलावा'
इलाही पुं० [अ.] अल्ला; ईश्वर (२) वि० ईश्वरी. –खर्च=नकामुं के वधारे खर्च. –गज=अकबरे चलावेलो गज (३३ इंचनो)
इल्तिजा स्त्री० [अ.] प्रार्थना; निवेदन
इल्तिमास पु०[अ.] प्रार्थना;'इल्तिजा'
इल्म पुं० [अ.] विद्या; ज्ञान
इल्लत स्त्री० [अ.] बीमारी (२) झंझट; पंचात(३)दोष;अपराध [कर
इल्लिलाह श०प्र०[अ.]हे ईश्वर! सहाय
इशरत स्त्री०[अ.]आनंद; खुशी(२)चेन; सुख; भोगविलास [प्रकाशन
इशाअत स्त्री०[अ.]प्रसिद्ध करवुं ते (२)
इशारतन् अ. [अ.]इशारा के संकेतथी
इशारा पुं० [अ.] इसारो(२) बारीक के थोडीक मदद; आधार
इश्क़ पुं० [अ.]महोबत; प्रेम; अनुराग
इश्क़पेचाँ पुं० [अ.] लाल फूलनी एक वेल [जाहेरात
इश्त(–श्ति)हार पुं० [अ.] नोटिस;
इश्तियाक़ पुं०[अ.] इच्छा;आतुरता
इश्तियालक स्त्री० [अ.] उत्तेजना; उश्केरणी. –देना=उश्केरवुं
इश्तिहार पुं० जुओ 'इश्तहार'
इस स० आ
इसपंज पुं०[इं. स्पंज] वादळी;'इस्पंज'
इसपात पुं० एक जातनुं मजबूत लोढुं
इसरार पुं०[अ.]हठ(२)आग्रह; अनुरोध
इसलाम पुं०[अ.] इस्लाम
इसलाह स्त्री०[अ.] सुधारणा;संशोधन
इसहाल पुं०[अ.] झाडा थई जवा ते
इसारत स्त्री० [अ. इशारा] इशारत; निशानी [रूप
इसे स० 'इस'नुं चोथी तथा बीजीनुं
इस्क़ात पुं०[अ.] पतन;पडवुं ते
इस्तगासा पुं० [अ.] दावो;फरियाद (अदालतमां)
इस्तदुआ स्त्री०[अ.] विनंती;निवेदन
इस्तमरारी वि० [अ.] कायमी;नित्य
इस्तहकाम पुं० [अ.] मजबूती;दृढता
इस्तिक़बाल पुं०[अ.] स्वागत करवुं ते
इस्तिक़लाल पुं० [अ.] धैर्य;दृढता
इस्तिंजा पुं०[अ.]पेशाब करीने ढेफाथी इन्द्रीने मुसलमान शुद्ध करे छे ते
इस्तिरी स्त्री० धोबीनी अस्तरी
इस्तीफ़ा पुं० [अ.] राजीनामुं
इस्तेमाल पुं० [अ.] उपयोग;वापर
इस्पंज स्त्री० जुओ 'इसपंज' [जीरुं
इस्पगोल पुं० [फा.] इसपगोळ;ऊंटियुं
इस्म पुं० [अ.] नाम

इस्लाह स्त्री० [अ.] जुओ 'इसलाह'

इहतिमाम स्त्री०[अ.] कोशिश; प्रयत्न (२)प्रबन्ध; व्यवस्था (३)निरीक्षण

इहतियात स्त्री०[अ.]सावधानी; जुओ 'एहतियात' [कृतज्ञता

इहसान पुं० [अ.] अहेसान;आभार;

इहाता पुं० [अ.] जुओ 'अहाता'

इहाँ अ० 'यहाँ';अहीं

ई

ईंगुर पुं० [सं. हिंगुल, प्रा. इंगुल] हिंगळोक

ईंचना स०क्रि० खेंचवुं;एंचवुं

ईं जानिब श०प्र० अमे (मोटा लोक नानानी जोडे वातमां पोताने माटे आ वापरे छे)

ईंट स्त्री० [सं. इष्टका] ईंट. **–से ईंट बजना**=कोई घर के नगर नाश पामवुं. **–चुनना**=दीवाल बनाववा ईंटो चणवी. **–पत्थर**=कांई नहीं. **डेढ़ या ढाई ईंट की मसजिद अलग बनाना**=बधाथी ऊलटुं कहेवुं के करवुं

ईंडरी स्त्री० ऊढण; 'ईंडुरी'

ईंधन पुं० ईंधण;बळतण

ईख स्त्री० [सं. इक्षु] शेरडी;'ऊख'

ईखना स०क्रि० [सं. ईक्ष्] (प.) जोवुं

ईछना स०क्रि० इच्छवुं;'इच्छना'

ईज़ा स्त्री०[अ.]ईजा. **–देना,–पहुँचाना** =ईजा पहोंचाडवी – करवी. **–पहुँचना**=ईजा पहोंचवी – थवी

ईजाद स्त्री० [अ.] शोध; नवुं कांई शोधवुं के बनाववुं ते

ईठ पुं० [सं. इष्ट] मित्र [स्त्री० **ईठी**]

ईठि स्त्री० [सं. इष्टि, प्रा. इट्ठि] दोस्ती

ईठी स्त्री०भालो;बरछी(२)'ईठ'नुं स्त्री०

ईति स्त्री०[सं.]खेती बगाडनार उपद्रव, विघ्न वगेरे (२) पीडा; दुःख

ईरान पुं० [फा.] इरान देश

ईस पुं० ईश;ईश्वर

ईसा,ईसामसीह पुं०[अ.] ईशु ख्रिस्त

ईसाई वि० [फा.] ख्रिस्ती;विश्वासी

उ

उंगल स्त्री० जुओ 'अंगुल'

उँगली स्त्री० जुओ 'अंगुली'.(किसीकी ओर)–उठाना=आंगळी चींधवी; –नो दोष काढवो(२)आंगळी अडकाडवी; जराय हानि पहोंचाडवी. –करना = सतावबुं. –पकड़ते पहुंचा पकड़ना=आंगळी आपतां पोंचो पकडवो. उँगलियों पर नचाना=पोताने फावे तेम करावबुं –चलावबुं. पाँचों उँगलियां घी में होना=बधी रीते लाभ ज थवो

उंचन स्त्री० खाटलाना वाणने तंग करवानी पांगटनी दोरी

उंचना स० क्रि० 'उंचन' खेंचवुं

उँचाई स्त्री०,उँचान(-व,-स) पुं०ऊंचाई

उँचास वि० ४९; ओगणपचास; 'उनपचास'

उँडेलना स० क्रि० जुओ 'उडेलना'

उंदुर पुं० [सं.] उंदर

उँह अ० 'ना' सूचवतो उद्गार (२) दुःखनो उद्गार

उऋण वि० [सं. उत्+ऋण] ऋणमुक्त

उकटना स०क्रि० वारंवार कहेवुं

उकटा वि०(स्त्री०–टी)वारंवार(अपराध के उपकार) कही बतावनार

उकटा पुरान पुं० गईगुजरी के दवाई रहेली वातोनुं विस्तारथी कहेवुं ते

उकठना अ०क्रि० सुकावुं; सुकाईने लाकडा जेवुं थवुं

उकठा वि० सूकुं [उभडक बेसवुं ते

उकडूँ पुं० [सं. उत्कुतोरु] एडी पर

उकताना अ०क्रि०अधीरुं थवुं; गभरावुं (२)'ऊबना'; कंटाळी जवुं

उक़बा पुं० [अ] प्रलय (२) परलोक

उकलना अ०क्रि० छूटुं–अलग पडवुं; ऊखडवुं

उकलाई स्त्री० ऊलटी; वमन

उकलाना अ० क्रि० ऊलटी करवी

उकसना अ० क्रि० ऊभरावुं; उपर आववुं (२) अंकुर नीकळवा

उकसाना स०क्रि०('उकसना'नुं प्रेरक) उपर करवुं (२) उश्केरवुं (३) दीवानी बत्ती. वधारवी

उक़ाब पुं० [अ.] गरुड पक्षी के गीध

उकेलना स० क्रि० (छोडुं के पड) उखाडवुं (२) चोटेलुं उखाडवुं

उकौना पुं० गर्भवतीनी दोहद
उक़्दा पुं०[अ.]गांठ(२)कोयडो;समस्या
उखड़ना अ०क्रि० उखडवुं (२) घोडानी चालमां भंग पडवो(३) संगीतमां ताल के सूर बगडवो (४)हठवुं;अलग थवुं(५)तूटी जवुं. **उखड़ी २ बातें करना**=विरक्तिथी वातो करवी. **पैर या पाँव उखड़ना**=एक जगाए ठरी ठाम न थवुं [खांडणियो
उखल पुं०, **उखली** स्त्री०[सं.उत्खल]
उखाड़ पुं० उखाडवुं ते
उखाड़ना स०क्रि०उखाडवुं('उखड़ना' नुं प्रेरक) **गड़े मुर्दे उखाड़ना**= गईगूजरी पाछी काढवी. **पैर उखाड़ देना**=पग काढवो;हठाववुं
उगटना स०क्रि० जुओ 'उकटना'
उगना अ०क्रि० ऊगवुं
उगलना स०क्रि० [सं. उद्गिलन, प्रा० उग्गिलन] ओकवुं(२)थूंकी काढवुं. **उगल पड़ना**=बहार नीकळी आववुं. **ज़हर उगलना**=झेर जेवुं लागे एवुं बोलवुं
उगलवाना, उगलाना स० क्रि० 'उगलना'नु प्रेरक
उगाना स० क्रि० 'उगना'नुं प्रेरक
उगार(-ल) पुं०थूंक; गळफो के कफ
उगालदान पुं० थूंकदानी [करवुं
उगाहना स०क्रि० उघराववुं; एकठुं
उगाही स्त्री० उघराववुं ते (२) उघराणुं (३) व्याजवटुं;धीरधार
उगिलना स०क्रि० जुओ 'उगलना'
उघटना स०क्रि० ताल आपवो (२) गईगुजरी वारंवार काढवी (३) भलुंबूरुं कोईने कहेवुं (जुओ 'उकटना')
उघटा वि० जुओ 'उकटा'
उघड़(-र)ना अ०क्रि० ऊघडवुं (प्रेरक **उघाड़(-र)ना**)
उचकन पुं० कशाने एक बाजु ऊंचुं करवा नीचे मुकातुं टेकण
उचकना अ०क्रि० ऊंचा थवुं (२) कूदवुं (३) स०क्रि० ऊछळीने लेवुं. (प्रेरक **उचकाना**)
उचक्का पुं० (स्त्री०-**क्की**)ऊंचकी जनारो –चोर; ठग; बदमाश
उचटना अ०क्रि० अलग थवुं; हठवुं (२) ऊखडवुं (३) भडकवुं (४) विरक्त थवुं
उचड़(-र)ना अ०क्रि० ऊखडवुं (२) हठवुं; अलग थवुं
उचरंग पुं० पतंगियुं
उचरना अ० क्रि० ओचरवुं;बोलवुं(२) जुओ 'उचड़ना'

उचाट पुं०, **उचाटी** स्त्री० [सं. उच्चाट] उदासीनता; मन न लागवुं ते

उचाटना स० क्रि० 'उचटना'नुं प्रेरक (२) जीव हठाववो–काढी लेवो

उचाड़(-र)ना स०क्रि०'उचड़ना'नुं प्रेरक

उचाना स०क्रि० ऊंचुं करवुं

उचारना स०क्रि० (प.) उच्चारवुं; बोलवुं (२) जुओ 'उचाड़ना'

उचेलना स०क्रि० जुओ 'उकेलना'

उछर(–ल)ना अ०क्रि०ऊछळवुं; कूदवुं (प्रेरक-**उछार(–ल)ना**)

उछार(–ल) स्त्री० उछळवुं ते (२) फलंग(४) ऊलटी

उछाह पुं० [सं. उत्साह] (वि०-ही) उत्साह; उमंग (२) उत्सव (३) उत्कंठा; इच्छा

उछाला पुं० उछाळो;जोश(२)ऊलटी

उजड़(-र)ना अ०क्रि० उज्जड,वेरान, अस्तव्यस्त थवुं; नाश पामवुं

उजड्ड वि० [सं. उद्दंड] गमार;असभ्य; मूर्ख (२) उद्दंड; निरंकुश

उज़बक पुं० [तु.] एक जातनो तातार (२) वि० बेवकूफ; मूर्ख

उज़र पुं० उजर; जुओ 'उज्र'

उजरत स्त्री० [अ.] मजूरी (२)भाडुं

उजला वि० (स्त्री० –ली) उज्ज्वल; ऊजळुं; धोळुं (२) स्वच्छ; झक

उजलत स्त्री० [अ.] उतावळ; जलदी

उजागर वि०(स्त्री० -री) झगझगतुं (२) प्रसिद्ध

उजागरा पुं० उजागरो

उजाड़(-र) पुं० उज्जड स्थान (२) जंगल (३) वि० उज्जड

उजाड़(-र)ना स०क्रि० उजाडवुं

उजान अ० सामे प्रवाह ('भाठा'थी ऊलटुं) [उज्ज्वळ

उजारा(-ला) पुं० प्रकाश (२) वि०

उजारी(-ली) स्त्री० चांदनी

उज्र पुं० [अ.] उजर;बहानुं(२)वांधो; हरकत; आपत्ति

उज्रदारी स्त्री० [फा.] अदालतमां कोईनी मागणीनी सामे पोतानो वांधो रजू करवो ते

उझकना अ०क्रि० ऊछळवुं (२) जोवा माटे ऊंचुं थवुं (३) चोंकवुं

उझ(–झि)लना स०क्रि०[सं. उज्झरण] प्रवाहीने उपरथी रेडवुं;ढोळवुं (२)अ०क्रि०(नदीमां) रेल आववी

उटंग वि० मापमां नानुं (कपडुं)

उठँगन पुं० [सं. उत्थ+अंग] अठींगण

उठँगना अ०क्रि० उठंगवुं;अठिंगवुं(२) सूवुं; पडया रहेवुं [करवुं

उठंगाना स०क्रि०(कमाड)वासवुं; बंध

उठना अ०क्रि० [सं. उत्थान] ऊठवुं.

उठ जाना=मरी जवुं. उठती जवानी=ऊगती जुवानी

उठबैठ स्त्री० ऊठवेस; ऊठवुं बेसवुं ते; अजंपो (२) ऊठवेस कसरत

उठल्लू वि० रखडेल; अस्थिर

उठाईगीरा वि० उठावगीर(२)बदमाश

उठान स्त्री०,**उठाव** पुं० [सं. उत्थान] ऊठवुं ते; उठाव(२) आरम्भ (३) उठाव; उपाड

उठाना स०क्रि० उठाववुं

उठौनी स्त्री० उठाववुं ते(२)उठाववानी मजूरी(३)उठामणा जेवी एक रीति (४)खेडूतोने फसल पर अगाउथी धिरातां नाणां

उड़चक पुं० चोर; 'उचक्का'

उड़ना अ०क्रि० ऊडवुं

उड़ चलना अ०क्रि० झपाटामां चालवुं(२) कुमार्गे जवुं(३)रोफमां चालवुं(४) (रसोई) स्वादिष्ट बनवी

उड़खाना अ०क्रि० अप्रिय लागवुं

उड़न स्त्री० ऊडवुं ते

उड़नखटोला पुं० विमान

उड़नछू वि० छू करी जनारुं; गोटलीमार. –होना=छू थई जवुं

उड़व पुं० ओडव जातनो राग

उड़सना अ०क्रि० पथारी के बिस्तरो लपेटवो (२) नष्ट थवुं

उड़ाऊ वि० ऊडनारुं; 'उड़ाका' (२) उडाउ; खरचाळ [शकनारुं

उड़ाका(-कू) वि० ऊडनारुं; ऊडी

उड़ाना स०क्रि० उडाववुं

उड़ासना स०क्रि० बिस्तरो उठाववो– समेटवो

उड़िया वि० ओरिसा देशनुं वासी

उड़ीसा पुं० उत्कल;ओरिसा

उड़ेलना स०क्रि० रेडवुं;ढोळवुं

उढ़कना अ०क्रि० ठोकर खावी (२) रोकावुं;थोभवुं (३) टेको लेवो; अढेलवुं

उढ़रना अ०क्रि० नातरे जवुं

उढ़री स्त्री० रखात(२)नातरे काढी लीधेली स्त्री

उढ़ावनी,उढ़ौनी स्त्री० ओढणी

उत अ० ते तरफ; त्यां

उतना वि०(स्त्री० –नी) एटलुं

उतरन पुं० ऊतरेलुं कोई पण वस्त्र

उतरना अ०क्रि० ऊतरवुं

उतराई स्त्री० नीचे ऊतरवानी क्रिया (२)नदी पार ऊतरवानुं खर्च (३)उतार;ढाळवाळी जमीन

उतराना अ०क्रि० [सं. उत्तरण] पाणीनी उपर आववुं(२)ऊकळवुं; ऊभरावुं(३)प्रगट थवुं(४)स०क्रि० उतराववुं

उतरायल वि० ऊतरेलुं;पुराणुं
उतलाना अ०क्रि० उतावळ करवी
उतान वि० [सं. उत्तान] चीत;चत्तुं
उतारना स०क्रि० उतारवुं
उतारन स्त्री० उतारेलुं–जीर्ण वस्त्र; 'उतरन'(२)माथा पर दाणा इ० उतारीने वाळवा ते;'उतारा'
उतारा पुं० उतारो; ऊतरवानी जगा (२) नदी पार करवी ते (३) भूत इ० माटे दाणा वगेरे उतारवा ते के तेनी वस्तु
उतारू वि० तैयार; तत्पर
उतावल अ० जलदी(२)स्त्री०उतावळ
उतावला वि० [सं. उद्+त्वर] (स्त्री० –ली) उतावळुं
उतावली स्त्री० उतावळ
उतृण वि० [सं. उद्+ऋण] ऋणमुक्त
उतै अ० 'उत'; त्यां; ते तरफ
उत्कोच पुं० [सं.] लांच
उत्तमर्ण पुं०[सं.]लेणुं धीरनार;महाजन
उत्तरदाता पुं० [सं.]जवाबदार माणस
उत्तरदायित्व पुं० [सं.] जवाबदारी
उत्तरदायी वि० [सं.] जवाबदार
उत्ता वि० 'उतना'; एटलुं
उत्तू पुं० [फा.] कपडा पर भात पाडवानुं एक ओजार, जे गरम करीने वपराय छे; या ते द्वारा थतुं काम(२)वि०नशामां चकचूर. –करना=खूब मारवुं; पीटवुं
उत्तूकश, उत्तूगर पुं० [फा.] 'उत्तू'नुं काम करनार
उथलना अ० क्रि० [सं. उत्+स्थल] ऊथलवुं; गबडवुं (२) डामाडोळ थवुं (३) पाणी ओछुं थवुं (जुओ 'उथला') [पाथल
उथल-पुथल स्त्री० (२) वि० ऊथल-
उथला वि० छछरुं; ऊंडुं नहि एवुं
उदंत वि० दांत वगरनुं(पशु माटे)(२) पुं० [सं.] खबर
उदंतक पुं० [सं.] उदंत; समाचार
उदथ पुं० (प.) [सं. उद्गीथ] सूर्य
उदरना अ० क्रि० फाटवुं;चिरावुं(२) छिन्नभिन्न, नष्ट थवुं
उदाई स्त्री० ऊदापणुं; भूरो रंग
उदारना स०क्रि० [सं. उदारण] फाडवुं; चीरवुं; तोडवुं
उदू पुं० [अ.] दुश्मन; शत्रु
उदूल पुं० [अ.] अवज्ञा (२) विमुख थवुं ते
उदूलहुक्मी स्त्री० [फा.] अवज्ञा करवी ते; आज्ञा न मानवी ते
उद्घात पुं० [सं.] आघात; धक्को(२) आरम्भ [आरम्भक
उद्घातक वि० [सं.] आघातक (२)

उद्दाम वि० [सं.] उद्दाम(२)स्वतंत्र(३) महान; गंभीर (४) पुं० वरुण (५) एक वृत्त

उद्धरना स०क्रि० उद्धार करवो (२) अ०क्रि० ऊगरवुं; ऊधरवुं

उद्भट वि० [सं.] प्रबळ;श्रेष्ठ(२)महाशय

उद्भास पुं० [सं.] प्रकाश(२)प्रतीति

उद्भिज(–ज्ज,–द) पुं० [सं.] उद्भिद; वनस्पति

उद्वह पुं० [सं.] (स्त्री० **–हा**) पुत्र

उद्वहन पुं० [सं.] उपर खेंचवुं ते (२) उद्वाह; विवाह

उद्वासन पुं० [सं.] स्थान छोडाववुं, भगाववुं ते(२)मारवुं ते; वध

उधड़ना अ० क्रि० ऊखडवुं; (चोटेलुं) अलग थवुं; उखेडावुं

उधर अ० ए तरफ; बीजी बाजू

उधरना अ० क्रि० उद्धरवुं;छूटवुं(२) जुओ 'उधड़ना'

उधार पुं० [सं. उद्धार] करज; ऋण; देवुं(२)उधार के उछीनुं लेवुं ते (३) उद्धार

उधेड़ना स०क्रि० उखेडवुं (२) सीवण उकेलवुं(३)विखेरवुं

उधेड़बुन स्त्री० [हिं. उधेड़ना+बुनना] वांधछोड; विचारणा (२) पंचात

उन स० 'उस'नुं ब०व० (२) [सं.] अंकमां 'एक कम' ए अर्थमां वपराय छे. उदा० उनतीस

उनइस वि० 'उन्नीस'; १९

उनचास वि० 'उंचास'; ४९

उनचालीस,उनतालीस वि० ३९; ओगणचालीस

उनतीस वि० २९; ओगणत्रीस

उनसठ वि० ५९;ओगणसाठ

उनहत्तर वि० ६९; अगणोतेर

उनींदा वि० [सं. उन्निद्र] (स्त्री०–दी) ऊंघतुं; ऊंघ भरायेलुं

उन्क़ा पुं० [अ.] एक कल्पित पक्षी (२) वि० अप्राप्य(३)दुर्लभ

उन्नाब पुं० [अ.] एक जातनुं बोर (हकीमो दवामां वापरे छे)

उन्नाबी वि० 'उन्नाब'ना रंगनुं;घेरुं लाल(२) पुं० तेवो रंग

उन्नासी वि० ७९; ओगण्याएंशी

उन्निद्र वि० [सं.] निद्रा रहित (२) विकसित;खीलेलुं

उन्नीस वि० १९;ओगणीस.–बिस्वे= अ० मोटे भागे;घणुं करीने. –होना=गुण के मात्रामां थोडुं घटवुं. –बीस होना=(बे वच्चे) भेद होवो; एकथी बीजुं चडवुं

उन्मेष पुं०[सं.] पलकारो(२)झबकारो; थोडो प्रकाश (३)खीलवुं ते

उन्स पुं०[अ.] महोवत;प्यार

उन्हें स० तेमने ('उन'नी बीजी ने चोथीनुं रूप)

उपंग पुं० एक वाद्य

उपकरण पुं० [सं.] साधन सामग्री(२) छत्र, चमर इ० राजचिह्न

उपकार्या स्त्री० तंबू

उपक्रमणिका स्त्री०[सं.]अनुक्रमणिका; सांकळियुं [कथा

उपखान पुं० (प.) उपाख्यान; पुराणी

उपज स्त्री० ऊपज;पेदाश(२)नवी सूझ; शोध;कल्पना (३) कपोलकल्पित

उपजना अ०क्रि० ऊपजवुं

उपजाऊ वि० उपजाउ, फळद्रूप(भूमि)

उपटन पुं० 'उबटन'; उपटण (२) निशान;चिह्न

उपटना अ०क्रि० निशान पडवुं;जेम के शाही फूटवानुं के भारथी लखवानुं(२) ऊखडवुं

उपड़ना अ०क्रि० ऊखडवुं; ऊपडवुं (२)'उपटना'; निशान पडवुं

उपत्यका स्त्री० [सं.] तळेटी

उपदेश(-स)ना स०क्रि० उपदेशवुं

उपधा स्त्री० [सं.] छळ;कपट (२) उपाधि; पंचात

उपनना अ०क्रि०(प.) ऊपनवुं;ऊपजवुं (प्रेरक उपनाना)

उपनिवेश स्त्री०[सं.]वसाहत; 'कॉलोनी'

उपन्यास पुं० [सं.]नवलकथा

उपमाता पुं०[सं.] उपमा देनार (२) स्त्री० धाव [सरखाववुं

उपमाना स०क्रि० (प.) उपमा देवी;

उपरना पुं० उपरणुं (२) अ०क्रि० जुओ 'उपड़ना';ऊखडवुं

उपरफट(-ट्टू) वि० फालतु;छूटक (२) ठेकाणा वगरनुं;नकामुं

उपराचढ़ी स्त्री० चडसाचडसी;स्पर्धा

उपराना अ०क्रि० उपर आववुं (२) प्रगट थवुं (३) स०क्रि० उपर करवुं; उठाववुं

उपराला पुं० उपराळुं; पक्ष लेवो ते. -करना=उपराळुं लेवुं

उपरावटा वि० माथुं ऊंचुं राखनारुं; गर्विष्ठ;अक्कड

उपरी-उपरा पुं० चडसाचडसी; अहमहमिका; पडापडी; स्पर्धा

उपरैना पुं० उपरणुं

उपरैनी स्त्री० उपरणी;ओढणी

उपरौंछा पुं० अंगूछो;टुवाल (२) अ० उपरनुं [(स्त्री० -ठी)

उपरौठा वि० उपरनुं; उपर आवेलुं

उपला पुं० [सं. उत्पल] छाणुं; जेरणुं

उपली स्त्री० नानुं जेरणुं

उपल्ला पुं० कोई वस्तुनो उपलो भाग

उपशिष्य पुं० [सं.] शिष्यनो शिष्य
उपस स्त्री० दुर्गंध;बदबो
उपसना अ०क्रि० गंधावुं; सडवुं;वासी थवुं (प्रेरक उपसाना)
उपाधि स्त्री० [सं.] उपाधि (पीडा; इलकाब; चिह्न वगेरे अर्थो) (२)छळ;कपट;'उपधा'
उपाधी वि० [सं. उपाधिन्] उपद्रवी; उत्पात करनारुं [पगरखुं
उपानत(–ह) पुं०[सं.] उपान;जोडो;
उपायन पुं० [सं.] उपहार; भेट
उपाव पुं० उपाय
उपास पुं० उपवास [उद्‌गार
उफ़ अ० [अ.]शोक पीडा के दुःखनो
उफ़(–फ़ु)क़ पुं० [अ.] क्षितिज
उफ़तादगी स्त्री० [फा.] नम्रता
उफ़तादा वि० [फा.] पडतर(खेतर)
उफनना,उफनाना अ०क्रि०[सं. उत्+फेन] उभरावुं; उछाळो मारवो
उफान पुं० ऊभरो; उछाळो
उफ़ुक़ पुं० जुओ 'उफ़क़'
उबकना अ०क्रि०ऊबको आववो;ओकवुं
उबकाई स्त्री०ऊबको;ऊलटी;ओकवुं ते
उबटन पुं० [सं. उद्वर्तन] उपटण; 'उपटन'; मालिस माटेनी एक सुगंधी बनावट
उबटना अ०क्रि०उपटण मालिस करवुं
उबरना अ०क्रि०[सं. उद्वारण]ऊगरवुं (छूटवुं के बचत थवी)
उबरा वि० (स्त्री० –री) ऊगरेलुं
उबलना अ० क्रि० [सं. उद्+वलन] ऊकळवुं; खळखळ करतुं ऊछळवुं
उबार पुं०[सं. उद्वारण]उगारो;छुटकारो
उबारना स०क्रि० 'उबरना'नुं प्रेरक
उबाल पुं० ऊभरो; उछाळो; 'उफान'
उबालना स० क्रि० 'उबलना'नुं प्रेरक
उबासी स्त्री० [सं. उश्वास] बगासुं
उबि(–बी)ठना स०क्रि० अरुचि थवी; मनमांथी ऊतरी जवुं(२)अ० क्रि० गभरावुं; तबियत गभरावी
उभड़ना अ० क्रि० ऊंचुं थवुं; ऊठी आववुं; फूलवुं (२) ऊपजवुं (३) खूलवुं (४) वधवुं
उभा स्त्री० ओभा; चिन्ता
उभाड़ पुं० ऊंचाई (२) वृद्धि
उभाड़ना स० क्रि०'उभड़ना'नुं प्रेरक (२) उश्केरवुं; बहेकाववुं
उमं(–म)ग स्त्री० उमंग (२) जोश; अधिकता
उमँ(–म)गना अ०क्रि०ऊमगवुं;ऊमडवुं; ऊभरावुं (२) उमंगमां आववुं
उमड़ स्त्री० भरती; भरावो; वृद्धि
उमड़ना अ० क्रि० ऊभडवुं; ऊभरावुं (२)ऊमटवुं (जेम के वादळ) (३)

आवेशमां – जोशमां आववुं

उमरा पुं० ('अमीर'नुं ब०व०) उमराव लोक; अमीरो

उमराव पुं० जुओ 'उमरा'

उमस स्त्री० [सं. उष्म] वफारो; कठारो

उमूस वि० [अ.] साधारण; आम

उमेठना स० क्रि० [सं. उद्वेष्टन] 'ऐंठना'; आमळवुं

उम्दगी स्त्री०[फा.]उमदापणुं;उत्तमता

उम्दा वि०[अ.]उमदा;अच्छुं;भलुं;सारुं

उम्मत स्त्री० [अ.] जमात; फिरको (२) एक सम्प्रदायनी मंडळी (३) ओलाद; परिवार

उम्मी पुं० [अ.] नानपणमां बाप वगरनो थयेलो जेथी मा के दाईए उछेरेलो ते (२) अभण (३) महंमद पेगंबर (४) कोई 'उम्मत'नो माणस

उम्मी(-म्मे)द स्त्री० [फा.] उमेद

उम्मेदवार पुं० [फा.] इच्छुक (२) उमेदवार

उम्र स्त्री० [अ.] उमर; आयु

उरण पुं०[सं.]घेटुं;मेढुं (२) युरेनस ग्रह

उरद पुं०[सं.ऋद्ध,प्रा.उद्ध]अडद;'उर्द'

उरदी स्त्री० नाना दाणाना अडद

उरबसी स्त्री० उर्वशी

उरला वि० पछीनुं; पाछलुं (२) विरलुं

उरस वि० फीकुं; नीरस (२) पुं० उर; छाती(३) हृदय

उराहना पुं० जुओ 'उलाहना'

उरिण(-न) वि० उऋण;ऋणमुक्त

उरूज पुं० [अ.] वृद्धि

उरूस पुं० [अ.] वर (२) स्त्री० वधू

उरे अ० आगळ (२) दूर

उर्द पुं० 'उरद';अडद

उर्दू स्त्री० [तु.] अधिक अरबी फारसी शब्दोवाळी हिंदी भाषा जे फारसी लिपिमां लखाय छे. **–बाज़ार** पुं०लश्करनुं बजार [नाम

उर्फ़ पुं० [अ.] उपनाम; उरफे बोलातुं

उर्स पुं० [अ.] ओरस; पीर वगेरेनी मरणतिथि

उर्वरा स्त्री०[सं.] उपजाउ जमीन (२) पृथ्वी (३) वि०स्त्री० ऊपजाउ; फळद्रुप (जमीन)

उलंग वि० [सं. उन्नग्न] नागुं

उलंघना स०क्रि० उल्लंघवुं (ओळंगवुं के न मानवुं–लोपवुं)

उलका स्त्री० उल्का; खरतो तारो

उलच(-छ)ना स०क्रि०जुओ'उलीचना'

उलझन स्त्री० फांस; गूंच (२) कोयडो; समस्या (३) चिंता

उलझना अ०क्रि० (ऊलटुं 'सुलझना') फसावुं; जकडावुं (२) लपटावुं (३)

काममां लीन थवुं (४) मुश्केलीमां फसावुं (५) झगडवुं; तकरार करवी (६) वांकुं थवुं; आमळ चडवो

उलझना पुलझना अ० क्रि० बरोबर फसावुं–लपटावुं

उलझाना स०क्रि० 'उलझना'नुं प्रेरक

उलझा पुलझा वि० वांकुं के सीधुं(२) भलुं के बूरुं

उलझाव पुं० फसावुं ते (२) झघडो; बखेडो (३) चक्कर; फेर

उलटना अ०क्रि०[सं.उल्लोठन]ऊलटवुं(२) स०क्रि० ऊलटुं के ऊंधुं करवुं (३) अस्तव्यस्त करवुं(४) ऊलटी करवी

उलट-प(-पु)लट स्त्री० ऊलटपूलट; गोटाळो

उलटा वि० (स्त्री० –टी)ऊलटुं. **उलटी साँस चलना** = मरवा वखतनो सास चालवो. **उलटे मुँह गिरना**=बीजानुं अनिष्ट करवा जतां पोतानुं थवुं. **–हाथ**=पुं० डाबो हाथ. **उलटी गंगा बहना**= न बनवानुं बनवुं. **उलटी माला फेरना**=बूरुं ताकवुं. **उलटे छुरे से मूड़ना**=बेवकूफ बनावीने काम काढवुं. **उलटे पाँव फिरना**= तरत पाछुं फरवुं. **उलटी खोपड़ी का**=जड; मूर्ख. **उलटी सीधी सुनाना**=झाटकवुं;धमकाववुं

उलटा-प(-पु)लटा वि० ऊलटपूलट

उलटा-पलटी स्त्री० फेरफार; अदला-बदली

उलटी स्त्री० ऊलटी (२) गोटमडुं

उलथा पुं० ताल प्रमाणे ठेकवुं ते (२) पासुं फेरववुं ते(३)ऊथलो; गुलांट

उलफ़त स्त्री० [अ.] प्रेम;' उल्फ़त'

उलरना अ०क्रि० ऊछळवुं; (प.) कूदवुं

उललना अ०क्रि० (प.) ऊलळवुं

उलहना अ०क्रि० खीलवुं (२) उल्लासवुं (३) जुओ 'उलाहना'

उलार वि० उलाळवाळुं (गाडुं)

उलारना स०क्रि०उछाळवुं(२) उलाळवुं

उलाहना पुं० ओलंभो; ठपको के राव फरियाद(२) स०क्रि० दोष देवो; निंदवुं

उलीचना स०क्रि० उलेचवुं

उलूखल पुं० [सं.] खांडणियो(२) गूगळ

उल्था पुं० [हिं. उलथना] भाषांतर; तरजुमो

उल्लू पुं० [सं. उलूक] घूवड(२) उल्लु

उशीर पुं० [सं.] खस; वीरण

उष्णीष पुं० [सं.] पागडी; साफो (२) मुगट

उस सर्व० विभक्तिओमां थतुं 'वह'नुं रूप. जेम के:—'उसने, उसको'

उसकन पुं० वासण मांजवानो कूचो

उसनना स० क्रि०उकाळवुं(२)पकाववुं

उसाँस, उसास स्त्री० लांबो श्वास

उसासी स्त्री० अवकाश; छूटी

उसीसा पुं० अठींगण (२) ओशीकुं

उसूल पुं० [अ.] सिद्धान्त

उस्तरा पुं० अस्तरो; 'उस्तुरा'

उस्ताद पुं० [फा.] शिक्षक, गुरु(२) वि० उस्ताद; चालाक (३) निपुण

उस्तानी स्त्री० [फा.] गुरुपत्नी (२) शिक्षिका(३)चालाक, ठगारी स्त्री

उस्तुरा पुं० [फा.] अस्तरो

उहदा पुं० [अ.] होद्दो; 'ओहदा'

उहवाँ अ० 'वहाँ'; त्यां

उहै स० 'वही'; ते ज

ऊ

ऊँघ,ऊंघन स्त्री० जरा ऊंघनुं झोकुं आववुं ते; ढणको

ऊँघना अ०क्रि० ऊंघनुं झोकुं खावुं; जरा ऊंघ आवी जवी

ऊँचा वि० ऊंचुं. **–नीचा सुनाना=** सारुं माठुं कहेवुं; वढवुं. **–सुनना=** ओछुं सांभळवुं

ऊँछना अ०क्रि ओळवुं

ऊंटवान पुं० ऊंटवाळो

ऊँहूँ अ० ना, नहीं बतावतो उद्गार

ऊख पुं० [सं. इक्षु] 'ईख'; शेरडी

ऊखल पुं० [सं. उलूखल] ऊखळ; खांडणियो

ऊजड़ वि० उज्जड; वेरान

ऊटक-नाटक पुं. नकामुं के ढंगधडा वगरनुं काम

ऊटपटाँग वि० उटंग; ठेकाणा वगरनुं (२) वाहियाद; व्यर्थ

ऊड़ी स्त्री० डूबकी

ऊढ़ना अ.क्रि.परणवुं(२)(प.)अनुमानवुं

ऊत वि० [सं. अपुत्र; प्रा० अउत्त] अपुत्र (२) मूर्ख

ऊद पुं० [अ.] ऊदबत्ती; अगरबत्ती

ऊदबिलाव पुं. जळबिलाडी; 'ओटर'

ऊदा वि० [अ. ऊद; फा. कबूद]ऊदुं

ऊधम पुं०[सं. उद्धम] उत्पात;उधमात

ऊधो पुं० उद्धव; ओधवजी

ऊनी वि० ऊननुं (२) कम; थोडुं (३) स्त्री० उदासीपणुं; खेद

ऊपर अ० उपर. **ऊपर ऊपर** अ० चुपकीथी; कोई न जाणे एम. **–की आमदनी=**लांच के तेवी

अयोग्य आवक. –लेना = हाथ पर जवाबदारी लेवी.

ऊपरी वि० उपरनुं;बहारनुं (२)देखाव पूरतुं [उत्साह

ऊब स्त्री० कंटाळो (२) 'ऊभ';उमंग;

ऊबट पुं० [सं. उद्+वर्त्य; प्रा० वट्ट] कठण अटपटो रस्तो(२)वि०जुओ 'ऊवड़-खाबड़' [अटपटुं

ऊबड़खाबड़ वि० ऊंचुं नीचुं;असमान;

ऊबना अ०क्रि० कंटाळवुं; गभरावुं

ऊभ वि० (प.) ऊभुं (२) स्त्री० कंटाळो (३) होंश;उमंग (४) गरमी

ऊमर पुं० उमरडो

ऊमी स्त्री० उंबी;घउं जव वगेरेनुं डूंडुं

ऊर्ज वि० [सं.]बलवान(२)पुं०बळ;शक्ति

ऊल-जलूल वि० असंबद्ध (२) अनाडी (३) अशिष्ट [जमीन

ऊसर पुं० [सं. ऊषर] ऊखर–खारी

ऊह अ० [सं.] ओह! (२)पुं० अनुमान (३) तर्क; दलील (४) अफवा

ऋ

ऋद्ध वि० [सं.] समृद्ध; संपन्न

ऋन पुं० ऋण

ऋनिया वि० ऋणी

ए

एँच-पेंच पुं० दावपेच;युक्ति

एँड़ा-बेंड़ा वि० सीधुं वांकुं

एँड़ी स्त्री० एक जातना रेशमनो कीडो के तेनुं रेशम (२) 'एड़ी'

एँडुआ पुं. ऊढण

एकंग वि० एकलुं

एकंगा वि० एकांगी; एक तरफनुं

एक वि०[सं.]एक.–आँख से देखना= सौ साथे समान भाव राखवो. –आँख न भाना=जरा पण ठीक न लागवुं. –न चलना=जरा पण न फाववुं;एक पण युक्ति न चालवी

एक-आध वि० एकाद

एक-कलम अ० एक-झपट; एकीसाथे

एकटक अ० एकीटसे; अनिमेष
एकड़ पुं० एकर
एकतरफ़ा वि० [फा.] एकतरफी;पक्ष-
पातवाळुं के एक बाजुनुं
एकताक वि० (प.) बराबर; सरखुं
एकतीस वि० ३१;एकत्रीस
एकन्नी स्त्री० एक आनी
एकबारगी अ० [फा.] 'इकबारगी';
अचानक(२)एक ज साथे;एक ज
वारमां
एक़बाल पुं० [अ.] जुओ 'इकबाल'
एकलौता वि० जुओ 'इकलौता'
एकवाँज स्त्री० काकवंध्या
एकवेणी वि० सादो अंबोडो बांधनारी
(स्त्री) (२) वियोगिनी के विधवा
एकसर वि० एकलुं(२)[फा.] तमाम;
बधुं ज
एकसाँ वि० [फा.] समान; सरखुं
एकसा वि० (स्त्री०,-सी) समान
एकहत्तर वि० ७१;इकोतेर
एकहत्था वि० एकहथ्थु
एकहरा वि० 'इकहरा';एकवडुं.-बदन
=एकवडो कोठो
एका पुं० एकता; मेळ
एकाई स्त्री० एकम स्थान के तेनी
संख्या (२)कोई वस्तुनो घटक-
एकम; 'युनिट'(३) एकता

एकाएक(-की) अ० एकाएक;ओचिंतुं
एकादशाह पुं० [सं.] अगियारसुं
एकोतरसो वि० १०१;एकसो एक
एकौझा वि० एकलुं
एक्का वि० एकलुं (२) पुं० टोळाथी
अलग फरतुं पशु पक्षी (३)
एकागाडी (४) गंजीफानो एक्को
एक्कावान पुं० एकावाळो
एक्की स्त्री० एक बळदनी गाडी; एको
(२) गंजीफानो एक्को
एक्यानबे वि० ९१; एकाणुं
एक्यावन वि०एकावन;५१; 'इक्यावन'
एक्यासी वि० 'इक्यासी'; एकाशी
एड़(-ड़ी) स्त्री० एडी
एतक़ाद पुं० [फा.] विश्वास
एतदाल पुं० [अ.] बराबरी; समानता
एतबार पुं० [अ.] इतबार; भरोंसो
एतमाद पुं० [अ.] विश्वास; भरोंसो
एतराज़ पुं० [अ.] वांधो; विरोध
एतवार पुं० 'इतवार'; आतवार
एता वि० 'इतना'; आटलुं
एरंड पुं० [सं.]एरंडो.-ककड़ी स्त्री०,
-खरबूज़ा पुं० एरणकाकडी
एराक़ पुं० [अ.] इराक देश
एवज़ पुं० [अ.] अवेज; बदलो
एवज़-मुआवज़ा पुं०[फा.]अदलोबदलो
एवज़ी स्त्री० अवेजी माणस

एह स० (प.) 'यह'; आ
एहतमाम पुं० [अ.] जुओ 'इहतिमाम'
एहतमाल पुं० [अ.] सहन करवुं ते (२) आशंका
एहतियाज पुं० [अ.] जरूरियात; हाजत
एहतियात स्त्री० [अ.] सावधानी; खबरदारी; संभाळ (२) परेज
एहसान पुं० [अ.] जुओ 'अहसान'
एहसानमन्द वि० [अ.] कृतज्ञ
एहसानफ़रामोश पुं० [अ.] कृतघ्न माणस; अहेसान भूली जनार

ऐ

ऐँ अ० 'अं' एवो, न सांभळ्याथी फरी पूछवानो उद्गार
ऐँचना स०क्रि० एंचवुं; खेंचवुं (२) बीजानुं करज पोते ओढवुं
ऐँचाताना वि० ऐंचाताणुं; वाडुं
ऐँचातानी स्त्री० खेंचताण; पोतपोताना पक्षनुं ताणवुं ते
ऐँठ स्त्री० एंट; ठसकी; अकडाई (२) गर्व (३) विरोध
ऐँठन स्त्री० लपेट; वळ; आमळ
ऐँठना स०क्रि० मरोडवुं; आमळवुं (२) छळथी के डरावीने वसूल करवुं (३) अ०क्रि० वळ चडवो; अमळावुं (४) अक्डावुं; अक्कड थई जवुं. (पेट ऐँठना=पेट दुखवुं) (५) पतराजी–घमंड करवो (६) सीधी वात न करवी; वांकुं बोलवुं
ऐँठा पुं० दोरडाने वळ देवाने लाकडानी एक बनावट–ओजार
ऐँठू वि० मिजाजी; अभिमानी; 'ऐंठ' वाळुं
ऐँड़ पुं० 'ऐंठ'; ठसकी; गर्व (२) पाणीनो भमरो (३) वि० नकामुं
ऐँड़ना अ०क्रि० 'ऐंठना' अ०क्रि० जुओ (२) स०क्रि० आमळवुं (३) 'अंगड़ाना'; आळस काढवी (४) आळसु पड्या रहेवुं
ऐँड़ा वि० (स्त्री०–डी) वांकुं
ऐज़न वि० [अ.] एजन; एनुं ए ज; उपर मुजब
ऐज़ाज़ पुं० [अ. इअज़ाज़] आदर; सन्मान
ऐदाद स्त्री० [अ. अअदाद] 'अदद'नुं ब०व०; संख्या; गणना
ऐन पुं० अयन; घर (२) [अ.] आंख (३) वि० [अ.] योग्य; ठीक

(४) बरोबर; पूरेपूरुं

ऐनक स्त्री० [अ. ऐन=आँख] चश्मां

ऐब पुं० [अ.] एब; दोष; कलंक. —निकालना=कशामां दोष बताववो. —लगाना=कलंक लगाडवुं

ऐबक पुं० [फा.] दास;गुलाम

ऐब-गो वि० [अ.+फा.] निंदक; एब कहेनारुं

ऐब-गोई स्त्री० [अ.+फा.] निंदा

ऐब-जो वि० [अ.+फा.] दोषदृष्टिवाळुं; एब-दोष जोया करनारुं;छिद्रान्वेषी

ऐब-जोई स्त्री० [अ.+फा.] दोषदृष्टि; छिद्र जोवां ते

ऐब-पोश स्त्री०[अ.+फा.]एब ढांकनारुं

ऐबी वि० [अ.] एबवाळुं (२) काणुं के बीजी रीते खोडवाळुं

ऐमाल पुं० [अ.] काम; करणी

ऐया स्त्री० डोसी के दादीमा

ऐयाम पुं० [अ.] समय;वखत. —से होना=स्त्रीने अटकाव आववो

ऐयार पुं० [अ.] चालाक; उस्ताद

ऐयारी स्त्री० चालाकी; पक्काई;उस्तादी

ऐयाश वि० [अ.] आरामी;विलासी(२), विषयी; कामी

ऐयाशी स्त्री० भोगविलास; एशआराम

ऐरा-ग़ैरा वि०[अ.] अजाण्युं(२) तुच्छ; हीन [प्रगट करवुं ते

ऐलान पुं० [अ. इ-अलान] घोषणा;

ऐश पुं० [अ.] एशआराम; चेन

ऐसा वि० (स्त्री०,—सी) आवुं; आवी जातनुं

ऐसे अ० आम; आ रीते

ओ

ओँगना स०क्रि० (गाडीनुं पैडुं) ऊंजवुं

ओँठ पुं० होठ; 'होंठ'. —चबाना= क्रोध अने दुःख प्रगट करवुं

ओक स्त्री० ऊलटी; ओकवुं ते (२) पुं० खोबो;अंजली (३)[सं.] घर

ओकाई स्त्री० ओकवुं ते

ओकना अ०क्रि० ओकवुं (२) आरडवुं

ओखली स्त्री०[सं. उलूखल]खांडणियो. —में सिर देना=कष्ट सहवा तैयार थवुं

ओखा वि० रूखुं;सूकुं(२)कठण;अटपटुं (३)खोटुं; भलतुं(४)आछुं(५) पुं० (प.) वहानुं

ओछा वि० (स्त्री० —छी) तुच्छ; क्षुद्र;

नीच (२) छछरुं; ऊंडुं नहि (३) हलकुं; नानुं (४) कम; ओछुं
ओछाई स्त्री० 'ओछापन' ('ओछा' जुओ)
ओझ,ओझर पुं० होजरुं; पेट
ओझल पुं०; स्त्री० ओझल;एकांत(२) आड(३)पडदो. **-करना**=संताडवुं. **-होना**=संतावुं;पडदा पाछळ थवुं
ओझा पुं० [सं. उपाध्याय] (स्त्री० **ओझाइन**) एक जातनो ब्राह्मण (२) भूत काढनार; भूवो
ओट स्त्री० आड; ओथ
ओटना स०क्रि० लोढवुं (२) एकनी एक वात कूटवी
ओटनी,ओटी स्त्री० लोढवानो चरखो
ओठँगना अ०क्रि० अठींगवुं; टेकवुं
ओड़न पुं० ढाल
ओड़ना स०क्रि० ओडवुं;रोकवुं; वारण करवुं (२) हाथ ओडवो; धरवुं; पसारवुं [कमी; तोटो
ओड़ा पुं० मोटो टोपलो (२) खोट;
ओढ़ना स०क्रि० ओढवुं (२) पुं० ओढवानुं वस्त्र
ओढ़नी स्त्री० ओढणी
ओढ़र पुं० वहानुं
ओत स्त्री० आराम (२) लाभ; बचत (३) आळस (४) वि० [सं.] वणेलुं
ओद(-दा) वि० भीनुं
ओदारना स०क्रि० चीरवुं; फाडवुं; विदारवुं [खेंचवानी दोरी
ओनचन स्त्री० खाटलानी पांगथनी
ओनचना स०क्रि० 'ओनचन' खेंचवी
ओना पुं० तळावनुं पाणी नीकळवानो मार्ग-गरनाळुं. **-लगना**=तळाव एटलुं भरावुं के 'ओना'थी पाणी नीकळवा लागे
ओनामासी स्त्री० [ॐ नमः सिद्धम्] भणतरनो आरंभ (२) प्रारंभ; मंगळाचरण
ओप स्त्री० ओप (चमक;शोभा;ढोळ)
ओपची पुं० बखतरवाळो योद्धो;रक्षक
ओपना स०क्रि०(२)अ०क्रि० ओपवुं
ओफ़् अ० जुओ 'उफ़'
ओबरी स्त्री० नानुं घर;कोटडी
ओरंगोटंग पुं० (मलाया. ओरंग=मनुष्य+ऊटन=वन) उरांगउटांग
ओर स्त्री० [सं. अवार] बाजू;तरफ(२) पक्ष (ज्यारे आनी पूर्वे संख्या-वाचक वि० आवे छे त्यारे पुं० मां उपयोग थाय छे. उदा० घरके चारों ओर) (३) अंत; आरो. **-निभाना या निबाहना**=अन्त सुधी पोतानुं कर्तव्य पूरुं करवुं
ओरहा पुं० 'होरहा';चणानो छोड के पोपटो

ओरा पुं० (प.) 'ओला'; करा
ओराना अ०क्रि० पूरुं थवुं
ओराहना पुं० जुओ 'उलाहना'
ओरी स्त्री० 'ओलती'; नेवुं
ओलंदेज(-जी) वि० फिरंगी; वलंदानुं
ओल वि० [सं.] भीनुं (२) पुं० सूरण (३) स्त्री० गोद (४) आड (५) ओथ; शरण (६) बहानुं
ओलती स्त्री० छापरानुं नेवुं
ओला पुं० 'ओरा';करा(२)एक मीठाई (३) वि० खूब ठंडुं
ओलियाना अ०क्रि०गोदमां भरावुं (२) स०क्रि० घुसाडवुं; ठांसवुं; हुलावी देवुं [(३) झोळी
ओली स्त्री० 'ओल'; गोद (२) पालव
ओस स्त्री० झाकळ. -पड़ना या पड़ जाना=चीमळावुं (२) उमंग जतो रहेवो(३)शरमिंदा पडवुं
ओसर(-रिया) स्त्री०जोटडुं;जुवान भेंस
ओसरा पुं०, -री स्त्री० वारी; अवसर
ओसाई स्त्री० फटकथी अनाज ऊपणवुं ते के तेनी मजूरी [ऊपणवुं
ओसाना स०क्रि० फटकथी अनाज
ओसार पुं० फेलावो;विस्तार;पहोळाई
ओसारा पुं० ओसारो; मोटी ओसरी
ओसारी स्त्री० ओसरी
ओसीसा पुं० 'उसीसा'; ओसीकुं
ओहदा पुं० [अ.] होद्दो
ओहदेदार पुं० [फा.] होद्देदार
ओहार पुं० रथ पालखी वगेरेनो ओढो-पडदो

औ

औंगना स०क्रि० (गाडी)ऊंजवी; 'ओंगना'
औंगा वि० [सं. अवाक्] मूगुं; मूक
औंगी स्त्री० मूगापणुं; चूपकी
औंघ(-घा)ना अ०क्रि० 'ऊंघना'; ऊंघमां झोकुं खावुं
औंघाई स्त्री० ऊंघनुं झोकुं
औंजना अ०क्रि० 'ऊबना'; अकळावुं
औंठ स्त्री० किनार; कांठो
औंड़ा वि० (स्त्री० -ड़ी) ऊंडुं
औंधना अ०क्रि० ऊंधुं थवुं; ऊलटावुं (२) स०क्रि० उलटाववुं
औंधा वि० (स्त्री०-धी) ऊंधुं. औंधी खोपडीका = मूर्ख; जड. औंधे मुँह गिरना=वरोबर फसावुं (२)

भूल करवी
औंधाना स०क्रि० 'औंधना' नुं प्रेरक
औक़ात पुं०ब०व० [अ. वक़्त] समय; वखत (२) स्त्री०शक्ति;गजुं.–**बसर करना** = जीवननिर्वाह करवो
औंगी स्त्री० दोरीनो कोरडो (२) बळदनो परोणो (३) जानवरने फसाववा माटे करातो खाडो
औघड़ पुं० [सं. अघोर](स्त्री० –ड़िन) अघोरी पंथनो माणस(२)मनस्वी; मोजी माणस
औचक अ० अचानक; एकाएक
औचट अ० 'औचक'; अचानक (२) अजाणमां; भूलमां (३) स्त्री० उचाट; सांकड; मुश्केली
औज पुं० [अ.] ऊंचाई (२) प्रताप; तेज; ओजस
औज़ार पुं० [अ.] ओजार
औझड़(–र) अ० लगातार; निरंतर
औटना स०क्रि० उकाळवुं
औढर वि० गमे तेम ढळी जाय एवुं
औना पौना वि० अर्धुंपोणुं; थोडुं घणुं (२) अ० ओछुंवत्तुं करीने. **औने पौने करना**=जेटलुं मळे तेटलामां वेची देवुं; फटकारी मारवुं
औपनिवेशिक वि० [सं.] उपनिवेश–संस्थान विषेनुं
औपन्यासिक वि० [सं.] उपन्यास–नवलकथा विषेनुं(२)अद्‌भुत(३) पुं० नवलकथाकार
औम स्त्री० [सं. अवम] क्षयतिथि
और अ० अने(२)वि०बीजुं(३)अधिक. –**का और**=कांई नुं कांई –**क्या** =हा, बरोबर ए अर्थनो उद्‌गार
औरत स्त्री० [अ.] ओरत; स्त्री
औरेब पुं० वक्रगति(२)कपडानो वांको काप(३)पेच; छळ; युक्ति
औलाद स्त्री० [अ.] ओलाद
औला मौला वि० मोजी;धूनी;मनस्वी
औलिया पुं० [अ. 'अली' का ब.व.] ओलियो; सिद्ध; पीर
औवल वि० [अ.] अवल;प्रथम;मुख्य; सर्वश्रेष्ठ
औसत पुं० [अ.] सरासरी (२) वि० मध्यम; साधारण
औसना अ०क्रि० गरमी पडवी (२) सडवुं;वासी थई वगडवुं
औसर पुं० (प.) अवसर
औसान पुं० [सं. अवसान] अन्त(२) परिणाम (३) [फा.] सूधबूध; होश
औसाफ़ पुं० [अ.] सद्‌गुण के खास [गुण
औसेर स्त्री० (प.) जुओ 'अवसेर'
औहाती वि०स्त्री०(प.)जुओ 'अहिवाती'

क

कंकड़(–र) पुं० [सं. कर्कर] कांकरो; कंकर (२) गांगडो

कंकड़ी स्त्री० कांकरी (२) गांगडी

कँकड़ो(-री)ला वि० कांकराळुं; कांकरावाळुं

कंकन पुं० कंकण

कंक्रीट स्त्री० [इं. कोन्क्रीट] कांकरेट

कँक्रीला वि० जुओ 'कंकड़ीला'

कंकाल पुं० [सं.] हाडपिंजर

कंकाली पुं० एक नीच जाति (२) वि० कर्कशा (स्त्री)

कँखवारी स्त्री० बगलमां थतो फोल्लो

कँखौरी स्त्री० 'कांख'; बगल (२) जुओ 'कँखवारी'

कंगन पुं० कंकण. **–को आरसी क्या ?** =प्रत्यक्ष वातनो पुरावो शा माटे ?

कगना पुं० कंकण (२) कंकण बांधतां के छोडतां गवातुं गीत

कँगनी स्त्री० नानुं कंकण (२) कांगरी (३) दांतो के दांतावाळुं गोळ चक्कर; 'कोग–व्हील' (४) स्त्री० कांग अनाज; चीणो ?

कंगला,कंगाल वि० कंगाळ; गरीब

कंगाली स्त्री० कंगालियत

कँगूरा पुं० [फा. कुँगरा] कांगरो; शिखर;टोच (२) किल्लानो बुरज

कंघा पुं० कांसको (२) फणी;'कंघी'

कंघी स्त्री० नानी कांसकी (बे बाजू दांतावाळी) (२) फणी. **–चोटी करना**= माथुं ओळी करी सजवुं

कँघेरा पुं०[स्त्री० **–रिन**]'कंघा'बनावनार

कंचन पुं० कंचन; सोनुं (२) एक जिप्सी जेवी जात जेमनी स्त्रीओ प्रायः गुणकानुं काम करे छे. **–बरसना**=खूब धन मळवुं

कंचनी स्त्री० कंचन जातनी स्त्री(२) वेश्या [करनारो

कँचेरा पुं० [स्त्री० **–रिन**] काच-काम

कंजई वि० राखोडी रंगनुं

कंजड़(–र) पुं० एक रानीपरज (दोरडां भागवां वगेरे काम करे छे)

कंजा पुं० [सं. करंज] एक जातनी कांटाळी झाडी(२)वि० राखोडिया रंगनुं (३) ते रंगनी आंखवाळुं; भूखरी आंखवाळुं

कंटर पुं० [इं. डिकेन्टर] सुंदर (दारू वगेरेनो) शीशो

कँटिया स्त्री० खीली (२) माछली पकडवानो आंकडो (३) कूवामां नांखवानी बिलाडी (४) माथानुं एक घरेणुं
कँटीला वि० कांटावाळुं
कंटोप पुं० कानटोपी
कंट्रैक्ट पुं० कंट्राक्ट; ठेको
कंठमाला स्त्री० [सं.] कंठमाळनो रोग
कंठा पुं० कांठलो (२) कपडानो कोलर (३) कंठो; मोटी कंठी
कंठी स्त्री० कंठी. –देना या बाँधना या लेना=कंठी बांधवी; चेलो करवो. –लेना=वैष्णव थवुं; मद्य-मांस छोडवुं [धोरी नस
कंडरा पुं० एक शाक (२) स्त्री० [सं.]
कंडा पुं० छाणुं. –होना=सुकावुं; दूबळुं पडवुं (२) मरी जवुं
कंडाल पुं० एक वाद्य; तूरी (२) [सं. कंडोल]धातुनुं पाणीनुं एक वासण
कंडी स्त्री० नानुं छाणुं
कंडील स्त्री० [अ. क़ंदील] दीवो (२) (दिवाळीमां) शोभानो करातो कागळनो दीवो
कंडीलिया स्त्री० दीवादांडी
कंत(–थ) पुं० (प.) कंथ; स्वामी
कंथी पुं० कंथावाळो; साधु
कंद पुं० [सं.]कंदमूळ(२)[फा.] साकर
कंदला पुं० सोनाचांदीनी चीप के तार
कंदा पुं० कंद (शकरियुं के अळवी)
क़ंदील स्त्री० [अ.] 'कंडील'; दीवो
कंदुक पुं० [सं.] दडो (२) उशीकुं (३) सोपारी (४) एक वर्णवंध
कँदैला वि०मलिन;गंदुं ['करधनी'
कँदोरा पुं०,कंधनी स्त्री० कंदोरो;
कंधा पुं० स्कंध; खभो. –डालना, -डाल देना=बळदे जूसरुं उतारवुं (२) नाहिंमत थवुं के थाकवुं. –देना = ठाठडी ऊंचकवी (२) मदद करवी
कंधार पुं० कंदहार नगर
कँधावर स्त्री० जूसरी (२) खेस
कँधेला पुं० साडीनो खभा परनो भाग
कंप पुं० कॅम्प (२) [सं.] कंप
कँपकँपी स्त्री० कंपारी; कमकमी
कंपा पुं० पक्षी पकडवानी वांसनी एक बनावट
कंपू पुं० कॅम्प; छावणी; कंपु
कँवल पुं० कमळ
कँवल-गट्टा पुं० कमळकाकडीनुं बी
कंस पुं० [सं.] कांसुं के तेनुं वासण (२) प्यालो (३) मंजीरा (४) कंस मामो [केटलुंक
कई वि० [सं. कति, प्रा. कइ] कंई;
ककड़ी(–री) स्त्री० काकडी. –के

चोरको कटारीसे मारना=कीडी पर कटक आणवुं; जरा दोषनी भारे शिक्षा करवी

ककनी स्त्री० जुओ 'कँगनी' (२) एक मीठाई [वर्णमाळा

ककहरा पुं० कक्को; क थी ह सुधीनी

ककोड़ा(-रा) पुं० कंकोडुं; 'खेखसा'

ककोरना स०क्रि० कोरवुं; खोतरवुं

कक्कड़ पुं० सूको(चलममां पीवानो)

कखौरी स्त्री० जुओ 'कँखोरी'

कगर पुं० ऊंचो किनारो(२)कांगरी(३) कोर;किनार(४)अ० किनारा पर (५) पासे [(२) टेकरो

कगार पुं०'कगर;'(नदीनो)ऊंचो किनारो

कचक स्त्री० कचडावाथी वागवुं ते

कचकच पुं० कचकच;बकवाद

कचकचाना अ०क्रि० कचकचवुं (२) दांत पीसवा

कच(-ज)कोल पुं० भिक्षापात्र

कचदिला वि० पोचा दिलनुं;न जीरवी शके एवुं

कचपच पुं० गीचोगीच होवुं ते;भीड (२)कचपच;कचकच [नक्षत्र

कचपची(-चिया) स्त्री० कृत्तिका

कचोंदिया वि. काचा तळियानुं (२) अस्थिर मननुं [परिवार

कचबच पुं० 'कच्चेबच्चे'; बच्चांकच्चां;

कचर कचर पुं०कचर कचर चाववानो अवाज (२) कचकच

कचरकूट पुं० खूब कूटवुं-मारवुं ते(२) खूब पेट भरीने भोजन

कचरना स०क्रि० [सं. कच्चरण] पगथी कचडवुं;दबाववुं [(३)कचरो

कचरा पुं० काकडी(२)काचुं खडबूचुं

कचलोंदा पुं०कणकनो लूओ [पाणी

कचलोहू पुं० दूझता घामांथी झरतुं

कचवाँसी स्त्री० जमीननुं एक माप

कचवाट स्त्री० कचवाट;खेद;अणगमो

कचहरी स्त्री० कचेरी. -चढ़ना= अदालते मामलो लई जवो. -लगना = दरबार भरावो; ठठ जामवी [कचाश

कचाई स्त्री० काचापणुं(२)कम अनुभव;

कचूमर पुं० कचुंबर

कचिया पुं० दातरडुं [पडवुं

कचियाना अ०क्रि०हिंमत हारवुं;पाछुं

कचोरा पुं० कटोरो; प्यालो

कचौड़ी(-री) स्त्री० अडदनी दाल वगेरेना पूरणनी एकप्रकारनी पूरी

कच्चा वि० काचुं(२)पु० काचो खरडो (३) जडवुं; दाढ. **-करना**=जूठुं सावित करवुं(२)शरमाववुं.**-पड़ना** =जूठुं ठरवुं [गुप्त भेद

कच्चा चिट्ठा पुं० खरेखरी वात;रहस्य;

कच्ची पक्की स्त्री० गाळ [वात
कच्ची बात स्त्री० अश्लील–लज्जाजनक
कच्ची वही स्त्री० काचो चोपडो
कच्ची रसोई स्त्री० दाळभात जेवी पाणीनी–वोटाय एवी रसोई
कच्चे बच्चे पुं० कच्चांबच्चां;छोकरांछैयां
कछनी स्त्री० काछडो. –काछना, –बांधना,–मारना=काछडो मारवो
कछान(–ना) पुं० काछडो
कछार पुं० [सं. कच्छ] समुद्र के नदीकिनारानी कांपवाळी जमीन
कछु(०क) वि० (प.) 'कुछ'; कांई
कछुआ पुं० काचवो
कछुई स्त्री० काचबी [कछोटो
कछोटा,कछौटा पुं० 'कछनी';काछडो;
कज पुं० [फा.] वक्रता; वांकापणुं (२) दोष; खोड [वाळो (बळद)
कजरा पुं०काजळ(२)वि०काळी आंख-
कजरारा वि० काजळवाळुं (२) काळुं
कजलाना अ०क्रि० [हिं. काजल] काळुं पडवुं (२)(देवता) कजळावो; बुझावुं (३) स०क्रि० मेश आंजवी
कजली स्त्री०मेश (२) गंधक ने पारानी कजली (३) एक प्रकारनुं (वर्षानुं) गीत
कजलौटा पुं० काजळनी डबी
क़ज़ा स्त्री० [अ.] मरण (२) नसीब (३) नमाज के रोजानो समय चूकवो ते. –करना=मरवुं
क़ज़ाक पुं० [तुर्की] लूंटारु; कजाक
कजावह [फा.], कजावा पुं० ऊंटनो काठडो
क़ज़िया पुं० [फा.] कजियो; झघडो. (२)कोर्टनो झघडो. –पाक होना =कजियो पतवो [दोष; खोड
कजी स्त्री० [फा.] 'कज'; वक्रता (२)
क़ज़्ज़ाक पुं० जुओ 'कज़ाक'
कटकई स्त्री० (प.) फोज; कटक
कटकट स्त्री० दांतोनो कटकट अवाज (२) झघडो
कटकटाना अ०क्रि० दांत कटकटाववा
कटखना वि० करडे एवुं (२) पुं०युक्ति
कटघरा पुं० लाकडानुं (जेवुं के,–कठेरावाळुं साक्षी माटे कोर्टमां होय छे) पांजरुं
कटड़ा पुं० भेंसनुं पाडुं
कटती स्त्री० वेचाण;खपत
कटना अ०क्रि० कपावुं(२) वीतवुं (३) शरमावुं; झंखवाणुं पडवुं ('जाना' नी साथे) [कापणी
कटनी स्त्री० कापवानुं ओजार के
कटरा पुं० नानुं वजार (२) पाडुं
कटवाँ वि० कपातुं के कपायेलुं. –ब्याज पुं० कापतुं ब्याज

कटसरैया स्त्री० कांटासरियो
कटहरा पुं० 'कटघरा' जुओ
कटहल पुं० [सं. कंटकिफल] फणस
कटहा वि० [स्त्री. –ही] 'कटखना;' करडे एवुं [के मजूरी
कटाई स्त्री० कापवानुं–कापणीनुं काम
कटाकटी स्त्री० मार-काट; कापाकापी
कटान स्त्री० काटवुं ते (२) कापणी
कटाना स०क्रि० कटाववुं; कपाववुं
कटीला वि० [स्त्री. –ली] कांटाळुं (२)अणीदार(३)तीक्ष्ण (४) प्रभाव पाडे एवुं;तेजस्वी
कटोरदान पुं० रसोई ढांकी राखवानुं एक पीतळनुं वासण;गरमुं
कटौती स्त्री० कोई रकममांथी अमुक भाग धर्मादा काढवो ते; धर्मादा लागो (२) दलाली
कट्टर वि० करडे एवुं (२) कट्टर;चुस्त; दृढ (३) हठीलुं (४) अंधश्रद्धाळु
कट्टहा पुं० मरणने अंगेनुं दान लेनार ब्राह्मण; 'महाब्राह्मण'
कट्टा वि० हृष्टपुष्ट; 'हट्टा-कट्टा' (२) बळवान (३) पुं० जडवुं;'कच्चा'
कट्ठा पुं० पांच हाथ चार आंगळ जेटलुं जमीननुं एक माप(२)काठा घउं
कठकोला पुं०लक्कडफोडो;'कठफोड़वा'
कठड़ा (–रा) पुं० जुओ 'कटहरा'(२) जुओ 'कठौता'
कठताल पुं० करताल
कठपुतली स्त्री० काष्ठनी पूतळी(२)जेम नचावे एम नाचे एवी व्यक्ति
कठफोड़वा पुं० 'कठकोला' जुओ
कठबाप पुं० बीजो–सावको बाप
कठमलिया पुं० कंठी पहेरनार–वैष्णव (२) बग-भगत; जूठो साधु
कठमस्त(–स्ता) वि० अलमस्त;हृष्टपुष्ट (२) व्यभिचारी
कठरा पुं० जुओ 'कठडा'
कठला पुं० सादळियुं के तेवी बच्चाने पहेरावाती माळा
कठिनी स्त्री० लखवानो चाक; खडी
कठिया वि० कठण(२)कठण कोटला वाळुं. उदा० 'कठिया बदाम, गेहूं' [जेवुं थई जवुं
कठियाना अ०क्रि० सुकाईने लाकडा
कठैला,कठौता पुं० लाकडानुं एक पहोळुं मोटुं वासण; कथरोट
कड़क स्त्री० कडाको; गर्जना (२) चपळता; तडपवुं ते (३) दर्दनो चसको (४) रोकाईने के बळतरा साथे पेशाब थवानो रोग
कड़कड़ पुं० कडकड अवाज
कड़कड़ाता वि० कडकड अवाज करतुं (२) तेज; प्रचंड

कड़कड़ाना अ०क्रि० कडकड अवाज थवो (२) (घी ई०)ककडवुं(३) स०क्रि० कडकड अवाज साथे तोडवुं (४)(घी ई०) ककडाववुं

कड़कड़ाहट स्त्री० कक्डाट; कडकड अवाज

कड़कना अ०क्रि० कडकड अवाज करवो (२) जोरथी तड्कीने अवाज करवो (३) कडाका साथे फाटवुं के तूटवुं

कड़खा पुं० [हिं. कडक] लडाईमां गावानुं युद्धगीत; कडखो

कड़खैत पुं० कडखेद – कडखो गानार

कड़बड़ा वि० काळा ने धोळा वाळवाळुं

कड़बी स्त्री० जारनी कडब; 'कड़वी'

कड़वा वि० कडवुं; 'कड़ुआ'

कड़वी स्त्री० जुओ 'कड़बी'

कड़ा पुं० कडुं (२) वि० [सं.कड्ड] [स्त्री० –ड़ी] कठण (३)लूखुं (४) उग्र; सखत; दृढ(५) तेज; प्रचंड (६) मुश्केल; दुष्कर (७) असह्य (८) कर्कश

कड़ाई स्त्री० 'कड़ा'-पणुं

कड़ाका पुं० कडाको [लांघो; अवाज]

कड़ाबीन स्त्री०[तु. कराबीन]नानी के नानी नाळनी बंदूक [कढैयुं

कड़ाहा पुं० [सं. कटाह, प्रा. कडाह]

कड़ाही स्त्री० कढाई

कड़ी स्त्री० [हिं. कड़ा] सांकळनी एक कडी (२) कडी–लटकाववानो आंकडो (३) गीतनी कडी (४) लगाम (५) मुश्केली; मुसीबत

कड़ुआ वि० [स्त्री. कड़ुई] कडवुं(२) क्रोधी (३) अप्रिय; कटु (४) कठण;'कडा.' –होना=गुस्से थवुं –करना=धन बगाडवुं. –मुँह= कटु बोलनार मोढुं

कड़ुआ तेल पुं० सरसियुं

कड़ुआना अ०क्रि० कडवुं लागवुं (२) गुस्से थवुं(३)आंखमां कळतर थवुं

कड़ुआहट स्त्री० कडवापणुं

कढ़ना अ०क्रि० [सं. कर्षण]नीकळवुं; बहार आववुं; उदय थवो (२) नातरे जवुं (३) (दूध) घाटुं थवुं

कढ़ाई स्त्री० कढाई; 'कड़ाहा '(२) 'कढ़ना' परथी नाम

कढ़ाव पुं० वेलबुट्टा काढवा ते

क़त पुं० [अ.] कत; कलमनो काप

कत अ० [सं. कुतः](प.)केम? शा माटे

क़तई अ० [अ.] बिलकुल; एकदम; नितांत [कर्मणि

कतना अ०क्रि० कंतावुं; 'कातना'नुं

कतन्नी स्त्री० 'कतरनी;' कातर

कतरन स्त्री० कातरवामांथी पडता रद्दी

काफ्ला–कापलीओ
कतरना स० क्रि० [सं. कर्त्तन] कातरवुं
कतरनी स्त्री० कातर; 'कैंची'
कतरब्योंत स्त्री० कापकूप; आमतेम करवुं ते (२) जोवुं विचारवुं ते; गडभांग [बुंद; बिंदु
क़तरा पुं० [अ.] टुकडो; खंड (२)
कतराना स०क्रि० कतरावबुं(२)अ०क्रि० कतराता जवुं; वांका फंटावुं
क़तल पुं० [अ. क़त्ल] कतल; हत्या
क़तला पुं० [अ. क़तरा] टुकडो
क़तलाम पुं० [अ. कत्लेआम] सर्व-संहार [वगेरेनो)
क़तली स्त्री० नानो टुकडो (मीठाई
कतवाना स०क्रि० कंतावबुं [वगेरे
कतवार पुं० कूडोकचरो; रद्दी घास
कतहुँ(–हूँ) अ० क्यांय; कोई जगाए
क़ता स्त्री० [अ. क़तअ] बनावट; आकार (२) ढंग (३) कपडानुं वेतरण–'कट'
कताई स्त्री० कांतवुं ते के तेनी मजूरी
कताना स०क्रि० 'कतवाना'
क़तार स्त्री० [अ.] पंक्ति; हार (२) समूह; जूथ
कतारा पुं० लाल मोटी शेरडी
कति(०क,–तेक) वि०केटलुं; केवडुं
कतौनी स्त्री० जुओ 'कताई'

कत्ता पुं० छरो; वांस फाडवानुं ओजार
कत्ती स्त्री० छरी; कटार
कत्थई वि० कथ्थाई
कत्थक पुं० गावा वजावा ने नाचवानुं काम करती एक जात
कत्था पुं० [सं. क्वाथ] काथो
क़त्ल, क़त्लेआम पुं० [अ.] जुओ अनुक्रमे 'कतल', 'कतलाम'
कथक्कड़ पुं० कथा कहेनार
कथरी स्त्री० गोदडी; कंथा
कद स्त्री० [अ. कद्द] द्वेष (२) हठ (३) अ० [सं. कदा] क्यारे
क़द पुं० [अ.]कद; ऊंचाई [ऊंचुं
क़द-आवर वि० [अ.+फा.] कदावर;
कदम पुं० कदंब झाड
क़दम पुं०[अ.] कदम; पगलुं
कदमचा पुं० [फा] पग मूकवानी जगा, जेवी के जाजरूमां
क़दमबोसी स्त्री० [अ.] मोटाने पगे लागवुं ते—तेमनी शुश्रूषा
क़दरदाँ(-दान) वि०गुणग्राही;कदरदान
कदराई स्त्री० कायरता; भीरुता
कदाच(–चि) अ० (प.) कदाच
क़दामत स्त्री० [अ.] कदीमपणुं
क़दीम(–मी) वि० [अ.] जूनुं; पुराणुं
कद्दू पुं० [फा.] जुओ 'कद्दू'
कदूरत स्त्री० [अ.] मेल; गंदापणुं (२)

वैमनस्य जेटलुं
क़दे-आदम वि० [अ.] कदमां माणस
क़द्दावर वि० [फा.] कदावर
कद्दू पुं० दूधी (तूमडा घाटनी) (२) कोळुं; 'कुम्हड़ा'
कद्दूकश पुं० [फा.] छीणी
कधी अ० कदी
कन पुं० कण (२) प्रसाद (३) भिक्षान्न (४) शरीरशक्ति
कनक पुं० घउंनी एक जात (२) घउंनो लोट (३) [सं.] सोनुं (४) धंतूरो
कनकटा पुं० कानकट्टो (२) कान कापी लेनारो [एक रोग
कनकटी स्त्री० कानना पाछला भागनो
कनकना वि० जरामां चिडाय एवुं; चीडियुं (२) खंजवाळ लागे एवुं (३) अरुचिकर [(२) न रुचवुं
कनकनाना अ० क्रि० खंजवाळ लागवी
कनकी स्त्री० कणकी [आनावारी
कनकूत पुं० खडो पाक आंकवो ते;
कनकौवा पुं० कनकवो; पतंग
कनखजूरा पुं० कानखजूरो
कनखी स्त्री० त्रांसी नजरे जोवुं ते (२) आंखनो इशारो. **–मारना**= आंखथी इशारो करवो के ना कहेवुं
कनटोप पुं० कानटोपी
कनपटी स्त्री० कान ने आंख वच्चेनी जगा; लमणो [वींधे छे
कनफटा पुं० गोरखपंथी साधु जे कान
कनफुँका वि० [स्त्री० **–की**] कानमां मंत्र फूंकनार (गुरु) [फूसियुं
कनफुसका वि० [स्त्री० **–की**] कान-
कनफुसली स्त्री० कानफोसणी
कनरस पुं० संगीत के वातो सांभळवानो रस (वि० **–सिया**)
कनवास पुं० केन्वास कपडुं
कनसलाई स्त्री० नानो कानखजूरो
कनस्तर पुं० टिननो डब्बो; कनास्तर
क़नाअत स्त्री० [अ.] संतोष (२) संयम (३) सबूरी
कनागत पुं० [सं. कन्यागत] श्राद्ध (२) श्राद्धनुं पखवाडियुं
क़नात स्त्री० [अ.] तंबूनी कनात के जाडो पडदो
कनारी स्त्री० कानडी भाषा
कनियाँ स्त्री० गोद; खोळो
कनी स्त्री० कणी (२) हीराकणी (३) कणकी (४) बुंद
कनीज स्त्री० [फा.] दासी; नोकरडी
कने अ० कने; पासे (२) तरफ; बाजु
कनेठा वि० काणुं (२) वाडुं
कनेठी स्त्री० कान आमळवो ते
कनेर पुं० करेण
कनौड़ा वि० काणुं (२) अपंग; खोडवाळुं

(३) पुं० खरीदेलो दास (४) कृतघ्न माणस (५) नीच क्षुद्र आदमी

कनौती स्त्री० पशुनो कान के तेनो छेडो (२) काननी वाळी (३) कान ऊंचा करवानी रीत

कन्ना पुं० [सं. कर्ण, प्रा. कण्ण] पतंगनी कन्ना(२)किनार; कोर

कन्नी स्त्री० पतंगनी बे बाजू (२) कन्नी;पतंगनी लांबी पूंछडी(३) किनार. **–खाना या मारना**=(पतंगनुं)गिन्नावुं;कन्नावुं **–देना**= पतंगने छूट आपवी

कन्हाई, कन्हैया पुं० कृष्ण (२) प्रिय माणस (३) सुंदर छोकरो

कपटना स०क्रि० कापी लेवुं; चातरवुं

कपड़छ(–छा)न पुं० कपडाथी चाळवु ते (२)वि०तेवी रीते चाळेलुं;अति बारीक [भंडार

कपड़द्वार पुं० वस्त्रभंडार; कापडनो

कपड़मिट्टी स्त्री० दवा बनाववाना पात्रनुं मोढुं बंध करवा कपडुं बांधी माटीनो लेप करवो ते

कपड़ा पुं०[सं. कर्पट, प्रा. कप्पट,–ड] कपडुं;वस्त्र. **–कपड़े आना,कपड़ों से होना**=स्त्रीने मासिक धर्म आववो. **–लत्ता**=कपडांलत्तां

कपड़ौटी स्त्री० जुओ 'कपडमिट्टी'

कपार(–ल) पुं० कपाळ (२) खोपरी (३) ठींकरुं के एवुं भिक्षापात्र

कपास स्त्री० [सं. कर्पास] कपास

कपासी वि० कपासना फूलना रंगनुं; आछुं पीळुं (२) पुं० तेवो रंग

कपित्थ पुं० [सं.] कोठुं के कोठी

कफ़ पुं० कफ (२) [फा.] हथेळी के पगनुं तळियुं (३) फेण (४) [इं.] खमीसनो कफ. **कफ़ अफसोस मलना**=पस्तावामां हाथ घसवा

कफ़गीर पुं० [फा.] कडछी

कफ़न पुं०[अ.] कफन. **–को कौड़ी न होना या रहना**=अत्यंत गरीब होवुं. **–को कौड़ी न रखना**= कमावुं एटलुं वापरी नांखवुं. **–सिरसे बांधना**=जान जोखममां नाखवो;मरणिया थवुं. **–फाड़कर बोलना**=एकदम जोरथी बोलवुं

कफ़न-खसोट वि०(नाम,–टी)कंजूस; अत्यंत लोभी [लपेटवुं

कफ़नाना स०क्रि० कफनमां मडदुं

कफ़नी स्त्री० फकीरनो चोळो;कफनी

क़फ़स पुं० [अ.] पांजरुं (२) पक्षीनी चबूतरी (३) केदखानुं (४) हवा उजास वगरनी सांकडी जगा (५) शरीर [प्रायश्चित्त

कफ़्फ़ा(–फ़्फ़ा)रा पुं० [अ.] पापोनुं

कब अ० क्यारे ? -का,के,से=क्यारनुं
कबड्डी स्त्री० हुतुतुतु
कबरा वि० [सं. कर्वर, प्रा० कव्वर] (स्त्री० -री) कावरुं; काबरचीतरुं
क़बरिस्तान पुं० [अ.] 'कब्रस्तान'
क़ब्ल अ० [अ.] पहेलां; पूर्वे (२) वि० पूर्वनुं; पुराणुं
क़बा पुं० [अ.] एक जातनो लांबो ने खूलतो झब्बो [काम
कबाड़(-र) पुं० रद्दी नकामी वस्तु के
कबाड़ा पुं० नकामी वात; झंझट
कबाड़िया पुं० भांग्या तूटया मालनो वेपारी (२) नकामुं काम करनारो (३) झघडाखोर माणस
कबाबी वि० कबाब वेचनार (२) मांसाहारी [झब्बो
कबाय पुं० 'कबा'; एक जातनो
कबार पुं० रोजगार;वेपार(२)'कबाड़'
क़बाला पुं० [अ.] कबालो; वेचाण-खत; सोदानो दस्तावेज
कबाहट (प.), क़बाहत [अ.] स्त्री० बूराई; दुष्टता(२) मुश्केली;अडचण
कबीला स्त्री० [अ.] स्त्री; जोरु (२) कबीलो [कबुलाववुं
कबुलवाना, कबुलाना स०क्रि०
कबूद वि० [फा.] आसमानी; नील
क़बूल पुं० [अ.] स्वीकार; अंगीकार
कबूलना स०क्रि० कबूलवुं; स्वीकारवुं
क़बूलियत स्त्री० [अ.] कबूल-मंजूरीनो दस्तावेज;कबूलतनामुं [जियात
क़ब्ज पुं०[अ.]ग्रहण; पकड (२) कब-
क़ब्जा पुं० [अ.] (तलवारनी) मूठ; दस्तो (२) कबजो; अधिकार (३) नर-मादा; बरडवां
क़ब्ज़ियत स्त्री० [अ.] कबजियात
क़ब्र स्त्री० [अ.] कबर. -में पैर या पाँव लटकाना=मरण पासे होवुं (२) बहु घरडा थवुं
क़ब्रिस्तान पुं० [फा.] कब्रस्तान
कभी,कभू (प.) अ० कोई पण वखते; क्यारे पण. -का अ० क्यारनुं; घणा वखतथी
कमंगर पुं० [फा. कमानगर] कमान बनावनार (२) हाडवैद (३) चितारो (४) वि० दक्ष; निपुण
कमंगरी स्त्री० 'कमंगर'नो धंधो के काम [जेवुं ओजार
कमंचा पुं० शारडी फेरववानुं कामठा
कमंडली वि० कमंडलु राखनार; साधु (२) पाखंडी (३) पुं० ब्रह्मा
कमंद पुं० कबंध (प.) (२) [फा.] जंगली पशुने बांधवानो पाश
कमसे कम अ० ओछामां ओछुं; कांई नहि तो

कमअसल वि० [फा.+अ.] वर्णसंकर
कमख़ाब पुं० [फा.] किनखाब
कमची स्त्री०[तु.] पातळी सोटी; चाबुक
कमच्छा स्त्री० कामाक्षी देवी
कमठा पुं० [सं. कमठ] कामठुं; धनुष्य
कमठी स्त्री०कमठाडुं(२) [सं.] काचबी
कमती स्त्री० (२) वि० कमी
कमनैत पुं० बाणावळी; तीरंदाज
कमयाब वि० [फा.] दुर्लभ
कमर स्त्री० [फा.] केड; कमर.–टूटना =निरुत्साह, निराश थवुं
क़मर पुं० [फा.] चंद्रमा
कमरख स्त्री० कमरखी के कमरख फळ
कमरखी वि० कमरखना आकारनुं
कमरबंद वि०(२)पुं० [फा.] कमरबंध (तत्पर; पटो, नाडुं इ०)
कमरा पुं० कोटडी; ओरडी (२) कॅमेरा(३)कामळो [रोग
कमल पुं०, **कमलबाई** स्त्री०कमळानो
कमसिन वि० [फा.] कम उंमरनुं
कमसिनी स्त्री०[फा.]बाळपण [धंधो
कमाई स्त्री० कमाणी के तेनुं काम के
कमाऊ वि० कमाउ; कमानारुं
कमान स्त्री० [फा.] धनुष(२)कमान (घरनी) (३) तोप के बंदूक(४) [इं. कमान्ड] लश्करी आज्ञा
कमाना स०क्रि० [हिं. काम] कमावुं (२)कमावबुं; केळववुं; कसीने दृढ करवुं(३)नानुंमोटुं (सेवानुं) काम करवुं(४)कम करवुं
कमानी स्त्री० स्प्रिंग; कमान
कमाल पुं० [अ.] संपूर्णता(२)कुशळता (३)अद्‌भुत काम(४)वि० कमाल
कमालियत स्त्री० [अ.] कमालपणुं
कमासुत वि० कमाउ(२)उद्यमी
कमिश्नरी स्त्री० कमिश्नरनी कचेरी के तेनुं काम के तेनी हकूमतनो प्रदेश
कमी स्त्री० [फा.] कमी; ऊणप (२) हानि; नुकसान
कमीज़(–स) स्त्री० [अ.] खमीस
कमीना वि० [फा.] कमी;ओछुं; क्षुद्र
कमेटी स्त्री० कमिटी; समिति
कमेरा पुं० काम करनारो; मजूर; नोकर
कमेला पुं० पशु मारवानी जगा; कतलखानुं [माटलुं)
कमोरा पुं०माटीनुं एक वासण (घडो;
कमोरी स्त्री० माटली; नानो 'कमोरा'
कम्बख़्त वि०[फा.]कमबख्त;कमनसीब
कम्मा पुं० ताडपत्र पर लखेलो लेख
क़याफ़ा पुं० [अ.] चहेरो; सिकल; सूरत. –शिनास वि० [फा.] चहेरो जोई मननो भाव समझनार
क़याम पुं० [अ.] रोकावुं ते के तेनी जगा; विश्राम(२) स्थिरता; निश्चय

क़यामत स्त्री० [अ.]कयामत(२)प्रलय (३) ऊथलपाथल; खळभळाट

क़यास पुं० [अ.] क्यास; अनुमान. **–लगाना, –लड़ाना, –दौड़ाना** =क्यास वांधवो;ख्याल दोडाववो. **–में आना=**समजावुं

क़यासी वि० कल्पित

करंक पुं०[सं.]हाडपिंजर [टोपली

करंड पुं०[सं.] मधपूडो(२)करंडियो के

करंतीना पु० [इं. क्वोरेंटाइन] चेपी रोगना स्थानमांथी आवनारने अमुक वखत एक स्थाने रोकी लेवामां आवे छे ते जगा

करई स्त्री० एक माटीनुं वासण(२) अनाजनो भंडार

करक स्त्री० जुओ 'कड़क' (२) [सं.] करवडो; कमंडलु(३)दाडम

करकट पुं० 'कतवार'; कचरो

करकना अ०क्रि० जुओ 'कड़कना'

करकरा वि० [सं. कर्कर] ककरुं

करकराहट स्त्री० ककरापणुं(२)आंखमां कांकरी पडवानी पीडा

करकस वि० (प.) कर्कश

करखा पुं०जुओ 'कड़खा'(२)उश्केरणी (३) मेंश; 'करिखा'

करगह [फा.], **करघा** पुं० साळ के तेनी पावडीनो खाडो

कर(–ल)छा पुं० कडछो

कर(–ल)छी स्त्री० कडछी

करछुला पुं०मोटो कडछो(भाडभूंजानो)

करज पुं० [सं.] नख(२)आंगळी

करतब पुं० कर्तव्य;काम(२)हुन्नर;कळा (३)करामत; जादु

करतबी वि० पुरुषार्थी (२) निपुण; 'करतब'वाळुं [कळा;हुन्नर

करतूत (–ति) स्त्री० करतूक;काम(२)

करदा पुं० खरीदेला मालमां कचरो इत्यादि होय ते खाध के ते पेटेनुं बारदान कपाय ते(२)नवा माल पेटे जूनो आपी बदलो करतां उपर आपवानुं रहेतुं बाकी वळतर

करदोरा पुं० कंदोरो

करधनी स्त्री० कंदोरो

करधर पुं० वादळुं;मेघ

करनफूल पुं० काननी फूलवाळी

करनबीक़ पुं० अर्क काढवानुं एक नानुं वासण [स०क्रि० करवुं

करना पुं० एक जातनुं मोटुं लींबु (२)

करनाई स्त्री० [अ. करनाय] शरणाई

करनाटक पुं० कर्णाटक

करनाटकी पुं० कर्णाटकी (२) जादुगर के खेलाडी

करनाल पुं०[अ.करनाय] 'करनाई'(२) मोटुं ढोल(३)एक जातनी तोप

करनी स्त्री० करणी(२)मरणक्रिया (३) कडियानुं लेलुं

करनैल पुं० [इं. कर्नल] एक ऊंचो लश्करी अमलदार

करपर वि० कृपण; कंजूस (२) स्त्री. (प.) कर्पर; खोपरी

करबरना अ०क्रि० कलरव करवो

करबला पुं० [अ.] ताबूत डुबाडवानी जगा (२) निर्जळ प्रदेश (३) कब्रस्तान (४) हुसेनने ज्यां मार्यो ते स्थान

करम पुं० कर्म; काम (२) करम; नसीब (३) [अ.] महेरबानी; कृपा (४) उदारता

करमकल्ला पुं० करमकल्लो; कोबी

करमठ, करमी वि० कर्मठ; कर्मकांडी

कर(–ल)मुँहा वि० जुओ 'कलमुँहा'

करवट स्त्री० [सं. करवर्त] पासाभेर सूवुं ते;पासुं. **–बदलना,–लेना**= पासुं बदलवुं(२) पलटवुं. **–खाना, –होना**=फरी जवुं. **–न लेना**= कोई कार्य विषे ध्यान न राखवुं. **करवटें बदलना**=पथारीमां बेचेन पासां घस्या करवां

करवट,करवत पुं० [सं. करपत्र] करवत; आडियुं. **–लेना**=(काशीए) करवत मेलाववो

करवर स्त्री० विपत्ति; संकट; मुसीबत

करवा पुं० करवडो; धातु के माटीनो नाळचावाळो लोटो

करवाना स०क्रि० कराववुं; 'कराना'

करवार(–ल) पुं० [सं. करवाल] तलवार

करवाली स्त्री० नानी तलवार; कटार; 'करौली' [(३) श्मशान

करवीर पुं० [सं.] करेण (२) तलवार

करवैया वि० करनार; करवैयो

करश्मा पुं० [फा.] चमत्कार; अद्‌भुत करामत [(२)क्रोध;जोश

करष(-षा) पुं०[सं. कर्ष] वेर; अणबनाव

करष(-स)ना स०क्रि० (प.) आकर्षवुं; खेंचवुं (२) सूकववुं (३) समेटवुं; एकठुं करवुं

करसान पुं० खेडूत

करसायर(–ल) पुं० काळो मृग

करसी स्त्री० छाणांना टुकडा

करह पुं० ऊंट (२) फूलनी कळी

कराँत पुं० करवत

कराँती पुं० वेरणियो [साप

कराइत पुं० 'करैत'; एक झेरी काळो

कराई स्त्री० काळप; शामळापणुं (२) करवानी के कराववानी किंमत (३)दाळनुं भूसुं

कराना स०क्रि० करावबुं [सगाई

क़राबत स्त्री०[अ.]समीपता (२) संबन्ध;

क़राबा पुं० [अ.] मोटो काचनो शीशो
क़राबीन स्त्री० [तु.] जुओ 'कड़ाबीन'
करामात स्त्री०ब०व०चमत्कार; 'करश्मा'
करामाती वि० सिद्ध; चमत्कारी
क़रार पुं० [अ.] स्थिरता (२) धीरज; संतोष (३) आराम; चेन (४) करार; वायदो; ठराव (५) [सं. कराल ?] कराड;भेखड;'करारा'
क़रार–दाद पुं० [अ.+फा.] लेणदेणने अंगेनो करार
करारा पुं० कराड; भेखड (२) वि० कराल; तीक्ष्ण; तेज; कठोर
कराव(–वा) पुं० नातरुं; कोईने त्यां ठाम वेसवुं ते
कराह पुं० पीडाथी आह करवुं ते
कराहना अ०क्रि० पीडाथी आह आह करवुं ['कड़ाही'
कराहा,कराही जुओ अनुक्रमे 'कड़ाहा',
कराहियत स्त्री० [अ.] अप्रसन्नता; अणगमो (२) अयोग्य के निंद्य काम (३) घृणा; 'नफ़रत'
करिखई स्त्री० 'कराई'; काळप
करिखा पुं०'करखा';मेंश [हलेसुं
करिया वि० काळुं(२) पुं० खलासी(३)
करिहाँ(०व) स्त्री० कमर; कटि
क़रीन वि०[अ.] निकट; संगत;जोडेनुं
क़रीना पुं० [अ.] रीत; ढंग
क़रीब अ० [अ.] पासे; नजीक (२) लगभग [ईश्वर
करीम वि० [अ.] दयाळु (२) पुं०
करीर[सं.], **–ल** पुं० वांसनो फणगो (२) कांटाळुं एक झाड; केरडो
करेजा पुं० 'कलेजा'; कलेजुं
करेब स्त्री० [इं. क्रेप] करेप; एक बारीक रेशमी कपडुं
करेमू पुं० एक भाजी
करेर वि० कठोर
करे(–रै)ला पुं० [सं. कारवेल्ल] कारेली
करैत पुं० 'कराइत' जुओ
करैला पुं० 'करेला' जुओ
करोदना, करोना स०क्रि० खणवुं; खोतरवुं; खोदवुं
करौंदा पुं० [सं. करमर्द] करमदी
करौत पुं०'करौंत';करवत(२)स्त्री०रखात
करौता पुं० करवत(२)'करावा' जुओ
करौती स्त्री० आरी (२) नानो 'क़रावा' (३) काचनी भट्ठी
करौली स्त्री० जुओ 'करवाली'
कर्कट पुं० जुओ 'करकट'
कर्कर पुं०[सं.] करकर (२) वि०ककरुं
कर्चूर पुं० [सं.] सोनुं
क़र्ज़(–र्ज़ा) पुं० [अ.] करज; देवुं. **–खाना**=देवुं करवुं(२)सपाडामां आववुं

क़र्ज़ख़ाह,क़र्ज़दार पुं० देवादार
कर्बुर पुं० [सं.] सोनुं (२) वि० कावरुं
कर्मक(–का)र पुं०लुहार के सोनी(२) नोकर (३) बळद (४) वेठियो
कर्ममास पुं० [सं.] श्रावण मास
कर्र पुं० [अ.] विजय (२) वैभव; प्रभाव. –व फर्र=वैभव अने शोभा
कर्रा वि० 'कड़ा'; कठण; मुश्केल
कर्राना अ०क्रि० 'कर्रा' थवुं
क़लंदर पुं० [अ.] एक जातनो मुसलमान विरागी साधु (२) मदारी
कल पुं० [सं.] मधुर ध्वनि (२) वि० सुंदर (३) स्त्री० [सं. कल्य, प्रा. कल्ल] आरोग्य (४) आराम; सुख; कळ; संतोष (५) अ० काले (६) स्त्री०कळा; युक्ति (७) कळ; यंत्र. –से अ० आरामथी(२)धीरे धीरे
कलई स्त्री० [अ.] कलाई (२) वहारनो ओप (३) चूनाथी धोळवुं ते. –खुलना=उघाडुं पडवुं. –न लगना=युक्ति ना चालवी
क़लईगर पुं० कलाई करनारो;कलाईवाळो
क़लक़ पुं० [अ.] बेचेनी (२) दुःख; चिंता; खेद
कलका वि० थोडा दिवसनुं; कालनुं
कलकानि स्त्री० हेरानगत; मुश्केली
कलक्टर पुं० कलेक्टर
कलछा,कलछी जुओ 'करछा, करछी'
कलछुला पुं० जुओ 'करछुला'
कलदार वि० कळ–चावी के चांप–वाळुं (२) पुं० कलदार रूपियो
कलधूत पुं० [सं.] चांदी
कलधौत पुं० [सं.] सोनुं (२) चांदी (३) मधुर ध्वनि ['कलफ'
कलप पुं० [सं. कल्प] कलप (२) जुओ
कलपना अ०क्रि० कल्पांत करवुं; कलपवुं (२) स०क्रि० कापवुं
कलफ पुं० कपडानी अस्तरी करवामां नंखातो आर (२) चहेरा परनुं काळुं चाठुं
कलबल पुं० उपाय; युक्ति (२) कलबल; गरबड
कलबूत पुं०[फा.कालबूद] कालबूत(२) (पाघडी टोपी इ० नो) फरमो
क़लम पुं०, स्त्री० कलम (लखवानी के रोपवानी) (२) चित्रकारनी पींछी के शिल्पीनुं टांकणुं (३) धरु करी ववातुं धान (४) कान पासे हजामतमांथी बाकी रखाता नाना वाळ. –खींचना, फेरना, वा मारना =लखेलुं रद करवुं; चेकी नांखवुं. –तोड़ना= लखवामां हद करवी
क़लम-कसाई पुं० [अ.] भणेलो छतां लोकने हानि करनारो

क़लमबन्द वि० लखेलुं(२)ठीक;बरोबर
कलमा पुं० [अ.] कलमो. –पढ़ना= मुसलमान थवुं
कलमी वि० [अ.] लखेलुं;'कलमबंद' (२)कलमी [(३)अभागी
कलमुहाँ वि० काळा मोंनुं(२)कलंकित
कलवरिया स्त्री० दारूनुं पीठुं
कलवार पुं० कलाल [शिखर
कलसा पुं०कलश;कळशियो(२)मंदिरनुं
कलसी स्त्री० नानो 'कलसा'
कलही वि० कलहप्रिय; लडकणुं
कलाँ वि० [फा.] मोटुं; वडुं
कलाई स्त्री०हाथनुं कांडुं(२)'कलावा'नुं अल्पतावाचक रूप [बरफी
क़लाकंद पुं०[फा.]मावानी एक मीठाई–
कलाबत्तू पुं० [तुर्की–कलावतून] कलाबूत;सोना चांदीना तारवाळो रेशमी दोरो के तेनुं मोळियुं
कलाबाज़ी स्त्री० गुलांट; गोटमडुं. –करना, खाना=गोटमडुं खावुं
कलाम पुं० [अ.] वाक्य(२)वातचीत (३) प्रतिज्ञा(४)वांधो;खचको
कलार(–ल) पुं० 'कलवार'; कलाल
कलावा पुं० सूतरनुं कोकडुं(२) लाल नाडाछडीनुं कोकडुं [मांस
क़लिया पुं० [अ.] रसादार पकावेलुं
क़लियान पुं० [फा.] एक जातनो हूको
कलियाना अ०क्रि० कळीओ बेसवी (२) पक्षीने पांख आववी
कली स्त्री० फूलनी के पहेरणनी कळी (२) पक्षीनी नवी आवेली पांख(३)हूकानो नीचेनो भाग(४) [अ. कलई] पथ्थर वगेरेना टुकडा जेनो चूनो बने छे. –लेना= झाडने कळी बेसवी
क़लील वि० [अ.] अल्प; थोडुं
कलीसा पुं० [फा.] यहूदी के ख्रिस्ती देवळ [धर्ममंडळ
कलीसिया पुं० यहूदी के ख्रिस्ती
कलूटा वि० [स्त्री. –टी] काळुं
कलेऊ पुं० 'कलेवा';नास्तो
कलेजा पुं० कलेजुं; काळजुं (२) छाती. –उलटना=ऊलटी करतां जीव गभरावो –ठंडा करना=संतोषवुं. –निकाल कर रखना=सर्वस्व दई देवुं.–पक जाना=सहन करी करीने थाकी जवुं. –मुँहको या मुँह तक आना=आकुळव्याकुळ थवुं; संतापवुं;गभरावुं.–पर साँप लोटना =कांई सांभरी आवतां शोक थवो
कलेजी स्त्री० पशुना काळजानुं मांस
कलेवर पुं०[सं.]शरीर(२)खोखुं;'ढांचा'
कलेवा पुं० [सं. कल्यवर्त] नास्तो; (२)भाथुं (३) कलवा जेवी एक

विवाहनी रीत. –करना=खाई जवुं (२) मारी नांखवुं
कलैया स्त्री० गुलांट; गोटमडुं
कलोर स्त्री० वाछडी
कलोल पुं० कल्लोल
कलोलना अ०क्रि० कल्लोलवुं; आनंदवुं
कलौंजी स्त्री० एक जातनुं शाक
कल्पवास पुं०[सं.]माह महिनामां गंगा-तट पर संयमपूर्वक वास –एक व्रत
क़ल्ब पुं०[अ.] हृदय (२)बुद्धि (३)मध्य भाग (४) खोटी चांदी के सोनुं
कल्माष वि०[सं.]काबरचीतरुं(२)काळुं
कल्य पुं० [सं.] सवार (२) शराब
कल्लर पुं० 'कल्हर'; खारी माटी; ऊस (२) ऊखर जमीन
क़ल्लाँच वि० जुओ 'कल्लाश' (२) शठ; बदमास; गुंडो
कल्ला पुं० [फा. कल्ल:?] जडबुं (२) गळुं (३) अवाज (४) अंकुर (५) दीवानुं मोढियुं (६) वकरी इ०नुं माथुं
कल्लातोड़ वि० जडबातोड; जबरदस्त
कल्लाना अ०क्रि० वागवाथी के कशाथी चामडी बळवी; बळतरा थवी (२) असह्य थवुं
क़ल्लाश पुं० [तुर्की] गरीब; कंगाल
कल्ह अ० 'कल'; काले

कल्हर पुं० जुओ 'कल्लर'
कल्हारना स०क्रि० तळवुं (२) अ०क्रि 'कराहना';दुःखनो उद्गार काढवो
कवन स० (प.) 'कौन'; कोण
कवर पुं० [इं.] कवर; पूठुं के पर-बीडियुं (२)[सं.]वाळनो गुच्छो(३) मीठुं (४) [सं. कवल] कोळियो
कवरी स्त्री०[सं.]वेणी [भक्षित
कवलित वि०[सं.]कोळियो कराई गयेलुं;
कवायद पुं० [अ. 'कायदा'नुं ब०व०] नियम; शिस्त (२) स्त्री० कवायत ३) व्यवस्था; शिस्त(४)व्याकरण
कवित्त पुं० कवित्व; कविता
कवीठ पुं० 'कैथा'; कोठुं
कवेला पुं० कागडानुं बच्चुं
कवेलू पुं० नळियुं ['कौवाल'
क़व्वाल पुं० [अ.] कवाली गानार;
क़व्वाली स्त्री०[अ.] कवाली;'कौवाली'
कश पुं० [सं.]चाबुक (२)[फा.]खेंच; आकर्षण (३) हूका चलमनो दम
क़शक़ा पुं० [फा.] टीलुं; तिलक
कश-मकश स्त्री० [फा.] खेंचताण (२) भीड; धक्काधक्की (३) विचारमां पडवुं ते [अणबनाव
कशिश स्त्री०[फा.] खेंच; आकर्षण(२)
कशीदगी स्त्री० [फा.] वैमनस्य; अणबनाव

कशीदा पुं०[फा.]कशीदो(२)वि० खेंचेलुं

कश्ती स्त्री० [फा.] कस्ती; होडी (२) धातुनो टाट (३) शेतरंजनुं एक महोरुं–हाथी

कश्नीज़ पुं० [फा.] धाणा

कश्मीर पुं० काश्मीर (वि०,**–री**)

कस पुं० परीक्षा; कसणी (२) काबू; वश(३)कस; सार(४)[फा.]व्यक्ति; माणस (५) स्त्री० बांधवानी कस (६) (प.)केम ? केवी रीते ? **–का** =काबूमां होय ते; आधीन

कसक स्त्री० सणको; सळक (२) जूनुं वेर (३) इच्छा; होंश (४) सहानुभूति.**–निकालना**=जूनुं वेर वाळवुं

कसकना अ०क्रि० चसको के लपको मारवो; सळकवुं

कसकुट पुं० कांसु–मिश्र धातु

कसना स०क्रि० कसवुं (खेंचवुं; तंग करवुं; पारखवुं; पीडवुं इ०) (२) ठांसीने भरवुं (३) अ०क्रि० तंग थवुं; जकडावुं (४) ठांसाईने भरावुं

कसनी स्त्री० बांधवानी रसी (२) कसणी (३) परीक्षा

कसब पुं० जुओ 'कस्ब' [कस्बी'

कसबा,कसबी जुओ अनुक्रमे 'कस्बा,

क़सम स्त्री० [अ.] कसम; सोगन. **–उतारना**=नामनुं काम करवुं. **–देना, दिलाना, रखना**=कसम खवडाववा. **–लेना**=कसम खावा

कसमसाना अ०क्रि० सळवळवुं; खळभळवुं (२) गभरावुं; आघुंपाछुं थवुं

कसर स्त्री० [अ.] कसर; ऊणप (२) द्वेष; वेर (३) दोष; विकार. **–निकालना,काढना**=वेर लेवुं

कसरत स्त्री० [अ.] कसरत (२) अधिकता; वैपुल्य

कसरत-राय स्त्री० बहुमती

कसाना अ०क्रि० कसाणुं थवुं (२) कटावुं (३) स०क्रि० 'कसना'नुं प्रेरक; 'कसवाना'

क़साब पुं० 'कस्साव'; कसाई

कसार पुं० [सं. कृसर] कंसार

कसाला पुं० कष्ट (२) महेनत

कसाव पुं०[सं.कषाय]कसाणापणुं;काट

क़सीदा पुं० जुओ 'कशीदा'(२)[अ.] स्तुति के निंदा करता काव्यनो एक प्रकार

कसूँभा वि० [सं. कुसुंभ] कसुंबी

क़सूर पुं० [अ.] कसूर;गुनो;अपराध

क़सूरमंद, क़सूरवार वि० [फा.] गुनेगार; अपराधी

कसे वि० [फा.] कोई (व्यक्ति)

कसेरा पुं० [स्त्री० **–रिन**] कंसारो

कसैला वि० [स्त्री० **–ली**] कसाणुं;

कषाय स्वादनुं
कसैली स्त्री० सोपारी [कसोटी
कसौटी स्त्री०[सं. कषपट्टी, प्रा.कसवट्टी]
कस्तूरा(-रिया) कस्तूरी-मृग (वि०, -रिया)
क़स्द पुं० [अ.] इरादो
क़स्दन् अ० [अ.] इरादापूर्वक
कस्ब पुं० [अ.] कसब; धंधो; हुन्नर-कळा (२) पेदाश (३) वेश्यावृत्ति
क़स्बा पुं० [अ.] कसबो
क़स्बात पुं०ब०व० कसबा
क़स्बाती वि० कसबामां रहेनारुं
कस्बी वि०[अ.] कसबी;कसबवाळुं(२) स्त्री०वेश्या [सोगनथी
क़स्मिया अ० [अ.] कसम खाईने;
क़स्साब पुं० [अ.] कसाई; 'कसाब'
कहँ अ० (प.) 'कहाँ'; क्यां (२) बीजी तथा चोथीना प्रत्यय तरीके वपराय छे
कह-कशाँ स्त्री० [फा.] आकाशगंगा
क़हक़हा पुं० [फा.] अट्टहास
कहगिल स्त्री० भींत लींपवानी गार
क़हत पुं०[अ.] खूब अछत (२)दुकाळ
क़हतज़दा पुं० दुकाळियो; खूब भूख्यो
क़हतसाली स्त्री० [अ.]दुकाळनो समय
कहता पुं० कहेनार
कहन स्त्री० कथन (२) वचन; वात (३) कहेवत (४) कवन; कविता
कहना स०क्रि० कहेवुं. **-बदना**=नक्की करवुं. **कहबदकर**=प्रतिज्ञा-पूर्वक; दृढ संकल्पथी. **कहनेकी बात**=कहेवा मात्र-खरेखर नहि एवी वात
कहनावत, कहनूत स्त्री० कहेवत
कहनी स्त्री० कथनी; 'कहानी'
क़हर पुं०[अ.] केर; जुलम (२) क्रोध (३) आफ़त (४) वि० भयंकर
क़हरन् अ० [अ.] बळजोरीथी
कहल पुं० कठारो; बफारो
कहलना अ०क्रि० तापथी बफावुं; कठवुं [कहेवडाववुं
कहलवाना, कहला(-वा)ना स०क्रि०
क़हवा पुं० [अ.] कावो;बुंद;कॉफी
कहवाँ, कहाँ अ० क्यां?
कहा पुं० कहेण;आज्ञा (२) स० शुं? (व्रजभाषा)(३)अ० (प.)केवी रीते
कहाकही स्त्री० बोलाबोली;'कहासुनी'
कहाना स०क्रि० कहाववुं
कहानी स्त्री० कहाणी; कथा (२) जूठी -कहेवानी वात [भोई
कहार पुं० पालखी इ० ऊंचकनार-
कहावत स्त्री०कहेवत(२)मरणनी चिठ्ठी
कहा-सुना पुं०भूलचूक(कहेलुं सांभळेलुं)
कहा-सुनी स्त्री० तकरार; बोलाबोली

कहीं अ० कोई जगाए;कहीं;क्यां
कहुँ(-हूँ) अ०(प.) 'कहीं'
कँइयाँ वि० चालाक; पाकुं; पहोंचेल
काँख स्त्री० काख; बगल
काँखना अ० क्रि० करांजवुं(२)श्रम के पीडाथी ऊंह करवुं
काँखासोती स्त्री० जनोई पेठे खेस पहेरवानी रीत
कांखी वि० (प.) कांक्षी; इच्छतुं
काँगडी स्त्री० काश्मीरमां गळे पहेराती नानी शगडी
कांग्रेस स्त्री० कोंग्रेस; महासभा
काँच स्त्री० काछडी (२) काच
काँचरी(-ली) स्त्री० सापनी कांचळी
काँजी स्त्री०आथो चडवा दईने बनावातो एक खाटो प्रवाही पदार्थ (२) फाटेला दूधनुं के दहींनुं पाणी
काँजी-हाउस स्त्री०[इं. काइन-हाउस] ढोरनो डबो
काँटा पुं० कांटो(२)कूवामां नांखवानी बिलाडी (३) हिसाबनो ताळो(४) आंकडो. **रास्तेमें काँटा बिछाना**=वच्चे विघ्न नांखवुं. **-बोना**=बूराई करवी. **-होना**=बहु दूबळुं थवुं. **काँटोंमें घसीटना**=अति प्रशंसा करवी. **काँटेकी तोल**=बरोबर तोल
काँटी स्त्री० नानो कांटो(२)खीली
काँठा पुं० कंठ(२)कांठलो(३)कांठो
काँड़ना स०क्रि० कचरवुं; कूटवुं
काँड़ी स्त्री० जमीनमां दाटेली खांडणी (२)वांस के लाकडानो नानो टुकडो
काँड़ी-कफ़न पुं० ठाठडीनो सामान
काँदना अ०क्रि० [सं. क्रंदन] रोवुं
काँदव पुं० कादव; 'कांदो'
काँदा पुं० कांदो; डुंगळी (२) कादव
काँदो पुं० कादव
काँय काँय, काँव काँव पुं० कागडानी काका (२) शोरबकोर
काँवर(-रि) स्त्री० कावड
काँवरिया पुं० कावडवाळो
काँस पुं० एक जातनुं घास
काँसा पुं० कांसुं (२) जुओ 'कासा'
काँसागर पुं०कांसानुं कामकरनार-कंसारो
काई स्त्री० लील (२) मेल (३) काट. **-छुड़ाना**=मेल के दुःखदारिद्र दूर करवुं [कशुं; कांई
काऊ अ० (प.) कदी(२)सर्व कोई (३)
काकाकौआ,काकातूआ पुं० काकाकौवो
काकुल पुं०[फा.]कान पर लटकती लट
काग़ज़ पुं०[अ.] कागळ(२) दस्तावेज (३) छापुं (४) सरकारी नोट. **-की नाव**=नाशवंत वस्तु. **-पत्र**=कागळपत्र (२) दस्तावेज
काग़ज़ात पुं० ब०व० [अ.] कागळपत्र

काग़ज़ी वि० कागळनुं के कागळ जेवुं पातळुं (२) लखेलुं

कागद पुं० कागळ; 'काग़ज़'

कागर पुं० (प.) कागळ (२) पींछुं

काछ पुं० [सं. कक्ष] पेढु ने जांघ वच्चेनो भाग (२) काछडी

काछना स० क्रि० काछडी घालवी (२) हथेळी के चमचीथी उपर उपरथी लेवुं

काछनी स्त्री० 'कछनी'; काछडी

काछी पुं० काछियो

काज पुं० काज; काम(२)प्रयोजन(३) धंधोरोजगार (४) [अ. कायजा] वटननो काच

काजर(-ल) पुं० काजळ

काजू पुं० काजु

काट स्त्री० कापवुं ते(२)घा;जखम(३) चालबाजी; दगोकपट

काटछाँट स्त्रीं० मारामारी; लडाई (२) ओछावत्तापणुं

काटना स०क्रि० कापवुं (२) कापी लेवुं;कमी करवुं(३)समय विताडवो (४)करडवुं;डसवुं. **काटो तो खून नहीं**=बिलकुल स्तब्ध थई जवुं

काठ पुं० काष्ट;लाकडुं. **-कबाड़**= भांग्योतूटयो सामान. **-होना**= काष्टवत-स्तब्ध के अक्कड थवुं. **-का उल्लू**=जड;पाको मूर्ख

काढ़ना स०क्रि० काढवुं (२) कढाईमां तळीने काढवुं; पकाववुं

काढ़ा पुं० काढो; क्वाथ

कातना स०क्रि० कांतवुं [छरीं

काता पुं० कांतेलुं सूतर;दोरो(२)कातु;

कातिक पुं० कारतक मास

कातिब पुं० [अ.] लेखक; लखनार

काती स्त्री० [सं. कर्त्री] कातर (२) चाकु (३) कटार

कादर वि० कातर; डरपोक

क़ादिर वि० [अ.]सशक्त; समर्थ

कान पुं० कर्ण; कान (२) काननुं एक घरेणुं (३) स्त्री० जुओ 'कानि' (४) [फा.] खाण. **-उठाना**= सांभळवा तैयार थवुं. **-करना, देना, धरना**=ध्यान देवुं; कान देवा. **-पर जूँ न रेंगना**=कशी परवा न करवी. **-भरना**= कानभंभेरणी करवी. **कानोकान खबर न होना**=जराय खबर न होवी.

काना वि० [स्त्री० -नी] काणुं (२) डंखेलुं (फळ) (३) तीरछुं; वांकुं (४) पुं० कानो; (ा)

कानाकानी, कानाफूसी, कानाबाती स्त्री० कानमां वात कहेवी ते

कानि स्त्री० लोकलाज; मर्यादा (२) संकोच

कानीहाउस पुं० जुओ 'कांजीहाउस'

क़ानून छाँटना=कानूनी चर्चा करवी; तर्कबाजी लडाववी

क़ानूनगो पुं० [फा.] तलाटीओनो एक उपरी-अमलदार

क़ानूनदाँ पुं० [फा.] कानून जाणनार

क़ानूनन् अ० [अ.] कायदेसर

क़ानूनदानी स्त्री० [फा.]कायदानुं ज्ञान

कान्ह, कान्हर पुं० कहान; श्रीकृष्ण

कापी स्त्री० कॉपी; नकल के नोट

क़ाफ़िया पुं० [अ.] काफियो; अंत्य अनुप्रास.–तंग करना=बहु पजववुं

काफ़िर वि० [अ.] काफर; गेरमुस्लिम (२) नास्तिक (३) निर्दय (४)दुष्ट

क़ाफ़िला पुं० [अ.] काफलो

काफ़ूर पुं० [फा.?] कपूर. –होना= छू थई जवुं

काफ़ूरी वि० कपूरनुं के तेना रंगनुं

काब स्त्री० [तु.] मोटी तासक; थाळ

क़ाबलीयत स्त्री० जुओ 'काबिलीयत'

क़ाबिज वि० [अ.] अधिकारवाळुं (२) दस्त रोकनारुं;कबजियात करनारुं

क़ाबिल वि० योग्य; लायक(२) विद्वान

क़ाबिलीयत स्त्री० [अ.] योग्यता; लायकात (२) पांडित्य; विद्वत्ता

काम पुं० काम. –आना=काममां आववुं (२) लडाईमां मरवुं. –तमाम करना=काम पूरुं करवुं (२) मारी नांखवुं. –होना= मरवुं (२) खूब तकलीफ पडवी

कामकाजी वि०कामकाजवाळुं;उद्योगी

क़ामत स्त्री० [अ.] कद; आकार

कामदानी स्त्री०भरतकाम के ते करेलुं एक कपडुं

कामदार वि० कसबी भरतवाळुं (२) पुं० काम करनार; प्रबंधकर्ता

कामधाम पुं० कामकाज

काम-ना-काम अ० [फा.] लाचारीथी; विवश थईने

कामयाब वि० [फा.] सफळ; कृतार्थ

कामयाबी स्त्री० [फा.] सफळता

कामल [सं.], –ला पुं० कमळो

कामिल वि०[अ.] पूरुं; कुल(२)योग्य

कायथ पुं० कायस्थ जातिनो माणस

कायथी स्त्री० कैथी लिपि

क़ायम वि० [अ.] कायम; स्थिर; स्थापित; निश्चित; मुकरर

क़ायम–मिज़ाज वि० शांत मिजाजनुं

क़ायम–मुक़ाम वि० [अ.] अवेजी

क़ायमा पुं० [अ.] काटखूणो

क़ायल वि० [अ.] माननारुं; कबूल करनारुं. –करना= समजाववुं;

मनाववुं. –होना=समजवुं;मानवुं; स्वीकारवुं

कायाकल्प पुं० [सं. कायकल्प] वृद्धने तरुण करवानो एक औषधोपचार [फिरफार

कायापलट स्त्री० कायापलटो; भारे

कारंधमी पुं० [सं.] रसायनशास्त्री

कार–आमद वि० [फा.] काममां आवे एवुं; उपयोगी

कार–करदा वि० [फा.] काम करेलुं होय एवुं; अनुभवी

कार–ख़ास पुं० [फा.] खास काम

कारख़ाना पुं०[फा.]कारखानुं(२)कारभार; व्यवसाय(३) घटना;मामलो

कार-ख़ैर पुं० [फा.] पुण्य काम

कारगर वि० [फा.] असरकारक (२) उपयोगी; काममां आवे एवुं

कार-गुज़ार वि० [फा.] कर्तव्यपरायण

कार-गुज़ारी स्त्री० [फा.] कर्तव्यपालन (२) होशियारी

कार-चोब पुं० [फा.] भरतकाम माटे कपडुं तंग राखवानुं चोकठुं (२) भरत करनारो

कार-चोबी वि० [फा.] भरतकामने लगतुं (२) स्त्री० भरतकाम; कोतरकाम [हेवाल

कारनामा पुं० [फा.] कोईनां कार्योनो

कारनी वि० प्रेरक (२) पुं० बुद्धिभेदक

कार-परदाज़ वि० [फा.] काम करनार; कामदार; मुनीम

कार-परदाज़ी स्त्री० [फा.] मुनीमी; कामदारपणुं

कारबंद वि० [फा.] आज्ञाकारी

कारबार पुं० [फा.] कारभार; धंधो

कारबारी वि० [फा.] कामकाजवाळुं (२)पुं० कारभारी

काररवाई स्त्री० [फा.] काम(२) कार्यवाही (३) कारस्तान; गुप्त प्रयत्न

कारवाँ पुं० [फा.] यात्रीओनी टोळी

करवाँ-सराय स्त्री० [फा.] धर्मशाला

कारसाज़ वि० [फा.] काम पार उतारनार;कार्यकुशल

कारसाज़ी स्त्री० [फा.] कार्यकौशल्य (२)गुप्त चालबाजी

कारस्तानी स्त्री० [फा.] चालबाजी; कारस्तान होवां ते

कारा स्त्री० [सं.] केद;बन्धन(२)पीडा

कारिंदा पुं० [फा.] मुनीम; कारकुन

कारिख स्त्री० जुओ 'कालिख'

कारी वि० [फा.] काम ठीक करी बतावे एवुं; होशियार (२) कारी; घातक (३) पुं० (कुरान) पढनार

क़ारूँ पुं० [अ] मूसानो धनवान पण कृपण भाई (२) कंजूस. –का

खजाना=अपार धन
क़ारूरा पुं० [अ.] पेशाब(२)मूत्रपरीक्षा माटे मूत्र राखवानी शीशी
कारो वि०(२)पुं० जुओ 'काला'
कार्रवाई स्त्री० [फा.] जुओ 'काररवाई'
कालबंजर पुं० पडतर जमीन
कालबुद [फा.], कालबूत पुं० जुओ 'कलबूत'; कालबूत
काला वि० काळुं(२)पुं० काळो साप
कालाकलूटा वि० काळुंभमर;काळुंमेंश
कालिका स्त्री० [सं.] काळका; काली (२) काळापणुं (३) मेंश(४)वादळ (५) शराब
कालिख स्त्री० [सं. कालिका] मेंश
कालिज पुं० कॉलेज
क़ालिब पुं० [अ.] शरीर; देह (२) कालबूत (टोपीनो)
कालीन पुं० [अ.] गलीचो
काली मिर्च स्त्री० मरी
कालौंछ स्त्री० काळापणुं(२)'कालिख'
काश अ० [फा.] 'ईश्वर करे आम थाय' एवो उद्गार
काशाना पुं० [फा.] झूंपडी; नानुं घर
काश्त स्त्री० [फा.] खेती(२)गणोत
काश्तकार पुं० [फा.] खेडूत (२) गणोतियो
कासा पुं० [अ.] कटोरो; भिक्षापात्र
क़ासिद पुं० [अ.] कासद
क़ासिर वि० [अ.] कसरवाळुं (२) असमर्थ
काह स्त्री० [फा.] सूकुं घास
काहकशाँ पुं० [फा.] जुओ 'कहकशां'
काहिल वि० [अ.] (स्त्री० –ली) आळसु; सुस्त [लीलुं
काही वि० [फा.] घासना रंगनुं;घेरुं
काहु(–हू) स०(प.) कोई पण; 'किसी'
काहू पुं० [अ.] एक छोड, जेनां बी दवामां वपराय छे
काहे, काहेको [अ०] शा माटे ? केम?
किंगरी स्त्री० रावणहथ्था जेवी सारंगी
कि अ०(प.) केवी रीते ? (२)[फा.] के
किकियाना अ०क्रि० किकियारी पाडवी (२) रोवुं
किचकिच स्त्री० कचकच (२) तकरार
किचकिचाना अ०क्रि० दांत कचकचाववा के पीसवा के बेसाडवा
किचकिचाहट, किचकिची स्त्री० दांत पीसवा ते
किटकिटाना अ०क्रि० क्रोधथी दांत पीसवा (२) दांतमां कांकरी आववा जेवुं लागवुं
किटकिना पुं० चाल; चालाकी
किट्ट पुं० [सं.] मेल; काटरडो
कित अ० (प.) क्यां (२) कई तरफ

कितक वि० (प.) केटलुं; केवुं

कितना वि०(२)अ०[स्त्री० **-नी**]केटलुं

क़िता पुं० [अ.] सिलाईनो काप (२) ढंग (३)संख्या(४)विभाग; टुकडो

किताब स्त्री० [अ.] किताब; ग्रंथ (२) वही (३) धर्मग्रंथ – कुरान के बाइबल [पुस्तकालय

किताबख़ाना पुं० [अ.+फा.]

किताबत स्त्री० [अ.] लखवुं ते

किताबी वि० [अ.] किताबना आकारनुं, ने लगतुं (२) पुं० किताबना धर्मनो–यहूदी, ख्रिस्ती के इस्लामी

कितिक वि० 'कितक';'कितना'; केटलुं

कितेक वि० केटलुं (२) केटलाएक; 'कितनेएक'

कितेब स्त्री० (प.) किताब

कितो वि० (स्त्री० **–ती**) 'कितना'

किधर अ० क्यां; कई बाजू

किन स० 'किस'नुं ब०व० (२) अ० (प.) 'क्यों न'; भले ने (३) पुं० चिह्न; डाघ [कणकी

किनका पुं० अन्ननो टुकडो (२)

किनकी स्त्री० 'किनका'नुं अल्पत्ववाचक

किनार स्त्री० [फा.] पासुं; बाजू (२) भेटवुं ते (३)पुं० जुओ 'किनारा'. **दर किनार**=बाजूए रह्युं;क्यां वात!

किनारा पुं० [फा.] किनार; कोर (२) किनारो. **–करना,खींचना**=दूर थवुं; हठी जवुं. **किनारे लगना**= किनारे पहोंचवुं; समाप्त थवुं

किफ़ायत स्त्री० [अ.] काफी–पूरतुं होवुं ते (२) किफायत; बचत (३) सस्तापणुं; कम किंमत

किफ़ायती वि० संभाळीने–कम खरच करनारुं; करकसरवाळुं

क़िबला पुं० [अ.] नमाज पढवानी–पश्चिम दिशा (२) मक्का (३) बाप (४) पूज्य वडील

क़िबलानुमा पुं०[फा.] पश्चिम बतावनारुं अरबी खलासीनुं एक यंत्र

क़िमार पुं० [अ.] द्यूत; जूगटुं

क़िमाश पुं० [अ.] जात; प्रकार; ढंग

कियत वि० [सं.] 'कितना'; केटलुं

किया 'करना'नुं भूत० रूप; कर्युं

कियारी स्त्री०क्यारी(२) मीठानो अगर

किरकिरा वि० करकरवाळुं. **–हो जाना** = रंगमां भंग पडवो

किरकिराना अ०क्रि० करकर लागवी (२) करकरथी पीडा थवी

किरकिरी स्त्री० करकर (२) अपमान

किरच स्त्री० कीरच; करच (जेम के काचनी) (२) अणीदार संगीन

किरण(–न) स्त्री० किरण. **–फूटना**= सूर्य ऊगवो

किरम पुं० करम; कीडो; कृमि
किरमिच पुं० कॅन्वास कपडुं
किरमिज पुं० किरमजनो रंग
किरमिजी वि० किरमजी [डब्बो
किराँची स्त्री० गाडुं (२) भारखानानो
किराना पुं० 'केराना'; करियाणुं
किरानी पुं० जुओ 'केरानी'
क़िराया पुं० [अ.] किरायुं; भाडुं
किरायेदार पुं० भाडे राखनार
किरासन, किरासिन पुं० केरोसीन
किरिया स्त्री० सोगन (२) कर्तव्य (३) मृतकर्म; क्रिया
किरियाकरम पुं० क्रियाकर्म; मृतक्रिया
किर्म पुं० [फा.] 'किरम'; करम
किलक(-कार,-क'री) स्त्री०किलकारी; हर्षध्वनि [मारवी;किलकारवुं
किलक(-कार)ना, अ०क्रि०किलकारी
किलना अ०क्रि० 'कीलना'नुं कर्मणि
किलनी स्त्री० जूवो;कथीरी (कूतरां इ० पशुने चोटे छे ते) [किल्लेबंदी
क़िला पुं० [अ.] किल्लो. -बंदी स्त्री०
क़िलेदार पुं० [फा.] किल्लेदार; गढवी
क़िल्लत स्त्री०[अ.]ऊणप;कमी(२)तंगी
किल्ला पुं० खीलो; खूंटो
किल्ली स्त्री० मेख; खूंटी (२) कूंची. -घुमाना या ऐंठना = चावी फेरववी; युक्ति करवी

किवाड़(-र) पुं० [स्त्री० -ड़ी] कमाड
किशमिश स्त्री०[फा.]किसमिस [रंगनुं
किशमिशी वि०किसमिसवाळुं के तेना
किश्त स्त्री० [अ.] शेतरंजमां राजाने शेह पडवी ते (२) पाकनुं खेतर
किश्तवार पुं० [फा.] तलाटीनो नंबरोनो चोपडो
किश्ती स्त्री० [फा.] जुओ 'कश्ती'
किस स०'कौन'नुं विभक्तिमां थतुं रूप
किसबत स्त्री० [अ.] हजामनी थेली
क़िसमत स्त्री० 'किस्मत' जुओ
किसान पुं० [सं. कृषाण, प्रा. किसान] खेडूत
किसी स० 'कोई'नुं विभक्तिमां थतुं रूप
क़िस्त स्त्री० [अ.] हपतो (महेसूल के देवानो); कीस
क़िस्तबंदी स्त्री० [फा.] किस्तबंधी; हपताथी चूकववुं ते
किस्बत स्त्री० [अ.] जुओ 'किसबत'
क़िस्म स्त्री०[अ.]किसम;जात;रीत;प्रकार
क़िस्मत स्त्री० [अ.] नसीब(२) जिल्लाओनो थतो प्रांत
क़िस्मतवर वि० [अ.+फा.] नसीबदार
क़िस्सा पुं० [अ.] किस्सो; कथा(२) वृत्तांत (३) झघडो
क़िस्सा-कोताह अ० [अ.+फा.]टूंकमां के; तात्पर्य के

की 'का' प्रत्ययनुं स्त्री० (२)स०क्रि० करी; 'किया'नुं स्त्री०
कीच पुं० कीचड [पीयो
कीचड़(-र) पुं० कीचड (२) आंखनो
कीड़ा पुं०[प्रा.कीड,सं. कीट]कीडो(२) मंकोडो(३)जू मांकण इ०(४)साप
कीड़ी स्त्री० 'कीड़ा'नुं अल्पतावाचक (२) कीडी [कीनाखोर
कीना पुं० [फा.]कीनो;वेर. -वर वि०
कीप, कीफ़ [फा.] स्त्री० नाळचुं
क़ीमत स्त्री०[अ.] किंमत (वि० -ती)
क़ीमा पुं०[अ.] मांसनो खीमो
कीर पुं० [सं.] कीर;पोपट(२)काश्मीर (३) व्याध; शिकारी
कील स्त्री० [सं.] खीली के कांटो(२) कुंभारना चाकरानी के घंटीनी वचली खीली-खीलडो
कीलना स०क्रि० खीली मारवी (२) वश करवुं(३)मंत्रनुं मारण करवुं
कीला पुं० खीलो; खूंटो [खीली
कीली स्त्री०धरी (२) कीली;कूंची (३)
कीसा पुं० [फा.] थेली (२) खिस्सुं
कुँअर(-रेटा) पुं०[स्त्री. -रि] 'कुंवर'; पुत्र (२) राजपुत्र
कुँआ(-वा)रा वि० कुंवारुं (स्त्री०-री)
कुँई स्त्री० कुमुदिनी; 'कुई''
कुंचित वि०[सं.]वांकुं(२)वांकडिया(वाळ)
कुंची(-जी) स्त्री० कूंची
कुंज पुं० [सं.] कुंज (२) [फा.=खूणो] शालना खूणा परनुं भरतकाम
कुंजड़ा पुं०[स्त्री० -ड़ी, -ड़िन]शाक-भाजी वावनार वेचनार जातनो आदमी; कुंजडो
कुंजा पुं० कूजो; 'कूजा'
कुंजी स्त्री० कूंची; चावी (२) टीकानी चोपडी [नचूको
कुंडा पुं० कूंडुं(२)कमाडनी सांकळनो
कुंडी स्त्री० पथ्थर के माटीनुं कूंडी जेवुं वासण (२) कमाडनी सांकळ (३)सांकळनो आंकडो
कुंत पुं० [सं.] भालो (२) जू
कुंद पुं० [सं.] कुंद फूलझाड के फूल (२)नवनी संख्या(३) वि० [फा.] कुंठित; बुट्ठु (४) मंद
कुंदज़ेहन वि०मंदबुद्धि ['कुँआरा'
कुँवर(-रेटा),कुँवारा जुओ 'कुँअर',
कुआँ पुं० [प्रा. कूव, सं. कूप]कूवो. -खोदना=कूवो खोदवो; बीजानुं बूरुं ताकवुं (२) रोटलो कमावा मथवुं. कुएँमें बांस डालना=खूब खोळवुं. कुएँमें बांस पड़ना=खूब खोळ थवी. कुएँमें भांग पड़ना =बधानी बुद्धि मारी जवी
कुआर पुं० (वि०-रा,-री)आसो मास

कुइयाँ स्त्री० कूई; नानो कूवो
कुई स्त्री०कूई(२)[सं.कुव]कुमुदिनी;कुँई
कुकटी स्त्री० कोकटी रू
कुकड़ा पुं० कूकडो
कुकड़ी,-री स्त्री० 'खुखडी'; सूतरनी कोकडी(२)कूकडी; मरघी
कुकुर पुं० कुक्कुर; कूतरुं [ठांसो
कुकुर-खाँसी,-ढाँसी स्त्री०सूकी उधरस;
कुकुर-मुत्ता पुं०कूतरानो कान;बिलाडीनो टोप [जूवो;'किलनी?'
कुकर-माछी, कुकरौंछी स्त्री० बगाई;
कुचकुचाना स०क्रि० लगातार कोचवुं (जेम के, मुरब्बानुं आमळुं) (२) थोडुं कचरवुं [दाबवुं
कुचलना स०क्रि०कचडवुं;मसळवुं;पगथी
कुचला पुं० झेरकचोलुं
कुचील(-ला), कुचैला वि०[सं. कुचैल] (स्त्री० -ली) मेलां कपडांवाळुं (२) गंदुं; मेलुं
कुछ वि० थोडुं; केटलुंक; कांईक
कुज्जा पुं० जुओ 'कूजा'
कुटंत स्त्री० कूटियुं; मारपीट
कुटका पुं० कटको; ककडो
कुटकी स्त्री० कटकी(२)चीणो;'कँगनी'
कुटना पुं० [स्त्री०-नी] कूटणो(२)बेने लडावी मारनार-चुगलीखोर(३) अ०क्रि०कूटवुं
कुटनाना स०क्रि०स्त्रीने वहेकावी कुमार्गे लई जवुं
कुटाई स्त्री० कूटवुं ते के तेनी मजूरी
कुटिया स्त्री० कुटीर; झूंपडी
कुट्टी स्त्री० कापेलो बारीक चारो (२) कट्टा करवी; मैत्री छोडवी ते
कुटुम पुं० कटम; कुटुंब
कुठला पुं० [सं. कोष्ठ;प्रा. कोट्ठ](अल्प०, -ली) कोठलो (२) चूनानी भट्ठी
कुठाँउँ,कुठाव स्त्री० कुठाम; कठेकाणुं
कुठाली स्त्री० अंगीठी
कुठाहर, कुठौर पुं०कुठाम(२)कु-अवसर
कुड़कुड़ाना अ०क्रि० मनमां बळवुं; बबडवुं; चडभडवुं (२) खेतरमां पक्षी उडाडवां
कुड़कुड़ी स्त्री०पेटमां गुडगुड बोलवुं ते
कुड़बुड़ाना अ०क्रि० 'कुड़कुड़ाना'; मनमां चडभडवुं
कुडौल वि० बेडोळ; कढंगुं
कुढंगा,-गी वि० कढंगुं; 'भद्दा' (२) बूरी चालनुं [कढवुं ते
कुढ़न स्त्री० [सं. क्रुद्ध]मनमां ने मनमां
कुढ़ना अ०क्रि० कढवुं; बळापो करवो
कुतका पुं० [तु.] कूतकुं; दंडो
कुतना अ०क्रि० अंदाज, अडसट्टो थवो
कुतर पुं० [अ. कुत्र] वर्तुलनो व्यास
कुतरना स०क्रि० दांतथी करपी लेवुं(२)

वच्चेथी चातरी लेवुं
कुतवार,–ल पुं० 'कोतवाल';कोटवाळ
कुतिया स्त्री० कूतरी [खाना'
कुतुब-खाना पुं० [अ.+फा.] 'किताब-
कुतुबनुमा पुं० जुओ 'कुत्बनुमा'
कुतुब-फ़रोश पुं०[अ.+फा.] बुकसेलर
कुत्ता पुं० [स्त्री. –त्ती]कुत्तो(२)कुतरियुं घास (३) उलाळो (४) बंदूकनो घोडो. **कुत्तेखसी**=व्यर्थ नकामुं काम. **कुत्ते ने काटना**=पागल थवुं
कुत्ब पुं०[अ.]ध्रुव तारो(२)धरी(३)नेता
कुत्बनुमा पुं० [अ.+फा.] होकायंत्र
कुदकना अ०क्रि० कूदवुं
कुदक्का पुं० कूदको
कुदाना स०क्रि० कुदाववुं; 'कुदवाना'
कुदार,–ल,–री,–ली स्त्री०[सं. कुद्दाल] कोदाळी [एक दाव
कुद्दव पुं० [सं.] कोदरा(२)तलवारनो
कुनकुना वि० कोकरवायुं
कुनना स०क्रि० खरादवुं
कुनबा पुं० [सं. कुटुंब, प्रा. कुडुंब]कुटुंब
कुनबी पुं० कणबी
कुनवा पुं० खरादी
कुनह स्त्री०[फा.]तत्त्व;तथ्य(२)बारीकी (३) [फा. कीना] द्वेष; वेर
कुनाई स्त्री० खरादीकाम के तेनी मजूरी (२) खरादतां पडतो भूको; वहेर
कुनैन स्त्री० क्विनीन
कुप्पा पुं०(स्त्री० –प्पी)कुप्पो.–**होना**= फूलवुं के हृष्टपुष्ट थवुं
कुफ़्र,कुफ़्र पुं० [अ.]काफरपणुं; इस्लाममां नास्तिकता
कुफ़्ल पुं० [अ.] ताळुं
कुबड़ा पुं० [सं. कुब्ज] (स्त्री० –ड़ी) खूंधो (२) वि० खूंधुं
कुम्हड़ा पुं० [सं. कूष्मांड] कोळुं. **कुम्हड़े की बतिया**=नबळो पोचो माणस(२)नानुं काचुं कोळुं
कुम्हलाना अ०क्रि० चीमळावुं
कुम्हार पुं० (स्त्री० –**रिन**) कुंभार
कुरकी स्त्री० जुओ 'कुर्की'
कुरता पुं० [तुर्की] कुरतुं
कुरती स्त्री० सदरा जेवुं स्त्रीनुं कुरतुं
कुरबत स्त्री० [अ.] नजदीक; समीपता
कुरसी स्त्री०[अ.] खुरसी(२)मकाननी बेसणी(३)पेढी [वंशवृक्ष
कुरसीनामा पुं०[अ.+फा.] वंशावळी;
कुराई(–य) स्त्री०(प.) कुराह; कुमार्ग (२) खाडाटेकरावाळो मार्ग
कुराह स्त्री० कुमार्ग; खोटो राह
कुरिया स्त्री० झूंपडी (२) नानुं गामडुं
कुरुई स्त्री० वांस के मुंजनी नानीटोपली
कुरुख वि० [कु+रुख] नाराज
कुरेद(–ल)ना स०क्रि०खणवुं; खोदवुं;

'करोदना' [जप्ती-अमलदार
कुर्क़ वि०[तु.] जप्त करेलुं. –अमीन=
कुर्क़ी स्त्री० जप्ती; 'कुरकी'
कुर्ब पुं० [अ.] 'कुरवत'; समीपता
कुर्मी पुं० कणबी [पृथ्वी
कुर्र-ए-अर्ज़ पुं०[अ.] पृथ्वीनो गोळो;
कुर्स पुं० [अ.] सूर्यबिंब (२)गोळी
कुलंग पुं० [फा.] एक जातनुं सारस
(२)मरघो [केवळ;मात्र
कुल-जमा अ० [अ.] बधुं मळीने (२)
कुलजुम पुं० [अ.] लाल समुद्र
कुलचा पुं० [फा.] एक जातनी मीठाई
के रोटी
कुलथी स्त्री० [सं. कुलत्थिका] कळथी
कुलफ़ पुं० 'कुफ्ल'; ताळुं
कुलफ़त स्त्री० [अ.] चिंता; फिकर
कुलफ़ा पुं० [अ.] एक जातनुं शाक
कुलबुल पुं० [अ.] कलबल
कुलबुलाना अ०क्रि० कलबल करवी
कुल-मुख्तार पुं०[फा.]कुल-मुखतियार
कुलह(–हा) स्त्री०'कुलाह';टोपी (२)
शिकारी पक्षीनी आंख परनुं ढांकण
कुलही स्त्री० कानटोपी
कुलाँच [फा.],–ट स्त्री० छलंग; कूदको
कुलाह पुं०[फा.]एक जातनी अफघान
टोपी
कुल्ला पुं०, कुल्ली स्त्री० कोगळो

कुल्हड़ पुं० [सं. कुल्हर] कुलडी; चडवो
कुल्हाड़ा पुं० कुहाडो
कुल्हाड़ी स्त्री० कुहाडी
कुल्हिया स्त्री०कुलडी (नानी) –में गुड़
फोड़ना=कुलडीमां गोळ भागवो;
गुप्त रीते काम करवुं
कुवाँर, कुवार पुं० 'कुआर'; आसो मास
कुशादगी स्त्री०[फा.]विस्तार;मोकळाश
कुशादा वि० [फा.] खुल्लुं; मोकळुं (२)
विस्तृत
कुश्ता पुं० [फा.] धातुनी भस्म
कुश्ती स्त्री० [फा.] कुस्ती. –मारना=
कुस्तीमां पछडावुं. –खाना=
कुस्तीमां हारवुं
कुसूर स्त्री०[अ.] कसूर
कुहकना अ०क्रि० [सं. कुहक] पक्षीए
कुहू कुहू–मधुर बोलवुं
कुहनी स्त्री० [सं. कफोणि] कोणी
कुहरा पुं० धूमस
कुहराम पुं०[अ. कहर–आम]रोककळ
कुहासा पुं० 'कुहरा'; धूमस
कुहाना अ०क्रि० रूठवुं; रिसावुं
कुहुकना अ०क्रि० जुओ 'कुहकना'
कुहू स्त्री० [सं.] अमास (२) कुहू कुहू
अवाज
कूँचा पुं० झाड़ु; सावरणो
कूँची स्त्री०सावरणी(२)पींछी के कूचडो

कू पुं० [फा.] गली
कूईं स्त्री० कुमुदिनी
कूच पुं० [तुर्की] कूच; प्रस्थान. -कर जाना=मरी जवुं. (किसीके) देवता कूच कर जाना=होशकोश ऊडी जवा. -बोलना=ऊपडवुं
कूचा पुं० [फा.] गली
कूज़ा पुं० कूजो; माटीनुं पाणी माटेनुं वासण (२) साकरनो अर्धगोळ गांगडो, जे माटीना वासणमां जमावीने कराय छे
कूटू पुं०एक छोड के तेनुं बी, जेनो लोट फराळमां चाले छे
कूड़ा [सं. कूट,प्रा.कूड=ढेर]'कतवार'; कचरो पूंजो (२) नकामी चीज
कूढ़ वि० नासमज; बेवकूफ
कूढ़मग्ज़ वि० मंदबुद्धि
कूत स्त्री० अनुमान; अंदाज; अडसट्टो
कूतना स०क्रि० अनुमानवुं; अंदाज लगाववो
कूद स्त्री०[क्रि० कूदना=कूदवुं]कूदवुं ते
कूद-फाँद स्त्री० कूदवुं के ऊछळवुं ते
कून स्त्री० [फा.] गुदा
कूब, कूबड़ पुं. [सं० कूबर] खूंध (२) कोई चीजनुं वांकापणुं
कूर वि० क्रूर (२) दुष्ट; बूरुं (३) नकामुं (४) जड; मूर्ख
कूरा पुं० [सं०कूट,प्रा०कूड] (स्त्री०-री =ढगली)ढगलो (२)भाग; अंश
कूला, कूल्हा पुं० कूलो
कूवत स्त्री० [अ०] कौवत; शक्ति
केंचली स्त्री० सापनी कांचळी
केंचुआ पुं०अळसियुं;सरसियुं(२)झाडामां नीकळतो सफेद लांबो करम
केंचुरि(-ल,-ली) स्त्री० 'केंचली'; कांचळी
के स० कोण?
केउ स० कोई
केकड़ा पुं० करचलो
केता वि० [स्त्री०-ती]केटलुं;'कितना'
केतिक वि० केवुं (२) केटलुं
केदली स्त्री०कदली; केळ [नुं
केर [सं०कृत](स्त्री०-री) प्रत्यय 'केरुं';
केराना पुं० 'किराना'; करियाणुं
केरानी पुं० 'किरानी'; युरेशियन(२) कारकुन
केराव पुं० वटाणा
केरी स्त्री० काची नानी केरी; 'अँबिया'
केवट पुं० [सं. कैवर्त] एक वर्णसंकर जात;माछी के नाविक [दाळ
केवटी(दाल) स्त्री०अनेक प्रकारनी भेगी
केवड़ई वि० केवडाना रंगनुं
केवड़ा,-रा पुं०केवडो,तेनुं फूल के अत्तर
केवाँच स्त्री० कौवच; 'कौंच'

केवा पुं० [सं. कुव] कमळ
केवाड़ पुं० 'किवाड़'; कमाड
केहा पुं० केका; मोर
केहि स० 'किसको'; कोने
केहू स० कोई (२) केवी रीते
क़ैंचा पुं०मोटी कातर(२)वि०'भेंगा';वाडुं
क़ैंची स्त्री० [तुर्की] कातर (२) साणसो
कैंड़ा पुं० चाल;रीत;ढंग (२)चालाकी; चालबाजी (३) माप
कै वि० 'कितना'(२) अ० या, अथवा
क़ै स्त्री० [अ.] वमन
कैथ,-था पुं० कोठीनुं झाड
कैथिन स्त्री० कायस्थ स्त्री
कैथी स्त्री० शिरोरेखा वगरनी, नागरीने मळती एक लिपि
क़ैद स्त्री० [अ.]केद;बंधन(२)केदखानुं (३) प्रतिबंध; रोकावट
क़ैदक स्त्री०[अ.]'पोर्टफोलियो';कागळो राखवानी फाईल
क़ैदख़ाना पुं० [फा.] केदखानुं
क़ैद-तनहाई स्त्री०अंधारी कोटडीनी केद
क़ैद महज़ स्त्री० [अ.] सादी केद
क़ैदी पुं० [अ.] केदी
कैफ़ पुं० [अ.] केफ; नशो (वि०-फी)
कैफ़ियत स्त्री० [अ.] समाचार (२) वर्णन; विवरण (३) आश्चर्यनी के हर्षनी घटना

क़ैसर पुं० [अ.] सम्राट; बादशाह
कैसा वि० (स्त्री० -सी) केवुं
कैसे अ० केवी रीते(२) केम; शा माटे
कोंचना स०क्रि० कोचवुं;घोचवुं;भोंकवुं
कोंछ पुं० साल्लानो ए छेडो जेनाथी खोळो कराय छे.
कोंढ़ा पुं० कडी के आंकडो (२) वि० कडी के आंकडासां परोवेलुं
कोंपर पुं० केरीनी साख
कोंहड़ा पुं० कोळुं; 'कुम्हड़ा'
को स० को; कोण (२) चोथी ने बीजीनो प्रत्यय [कोशेटो
कोआ पुं० 'कोया' जुओ (२) रेशमनो
कोइरी पुं० 'काछी' जात
कोई स०(२)वि०कोई(३)अ० लगभग. उदा. कोई दस आदमी
कोउ,-ऊ स० (प.) कोई [धावेल
कोका पुं० [अ.] दूध-भाई; एक धावने
कोख स्त्री०कूख.**-उजड़ जाना**=संतान मरी जवुं (२) गर्भपात थवो. **-बंद होना**=वंध्या थवुं
कोचक वि० [फा.] नानुं
कोचवान पुं० कोचमॅन [पूनम
कोजागर पुं० [सं.] कोजागरी; शरद-
कोठ वि० खटायेलुं (दांत माटे)
कोठरी स्त्री० कोटडी; नानी ओरडी
कोठा पुं०मोटी कोटडी (२) कोठो

कोठीवाल पुं० महाजन;मोटो वेपारी; साहुकार
कोठेवाली स्त्री० वेश्या
कोड़ा पुं० कोयडो
कोढ़ी वि० कोढियुं (स्त्री० –ढ़िन)
कोतल पुं०[फा.]कोतल;सवार वगरनो सजेलो के सवारीनो खास घोडो
कोतवाल पुं० कोटवाळ; फोजदार
कोतवाली स्त्री० पोलीसथाणुं के कोट-वाळनुं काम के पद [–ती)
कोता(०ह) [फा.] वि० नानुं;कम(स्त्री०
कोताही स्त्री०[फा.] कमी; बाकी; कसर
कोदई,कोदरा, कोदव, कोदो, कोद्रव [सं.]पुं० कोदरा. **कोदो देकर पढ़ना या सीखना**= अधूरी ढंग वगरनी केळवणी लेवी. **छाती पर कोदो दलना**=सामो जाणे तेम एवुं काम करवुं जेथी तेने बूरुं लागे
कोना पुं०खूणो;कोण.–**झाँकना**=खूणे भरावुं
कोना–खँतरा पुं० खूणोखोचरो
कोफ़्त स्त्री० [फा.] पीडा; दुःख
कोफ़्ता पुं० [फा.] एक जातनो कबाब –मांसनी वानी
कोबा पुं० [फा] मोगरी; कूबो
कोय स० 'कोई'
कोयला पुं० कोलसो; कोयलो
कोया पुं० आंखनो डोळो के खूणो(२) फणसनुं चांपुं
कोर स्त्री० कोर (किनार; धार)(२)द्वेष; वेर(३) दोष; खामी (४)पंक्ति;हार (५)वि० [फा.] अंध. –**दबना**= लागमां आववुं [ओछापणुं
कोर-कसर स्त्री०दोष ने खामी(२)वत्ता-
कोरनिश [फा.]स्त्री० कुरनिस; झूकीने करेली सलाम
कोरमा पुं० [तु.] खूब घीमां तळेलुं मांस
कोरा वि० (स्त्री०–री)कोरुं(२)पुं०सादुं रेशमी कापड(३)गोद; खोळो
कोरी,–ली पुं० हिंदु वणकर
कोल पुं०[सं.],**कोली** स्त्री० गोद;खोळो
कोलिया स्त्री० सांकडी गली (२) पटी जेवुं खेतर
कोल्हू पुं० कोलु के घाणी
कोसना स०क्रि०शापवुं. **पानी पी पीकर कोसना**=खूब 'कोसना.' **कोसना काटना**=शाप अने गाळो देवां
कोह पुं० क्रोध (२)[फा.] पहाड
कोह-कनी स्त्री० [फा.] भगीरथ काम
कोहन,–ना वि० [फा. कुहन] पुराणुं
कोहनी स्त्री० 'कुहनी'; कोणी
कोहनूर पुं० [फा.] कोहिनूर
कोहबर पुं० [सं. कोष्ठवर]विवाह इ०मां पूजवाना कुलदेवतानुं स्थान

कोहराम पुं० [फा.] जुओ 'कुहराम'
कोहसार पुं०[फा.कुहसार]पहाडी प्रदेश
कोहान पुं०[फा.] ऊंटनी खूंध
कोहाना अ०क्रि० रोषावुं; गुस्से थवुं; रूसणुं लेवुं
कोहाब(-व) पुं० (प.) रूसणुं
कोहिस्तान पुं० [फा.] पहाडी देश
कोही वि० क्रोधी (२) पहाडी
कौंच(-छ) स्त्री० कौवच
कौंध(-धा) स्त्री० वीजळीनो चमकारो (अ०क्रि० कौंधना)
कौड़ा पुं०मोटी कोडी;कोडो(२)तापणी
कौथ स्त्री० [कौन+तिथि] कई तिथि के तारीख ? (२) शो संबंध ?
कौथा वि० केटलामुं ?
कौन स०कोण. -सा=कोण. -होना= शो अधिकार छे (२) शो संबंध के सगाई छे ? [(वि०, -मी)
क़ौम,क़ौमियत स्त्री०[अ.] कोम;जाति
कौर पुं० [सं. कवल] कोळियो (२) घंटीमां एकवार ओराय एटलुं-चपटी
कौरना स०क्रि० शेकवुं
कौल पुं०[सं.] वाममार्गी(२)खानदान (३) [कवल] 'कौर'
क़ौल पु०[अ.]कोल; प्रतिज्ञा (२)कथन; वाक्य
कौवा पुं०(स्त्री०,-वी) कागडो; कौवो (२) धूर्त. -गुहार,-रोर=शोर-बकोर [-ली'
क़ौवाल,क़ौवाली [अ.]जुओ 'कव्वाल,
क़ौस स्त्री० [अ.] धनुष; कमान. -ए -क़ज़ह; कौसकुजा=इंद्रधनुष
क्या स० शुं ? -खूब ! =वाह ! धन्य ! -कुछ, -क्या कुछ=वधुं
क्यों अ०केम? शा माटे?(२)(प.)'कैसे'
क्यों कि अ० एटला माटे के
क्यों कर अ० "कैसे"; केवी रीते
क्रमेल, क्रमेलक पुं० ऊंट
क्रियाकर्म पुं० [सं] अंत्येष्टि क्रिया
क्रिस्तान पुं०(वि०-नी) 'क्रिश्चन';ख्रिस्ती
क्रीत(०क) पुं० [सं.] बार प्रकारना पुत्रमांनो एक
क्रूस पुं०ख्रिस्ती धर्मचिह्न;क्रोस [छाती
क्रोड पुं० [सं.] गोद; खोळो(२)बाथ;
क्वारा वि०स्त्री० (-री) कुंवारुं
क्षाम वि० [सं.] क्षीण; पातळुं (२) दुर्बळ(३) थोडुं
क्षोम पुं० [सं.] शणियुं (२) वस्त्र
क्ष्वेलिका स्त्री० [सं.] मश्करी; गमत

ख

खंखार पुं० जुओ 'खखार'
खंग पुं० खड्ग; तरवार
खंखारना, अ०क्रि० खोंखारवुं; खांसवुं
खँगारना,खँगालना स०क्रि०[सं.क्षालन]
खंखाळवुं; धोवुं (२)खाली करवुं
खँचना अ०क्रि० निशान पडवुं, अंकावुं
खँचाना स० क्रि० आंकवुं; निशान
पाडवुं (२) जलदी जलदी लखवुं
खँडनी स्त्री० सांथ; कर
खँडश पुं०चणाना लोटनुं एक पकवान
खँडहर,खँडर पुं० [खंड+घर] खंडेर
खँडिया स्त्री० नानो खंड – टुकडो
खँडौरा पुं० जुओ 'ओला';एक मीठाई
खंता पुं० (अल्प० –ती स्त्री०)
कोदाळो; पावडो [खाधरो
खंदक स्त्री० [अ.] किल्लानी खाई (२)
खंदा पुं० खोदनारो (२) [फा.] हास्य.
–रू, –पेशानी वि० हसमुखुं
खंदी स्त्री० कुलटा [तंबू
खंधार पुं०[सं. स्कंधावार]छावणी;डेरो;
खंभ,–भा पुं० (स्त्री०–भिया) खंभो;
थांभलो [झघडो
खई स्त्री० खई; क्षय (२) लडाई (३)

खक्खा पुं० जुओ 'कहकहा' (२)
अनुभवी माणस [कढाय छे
खखार पुं० कफ इ० जे खांखारीने
खखारना अ०क्रि०खांखारवुं;'खँखारना'
खचरा वि० वर्णसंकर (२) दुष्ट
खचाखच अ० खचोखच; ठसोठस
ख़ज़ाना पुं०[अ.]खजानो(२)राजभंडार
खट पुं० खट अवाज. –से=तरत
खटक स्त्री० खटको; डर; चिंता (२)
खटकवुं ते
खटकना अ०क्रि०खटकवुं;खटखट थवुं;
मनमां लागवुं (२)डरवुं(३)मनमां
चिंता थवी (४) रही रहीने पीडा
थवी (५) आखडवुं; झघडवुं
खटका पुं० खटको (२)भय(३) चिंता
खटकिन स्त्री० काछियण (पुं० खटिक)
खटकीड़ा (–रा) पुं० मांकण;'खटमल'
खटखट स्त्री०खटखट(अवाज के पंचात)
(२) झघडो
खटना स०क्रि० कमावुं; खाटवुं (२)
अ०क्रि० कामधंधे लागवुं
खटपट स्त्री० खटखट अवाज (२)
अणबनाव; झघडो

खटपाटी स्त्री० खाटलानी पाटी.–लेना= (स्त्रीए) रूसणुं लेवुं

खटबुना पुं० खाटलो भरनारो

खटमल पुं० [खाट+मल=मैल] मांकण

खटमिट्टा वि० खटमधुरुं

खटवाट स्त्री० जुओ 'खटपाटी'

खटाई स्त्री० खटाश के खाटी वस्तु. –में डालना=दुविधामां नाखवुं

खटाना अ०क्रि० खटावुं; खाटुं थवुं (२) नभवुं; टकवुं

खटाव पुं० निभाव; गुजारो

खटास स्त्री० खटाश [खटकिन)

खटिक पुं०[सं. खट्टिक] काछियो (स्त्री.

खटिया स्त्री० खाटली; नानो खाटलो

खटोलना,खटोला पुं० 'खटिया'

खट्टा वि०खाटुं. जी खट्टा होना=दिल ऊतरी जवुं

खट्टा-मीठा वि० 'खटमिट्ठा'

खट्टी स्त्री० खाटुं लींबु

खट्वा स्त्री०[सं.]खाटलो [छे ते

खड़ंजा पुं०फरस करवा ऊभी ईंटो चणे

खड़खड़ाना अ०क्रि० खखडवुं (२) स०क्रि० खखडाववुं

खड़खड़िया स्त्री० पालखी

खड़बड़,–ड़ाहट,–ड़ी स्त्री०खळभळाट

खड़बड़ाना अ०क्रि० खळभळवुं (२) स०क्रि० खळभळाववुं

खड़ा वि०खडुं;ऊभुं(२)तत्पर(३)चालु; जारी.खड़े खड़े=तरत; झटपट. खड़ा जवाब=साफ ना

खड़ाऊँ स्त्री० खडाउ; पावडी

खड़िया,खड़ी स्त्री० खडी; खडीमाटी

खड़ी-बोली स्त्री० पश्चिमी हिंदीनो–(दिल्लीनी आसपासनो) एक भेद

खड्ड,खड्डा पुं० खाडो

ख़त पुं०[अ.]खत; पत्र (२) रेखा (३) दाढीना वाळ (४) हजामत

खत पुं० [सं. क्षत] घा

ख़तना पुं० [अ.] सुन्नत; मुसलमानी

ख़तर(–रा) पुं०[अ.]खतरो;जोखम;भय

ख़ता स्त्री० [अ.]भूल;खत्ता(२)अपराध (३) दगो

ख़तावार वि० गुनेगार; अपराधी

खतियाना स०क्रि० खतववुं

खतियौनी स्त्री०खातावही(२)खतववुं ते

ख़ते-जदी पुं० [अ.] मकरवृत्त

ख़ते-इस्तिवा पुं० [अ.] भूमध्य रेखा; विषुववृत्त

ख़ते-मुस्तक़ीम पुं०[अ.] सरळ रेखा

खत्ता पुं०खाडो(२)अन्न संघरवानी जगा (स्त्री० –त्ती)

ख़त्म वि० 'खतम'; पूरुं

ख़दंग [फा.],–गी स्त्री० तीर

खदबदाना अ०क्रि० खदबदवुं

खदरा वि० नकामुं;रद्दी(२)पुं० खाधरो
ख़दशा पुं० [अ.] डर
खदान स्त्री० खाण
ख़दीव पुं०[फा.]खुदावंद(२)शहेनशाह (३) मिसरनो खेदीव
खदेड़(–र)ना स०क्रि०खदेडवुं;भगाडवुं
खद्दड़,–र पुं० खादी
खनक पुं० [सं.]खोदनार(२)खाण(३) भूस्तरशास्त्री(४) स्त्री० खणको
खनकना अ०क्रि० खणखणवुं
खनखनाना अ०क्रि० 'खनकना' (२) स०क्रि० 'खनकाना';खणखणाववुं
खनना स०क्रि० खोदवुं; खणवुं
खपची स्त्री० खपाटियुं
खपड़ा,–रा स्त्री० [सं. खर्पर] नळियुं
खपड़ी स्त्री० एक माटीनुं वासण (२) खोपरी
खपड़ैल स्त्री० नळियांनुं छापरुं के घर
खपत,–ती स्त्री०खपत;माग(२)समावेश
खपना अ०क्रि० खपवुं (२) हेरान थवुं
खपरैल स्त्री० जुओ 'खपड़ैल'
खपाच,–ची स्त्री०'खपची'; खपाटियुं
खपाना स०क्रि० 'खपना'नुं प्रेरक
खप्पर भरना = खप्परमां दारू वगेरे देवीने चडाववो
ख़फ़क़ान पुं०[अ.](वि०–नी)गांडपण
ख़फ़ीफ़ वि०[अ.] थोडुं (२) तुच्छ(३) सामान्य (४) लज्जित
ख़बर स्त्री०[अ.]खबर.–उड़ना=अफवा फेलावी. –लेना=मदद करवी(२) खबर लई नांखवी; सजा करवी
ख़बरगीर पुं० [अ.+फा.] जासूस (२) संरक्षक
ख़बररसाँ पुं० [अ.+फा.] खेपियो;दूत
ख़बीस पुं० [अ.] खवीस; भूत; राक्षस
ख़ब्त पुं० [अ.] (वि०–ब्ती) गांडपण; धून; रंगीलापणुं
खभरना स०क्रि० खभळे एम करवुं (२) भेळववुं; मिश्र करवुं
ख़म पुं०[अ.]वांकापणुं;झुकाव.–खाना =(१)झूकवुं(२)हारवुं. –ठोकना= कुस्तीमां जांघ ठोकी तैयार थवुं. –ठोककर=दृढतापूर्वक; जोरथी
ख़म-दम पुं० साहस;पुरुषार्थ
ख़मदार वि०[फा.] वांकुं; झूकेलुं
ख़मियाज़ा पुं०[फा.] आळसथी अंग मरोडवुं के बगासुं खावुं ते (२) कर्मनुं फळ भोगववुं ते
ख़मीदा वि०[फा.] वळेलुं;झूकेलुं;नमेलुं
ख़मीर पुं०[अ.] खमीर (२) तमाकुनो शीरो; काकव (३) स्वभाव
ख़मीरा पुं०[अ.] एक जातनी पीवा माटेनी तमाकुनी बनावट(२)वि० पुं० मीठाईमां बनावेली (औषधि)

ख़मीरी वि० खमीरवाळुं (२) स्त्री० खमीरवाळी एक जातनी रोटी
ख़मोश, ख़मोशी 'खामोश;-शी' जुओ
खय स्त्री०क्षय [विश्वासघात
ख़यानत स्त्री० [अ.] बेईमानी; दगो;
ख़याल पुं०[अ.]ख्याल (विचार;ध्यान; स्मरण) (२) ख्याल-गानपद्धति
ख़यालात पुं०[अ.] 'खयाल'नुं ब०व०
ख़याली वि० [अ.] ख्याली; कल्पित (२) ख्यालने लगतुं
खरक पुं०[सं. खडक] ढोरनो वाडो के चरो (२) खपाटियांनुं बारणुं (३) स्त्री० जुओ 'खटक'
खरका पुं० दांतखोतरणुं. **-करना**= तेनाथी दांत साफ करवा
ख़रख़शा पुं०[फा.] झघडो(२)आशंका
ख़रगोश पुं० [फा.] 'खरहा'; ससलुं
ख़रच,-चा पुं० खरचो; खर्च
खरदरा वि०खडबचडुं [बुद्धिनुं
ख़र-दिमाग़ वि०[फा.] मूर्ख;गधेडानी
ख़र-नफ़्स वि० [फा.] लंपट
ख़रबूज़ा पुं० [फा.] खडबूचुं
खरभर पुं० खळभळ; शोर; गरबड
खरभराना अ०क्रि० खळभळवुं
ख़रमस्ती स्त्री० [फा] दुष्टता
खरमास, खरवाँस पुं० मंगळ कार्य करवानो-पोष चैत्र-मास
खरसान स्त्री० धार काढवानो पथ्थर
खरहरा पुं० 'खरेरा';खरेरो(२)सावरणो
खरहरी स्त्री० नानो 'खरहरा'(२) एक मेवो; खारेक ?
खरहा पुं० ससलुं
खरा वि० तेज; तीक्ष्ण(२)खरुं (साचुं; साफ;घणुं शेकाई गयेलुं इ०) (३) स्पष्ट वक्ता
खराई स्त्री० खरापणुं (२) सवारना खावाना समयमां मोडुं थवाथी, टेवने लीधे शरीरमां थती विक्रिया. **-मारना**=नास्तो करवो
खराऊँ स्त्री० जुओ 'खड़ाऊँ'
ख़राब व ख़ास्ता वि० [फा.] खराब-खास्ता; तद्दन पायमाल
ख़राबा पुं० [फा.] बरबादी; खराबी
ख़राबात स्त्री०[अ.]उज्जड जमीन;खराबो (२) वेश्यावाडो (३) दारूनुं पीठुं
ख़राश स्त्री० [फा.]'खरोंच';खसरको; उझरडो; छोलावुं ते
ख़रास स्त्री० [फा. खरीस] घंटी
खरिहान पुं० जुओ 'खलियान'
खरी स्त्री० 'खड़ी' (२)खोळ; 'खली'
ख़रीता पुं०[अ.](स्त्री०-ती) थेली(२) खीसुं (३) खरीतो [चीज
ख़रीद स्त्री०[फा.]खरीदवुं ते के खरीदेली
ख़रीद-फ़रोख़्त स्त्री०[फा.] क्रय-विक्रय

(२) खरीदेली चीज
ख़रीफ़ स्त्री० [अ] खरीफ–चोमासु पाक
खरोंच स्त्री० छोलावानु चिह्न; 'खराश'
(२) एक पकवान
खरोंचना स० क्रि० छोलवुं
खरोट, ०ना जुओ 'खरोंच, खरोंचना'
खरोष्ट्री,–ष्ठी स्त्री० [सं. ?] खरोष्टी लिपी
ख़र्राच वि० [फा.] खरचाळ; उडाउ
खर्राटा पुं० ऊंघमां नाक बोलवानो
अवाज. –भरना, –मारना,
–लेना=घसघसाट ऊंघवुं
ख़लक़ पुं० खलक; 'ख़ल्क़' जुओ
खलखलाना अ० क्रि० खळखळवुं
खलड़ा पुं० खाल; काचुं चामडुं
खलड़ी स्त्री० खालडी; खाल
खलना अ० क्रि० बूरुं, माठुं लागवुं
ख़लफ़ पुं० [अ.] पुत्र (२) वारस
खलबल,–ली स्त्री० खळभळ; 'खरभर'
खलबलाना अ० क्रि० खळभळवुं (२)
खळखळवुं
ख़लल पुं० [अ.] खलेल; हरकत
ख़लल-अंदाज़ वि० खलेल पाडनार
ख़लवत स्त्री० [अ.] एकांत
ख़लवत-ख़ाना पुं० खानगी वात
माटेनी बेठक; खलवत(२)झनानो
ख़ला पुं० [अ.] खला; खाली जगा (२)
आकाश (३) जाजरू

ख़लाल पुं० [अ.] (धातुनुं) दांतखोतरणुं
ख़लास वि० [अ.] पूरुं; खलास (२) मुक्त
(३) च्युत; भ्रष्ट [छुटकारो
खलासी पुं० खलासी (२) स्त्री० मुक्ति;
खलियान पुं० खळुं (२) ढेर
खलियाना स० क्रि० खाल उतारवी (२)
खाली करवुं [डंखवुं ते
ख़लिश स्त्री० [अ.] पीडा (२) चिंता (३)
खली स्त्री० खोळ
ख़लीक़ वि० [अ०] सुशील; सज्जन;
मिलनसार
ख़लीज स्त्री० [अ.] अखात; खाडी
ख़लीता पुं० [फा.] जुओ 'खरीता'
ख़लीफ़ा पुं० [अ.] अध्यक्ष (२)
बुजरग (३) खलीफ (४) हजाम
(५) दरजी (६) बबरची
ख़लील पुं० [अ.] साचो मित्र
ख़ल्क़ स्त्री० [अ.] खलक; सृष्टि (२)
मनुष्य मात्र
खवा पुं० खभो
खवाना स० क्रि० 'खाना' नुं प्रेरक
ख़वा(–व्वा)स पुं० [अ.] खवास; दास
ख़वासिन स्त्री० दासी; खवासण
ख़वासी स्त्री० खवासनुं काम; चाकरी
खवैया पुं० खानार
ख़शख़ाश स्त्री० [फा.] 'खसखस'
खसकना अ० क्रि० खसवुं; सरकवुं

खसखसा वि० भभरुं; छूटुं (२) बारीक; खसखस जेवुं
ख़सख़ाना पुं० [फा.] खसनी टट्टीओ बांधेलुं घर के ओरडो
खसना अ०क्रि०(प.)खसवुं;'खसकना'
ख़सम पुं०[अ.]खसम;पति(२)मालिक (३) शत्रु
ख़सरा पुं० [अ.] तलाटीनुं खेतरोने अंगेनुं पत्रक (२) काचो रोजमेळ (३) 'खारिश'; खूजली
ख़सलत स्त्री०[अ.]स्वभाव; प्रकृति(२) आदत; टेव [पाडवुं
खसाना स०क्रि० नीचे खसेडवुं; नीचे
ख़सासत स्त्री० [अ.] 'खसीस'-पणुं
खसिया,ख़सी पुं० वकरो (२) खसी करेल पशु (३) नपुंसक
ख़सीस वि०[अ०]कंजूस [नाम)
खसोट,–टी स्त्री० ('खसोटना' परथी
खसोटना स०क्रि० जोरथी उखाडवुं, खेंचवुं (२) छीनवुं
ख़स्ता वि०[फा.]छूटुं; भभरुं(२) दुःखी (३)भांगेलुं(४)घायल(नाम,-स्तगी)
ख़स्सी पुं० [अ.] जुओ 'खसी'
खाँखर वि० पोलुं(२) काणांकाणांवाळुं
खाँग पुं० कांटो(२)स्त्री० कमी; ऊणप
खाँचा पुं०(स्त्री०–ची)टोपलो;'झाबा'
खाँड़ स्त्री० साफ कर्या वगरनी खांड (२) (प.) खाडो
खाँड़ना स०क्रि० खंडवुं; तोडवुं (२) चाववुं (३) खांडवुं
खाँड़ा पुं० खांडुं (२) खंड; भाग
खाँभ पुं०'खंभा' (२)परबीडियुं;'खाम'
खाँभना स०क्रि०परबीडियामां बंध करवुं
खाँवाँ पुं० पहोळी खाई
खाँसना अ०क्रि० [सं.कासन] खांसवुं
खाऊ वि० खाउधरुं; खूब खानार
ख़ाक स्त्री०[फा.]खाख;धूल. –उड़ना =नाश थई जवुं; धूळ ऊडवी. -उड़ाना या छानना=मार्या मार्या फरवुं. -छानना=खूब तपास करवी
ख़ाकसार वि० [फा.] अल्प; तुच्छ
ख़ाका पुं० [फा.] कशानी योजनानुं स्वरूप(२)अंदाजपत्र (३) खरडो. –उड़ाना=मश्करी करवी
ख़ाकी वि० [फा.] माटीना रंगनुं (२) वगर पायेलुं खेतर(३) पुं० राख चोळनार एक वैष्णव साधु (४) खाकीशाहनो अनुयायी
खाज स्त्री० खूजली
खाजा पुं० खाद्य (२) खाजुं
खाट स्त्री० खाटलो; पलंगडी
ख़ातमा पुं०[फा.]खातमो(मृत्यु के अंत)
खाता पुं० वखार (२) खातुं
ख़ातिम पुं० [अ.] खतम करनार

ख़ातिर स्त्री० [अ.] खातर; बरदास; सन्मान (२) अ० खातर; माटे. -में आना= ध्यानमां आववुं (२) लेखावुं; वखणावुं

ख़ातिर-ख़्वाह अ० [अ.] इच्छा मुजब

ख़ातिर-जमा स्त्री० [अ.] विश्वास; ख़ातरी

ख़ातिर-तवाज़ा स्त्री० [अ.] आदरसत्कार

ख़ातिरदारी स्त्री० [फा.] खातरदारी; बरदास; आदर

खातिरी स्त्री० खातर; आदर (२) खातरी

खाती स्त्री० सुतार (२) खोदेली जमीन

ख़ातून स्त्री० [तु.] मोटा घरनी खानदान स्त्री

खाद स्त्री० खातर

खादर पुं० नीची, क्यारीनी जमीन

ख़ादिम पुं० [अ.] खिदमतगार; नोकर

खान स्त्री० खाण (२) पुं. खान; सरदार (३) खावुं ते के तेनी रीत के सामग्री

ख़ानए-ख़ुदा पुं० [फा.] मस्जिद

खानक पुं० खाणियो; खाण खोदनार (२) कडियो

ख़ानक़ाह स्त्री० [अ.] फकीरोनो तकियो

ख़ानख़ानाँ पुं० [फा.] खानखानान; खानोनो खान

ख़ानसामाँ पुं० [फा.] खानसामा

खाना स० क्रि० खावुं (२) करडवुं; डसवुं. मुँहकी खाना=खूब नीचुं जोवुं (२) हारवुं

ख़ाना पुं० [फा.] खानुं

ख़ाना-ख़राब वि० खराबखास्ता; पायमाल (२) लफंगु; 'आवारा' (नाम, -बी)

खानादारी स्त्री० [फा.] गृहस्थीनुं कामकाज

ख़ाना-नशीन वि० [फा.] (नाम, -नी) कामकाज छोडी घर पकडीने बेठेलुं

ख़ाना-पुरी स्त्री० [फा.] कोठानां खानां भरवां ते (२) वखत विताडवो ते

ख़ाना-बदोश वि० [फा.] (नाम, -शी) घरबार वगरनुं

ख़ाना-साज़ वि० [फा.] घेर बनेलुं

ख़ाम वि० [फा.] (नाम, -मी) कमी; अधूरुं; काचुं; खामीवाळुं

खाम पुं० 'खँभ'; परबीडियुं (२) सांधो (३) खंभ; थांभलो

खामखाह (-ही) अ० खासुखा

खामना स० क्रि० 'खँभना' (२) माटी के लोटथी कशानुं मों बंध करवुं

ख़ामोश वि० [फा.] चूप; शांत (नाम, -शी)

ख़ायफ़ वि० [अ.] कायर; डरपोक

ख़ाया पुं० [फा.] मरघीनुं ईंडुं (२) अंडकोश

खार पुं० क्षार (२) खारी माटी (३) धूळ

ख़ार पुं० [फा.] कांटो (२) खार; द्वेष. -खाना=दाझे बळवुं; द्वेष राखवो

खारा वि० खारुं (२) पुं० एक चोखंडो टोपलो (३) [फा.] एक जातनुं

लीटीदार कपडुं
खारिक पुं० [सं. क्षारक] खारेक
ख़ारिज वि० [अ.] वहिष्कृत; बातल (२) अलग; भिन्न
ख़ारिश(-श्त) स्त्री० [फा.] खूजली
खारुआँ(-वा) पुं० एक जातनो लाल रंग के ते रंगवाळुं कपडुं
खाल स्त्री० खाल; चामडी (२) नीची जमीन(३)खाडी (४) खाली जगा
ख़ाल पुं० [अ.] शरीर परनो तल
ख़ाला वि०नीचुं. -ऊँचा=ऊंचुंनीचुं; असमान (२) सारुंनरसु
ख़ाला स्त्री० [अ.] मासी.-जीका घर= सहेलुं काम
ख़ालिक़ पुं०[अ.] सरजनहार; ईश्वर
ख़ालिस वि० [अ.] शुद्ध; निर्मळ
ख़ालू पुं० [अ.] मासो
ख़ास वि० [अ.]खास;विशेष;'आम'थी ऊलटुं (२) पोतानुं; खुद. -कर= खास करीने; प्रधानतः
ख़ास-कलम पुं० [अ.] खानगी मंत्री
ख़ासगी वि० खानगी; पोतानुं(२)राजा के शेठनुं
ख़ासदान पुं० [अ.+फा.] पानदानी
ख़ास-बरदार पुं०[फा.] राजा के मोटा सरदार आगळ चालतो सिपाही
ख़ासा पुं०[अ.]राजभोग;मोटा लोकनुं खाणुं(२)एक जातनुं मलमल(३) वि० खासुं;रूडुं (४) स्वस्थ;नीरोगी (५) सुंदर (६) पूरुं
ख़ास्सा पुं०[अ.] खास गुण; खासियत
खाह-मख़ाह अ० खामुखा
खिँचना अ०क्रि० खेंचावुं (२) अनुराग कम थवो (३) भाव तेज थवो
खिचड़वार पुं० मकरसंक्रांति
खिचड़ी स्त्री०[सं. कृसर] खीचडी (२) 'खिचडवार.' -पकाना=गुप्त कांई सलाह थवी. ढाई चावलकी खिचडी अलग पकाना=सौनी संमति विरुद्ध के अलग कांई करवुं
खिँचाई अ०क्रि० खेंचवानी क्रिया के तेनी मजूरी
खिँचाव पुं० खेंच; ताण
खिजलाना अ०क्रि० खिजावुं (२) स०क्रि० खीजववुं
ख़िज़ाँ स्त्री०[फा.] हेमन्त;पानखरऋतु
ख़िज़ाब पुं० [अ.] वाळनो कलप
ख़िजालत स्त्री० [अ.] शरम; लज्जा
खिझना अ०क्रि० 'खीज(-झ)ना'जुओ
खिड़की स्त्री० बारी
ख़ित्ता पुं० [अ.] देश; प्रदेश
ख़िदमत-गुज़ार वि०[फा.] (नाम, -री) स्वामीभक्त सेवक
ख़िदमती वि० खिदमतगार; सेवा

करनार (२) खिदमत संबंधी
ख़ियानत स्त्री० जुओ 'ख़यानत'
खियाना अ०क्रि० घसाई जवुं (२) 'खिलाना'
ख़िरद स्त्री० [फा.] अक्कल [बुद्धिशाळी
ख़िरद-मंद वि० [फा.] अकलमंद;
खिरनी स्त्री० [क्षीरिणी] रायण के रायणुं
ख़िरमन पुं० [फा.] जुओ 'खलियान'
ख़िराज पुं० [अ.] मालगुजारी; सांथ
ख़िराम स्त्री० [फा.] चाल (२) मस्त चाल
ख़िरामाँ वि० [फा.] मस्तानी चाले चालनारुं. –ख़िरामाँ=धीरे धीरे; मस्त चाले (चालवुं)
ख़िलअत स्त्री० [अ.] खिल्लत; राजा तरफथी माननो पोशाक
ख़िलक़त स्त्री० [अ.] सृष्टि (२) भीड
खिलकौरी स्त्री० खेल; गमत
खिलखिलाना अ०क्रि० खीखी हसवुं
ख़िलत(–ति) स्त्री० 'ख़िलअत' जुओ
खिलना अ०क्रि० खीलवुं (२) शोभवुं (३) वच्चेथी फाटवुं (४) अलग अलग थवुं; छूटुं पडवुं
ख़िलवत स्त्री० [अ.] 'ख़लवत'; एकांत जगा. –ख़ाना='खलवत-खाना'
खिलवाड़ पुं० जुओ 'खेलवाड़'
खिलाई स्त्री० खावुं के खवडाववुं ते (२) आया; बचाने राखनार स्त्री

खिलाड़(–ड़ी) पुं० (स्त्री० –ड़िन) खेलाडी (२) जादूगर
खिलाना स०क्रि० 'खेलना', 'खाना', 'खिलना'नुं प्रेरक
ख़िलाफ़-गोई स्त्री० [फा.] जूठुं बोलवुं ते
ख़िलाफ़-दस्तूर, ख़िलाफ़-मामूल वि० [फा.] रूढि विरुद्ध
ख़िलाफ़-वर्ज़ी स्त्री० [अ.+फा.] अवज्ञा (२) अयोग्य वर्तन
ख़िलाल स्त्री० [अ.] रमत, बाजीमां हार (२) जुओ 'खलाल' (३) अंतर
खिलौना पुं० खिलोणुं; रमकडुं
ख़िल्त पुं० [अ.] शरीरनी कफ धातु
ख़िल्त-मिल्त वि० मिश्रित; भेगुं
खिल्ली स्त्री० खेल; हांसी; मजाक (२) पाननुं मोटुं बीडुं (३) खीली
ख़िश्त स्त्री० [अ.] ईंट (वि०–श्ती)
खिसकना अ०क्रि० 'खसकना' जुओ
खिसाना अ०क्रि० जुओ 'खिसियाना'
ख़िसारा पुं० [अ.] घट; खोट; हानि
खिसियाना अ०क्रि० खिसियाणुं पडवुं; शरमावुं (२) रिसावुं
खिसी स्त्री० शरम (२) धृष्टता
खींच स्त्री० खेंच [स्त्री० खेंचताण
खींचतान, खींचाखींची, खींचातानी
खींचना स०क्रि० खेंचवुं
खीज,–झ स्त्री० खीज

खीज(–झ)ना अ०क्रि० खीजवुं; खिजावुं
खीन वि० क्षीण [नाम,-ता,–ताई]
खीर चटाना=वाळकने पहेलवहेलुं अन्न-प्राशन करावडुं
खीरा पुं०[सं. क्षीरक] काकडी जेवुं एक फळ [जुओ 'खिरनी'
खीरी स्त्री० ढोरनुं बावलुं; 'बाख' (२)
खील स्त्री० धाणी (२) कील; खीली
खीली स्त्री० 'खिल्ली'; पाननो बीडो
खीवन,–नि स्त्री० मदनी मस्ती
खीस स्त्री० खीज; क्रोध (२) लज्जा; शरम (३) दांतरापणुं (४) करेटुं (५) वि० नष्ट; पायमाल
खीसा पुं० [फा.कीसा] खीसुं (२) थेली
खुआर वि० खुवार; 'ख्वार' (नाम,–री)
खुक्ख वि० [शुष्क] खाली; निर्धन
ख़ुगीर पुं०[फा.खोगीर] खोगीर; घोडानुं जीन; नमदो.–की भरती=नकामी वस्तुओ के लोकोनो जथो
खुचर, खुचुर स्त्री० खणखोद; दोषदृष्टि
खुजलाना स०क्रि० खंजवाळवुं (२) अ०क्रि० खंजवाळ आववी
खुजलाहट स्त्री० खंजवाळ; खूजली
खुजली स्त्री० खूजली ['खुजलाना'
खुजाना स०क्रि० (२) अ०क्रि० जुओ
खुटक स्त्री० 'खटक'; खटको; आशंका
खुटना अ०क्रि० खूटवुं; पूरुं थवुं
खुटपन(–ना) पुं०; खुटाई स्त्री० खोटापणुं; दोष
खुटाना अ०क्रि० 'खुटना' जुओ
खुट्टी स्त्री० रेवडी
खुट्ठी स्त्री० जुओ 'खुरंड'
खुड्डी(–ड्ढी) स्त्री० जाजरूनो खाडो के पगनी बेठक
ख़ुतबा पुं० [अ.] तारीफ; स्तुति (२) जुमानी नमाज बाद, पेगंबर वगेरेनी प्रशंसा करीने अपातुं प्रवचन
खुत्थी, –थ्थी स्त्री० खूंपरो; जडियुं (२) अनामत (३) पैसा राखवानी वांसळी (४) संपत्ति [आपोआप
ख़ुद अ० [फा.] स्वयं; जाते. –ब ख़ुद=
ख़ुदक(-कु)शी स्त्री० [फा.] आत्महत्या
ख़ुद-काम,-गरज वि० [फा.] स्वार्थी; आपमतलबी
खुदना अ०क्रि० खोदावुं
ख़ुद-नुमा वि०[फा.](नाम,-माई स्त्री०) अभिमानी; आप-बडाई करनार
ख़ुद-मुख़्तार वि० [फा.] स्वतंत्र
खुदरा पुं० फुटकर चीज
ख़ुदरौ वि० [फा.] आपोआप ऊगनारुं; जंगली (झाड के छोड)
खुदवाई स्त्री० खोदाववानुं काम के मजूरी
खुदवाना स०क्रि० खोदाववुं

ख़ुद-सिताई स्त्री० [फा.] आत्मश्लाघा
खुदाई स्त्री० खोदवानुं काम के मजूरी
ख़ुदाई स्त्री० [फा.] ऐश्वर्य
ख़ुदाका घर पुं० मसीद [दयालु
ख़ुदा-तर्स वि०[फा.]ईश्वरथी डरनार(२)
ख़ुदा-दाद वि० [फा.] ईश्वरदत्त
ख़ुदा या अ०[फा.]या खुदा ! हे राम !
ख़ुदा-हाफ़िज़ श०प्र०[फा.]खुदा-हाफेज; 'ईश्वर तमारुं रक्षण करो' एवो विदाय-बोल
ख़ुदी पुं० [फा.] अभिमान; शेखी
खुद्दी स्त्री० चोखादाळ वगेरेनुं कोरमुं
ख़ुनक वि० [फा.] ठंडुं; शीत
ख़ुनकी स्त्री० [फा.] ठंडक; शरदी
खुनस स्त्री० (वि०,–सी)खुन्नस;क्रोध
खुनसाना अ०क्रि० क्रोधे भरावुं
ख़ुफ़िया पुलीस स्त्री० छूपी पोलीस
ख़ुम पुं० [फा.] दारूनुं वासण
ख़ुम-कदा,–ख़ाना पुं० [फा.] दारूनी दुकान [फकीर
ख़ुमरा पुं०(स्त्री० –री)एक मुसलमान
ख़ुमार [अ.]पुं०,–री स्त्री०खुमारी;मद (२) नशो ऊतर्ये जणाती थकावट (३) जागरणनी असर
खुमी स्त्री० दांतमां जडावाती सोनानी खीली (२) हाथीना दांत पर चडावाती खोळी (३) बिलाडीना टोप जेवी वनस्पति
खुरखुरा वि० खडबचडुं; 'खरदरा'
खुरचन स्त्री० खुरचन;उखाडी उझरडी एकठुं करेलुं ते
खुरचना [सं. क्षुरण] उखाडवुं;उझरडवुं
ख़ुरजी स्त्री०[फा.]खुरजी(२)मोटो थेलो
खुरदा पुं० जुओ 'खुर्दा'
खुरपका पुं० ढोरनो (मों के खरीनो) एक रोग
खुरपा पुं० [सं. क्षुरप्र] मोटी खूरपी
खुरपी स्त्री० खूरपी
ख़ुरमा पुं० [अ.] खुरमुं (२) खारेक
ख़ुरशैद पुं० [फा.] खुरशेद; सूरज
ख़ुराक स्त्री० [फा.] खोराक
ख़ुराफ़ात स्त्री० [अ.] बेहूदी नकामी वात (२) गाळ (३) बखेडो
ख़ुराकी स्त्री० [फा.] खोराकी
ख़ुरिश स्त्री० [फा.] खावापीवानी सामग्री; सीधुंसामान
खुरी स्त्री० खरीनुं चिह्न
ख़ुर्द वि० [फा.] नानुं; छोटुं; सूक्ष्म
ख़ुर्दबीन स्त्री० [फा.] सूक्ष्मदर्शक यंत्र
ख़ुर्दबुर्द अ०[फा.]नष्टभ्रष्ट;खेदानमेदान
ख़ुर्दा पुं० [फा.] परचूरण; खुरदो (२) नानी मोटी चीज
ख़ुर्रम वि० [फा.] प्रसन्न; खुश (नाम –मी)

खुराँट वि० वृद्ध; अनुभवी (२) लुच्चुं; चालाक [खुलासाथी;बरोबर
खुलना अ०क्रि० खूलवुं. खुलकर=
खुला वि० खुल्लुं [(३)खुलासो
.खुलासा वि०[अ.]खुल्लुं(२)पुं० सारांश
.खुलूस पुं० [अ.] सरळता; पवित्रता (२) श्रद्धा
खुले आम,–खज़ाने,–मैदान,खुल्लम-खुल्ला अ० जाहेरमां; खुल्लंखुल्ला
.खुल्क पुं० [अ.] सुशीलता; सज्जनता
.खुश-किस्मत वि० [फा.] (नाम,–ती स्त्री०) नसीबवान
.खुश-खत वि० [फा.] सुंदर अक्षरवाळुं (२) पुं० सुंदर लखाण
.खुश-खबर वि०[फा.]खुश खबर कहेनार
.खुश-खबरी स्त्री० [फा.] खुश खबर; शुभ समाचार [सज्जन
.खुश-खल्क वि०[फा.] उत्तम स्वभावनुं;
.खुश-गवार वि० [फा.] प्रिय; मनोहर
.खुश-गुलू वि० [फा.] मधुर स्वरवाळुं
.खुश-ज़ायका वि० [फा.] स्वादिष्ट
.खुश-दामन स्त्री० [फा.] सासु
.खुश-वक्त वि० [फा.] सुखी
.खुशामदी वि०[फा.] खुशामतियुं. -टट्टू पुं० खुशामतियो
.खुश्क वि० [फा.] शुष्क; सूकुं; नीरस. -साली स्त्री०सूकुं वर्ष
.खुश्की स्त्री०[फा.]शुष्कता (२) खुशकी;
.खुसर पुं० [फा.] ससरो [स्थळ
.खुसरवाना वि०[फा.] शाही; राजवी
.खुसरू पुं० [फा.] बादशाह
.खुसिया पुं० [अ.] अंडकोश
.खुसूफ़ पुं० [अ.] चंद्रग्रहण
.खुसूमत स्त्री० [अ.] दुश्मनी
.खुसूसन् अ०[अ.]खास करीने;खसूस
.खुसूसियत स्त्री०[अ.]खासियत; विशेषता
.खूँखार,.खूंख्वार वि० [फा.] लोही पीनार (२) खूनखार; क्रूर; भयंकर
खूँट पुं०खूणो(२)तरफ;बाजु(३)खंड(४) स्त्री०कानतो मेल (५) पूछपरछ; टोकवुं ते
खूँटना स०क्रि०पूछवुं गाछवुं;टोकवुं(२) खूटवुं; कम थवुं
खूँटा पुं० ढोरनो खीलो; खूंटो
खूँदना अ०क्रि० खूंदवुं; गूंदवुं (२) ऊछळीने गदडवुं
.खूँ-रेज़ वि० [फा.] लोही रेडनारुं
.खूँ-रेज़ी स्त्री०[फा.] खूनरेजी
.खू स्त्री० [फा.] आदत; खो
खूटना अ०क्रि० खूटवुं–कम थवुं के पूरुं थवुं (२) बंध थवुं
खूद,खूदड़(–र) पुं०वस्तुने साफ कर्ये नकामो रहेतो कचरो; कचरापटी
.खून पुं० [फा.] खून (लोही; हत्या).

-सफ़ेद होना=स्नेह सुजनता जतां रहेवां [अच्छी रीते
ख़ूब वि०[फा.] अच्छुं; उमदा (२) अ०
ख़ूब-कलाँ स्त्री०[फा.]एक घासनां बीज
ख़ूबानी स्त्री० [फा.] जरदालु
ख़ूबी स्त्री०[फा.]भलाई; उमदापणुं (२) विशेषता; खूबी [अरसिक
खूसट,-र पुं० उल्लु (२) वि० शुष्क;
खेकसा,खेखसा पुं० कंकोडुं
खेड़ा पुं० [सं. खेट] नानुं गाम; खेडुं
खेत पुं०खेतर (२) रणक्षेत्र. –आना= लडाईमां मरवुं. – करना=लडवुं; युद्ध करवुं
खेतिहर पुं० खेडूत
खेतीबाड़ी(–री) स्त्री०खेती;खेतीवाडी
खेदना स०क्रि०खदेडवुं(२)पीछोपकडवो
खेदा पुं० शिकार
खेना स०क्रि०हलेसवुं;नाव हांकवी(२) समय काढवो [गुजारवुं
खेपना स०क्रि० [सं. क्षेपण] विताडवुं;
खेमा पुं० [अ.] तंबू. –गाह पुं० ज्यां घणा तंबू लाग्या होय ते जगा
खेमटा पुं०एक प्रकारनुं गायन के नाच
खेलवाड़ पुं०खेल; क्रीडा; तमासो (२) गमत; मजाक [विनोदी
खेलवाड़ी वि०भारे रमनार(२)मजाकी;
खेलाड़ी वि० जुओ 'खेलवाड़ा' (२) पुं० खेलाडी (३) तमासो करनार
खेलार पुं० जुओ 'खेलाड़ी'
खेवट पुं० खेवट; सुकानी (२)तलाटीनो एक चोपडो
खेवना स०क्रि० 'खेना'; नाव चलाववी
खेवा पुं० नावमां नदी पार करवी ते के तेनुं भाडुं (२) वार; समय
खेवाई स्त्री० नाव चलाववी ते के तेनी मजूरी [सगुं
ख़ेश वि० [फा. ख़्वेश] पोतानुं (२)पुं०
खेह(०र) स्त्री० खेर; खेरंटो; धूळ
खैर पुं० खेर वृक्ष [खेर; भले
ख़ैर स्त्री० [फा.] क्षेमकुशळ (२) अ०
ख़ैर-आफ़ियत स्त्री० [फा.] क्षेमकुशळ
ख़ैर-अंदेश; –ख़्वाह वि० [फा.] शुभ-चिंतक;खेरखाह [विदाय-बोल
ख़ैर-बाद पुं० [फा.] 'कुशळ हो' एवो
ख़ैर-मक़दम पुं० [अ.] स्वागत; भले पधारो [(वि० –र्ती)
ख़ैरात स्त्री० [अ.] खेरात; पुण्यदान
ख़ैराद पुं० [फा.] खराद; 'खर्राद'
ख़ैरियत स्त्री० [फा.] खेरियत;राजीखुशी
खोंच स्त्री० खूंच (जेम के, कपडामां कांटो भरावाथी) [विनानुं
खोंड़ा वि० खांडुं;अपंग(२)आगला दांत
खोंता पुं० माळो (पक्षीनो)
खोंसना स०क्रि० खोसवुं

खोई स्त्री० धाणी(२)शेरडीनो कूचो(३) वरसादमां माथे ओढातो कामळो
खोखला वि० पोलुं
खोगीर पुं० [फा.] जुओ 'खुगीर'
खोट स्त्री० [सं.] दोष;बूराई(२) हलकी वस्तुनुं मिश्रण
खोड़ स्त्री० देवनो कोप
खोड़रा पुं० कोटर; झाडनी बखोल
खोता पुं० पक्षीनो माळो
ख़ोद पुं० [फा.] बख्तरनो टोप
खोदना स०क्रि० खोदवुं(२)कोतरवुं(३) भोंकवुं; खोसवुं; खोरवुं
खोदाई स्त्री० 'खुदाई'
खोना स०क्रि० खोवुं (२)बगाडवुं (३) अ०क्रि० खोवावुं
ख़ोन्चा पुं० [फा. ख़्वान्चा] खूमचो
खोपड़ा,–रा पुं० खोपरी(२)माथुं (३) कोपरुं के नारियेळ
खोपड़ी,–री स्त्री० खोपरी के माथुं
खोपा पुं० छापरा के मकाननो रस्ता पर पडतो खूणो; करो (२) अंबोडो
ख़ोय स्त्री० [फा. ख़ू] खो; आदत
खोया पुं० 'खोवा'; मावो
खोर स्त्री० सांकडी गली (२)स्नान (३) ढोरनी गमाण (४) जुओ 'खोड़'
ख़ोर वि० [फा.] खानार (समासमां. उदा० नशाखोर)
खोरना अ०क्रि० नाहवुं
खोरा पुं० कटोरो(२)पाणीनुं पात्र (३) वि० खोडुं; अपंग; 'खोंड़ा'
खोल पुं० खोळ; गलेफ (२) उपरनी चामडी (जे प्राणी उतारे छे); कांचळी (३) मोटो ओछाड
खोली स्त्री० खोळ;गलेफ [लूम
ख़ोशा पुं० [फा.]अनाजनुं डूंडूं के फळनी
खौं स्त्री० खाडो(२)अन्न राखवानुं भोंयरुं
ख़ौज़ पुं० [अ.] गहन विचार
ख़ौफ़ पुं० [अ.] खोफ;डर(वि० -नाक)
खौर स्त्री० तिलक; 'टीका'(२)स्त्रीओनुं माथानुं एक घरेणुं [पहेरवुं
खौरना स०क्रि० तिलक करवुं(२)'खौर'
खौलना अ०क्रि० ऊकळवुं
खौलाना स०क्रि० प्रवाही गरम करवुं
ख़्याल पुं० जुओ 'खयाल'(२)खेल;क्रीडा
ख़्याली वि० कल्पित(२)खेल करनार. –पुलाव पकाना=शेखचल्लीना तरंग करवा
ख्रिष्टान पुं० 'क्रिस्तान'; ख्रिस्ती
ख्रीष्ट पुं० ईशु ख्रिस्त
ख़्वाँ वि० [फा] (समासने अंते)कहेनार, गानार, पढनार एवा अर्थमां
ख़्वाँदा वि० [फा.] भणेल; शिक्षित
ख़्वाजा पुं० [फा.] मालिक; सरदार(२) सद्‌गृहस्थ (३) व्यंडळ

ख़्वाजा-सरा पुं०[फा.]खोजो;रणवासमां राखवा नपुंसक बनावेलो ते

ख़्वान पुं० [फा.] थाळ; मोटी थाळी

ख़्वानचा पुं० [फा.] 'खोन्चा'; खूमचो (२) नानी थाळी

ख़्वाब पुं० [फा.] निद्रा (२) स्वप्न

ख़्वार वि० [फा.] [नाम, –री स्त्री.] खुवार; पायमाल (२) तिरस्कृत

ख़्वास्तगार वि०[फा.][नाम, –री स्त्री.] इच्छुक

ख़्वाह अ०[फा.]अथवा (२) स्त्री०इच्छा

ख़्वाह-मख़्वाह अ०[फा.]जरूर;अवश्य; खामुखा

ख़्वाहिश स्त्री० [फा.] खाएश; इच्छा

ग

गंग-बरार पुं०[गंगा+फा. बरार]गंगानो के कोई नदीनो कांप ठरी नीकळी आवेली जमीन; 'डेल्टा'

गंग-शिकस्त पुं० [गंगा+फा.शिकस्त] नदीथी तणाई के धोवाई गयेली जमीन

गंगाल पुं०'कंडाल';धातुनुं पाणीनुं एक मोटुं वासण

गंगालाभ पुं० [सं.] मृत्यु

गंगासागर पुं०गंगानो समुद्र-संगम(२) एक जातनी मोटी झारी

गंज पुं०माथानी ताल(२)स्त्री०खजानो (३)ढेर; गंज

गंजा वि० माथे तालवाळुं

गँजिया स्त्री० जाळीदार गूंथेली थेली

गंजी स्त्री० गंजीफराक (२) गंजी; ठग

गंजी,गंजेड़ी वि० गंजेरी

गँठकटा पुं० जुओ 'गिरहकट'

गँठजोड़ा, गँठबंधन पुं० वर कन्यानां वस्त्र गांठवानी क्रिया

गंडा पुं० गांठ(२) मंतरेलो दोरो (३) पक्षीना गळानो कांठलो (४) आडी लीटीओनी हार;चटापटा (जेम के साप पर) [कापवानुं ओजार

गँड़ासा पुं० (स्त्री० –सी) घासचारो

गंदगी स्त्री० [फा.] गंदकी

गँदला,गंदा [फा.] वि० गंदुं

गंदुम पुं० [फा.,सं. गोधूम] घउं

गंदुमी वि० घउंवर्णु

गंधी पुं० तेल अत्तर वेचनार (२) वरसादमां थतुं मांकणियुं जीवडुं

गँव स्त्री० अवसर;मोको (२) मतलब;

प्रयोजन (३) उपाय; युक्ति
गँवई स्त्री०(वि. –इयाँ) गामनी वस्ती
गँवाना स०क्रि० (सं. गमन) गुमाववुं
गँवार,-रू वि० गमार (२) गामडियुं
गँवारी स्त्री० गमारपण (२) गमार स्त्री (३)वि० गमार जेवुं (४) बदसूरत
गँसना स०क्रि० बरोबर जकडवुं के गांठवुं के बांधवुं (२) ठांसीने वणवुं (३) अ०क्रि० ठसोठस वणावुं के भरावुं; ठांसावुं
गँसीला वि० अणीदार (२) ठांसेलुं
गईबहोर वि० खोवाई गयेलाने फरी देनार के वगडेलाने सुधारनार
गऊ स्त्री० गाय
गच पुं० गच दईने पेसी जवुं ते (२) चूना वगेरेथी करेली पाकी फरस के ते करवानो चूनो वगेरे मसालो (३) गच्ची; अगाशी [काम
गचकारी स्त्री०'गच'नुं के चूना इ०नुं
ग़ज़क पुं०[फा.]दारू पीने करातो नास्तो (२) तलपापडी (३) नास्तो
गज़ट पुं० सरकारी गेझेट
ग़ज़ब पुं० [अ.] गजब(२) कोप
ग़ज़ब का वि० अपूर्व; विलक्षण
गजर पुं० गजर; चोघडियां
गजर दम अ० सवारे
गज़ी स्त्री० [फा.] गजियुं
गज्झा पुं० गंज; ढेर
गझिन वि० गाढुं; घट्ट
गटकना स०क्रि० गटकाववुं; गट करी जवुं; खाई जवुं; हडप करी जवुं
गटपट स्त्री० अधिक मेळ; सहवास
गट्टा पुं०कांडुं (२) घूंटण (३) गांठ (४) हूकानो मेर (५) एक मीठाई
गट्ठर पुं० मोटी गांसडी
गट्ठा पुं०'गट्ठर'(२)गट्ठो;गांठियो(जेम के डुंगळीनो) [गांठ
गट्ठी स्त्री० नानो गट्ठो के गांसडी (२)
गठन स्त्री० रचना; बनावट
गठना अ०क्रि०गांठवुं;जोडवुं(२)गोठवुं; फावतुं आववुं; बनवुं (३) दाव के गुप्ततामां सामेल थवुं
गठरी स्त्री० गांसडी; पोटलुं (२) जमा करेली मिलकत. -मारना=धन ठगवुं;धूती आणवुं
गठिया स्त्री०थेलो; खुरजी (२) सांधाना दरदनो एक रोग
गठियाना स०क्रि० गांठ मारवी
गठीला वि० (स्त्री० –ली) गांठाळुं (२) मजबूत
गठौत,-ती स्त्री० गोठवुं ते; मित्रता
गड पुं० [सं.] आड ;ओथ(२)वाड(३) (४) गढ
गड़दार पुं० हाथी जोडे भालो लई

चालनार माणस

गड़ना अ०क्रि० गडवुं; पेसी जवुं (२) शरीरमां भोकावा जेवुं दर्द थवुं (३) गडावुं; दटावुं; दफन थवुं (४) स्थिर थवुं; जामवुं. गड़े मुर्दे उखाड़ना=गईगुजरी पाछी काढवी

गड़पना स०क्रि० जुओ 'गटकना'

गड़बड़ वि०ऊंचुंनीचुं (२) अव्यवस्थित (३) पुं० अव्यवस्था; गरबड (४) गोटाळो; उपद्रव

गड़बड़झाला, गडबडाध्याय पुं० गोलमाल; गोटाळो

गड़बड़ाना अ०क्रि० गरबडमां पडवुं (२) बगडवुं; गोटाळो थवो (३) स० क्रि० गरबडमां नांखवुं (४) बगाडवुं (५) चकरावा के भुलावामां पाडवुं

गड़बड़ी स्त्री० जुओ 'गड़बड़'

गड़(-ड़े)रिया पुं० गडेरियो; भरवाड

गड़हा पुं० 'गड्ढा' जुओ

गड़ा पुं० 'गड्ड'; ढेर; ढगलो

गड़ाना स०क्रि० भोंकवुं; 'गड़ना'नुं प्रेरक (२) दटाववुं; गडाववुं

गड़ारी स्त्री० गोळाकृति (२) घेरावो; घेर (३) गरगडी (४) 'गंडा'; आडी लीटीओनी हार

गड़ुई स्त्री० नानो 'गड़ुवा'; झारी

गड़ुवा पुं० नाळचावाळो लोटो-गडवो

गड्डु पुं० (स्त्री०-ड्डी) गंज; थोकडी; खरकलो; गडी (२) खाडो

गड्ढा पुं० खाडो

गढ़ंत वि० बनावटी; कल्पित (वात)

गढ़न स्त्री० 'गठन';घडवुं ते(२)आकृति

गढ़ना स०क्रि० घडवुं;बनाववुं(२)घडी काढवुं(३)घडी नांखवुं; मारवुं

गढ़ाई स्त्री० घडवानुं काम के मजूरी

गढ़ाना अ० क्रि० मुश्केली पडवी के मुश्केल थवुं(२)'गढ़ना'नुं प्रेरक

गढ़ि(-ढ़ै)या पुं०घडनारो [लाकडी

गतका पुं०ढाललकडी के ते खेलवानी

गत्ता पुं० कागळनी थोकडी

गत्ताल खाता पुं० मांडी वाळवानी रकमनुं खातुं

गद पुं० [सं.] रोग (२) विष

गदका पुं० जुओ 'गतका'

ग़दर पुं० [अ. ग़द्र] उपद्रव; खळभळाट (२) बळवो

गदराना अ०क्रि० (फळ) पाकवा पर आववुं; नरम थवुं (२) जुवानीथी शरीर भरावा लागवुं (३) आंख आववी (४) गंदुं थवुं

गदहपचीसी स्त्री० गध्धापचीसी

गदहा पुं० [स्त्री. -ही] 'गधा'; गधेडुं (२) [सं.] वैद्य

गदा पुं० [फा.] भिखारी; फकीर
गदाई वि० तुच्छ; क्षुद्र (२) रद्दी; नकामुं (३) स्त्री० भीख-वृत्ति
गदेला पुं० गदेलुं (२) नानो छोकरो
गदोरी स्त्री० हथेळी
गद्द पुं० नरम जगामां धब दईने पडवुं ते (२) भारे खाधानो पेटमां भार
गद्दर वि० काचुंपाकुं (२) पुं० मोटुं गदेलुं
गद्दा पुं० गोदडुं; गादी
ग़द्दार वि० [अ.] भारे बळवाखोर (२) भारे [बेवफा
गद्दी स्त्री० नानुं गोदडुं (२) गादी (३) हथेळी के पगनुं तळियुं
गद्दी-नशीन वि० गादीए बेठेल (२) वारस
गधा पुं० 'गदहा'; गधेडुं
गनगौर स्त्री० चैत्र सुद त्रीज; स्त्रीओनी गौरीपूजा
ग़नी वि० [अ.] भारे धनवान (२) भारे [स्वतंत्र
ग़नीम पुं० [अ.] शत्रु (२) डाकु; लूंटारो
ग़नीमत स्त्री० [अ.] लूंटनो के मफतियो माल (२) गनीमत; संतोषनी, सारी वात
ग़नूदगी स्त्री० [फा.] ऊंघ आववी ते
गन्ना पुं० शेरडी
गप स्त्री० [फा.] गप; डिंग (२) पुं० गफ्फो लईने खावुं ते
गपड़ चौथ स्त्री० नकामी गप; गपाटो
गपशप स्त्री० गपसप; नकामी–नवरा पहोरनी वात; बकवाद
गपोड़ा पुं० गपोडो; गप
गप्फा पुं० गफ्फो; गफ दईने मरातो बूको (२) लाभ; फायदो
गफ़ वि० [फा.] ठस; गाढुं; घट्ट
ग़फ़ूर वि० [अ.] क्षमावान (ईश्वर)
ग़फ़्फ़ार वि० [अ.] भारे दयाळु (ईश्वर)
ग़बन स्त्री० [अ.] सुपरत विषे बेईमानी करवी–हडप करी जवुं ते
गबरु वि० [फा. ख़ूबरू] गभरु
गब्बर वि० गर्विष्ठ (२) मंद; सुस्त (३) गव्वर; कीमती; धनवान
गब्र पुं० [फा.] अग्निपूजक–पारसी
गभुआ(–वा)र वि० जन्मथी राखेला (वाळ) (२) तेवा वाळवाळुं; नानुं (बाळक)
गम स्त्री० गम; पहोंच; सूझ
ग़म पुं० [अ.] गम; दुःख (२) चिंता
गमक स्त्री० सुगंध (२) संगीतनी गमक
ग़मकदा पुं० [फा.] संसार
गमकना अ० क्रि० महेंकवुं
ग़मख़ोर वि० [फा.] गमखार; सहिष्णु
ग़म-ग़लत पुं० [अ.] दुःख हलकुं करे ते (२) खेल; तमासो (३) दारू
ग़मगीं वि० [फा.] गमगीन; उदास
ग़म-गुसार वि० [फा.] दुःखभंजन
ग़मज़ा पुं० [अ.] (प्रियानां) नखरां के

हावभाव [कूंडुं
गमला पुं० फूलझाडनुं के जाजरूनुं
गमाना स०क्रि० 'गँवाना'; गुमाववुं
ग़मी स्त्री०[अ.] गमी;शोक (२) मरण बादनो शोक (३) मरण
गय पुं० [सं.] घर (२) आकाश (३) [प्रा. गय] गज; हाथी
गयावाल पुं० गयावाळ; गयानो पंडो
ग़रक़ाब वि० [अ.] गरक; निमग्न
ग़रक़ी स्त्री०[फा.]डूबवुं ते(२)अतिवृष्टि; रेल (३) निचाणवाळी जमीन
गरगरा पुं० 'गराड़ी'; गरगडी
गरज स्त्री० वादळ के सिंहनी गर्जना
ग़रज़ स्त्री०[अ.]गरज;जरूर(२)आशय; मतलब (३) चाह;इच्छा (४) अ० निदान; आखरे (५) सारांश के; मतलब के (वि०–ज़ी) [थवुं
गरदन उठाना=विरोध करवो; सामे
गरदनमें हाथ देना या डालना=गरदन पकडी बहार काढवुं
गरदनियाँ स्त्री० गरदन पकडी बहार काढवुं ते [एक दाव
गरदनी स्त्री०घोडानो ओढो(२)कुस्तीनो
गरदा पुं० 'गर्द;' गरदा; धूळ
गरदानना स०क्रि० वारंवार कहेवुं(२) गणवुं; लेखवुं; मानवुं
गरदूँ पुं० [फा.] आकाश (२) गाडी
ग़रब पुं०[अ.]पश्चिम (वि० –बी)(२) गर्व. –**गहेला** वि० गर्विष्ठ
गरब(–बा)ना अ०क्रि०गर्व करवो;फुलावुं
गरमाना अ०क्रि० गरम थवुं(२)उमंग के आवेश या क्रोधमां आववुं (३) स०क्रि० तपाववुं; उकाळवुं
गरमाहट स्त्री० गरमी
गरमी स्त्री०गरमी;ताप(२)आवेश;क्रोध (३)उमंग;जुस्सो (४)उनाळो (५) गरमीनो रोग. –**निकालना**=गर्व हणवो; तोरी उतारवी
गराँ वि० [फा.]भारे(वजन के किंमतमां)
गराँव पुं० ढोरना गळानुं बेवडुं दोरडुं
गराड़ी स्त्री०गरगडी(२)घसारानो कापो
गरानी स्त्री०[फा.]मोंघापणुं(२)भारेपणुं
गरारा वि० गर्ववाळुं (२) प्रबळ (३) पुं० कोगळो
गरियार वि० मंद; गळियुं (ढोर)
गरी स्त्री० नारियेळनो गोटो
ग़रीज़ पुं० [अ.] स्वभाव; प्रकृति
ग़रीज़ी वि० [अ.] स्वाभाविक; सहज; कुदरती [खेडतुं
ग़रीब-उल्-वतन वि० [अ.] विदेश
ग़रीब-ख़ाना पुं० [अ.+फा.] 'मारुं मकान' ए अर्थनो नम्रतानो शब्द
ग़रूर पुं०,–**री** स्त्री०[अ. ग़ुरूर]मगरूरी
गरेबाँ,–बान पुं०[फा.]कपडानो कॉलर

गरोह पुं० [फा.] जथो; झुंड
ग़र्क़ वि० [अ.] गरक
गर्द स्त्री० [फा.] गरद; धूळ. (किसीकी) गर्दको न पाना=सामे कांई न चालवुं. -गुबार=धूळ
गर्दखोर(-रा) वि० [फा.] धूळखाउ (२) पुं० पगलुछणियुं [आपत्ति
गर्दिश स्त्री० [फा.] चक्कर; फेरो (२)
ग़र्ब पुं० [अ] 'गरब'
गर्म वि० [अ.] 'गरम'
गलका पुं० आंगळी पर थतो एक फोल्लो
गलगंज पुं० घोंघाट; शोर (अ० क्रि० -ना)
गलगुथना वि० हृष्टपुष्ट; गोळमटोळ
ग़लत वि० [अ.] खोटुं; भूलभरेलुं (२) असत्य
ग़ल-तकिया पुं० गालमशूरियुं
ग़लत-नामा पुं० [अ.+फा.] शुद्धिपत्रक
ग़लत-फ़हमी स्त्री० [अ.] भ्रम; गेरसमज
गलता पुं० [अ.] एक प्रकारनुं रेशमी कपडुं (गजियाणी ?)
गलथना पुं० गलस्तन (बकरीनो)
गलना अ० क्रि० ओगळवुं (२) ठंडीथी ठरवुं (३) निष्फळ थवुं
गलफाँसी स्त्री० फांसो (२) झंझट; जंजाळ
गलबाँही स्त्री० गळे वळगवुं ते
ग़लबा पुं० [अ.] प्रभावनी अधिकता (२) आक्रमण; हल्लो
गला पुं० गळुं. -काटना=बहु हानि पहोंचाडवी (२) गळामां खंजूरी लागवी. -घुटना=श्वास रोकावो. -घोंटना=गळुं दबाववुं (२) जबरदस्ती करवी
गलाना स० क्रि० ओगाळवुं; नरम करवुं (२) खरचवुं
गलियारा पुं०; -री स्त्री० नानी गली
ग़लीज़ वि० [अ.] गलीच (२) अपवित्र (३) घट्ट; घाडुं (४) पुं० गंदकी (५) मळ
गलेबाज़ वि० सारुं गानार
गल्प स्त्री० गप; डिंग (२) लघुकथा
ग़ल्लई वि० गल्लाने लगतुं (२) पुं० पेदाश के अनाजमां लेवातुं महेसूल के सांथ
गल्ला पुं० 'गुल'; शोर
ग़ल्ला पुं० [अ.] फसलनी ऊपज (२) अनाज (३) गल्लो; वकरो (४) [फा.] ढोरनुं टोळुं; घोरी
ग़ुलेबान पुं० [फा.] गडेरियो
गवँ स्त्री० लाग; दाव; मोको
गवँसे अ० लाग जोईने (२) धीरेथी
गवन पुं० गमन (२) 'गौना'; पहेलुं आणुं वळाववुं ते [आणुं
गवनचार, गवना पुं० 'गौना'; पहेलुं
गवारा वि० [फा.] गवारा; फावतुं; मनपसंद (२) स्वीकार्य; मंजूर
गवास पुं० कसाई

गवेल, गवैंहा वि० गामडानुं; देहाती
ग़श पुं० [फा.] मूर्च्छा;बेहोशी; तम्मर.
—खाना=तम्मर खावी;बेहोश थवुं
गश्त पुं० [फा.] गस्त;पहेरो(२)भ्रमण
गश्ती वि० [फा.] गश्त मारनार;
घूमनार (२) स्त्री० कुलटा
गसना अ०क्रि० ग्रसवुं;पकडवुं;जकडवुं
गसीला वि० (स्त्री०—ली) खूब गीच;
जकडेलुं; घट्ट (जेम के, वणाट)
गस्सा पुं० ग्रास; कोळियो
गह स्त्री० पकड (२) मूठ; हाथो
गहगहा वि० प्रफुल्लित (२)धामधूमवाळुं
गहगहाना अ०क्रि० खूब प्रसन्न थवुं
(२) (झाड के पाक) लसलसवुं
गहगहे अ० धामधूम के खुशीथी
गहड़ोरना स०क्रि० (पाणी) डहोळवुं;
हलावी गंदुं करवुं
गहना पुं० घरेणुं (२) स०क्रि० ग्रहवुं
गहबर वि०(प.)गह्वर;दुर्गम(२) व्याकुल
गहर स्त्री०(प.) विलंब; वार (२) वि०
घेरुं; दुर्गम
गहरा वि०घेरुं (२) ऊंडुं(३) गंभीर (४)
घाटुं. गहरे लोग=भारे उस्ताद.
—हाथ=बरोबर सपाटो
गहराना अ०क्रि०घेरुं थवुं(२)स०क्रि०
घेरुं करवुं (३) अ०क्रि० 'गहरना';
वार करवी

गहिरा वि० जुओ 'गहरा'
गाँछना स०क्रि० गूंथवुं
गाँज पुं० गंज; ढेर
गाँजना स०क्रि० गंज करवो
गाँठ स्त्री०गांठ (२) गठडी (३) शरीरनो
सांधो (४) (शेरडी, सडियानी)गांठ
गाँठगोभी स्त्री० नोळकोळ
गाँठना स०क्रि० गांठ मारवी (२) साथे
जोडवुं(३)फाटयुंतूटयुं ठीक करवुं;
समारवुं. मतलब गाँठना=मत-
लब साधवी; काम काढवुं
गांधी स्त्री० [सं.] चोमासामां थतुं
माकणियुं जंतु (२) हींग
गाँवँ,गाँव पुं० गाम
गाँस स्त्री० बंधन(२)वेरभाव(३)रहस्य;
भेद (४) अधिकार (५] गांठ
गाँसना स०क्रि०वींधवुं;भोंकवुं(२)गूंथवुं
(३) पकडमां राखवुं (४) ठांसवुं
गाँसी स्त्री० तीर बरछी इ०नुं फळुं(२)
कपट; मननो मेल
गाऊघप्प वि० पारकुं हडप करनार
गाच स्त्री० [इं. गोझ] गाझ
गाछ पुं० झाड (२) छोड
गाज स्त्री० गर्जना (२) वीजळी (३)
पुं० फीण [पावडर
ग़ाज़ा पुं० [फा.]मों पर घसवानो एक
ग़ाज़ी पुं०[अ.]गाझी;धर्म माटे लडनार

वीर (मुसलमान) (२) वीरपुरुष
गाड़ स्त्री० खाडो
गाड़ना स०क्रि० गाडवुं; दाटवुं (२) अंदर ठोकवुं (३) संताडवुं
गाढ़ा वि० घाटुं; घट्ट(२)गूढ; घेरुं(३) घोर; विकट (४) पुं० गजियुं (५) मस्त हाथी. **गाढ़ेकी कमाई**= महेनतनी कमाणी. **गाढ़ेका साथी या संगी**=संकटनो मित्र-सहायक. **गाढ़े दिन** =मुश्केलीना दहाडा
गाती स्त्री० गातडी वाळी पहेरातुं वस्त्र
गाद स्त्री० प्रवाहीमां नीचे ठरतो कचरो
गादड़, –र वि० कायर; डरपोक (२) सुस्त; मंद (३)पुं०गळियो बळद
ग़ाफ़िल वि० [अ.] गाफेल
गाभ,गाभा पुं०कूंपळ(२)गोदडा रजाई अंदरनो गाभो(३)कशानो अंदरनो भाग–गाभो
गाभिन,–नी वि० स्त्री० गाभणी
गायत वि० अत्यंत(२)असाधारण(३) स्त्री० छेल्ली हद
ग़ार पुं० [अ.] खाडो (२) गुफा(३) [फा.] 'करनार' अर्थनो प्रत्यय
ग़ारत वि० [अ.] नष्ट; पायमाल
गारद स्त्री०[इं. गार्ड] चोकीदार टुकडी (२) पहेरो [घसवुं
गारना स०क्रि०निचोववुं(२)पाणी साथे
गाल पुं०[सं. गल्ल]गाल (२) बक बक करवानी आदत(३)मध्य भाग; वच (४)ग्रास;फाको. **–फुलाना**=रिसावुं. **–बजाना या मारना**=डिंग मारवी. **–करना**=बक बक करवुं
गालमसूरी स्त्री० एक मीठाई
गाला पुं० पूणी [संभवित
ग़ालिब वि०[अ.]बळवान(२)विजयी(३)
ग़ालिबन् अ० [अ.] संभवतः
गाली स्त्री०गालि; गाळ [गाळी
गाली-गलौज, स्त्री०, **-गुफ्ता** पुं०गाळा-
गालू वि० गप्पी; तडाकी
गाव पुं० [फा.] गावडी; गाय
गाव-कुशी स्त्री० [फा.] गोवध
गाव-ज़बान स्त्री० [फा.] एक बुट्टी
गाव–तकिया पुं० [फा.]मोटो तकियो
गावदी वि० मूर्ख;अणसमजु [जतुं
गाव–दुम वि०[फा.]उपरथी पातळुं थतुं
गाह पुं० ग्राह;पकड(२)मगर(३)ग्राहक
गाह स्त्री० [फा.] जगा;स्थान (उदा० इबादत-गाह) (२) वखत
गाहक पुं० ग्राहक; घराक
गाह गाह, गाह-ब-गाह, गाहे-गाहे अ० कदी कदी;क्यारे क्यारे
गाहा स्त्री० गाथा; कथा
गाही स्त्री०फळ गणवानुं पांचनुं एक मान
गिचपिच, गिचिरपिचिर वि० अस्पष्ट;

गमे तेमना क्रममां; गुचपुच
गिजगिजा वि० पाणीपोचुं; लचपच
ग़िज़ा स्त्री० [अ.] भोजन; खोराक
गिटपिट स्त्री० गोटपीट
गिट्टक स्त्री०, गिट्टा पुं० चलमनो तवो
गिट्टी स्त्री० मरड के ठीकरुं (२)'गिट्टा'
गिड़गिड़ाना अ०क्रि० नम्रताथी विनंती
करवी (नाम, –हट स्त्री०)
गिद्ध पुं० गीध
गिनती स्त्री० गणतरी (२)संख्या (३)
हाजरी(४)१थी १०० सुधी आंक
गिनना स०क्रि० गणवुं [प्रेरक
गिनवाना,गिनाना स०क्रि०'गिनना'नुं
गिनी,गिन्नी स्त्री० गिनी सिक्को
गिरगिट पुं० काचंडो; 'गिरदान'
गिरजा(०घर) पुं० ख्रिस्ती देवळ
गिरदान पुं० जुओ 'गिरगिट'
गिरदाब पुं० [फा.] पाणीनो भमरो
गिरदावर पुं० जुओ 'गिर्दावर'
गिरना अ०क्रि०गरवुं;पडवुं [करवुं ते
गिरफ़्त स्त्री०[फा.] पकडवुं–गिरफतार
गिरफ़्ता,–फ़्तार वि०[फा.] गिरफतार
गिरमिट पुं० गिरमीट
गिरवाना स०क्रि० 'गिराना' जुओ
गिरवी वि० [फा.] गीरवेलुं; गीरवी
गिरवीदार पुं० [फा.] गीरो राखनार
गिरविदा वि० [फा.] मोहित; आसक्त
गिरह स्त्री०[फा.] गांठ (२) खीसुं (३)
वारनो १६मो भाग(४) गुलांट
गिरहकट वि० खीसाकातरु
गिरहबाज़ पुं०[फा.] गिरेबाज; गुलांट
खातुं ऊडनारुं एक पक्षी
गिराँ वि० जुओ 'गराँ' (२) अप्रिय
गिराना स०क्रि०'गिरना'नुं प्रेरक;पाडवुं
गिरानी स्त्री० जुओ 'गरानी'
गिरामी वि० [फा.] पूज्य; वयोवृद्ध
गिरावट स्त्री० पडवानी क्रिया के रीत
गिरिफ़्त स्त्री०,–फ़्ता(०र) वि० जुओ
'गिरफ़्त,–फ़्ता(०र)'
गिरी स्त्री० 'गूदा'; गर; अंदरनो मावो
गिरो वि० [फा.] गीरो; गीरवी
गिर्जा,गिर्जाघर पुं० जुओ 'गिरजा'
गिर्द अ० [फा.] आसपास; चोतरफ
गिर्दावर पुं० [फा.] (सर्कल-इन्स्पेक्टर
जेम) फरीने काम करनारो
गिल स्त्री० [फा.] माटी (२) गारो
गिलकार पुं०[फा.](नाम,–री स्त्री०)
प्लास्टर करनार
गिलट पुं० गिलेट;ढोळ
गिलटी स्त्री०गांठ(गोड घालवाथी थती
के सांधा परनी)
गिलना स०क्रि०[सं. गिरण]'निगलना';
गळवुं (२) मनमां दाबी राखवुं
गिलम स्त्री०नरम ऊननो गलीचो के

पाथरणुं (२) वि० नरम
गिलहरी स्त्री० खिसकोली
गिला पुं०[फा.] फरियाद (२) ठपको
ग़िलाज़त स्त्री० [अ.] गंदकी (२)विष्टा
ग़िलाफ़ पुं०[अ.]गलेफ;खोळ(२)मोटी
रजाई (३) म्यान [गारो
गिलाव,-वा पुं०कीचड(२)चणवा माटे
गिलास पुं० ग्लास; प्यालो
गिली वि० [फा.] माटीनुं
गिलोय स्त्री०[फा.] एक वेल; 'गुरुच'
गिलौरी स्त्री० पाननो बीडो
गिलौरीदान पुं० पानदानी
गींजना स०क्रि०(कपडां इ०) रोळवुं;
चोळी नांखी बगाडवुं
गीती स्त्री० [फा.] दुनिया
गीदड़ पुं० शियाळ (२)वि० डरपोक
गीदी वि० [फा.] कायर;डरपोक(२)
वेवकूफ [चूडा थवुं
गीधना अ०क्रि०चसको लागवो; लाल-
गीला वि० भीनुं
गुंग [फा.], -गा वि० गूंगुं
गुंगी स्त्री० आंधळी चाकळ
गुंचा पुं० [अ.] कळी (२) नाचरंग
गुंजाइश स्त्री० [फा.] समावानी जगा;
अवकाश(२)'सुभीता';सवड
गुंजान वि० [फा.] घन; घाडुं
गुँथना अ०क्रि० गूंथवुं

गुंबज़(-द) [फा.] पुं० गुंवज; घुमट
गुआ पुं० चीकणी सोपारी
गुइयाँ पुं०; स्त्री० साथी; भेरु; सखी
गुच्ची स्त्री० गबी [कालक्षेप
गुज़र पुं०[फा.]गति;पहोंच;प्रवेश (२)
गुज़रना अ०क्रि०गुजरवुं(समय वीतवो
के वीतवुं)(२)कोई स्थाने थईने जवुं
के आववुं (३) बनवुं; नभवुं
गुज़र-बसर पुं०[फा.]गुजरान; निभाव
गुज़श्ता वि० [फा.]गत; भूत (काळ)
गुज़ारना स०क्रि० विताडवुं; समय
काढवो(२)पहोंचाडवुं
गुज़ारा पुं० [फा.] गुजारो (२) होडी
उतारे ते स्थान(३)टोलनी जगा
गुज़ारिश स्त्री० [फा.] निवेदन;विनंती
गुझिया स्त्री० एक मीठाई-घूघरो
गुटकना स०क्रि०घटक दईने गळवुं(२)
अ०क्रि० कबूतरनुं बोलवुं
गुटका पुं० गुटिका; गोळी (२) गुटको
गुटरगूँ स्त्री० कबूतरनो अवाज
गुट्ट पुं० दल; जूथ; झुंड
गुट्ठल वि०गोटलीवाळुं (फळ) (२)जड;
मूर्ख (३) पुं०गट्ठो (४) गांठ; ढीमणुं
गुठली स्त्री० गोटली; ठळियो; गोटलो
गुडंबा पुं०काची केरी बाफीने चासणीमां
आथे ते
गुड़गुड़ी स्त्री० हुक्को

गुड़ाकू पुं० गडाकु [तनुं काम
गुड़िया स्त्री०ढींगली.–का खेल=रम-
गुड़ी स्त्री० पतंग; 'गुड्डी'
गुड्डा पुं० ढींगलो (२) मोटो पतंग
गुड्डी स्त्री० पतंग (२) एक नानो हूको
गुत्थमगुत्था पुं०परस्पर लपटाई-फसाई
जवुं ते (२) बथ्थंबथ्था
गुत्थी स्त्री० गांठ; गूंच
गुथना अ०क्रि०[सं. गुत्सन]गूंथावुं(२)
खराब सिवावुं(३)बाझवुं (लडवा)
गुदकील पुं० जुओ 'गुदांकुर'
गुदगुदा वि० मांसल (२) मुलायम
गुदगुदाना अ०क्रि० गलीपची करवी
(२) विनोद करवो (३) उत्कंठा
उत्पन्न करवी
गुदगुदी स्त्री० गलीपची (२) विनोद;
उमंग (३) उत्कंठा
गुदड़ी स्त्री० गोदडी. –में लाल=तुच्छ
जगामां कीमती चीज. –बाज़ार=
गुजरी; जूनी वस्तुओनुं बजार
गुदांकुर पुं०[सं.] हडस [कोमळ
गुदाज़ वि० [फा.] मांसल; दळदार (२)
गुदाना स०क्रि० गोदाववुं
गुदारा पुं० नदी पार ऊतरवुं ते के
तेनी जगा; 'गुज़ारा'
गुनगुना वि०गूंगणुं(२)'कुनकुना'जुओ
गुनगुनाना अ०क्रि० गूंगणुं बोलवुं

गुनना स०क्रि० गुणवुं (२) गणवुं (३)
गोखवुं (४) विचारवुं
गुनहगार वि० [फा.] गुनेगार
गुनाह पुं० [फा.] गुनो
गुफ़्तगू,गुफ़्तार स्त्री० [फा.] वातचीत
.ग़ुबार पुं०[अ.]धूळ(२)मनमां दबावेलो
क्रोध, द्वेष, दुःख वगेरे
गुबा(-ब्बा)रा पुं०गुबारो;बलून [गुप्त
गुम वि० [फा.] गुम (२) अप्रसिद्ध (३)
गुमटी स्त्री० गुंबज; घुमट
गुमनाम वि० [फा.] अजाण्युं; अप्रसिद्ध
(२) नाम वगरनुं
गुमर पुं० गुमान (२)'गुबार';मनमां
दबायेलो क्रोध इ०(३)घुसपुस वात
गुमराह वि० [फा.] राह भूलेलुं (२)
नीतिभ्रष्ट; कुमार्गे वळेलुं
गुमाश्ता पुं०[फा.]गुमास्तो; मुनीम
गुम्मट पुं० घूसट
गुम्मा पुं० मोटी ईंट (२) वि० चूप
गुर पुं० गुरुमन्त्र; युक्ति; चावी
गुरगा पुं०चेलो(२)नोकर(स्त्री० -गी)
गुरगाबी पुं०[फा.]एक जातना जोडा
गुरदा पुं० [फा.; सं. गोर्द] मुत्रपिंड;
'किडनी' (२) साहस; हिंमत
.ग़ुरबत स्त्री० [अ.] परदेश-निवास(२)
मुसाफरी (३) नम्रता [गोराणी
गुरुआनी स्त्री०गुरुनी स्त्री के स्त्री–गुरु;

गुरुद्वारा पुं० शीख मंदिर
गुरुमुख वी० गुरुमंत्र लीधेलुं; दीक्षित
गुरू घंटाल पुं० बडो चालाक-घंट माणस
.गुरूब पुं०[अ.] तारा के सूर्यनो अस्त
.गुरूर पुं० [अ.] जुओ 'गरूर'
गुरेज़ स्त्री०[फा.] कशाथी नासवुं, दूर रहेवुं के वचवुं ते (२) विषयान्तर
गुरेरना स०क्रि० आंख फाडीने जोवुं
.गुर्रा पुं०[अ.] श्रेष्ठ वस्तु (२)बीज;महोरमनो बीजनो चांद. **–बताना**= कांई आप्या वगर टाळवुं;उडावी देवुं
गुर्राना अ०क्रि० घूरकवुं
गुल पुं० [फा.] गुल (फूल; गुलाब; वत्तीनो मोगरो)(२)हसतां गाल पर पडतो खाडो (३) तमाकुनो गल (४)डाम(५) गुलशोर (६) लमणो. **–खिलना**=विचित्र बनाव बनवो (२)बखेडो थवो. (चिराग) गुल **करना**=बुझाववुं. **–खाना**=डाम खावो; डंभावु
गुलकारी स्त्री०[फा.] फूलनुं भरतकाम
गुलगपाड़ा पुं० शोर; गुल
गुलगश्त पुं० [फा.] बागमां फरवुं ते
गुलगीर पुं०[फा.]वत्ती कापवानी कातर
गुलगुल वि० जुओ 'गुलगुला'
गुलगुला पुं० एक मीठाई(२)वि०नरम; 'गुलगुल'; मुलायम
गुलगूना पुं०[फा.]मुख पर लगाववानो पावडर
गुलचीं पुं० [फा.] माळी [विलास
गुलछर्रा पुं० अनुचित स्वच्छंद के भोग-
गुल-दुम पुं०[फा.] बुलबुल
गुलनार पुं० [फा.] दाडमनुं फूल के तेना जेवो लाल रंग
गुलमेख स्त्री०[फा.]गोळ माथानी मेख
गुलशन पुं० [फा.] बाग [हजारी ?]
गुलहज़ारा पुं० [फा.] एक फूलझाड;
गुलिस्ताँ पुं० 'गुलशन'; बाग
गुलू पुं०[फा.] गळुं (२) स्वर
गुलूबंद पुं०[फा.] गलपटो; गलूबंद
गुलेल स्त्री०गलोलो फेंकवानी कामठी; गलोल [गलोल
गुलेला पुं०[फा. गुलूली] गलोलो (२)
गुल्ला पुं०[फा.] गलोलो(२)शोर;गुल
गुल्ली स्त्री० ठळियो(२) गिल्ली; मोई
गुस्ताख़ वि०[फा.] (नाम,–ख़ी स्त्री०) बेअदब; अविवेकी; अशिष्ट
.गुस्ल पुं०[अ.] गुसल; स्नान
.गुस्सावर [फा.], **गुस्सैल** वि० क्रोधी
गुहना स०क्रि०गूंथवुं(२)बखियो मारवो
गुहराना अ०क्रि० जुओ 'गोहराना'
गुहार,–रि स्त्री०रक्षा माटे बूम;'गोहार'
गूँधना स०क्रि० गूंदवुं; मसळवुं
गू(०ह) पुं० गू; विष्टा

गूथना स० क्रि० गूंथवुं (२) सांधवुं
गूदड़,(-र) पुं० चींथरुं; धागो
गूदा पुं० गर; फळ के कोई चीजनो अंदरनो मावो
गून,-ना पुं०[फा.]वर्ण;रंग (२) प्रकार
गृहस्थी स्त्री० गृहस्थनुं कर्तव्य (२) गृहव्यवस्था(३) कुटुंब के घरनो सरसामान(४)खेतीवाडीनो रोजगार
गेंड़ली स्त्री० गूंचळुं; कुंडाळुं (जेम के, सापनुं)–बाँधना, –मारना= गूंचळुं वळवुं
गेंड़ा पुं० शेरडीनां उपलां पान(२)शेरडी
गेंड़आ,-वा पुं० तकियो(२)मोटी गेंद; दडो [उढाणी
गेंडुरी,-ली स्त्री० जुओ 'गेंड़ली'(२)
गेंद-बल्ला पुं० गेडीदडो
गेंदा पुं० एक फूलझाड (हजारी ?)
गेती स्त्री० [फा.] संसार
गेरू स्त्री० गेरु (वि० गेरुआ)
गेसू पुं० [फा.] वाळनी लट; जुलफुं
गेहुँअन पुं० घउंवर्णो एक झेरी साप
गेहूँ पुं० घउं. (वि० गेहुँआ)
गैंडा पुं० गेंडो
गैंती स्त्री० तीकम के कोदाळी
ग़ैब पुं०[अ.]गेब; अदृष्ट (वि० –बी)
ग़ैबत स्त्री० [अ.] चूगली; गीबत निंदा
गैया स्त्री० गाय
ग़ैर वि० [अ.] अन्य; बीजुं (२) परायुं; अजाण्युं; परजन (३) 'गेर' पूर्वग
ग़ैरत स्त्री० [अ.] लाज; शरम
ग़ैरमनक़ूला वि० [अ.] अचल; स्थिर
ग़ैरमनकूहा वि०स्त्री०[अ.]अविवाहिता (२) रखात
ग़ैरमामूल,-ली वि० [अ.] असाधारण
ग़ैरमुनासिब वि० [अ.] गेरमुनासिब; अयोग्य; गेरवाजबी
ग़ैरमुमकिन वि० [अ.] असंभव
ग़ैरवाजिब वि० [अ.] गेरवाजबी
ग़ैरहाज़िर वि०[अ.]गेरहाजर(नाम,-री)
गैरिक पुं० [सं.] गेरु (२) सोनुं
गैल स्त्री० गली; रस्तो
गैलन स्त्री० [इं.] गॅलन
गैलरी स्त्री० [इं.] गॅलरी
गैस स्त्री० [इं.] गॅस
गोंठ स्त्री० धोतियानी गांठ–ओटी
गोँद पुं० गुंदर. –दानी स्त्री० गुंदरियुं
गो अ०[फा.]जोके (२) प्रत्यय–'कहेनार' अर्थमां. उदा० बदगो=बूराई करनार
गोइन्दा पुं०[फा.] बोलनार(२)गुप्तचर
गोइँठा पुं० सूकुं छाण; अडायुं
गोइयाँ,गोई पुं०; स्त्री० जुओ 'गुईयाँ'
गोई स्त्री० [फा.] कथन; कहेवुं ते (समासमां. उदा० बदगोई)

गोखा पुं० गोख; झरूखो
गोज़ पुं० [फा.] वा सरवो ते
गोजई स्त्री० जव अने घउं(भेगा वावे ते)
गोजर पुं० कानखजूरो
गोजरा पुं० जुओ 'गोजई'
गोजी स्त्री० लाकडी (२) डांग
गोट स्त्री० गोट; किनारीनी पटी; मुगजी (२) मंडळी (३) शेतरंजनुं महोरुं
गोटा पुं० सोनेरी रूपेरी फीत-किनार
गोटी स्त्री० कूटी (२) शेतरंजनुं महोरुं
गोठ स्त्री० गोशाळा; गोठो (२) गोठ (मजा; सहेल के गोष्ठी)
गोड़ पुं० पग(स्त्री०-ड़िया=नाना पग)
गोड़इत पुं० गामनो चोकीदार
गोड़ना स०क्रि० गोडवुं; खोदवुं जेथी माटी तळे उपर थई पोचुं थाय
गोड़ा पुं० खाटला वगेरेनो पायो (२) घोडी (३) खामणुं; आलवाल
गोड़ाई स्त्री० गोडवुं ते के तेनी मजूरी
गोत पुं० गोत्र; खानदान(२) (प.)समूह
गोता पुं० [अ.] डूबकी. **-खाना**=गोथुं खाई जवुं; फरेबमां सपडावुं. **-मारना**=डूबकी खावी (२)वच्चे डूबकी मारी जवुं-जता रहेवुं
गोद स्त्री० गोद; खोळो. **-बैठना**= दत्तक जवुं.**-भरना**=खोळोभरवो. **-पसारकर**=खोळो पाथरीने;साव वश थईने [गोदाववुं
गोदना स०क्रि० गोडवुं; खोसवुं (२)
गोदी स्त्री० गोद; खोळो
गोन,-नी स्त्री० [सं. गोणी] गूण; छालकुं(२) टाट ['गोवना'
गोना स०क्रि० (प.) गोपवुं; छुपाववुं;
गोनिया स्त्री० कडियानो ओळंबो (२) पुं० गूणो ऊंचकनार
गोनी स्त्री० जुओ 'गोन'
गोफन,-ना पुं० गोफण
गोबर पुं० गोमय; छाण (गायनुं)
गोबरगणे(-ने)श वि० कदरूपुं; बेडोळ (२) मूर्ख; बेवकूफ
गोबरी स्त्री० लींपण (२) छाणुं
गोबरैला पुं० छाणनो कीडो
गोभी स्त्री० एक शाक;'फलावर' (२) एक घास (३) छोडनो एक रोग; 'गोभ' पण कहे छे
गोयंदा पुं० जुओ 'गोइन्दा'
गोया अ० [फा.] के जाणे; जाणे के
गोर स्त्री० [फा.]घोर;कबर.**-ब कफन**= अन्त्येष्टि क्रिया. (२)वि० गौर;गोरुं
गोर-कन पुं० [फा.] घोर खोदनार
गोरखधंधा पुं० झघडो; पंचात
गोर(-रि)स्तान पुं० [फा.] कबरस्तान
गोरू पुं० ढोर; घोरी
गोलंबर पुं० घूमट (२) गोळाई

गोल पुं०[फा.] मंडळी; झुंड
गोलक पुं०[सं.]माटीनुं मोटुं कूंडुं (२) वकरो;'गल्ला'(३) फंड(४) गोलक (गोलो इ०)
गोल गप्पा पुं० एक नानी पूरी
गोल-मिर्च स्त्री० मरी
गोला पुं०गोळो (२) नारियेळनो गोटो (३) मोटुं दाणा-बजार (४) वळो
गोवना स०क्रि० (प.) जुओ 'गोना'
गोश पुं० [फा.] कान
गोश-गुज़ार वि० [फा.] (नाम. -री स्त्री०)सांभळेलुं. -करना=निवेदन करवुं;कहेवुं [ते(२)चेतवणी
गोश-माली स्त्री०[फा.] कान आमळवा
गोश-वारा पुं०[फा.] काननी वाळी के कुंडळ (२) पाघडीनो तलो (३) तोरो;कलगी (४) खातावार तारण
गोशा पुं०[फा.] खूणो (२)एकांत(३) तरफ; बाजू
गोस्तना,-नी स्त्री० [सं.] द्राक्ष
गोस्पंद,गोस्फंद स्त्री०[फा.]घेटुं;बकरुं
गोह स्त्री० घो
गोहरा पुं० छाणुं [देवो;पोकारवुं
गोहराना अ०क्रि० 'गुहराना'; अवाज
गोहार,-री स्त्री० 'गुहार'जुओ(२)शोर
गौँ स्त्री०लाग; दाव (२)मतलब; गरज. -का यार=मतलबी
गौँघात पुं०बरोबर लाग [गोखलो
गौख स्त्री०[सं. गवाक्ष] गोख; झरूखो;
गौखा पुं० 'गौख' (२) गायनुं चामडुं
ग़ौग़ा पुं० [अ.] (वि०-गाई) घोंघाट; कोलाहल; शोर (२) अफवा
गौन पुं० गमन [एवी
गौनहाई वि०स्त्री०जेनुं आणुं कर्युं होय
गौनहार स्त्री०'गौनहाई' स्त्री [वाळी
गौनहार(-रिन,-री) स्त्री०गावाना धंधा-
गौना पुं० कन्याने वळाववी ते; आणुं
ग़ौर पुं०[अ.]गोर;विचार;ख्याल;ध्यान
ग़ौर-तलब वि० [अ.] विचारवा जेवुं
गौहर पुं० [फा.] मोती
ग्यारह वि० अगियार; ११
ग्रांडील वि० [इं. ग्रेन्जर]ऊंचुं ने मोटुं
ग्वार स्त्री० गवार
ग्वारपाठा पुं० कुंवारपाठुं
ग्वारफली,ग्वारी स्त्री० गवारफळी
ग्वाल,-ला पुं० (स्त्री० -लिन) गोवाळ
ग्वैंड़ा पुं० गाम पासेनी जगा
ग्वैंडे अ० पासे

घ

घँघरा पुं० 'घघरा'; घाघरो
घँघरी स्त्री० घाघरी
घँघोर(–ल)ना स०क्रि०प्रवाही हलावीने तेमां घोळवुं (२) डखोळवुं
घंटा पुं० [सं.] घंट (२) कलाक
घंटाघर पुं० टावर
घंटी स्त्री० नानो घंट (२) घूघरी(३) गळानो घोघरो (४) गळा वच्चे लटकती पडजीभ
घघरा पुं० 'घाघरा' [बोलवो ते
घटका पुं० छेवटनो श्वास; घोघरो
घटना अ०क्रि० घटवुं; कम थवुं (२) घटवुं; बंध बेसवुं; लागु पडवुं
घटबढ़ स्त्री० वधघट
घटवार पुं० नदीघाटनुं महेसूल लेनार (२) होडीवाळो (३) घाट पर दान लेनार ब्राह्मण
घटाना स०क्रि० घटाडवुं; कम करवुं
घटाव पुं० घटाडो (२) नदीमां ओट
घटिया वि० हलकुं; सस्तुं; 'बढिया'नुं ऊलटुं [(३) [सं.] घडी
घटी स्त्री० कमी (२) 'घाटा'; नुकसान
घट्टा पुं० (शरीर पर पडतुं) आंटण
घड़िया स्त्री० धातु गाळवानी अंगीठी
घड़ियाल पुं० घंट;घडियाळुं(२) मगर
घड़ियाली पुं० घंट वगाडनार
घड़ी स्त्री० घडी (२) घडियाळ
घड़ीसाज़ पुं० घडियाळी (नाम, –ज़ी स्त्री०) [घोडी
घड़ौंची स्त्री० पाणीनुं वासण राखवानी
घतिया पुं० घातक (२) दगो देनार
घन पुं० [सं.] घण (२) घन
घनसार पुं० [सं.] कपूर
घना वि०(स्त्री० –नी) घन; घाडुं; गीच (२) नजीकनुं (३) खूब; घणुं
घने,घनेरा वि० घणुं; बहु; अनेक
घन्नई स्त्री० माटीनां हांल्लां ने मोटां लाकडांनो बनावेलो तरापो
घपची स्त्री०बाथ; बे हाथथी पकडवुं ते
घपला पुं० गरबड; गोलमाल
घबराना अ०क्रि० गभरावुं (२) रघवाट थवो(३)मूंझावुं(४)स०क्रि०गभराववुं
घबराहट स्त्री० गभराट [युद्ध
घम(-मा)सान पुं० घमसाण; भयंकर
घर-घाट पुं० रंगढंग; अवस्था
घरनी स्त्री०[प्रा.घरणी] गृहिणी; घरणी

घरफोरी स्त्री० कुटुंबक्लेश करावनारी
घरबसा पुं०यार;उपपति (स्त्री० **–सी**)
घराऊ वि०घर संबंधी (२)निजी; घरनुं
घराती पुं० कन्यापक्षना लोक
घराना पुं० खानदान; कुळ
घरू वि० जुओ 'घराऊ'
घरेलू वि० पाळेलुं (२) 'घरू'; घरनुं; खानगी (३) घेर बनेलुं
घरौंदा,–धा पुं० घर घर रमवा माटे बाळक बनावे छे ते घर
घर्रा पुं० कफ घररर बोले ते
घलना अ०क्रि०छूटी जवुं; फेंकावुं(२) मारामारी थवी
घलाघल,–ली स्त्री० मारामारी
घलुआ पुं०खरीदनारने उपरथी छूटनुं वधारे आपवुं ते
घसिटना अ०क्रि० घसडावुं
घसियारा पुं० घास वेचनारो
घसीट स्त्री० घसरडवुं ते
घसीटना स०क्रि० घसरडवुं; ढसरडवुं
घस्सा पुं० 'घिस्सा'; घिस्सो
घहरना,घहराना अ०क्रि०गर्जना जेवो अवाज काढवो
घाँघरा पुं० 'घाघरा'
घाँटी स्त्री० गळुं के अंदरनी पडजीभ
घाऊघप वि० 'गाऊघप्प' जुओ
घाग,घाघ पुं० भारे चतुर माणस
घाघरा पुं० घाघरो
घाटा पुं० घट; खोट; हानि
घाटिया पुं० 'घटवार'–ब्राह्मण
घाटी स्त्री०खीण;पर्वतो वच्चेनो पहाडी सांकडो रस्तो
घान पुं०, **घानी** स्त्री०[सं. घन]घाण; रांधवा दळवा खांडवा इ०मां एक-साथे लेवातो समूह (२) प्रहार
घामड़ वि०घामथी पीडातुं(पशु)(२)मूर्ख
घाल,–ला पुं० जुओ 'घलुआ'. **–न गिनना**=तुच्छ समजवुं
घालना स०क्रि०मारी नांखवुं(२)घालवुं; खोसवुं (३) बगाडवुं
घालमेल पुं० घालमेल; गरबडसरबड (२) मेळ; मिलन; संयोग
घिग्घी स्त्री०डूसकुं के भयथी खमचाता बोलवुं ते [प्रार्थना करवी
घिघियाना अ०क्रि० करुण अवाजे
घिचपिच स्त्री०संकडाश; जगानी तंगी (२) वि० जुओ 'गिचपिच'
घिन स्त्री० घृणा; अरुचि; ऊबको; सूग
घिनाना अ०क्रि० 'घिन' ऊपजवी
घिनावना, घिनौना वि०'घिन'–घृणा-जनक; खराब
घिया स्त्री० दूधी; 'कद्दू'
घियाकश पुं० 'कद्दूकश'; छीणी
घिया-तरोई, –तोरई, –तोरी स्त्री०

एक शाक; गलकुं(?)
घिरना अ०क्रि० घेराई जवुं; घेरावुं
घिरनी स्त्री० गरेडी(२) दोरडाने वळ देवानी फीरकी
घिराव पुं० घेरावुं ते (२) घेरो
घिसना स०क्रि०घसवुं(२)अ०क्रि०घसावुं
घिसघिस स्त्री०घालमेलथी थतो विलंब; ढील; दीर्घसूत्रीपणुं
घुँईयाँ स्त्री० अळवी कंद
घुँघची स्त्री० चनोठी; रती
घुँवरारे, –ले वि० वांकडिया (वाळ)
घुँघरू पुं० घूघरी (२) घूवरीवाळुं पगनुं घरेणुं (३) जुओ 'घटका'
घुंडी स्त्री० कपडानुं वोरियुं
घुग्घी स्त्री० कामळाने त्रिकोण वाळीने बनावातुं माथानुं ओढण
घुग्घू,घुघुआ पुं० घुवड
घुटना पुं० घूंटण (२) अ०क्रि० श्वास घूंटावो (३)घूंटावुं (४)घसावुं जेथी सुंवाळुं थाय के चळके. घुटा हुआ =बहु चालाक
घुटन्ना पुं० जांघियो
घुटाई स्त्री० घूंटवुं के घसवुं ते
घुट्टी स्त्री० बाळकने पाचन माटे पिवाडाती दवा. –में पड़ना= गळथूथीमां पडवुं; स्वभावमां होवुं
घुड़कना स०क्रि०घूरकवुं(नाम,घुड़की)
घुड़चढ़ा पुं० घोडेसवार
घुड़दौड़ स्त्री० घोडदोड
घुड़सवार पुं० घोडेसवार
घुड़साल स्त्री० घोडार
घुन पुं० अनाज वगेरेमां पडतो एक जीव.–लगना =ए जीव पडवो (२) सडवुं; खवावुं
घुनघुना पुं० घूघरो (रमवानो)
घुनना अ०क्रि० 'घुन'थी खवावुं
घुन्ना वि० (स्त्री०–न्नी) क्रोध, द्वेष इ० मनमां दाबी राखनार
घुमक्कड़ वि० सहेलाणी; खूब घूमनार
घुमटा पुं०माथुं घूमे – चक्कर आवे ते
घुमड़ स्त्री० वादळां घेरावां ते
घुमड़ना अ०क्रि० वादळ घेरावां (२) एकठुं थवुं; छवावुं
घुमना वि०(स्त्री०–नी)'घुमक्कड़' जुओ
घुमाना स०क्रि० घुमाववुं; फेरववुं (२) कशामां लगाडवुं
घुमाव पुं०घूमवुं के घुमाववुं ते(२)फेर; चक्कर (३) रस्तानो वळांक
घुमुर अ०घम्मर घम्मर(चक्कीनो अवाज)
घुलना अ०क्रि०ओगळवुं(२)मळी जवुं (३) क्षीण थवुं (४) समय वीतवो (प्रेरक घुलवाना, घुलाना)
घुसना अ०क्रि० घूसवुं
घुसपैठ स्त्री० प्रवेश; गति

घुसाना,घुसेड़ना स०क्रि० घुसाडवुं
घूँट पुं० घूंटडो
घूँटना स०क्रि० घूंटडो उतारवो; पीवुं
घूँसा पुं० ठूंसो; मुक्को [भमवुं
घूमना अ०क्रि०फरवुं;टहेलवुं(२)घूमवुं;
घूरना अ०क्रि०गुस्साथी एकीटसे जोया करवुं (२) कुदृष्टि करवी
घूर(-रा) पुं०कचरोपूंजो के ते नाखवानी जगा-उकरडो
घूस स्त्री० लांच (२) छछूंदर (?)
घृतकुमारी स्त्री० [सं.] कुंवारपाठुं
घेंटा पुं० डुक्करनुं बच्चुं
घेघा पुं० गळानी नळी (२) गळाना सोजानो एक रोग
घेरना स०क्रि०घेरवुं(२)खुशामत करवी
घोंघा पुं०घोंघा;पाणीनो एक जीव (२) वि० निःसत्त्व (३) मूर्ख
घोंटना स०क्रि० घूंटडे घूंटडे पीवुं(२) जुओ 'घोटना'
घोंसला,घोंसुआ पुं० पक्षीनो माळो
घोटना स०क्रि० सुंवाळुं के चळकतुं करवा खूब घसवुं (२) घूंटवुं (३) गोखवुं(४)वढवुं (५)गळुं रूंधवुं
घोटाला पुं० गोटाळो
घोड़ा पुं०घोडो(२)खूंटी(कपडां माटे). -उठाना, -डालना, -फेंकना= घोडो तेज करवो [नस
घोडा-नस स्त्री० एडी आगळनी धोरी
घोल पुं० घोळी ओगाळीने करेलुं ते
घोलना स०क्रि० घोळवुं
घोसी पुं० घांची; दूध वेचनार
घौद पुं० फळोनी लूम; (केळांनुं) घोड

च

चंग स्त्री० चंग वाजुं (२) पतंग (३) पुं० गंजीफानी चंग रमत. -चढ़ना या उमड़ना= खूब जोर थवुं. -पर चढ़ाना= वातचीत करीने मेळवी लेवुं
चंगा वि० (स्त्री० -गी) चंग; चंगु
चंगुल पुं० चंगूल; पशु-पक्षीनो पंजो (२)चुंगल. -में फँसना=चुंगलमां फसावुं
चँगेर(-री,-ली) स्त्री०वांसनी छाबडी के टोपली (२) मशक; पखाल (३) बाळकनुं खोयुं
चंट वि० चालाक; पहोंचेल
चंडावल पुं० सेनानो पाछलो भाग;

'हरावल'थी ऊलटो (२) पहेरेगीर
चंडू पुं० चंडूल; एक मादक
चंडूल पुं० चंडोळ पक्षी
चंडोल पुं० एक जातनी पालखी;मेना
चँदला वि० 'गंजा';माथे तालवाळुं
चँदवा पुं० चंदरवो
चंदाँ अ०[फा.]आटलुं(२)आटली वार
चंदा पुं०चंदा;चंद्र(२)फंड(३)लवाजम
चँदिया स्त्री० खोपरी; तालकुं
चंपई वि० चंपाना रंगनुं; पीळुं
चँवर पुं० चामर (२) घोडा हाथीना माथानी कलगी. **–डलना**=चामर ढोळावो. **–ढार** पुं०चामर ढोळनार
चक पुं० चक्र;पैडुं (२) 'चकई' रमकडुं (३) चकवो पक्षी (४) जमीननो मोटो टुकडो(५)गामडुं (६) अधिकार(७)वि० भरपूर (८) चकित
चकई स्त्री० चकवी;'चका'नुं स्त्री०(२) गोळ फेरववानुं एक रमकडुं
चकचून वि० चूरेचूरा थयेलुं; चकचूर
चकचौंध स्त्री० जुओ 'चकाचौंध' (अ०क्रि० **–ना**)
चकती स्त्री० चकती (२) ठींगळी. **बादलमें चकती लगाना**= असंभव वात करवा मथवुं
चकत्ता पुं० चकामुं [थाकेलुं
चकनाचूर वि०जुओ 'चकचून'(२)बहु
चकफेरी स्त्री० चकरडी; परिक्रमा
चकबंदी स्त्री० जमीनना भाग–पटा नक्की करवा ते
चकमा पुं० थाप; फरेब (२) हानि
चकरबा पुं०चक्कर;गूंचवाडो (२)बखेडो
चकरा वि० (स्त्री. **–री**) चोडुं; पहोळुं
चकराना अ०क्रि० (माथुं)घूमवुं;चक्कर आववां(२)चकित थवुं(३)स०क्रि० चकित करवुं
चकला पुं० रोटली वणवानी आडणी (२)वेश्यावाडो(३)विभाग; इलाको (४)घंटी (५) वि० जुओ'चकरा'
चकली स्त्री० गरेडी(२) ओरसडी (३) वि०स्त्री० 'चकला'
चका पुं० चक्कर;पैडुं(२)चक्रवाक पक्षी; चकवो [अंजावी दे
चकाचौंध स्त्री० तेज आगळ आंख
चक्का पुं० पैडुं [(३) वीजळी
चक्की स्त्री० घंटी (२) घूंटणनी ढांकणी
चख पुं० चक्षु(२)[फा.]झघडो;तकरार
चख़ चख़ पुं० तकरार; बोलाबोली
चखना स०क्रि० चाखवुं
चख़ाचख़ी स्त्री० 'चख़';तकरार;लडाई
चगड़ वि० चालाक; होशियार
चचा पुं० (स्त्री. **–ची**) काका;'चाचा'
चचिया वि०काका बरोबरनुं. **–ससुर**= काकाजी. **–सास**=काकीसासु

चचेरा वि०(स्त्री० -री)काकानुं.-भाई, =काकानो दीकरो [दावीने)

चचोड़(-र)ना स०क्रि० चूसवुं(दांतथी

चटकना पुं० तमाचो(२)अ०क्रि० चट अवाज करवो (३) चीरा पडवा; ततडवुं;तरडावुं(४) खीलवुं (फूल) (५) चटी जवुं; अणबनाव थवो

चटकनी स्त्री० बारी बारणानी आंकडी; 'सिटकनी'

चटकाना स०क्रि० तोडवुं;चीरवुं (२) आंगळीना कडाका बोलाववा (३) चट चट अवाज नीकळे एम करवुं. जूतियाँ चटकाना=जूतां घसडता —मार्या मार्या फरवुं(४) चीडववुं; गुस्से करवुं

चटकीला वि० चटकदार

चटपटा वि० लहेजतदार

चटाना स०क्रि०चटाडवुं(२)खवडाववुं (३) लांच आपवी

चटावन पुं०बाळकनो अन्नप्राशन संस्कार

चटोरा वि० चटूडुं; सवादियुं(२)लोलुप

चट्टान स्त्री०मोटो पहोळो खडकनो पथ्थर

चट्टा-बट्टा पुं० रमकडांनो समूह. एक ही थैलीके चट्टे-बट्टे=एक ज—मळेलां माणस. चट्टे-बट्टे लड़ाना= आपसमां लडावी मारवुं [खोट

चट्टी स्त्री० पडाव(२)स्लीपर जोडा(३)

चट्टू वि० 'चटोरा'; सवादियुं

चढ़त स्त्री० देवने चडावाती भेट

चढ़ा-उतरी स्त्री० चड-ऊतर

चढ़ा-ऊपरी,चढ़ाचढ़ी स्त्री० चडसा-चडसी; स्पर्धा

चढ़ावा पुं० लग्न वेळा वर वधुने आपे छे ते घरेणुं(२)पूजापो(३)उत्साह; हिंमत. —बढ़ावा देना=उत्साह देवो; उत्तेजवुं

चद्दर स्त्री० चादर (२) धातुनुं पतरुं

चप वि० [फा.] डाबुं

चपकन स्त्री० एक जातनुं अंगरखुं(२) ट्रंक वगेरेनी बेसाडीने वासवानी कळ

चपड़ा पुं० साफ—चपडालाख(२) वंदो

चपत स्त्री० चपेट; तमाचो

चपना अ०क्रि० दबावुं (२) शरमावुं

चपनी स्त्री० चपणुं

चपाना स०क्रि० 'चपना'नुं प्रेरक

चपेट स्त्री०[सं.],-टा पुं०चपेट; थप्पड (२) आफत (३) आघात; धक्को

चप्पल पुं० चंपल

चप्पा पुं०चोथो भाग(२)थोडो भाग के जगा(३)चार आंगळ जगा

चप्पी स्त्री० चंपी

चप्पू पुं० हलेसुं; चाटवो

चबाना स०क्रि० चाववुं

चबेना पुं० चवाणुं

चभोरना स०क्रि० झबोळवुं
चमकना अ०क्रि० चमकवुं (२) चसक आववी के मारवी
चमकीला वि० चमकतुं (२) शानदार
चमकौवल स्त्री० चमकाववुं ते
चमगादड़ पुं० चामाचीडियुं
चमचमाना अ०क्रि० चमकवुं (२) स०क्रि० चमकाववुं
चमड़ा पुं०चामडुं(२)छाल. –**सिझांना** =चामडुं कमाववुं
चमरख स्त्री० चमरखुं
चमला पुं० भिखारीनुं चपणुं
चमोटा पुं०,–**टी** स्त्री०हजामनो चामडानो टुकडो [(३)'चमोटा'
चमोटी स्त्री० चाबुक(२)पातळी सोटी
चमौवा पुं० रद्दी खासडुं
चम्मच पुं० चमचो के चमची
चरक पुं० [सं.] चर;दूत (२) जासूस (३) मुसाफर(४) चरक वैद
चरकटा पुं० चारो कापी लावनार
चरका पुं० [फा.] उझरडो के जराक जखम (२) डाम (३) छळ; दगो
चरख पुं० [फा. चर्ख] चक्र (२)रेंटियो (३) कुंभारनो चाक (४) तोपनी गाडी (५) गोफण
चरखा पुं० चक्र (२) रेंटियो(३) रेंट (४) खराद (५) गरगडी (६) माथाकूटियुं काम
चरखी स्त्री०फरकडी,गरगडी इ० फरनार वस्तु (२) लोढवानो चरखो
चरती पुं० व्रतने दिवसे उपवास न करनार [(३) चारो
चरनी स्त्री० चरो; चराण (२) गमाण
चरपरा वि० तीखुं (स्त्री० –**री**)
चरब वि० [फा. चर्ब] तेज; तीखुं
चरबाँक, चरबाक वि०चालाक(२)नीडर
चरमराना अ०क्रि० चरड चरड शब्द करवो (जेम के, जोडा, खाटलो)
चरवाहा पुं० ढोर चारनार
चरस पुं० पाणी काढवानो कोस (२) गांजानो चडस(३) जमीननुं एक माप–२१०० हाथ
चरसा पुं०भेंस वळदनुं चामडुं(२)कोस
चरसी पुं० कोसियो (२)चडस पीनार
चरिंदा पुं० [फा.] पशु; चरे ते
चरित्तर पुं० चरीतर; नटखटपणुं
चरी स्त्री० चराण जमीन(२) कडबी
चर्खी स्त्री० [फा.] गरगडी; 'चरखी'
चर्ब वि० [फा.] सुंवाळुं;लीसुं(२)स्थूल (३) तेज; चपळ –**जबान** वि० खुशामतियुं
चर्राना अ०क्रि० चररर अवाज थवो (२) ततडवुं (३) चळ आववी; जोरथी इच्छा थवी

चलती स्त्री० चलण
चल बसना=मरवुं
चलाऊ वि० चाले एवुं; टकाउ
चलाक वि० चालाक (नाम -की)
चलाका स्त्री० वीजळी
चलाचली स्त्री० चालती के नीकळती वेळानी तैयारीनी धमाल
चलान स्त्री० मोकलवानी के चालवा चलाववानी क्रिया (२) भरतियुं; मोकल्या मालनी यादी
चलावा पुं० चाल; रीत; रिवाज (२) चालचलगत (३) आणुं
चवन्नी स्त्री० चार-आनी
चवाई पुं० निंदक (२) चूगलीखोर
चवाव पुं० चोतरफ फेलनारी चर्चा; अफवा (२) बदनामी; निंदा
चश्मदीद वि० [फा.] साक्षात् जोयेलुं
चश्म-नुमाई स्त्री०[फा.]आंखो काढवी ते; धमकी
चसना अ०क्रि० चोटवुं; लागवुं; वाझवुं
चस्पाँ वि०[फा.]चोटाडेलुं [खाडो
चह पुं०नदीनो डक्को(२)स्त्री०[फा. चाह]
चहक,–कार स्त्री० कलरव
चहकना अ०क्रि० कलरव करवो (२) उमंगथी खूब बोलवुं
चहचहा पुं०कलरव (२)ठिठियारी (३) वि० आनंद करावनारुं
चहबच्चा पुं०पाणी भरी राखवानो खाडो के होज; चहेबचो
चहल स्त्री० कीचड (२) आनंदोत्सव
चहलक़दमी स्त्री० धीरे टहेलवुं ते
चहल-पहल स्त्री० धामधूम
चहार वि० [फा.] चार
चहारशंबा पुं० [फा.] बुधवार
चहारुम वि०[फा.] चतुर्थांश (२)चोथुं
चहूँटना अ०क्रि० चोटवुं
चहेटना स०क्रि० निचोड काढवो
चहेता वि० प्रिय; वहालुं (स्त्री० –ती)
चहोरना अ०क्रि०छोडने एक जगाएथी बीजी जगाए चोढवो (२) संभाळ राखवी
चाँई वि० धूर्त; चालाक (२) तालवालुं
चाँकना स०क्रि० हद बांधवी (२) ओळखवा निशानी करवी
चाँटा पुं० मंकोडो (२) थप्पड
चाँटी स्त्री०कीडी मंकोडी (२) तबलानी चांट के तेनो अवाज
चाँद पुं०चांदो (२) स्त्री० तालकुं. –का टुकड़ा=वहु रूपवान माणस. –पर थूकना=कोई सज्जनने एब लगाडवा जतां पोताने ज लागवी
चाँदना पुं० अजवालुं (२) चांदनी
चाँदनी स्त्री० चांदनी (२) बिछावानी सफेद चादर (३) सफेद चंदरवो

चाँदमारी स्त्री० बंदूकथी निशान ताकवानुं शीखवुं ते
चाँदी स्त्री० चांदी (२) तालकुं; 'चांद' (३) सारो आर्थिक लाभ. **–का जूता**=लांच. **–काटना**=खूब कमावुं
चाँप स्त्री० चांपवुं–दबाववुं ते (२) धक्को (३) प्रेरणा (४) बंदूकनी चांप
चाक पुं० चाक; चक्र; गरेडी इ० (२) [फा.] चीरो (३) वि० चिरायेलुं (४) दृढ; मजबूत
चाकचक वि० सुरक्षित; मजबूत
चाकना स० क्रि० 'चाँकना' जुओ
चाचा पुं० (स्त्री० **–ची**) 'चचा' जुओ
चाट स्त्री० तीखुं खावानो चटको; शोख (३) आदत; टेव (४) चटपटी; चळ (५) तीखी चीज के फरसाण
चाटना स० क्रि० चाटवुं (२) चट करी जवुं
चाटुकार पुं० [सं.] खुशामत करनार
चापलूस वि० [फा.] खुशामतियुं
चापलूसी स्त्री० [फा.] चापलूसी; खुशामत
चाब स्त्री० दाढ
चाबना स० क्रि० चाववुं
चाबी, –भी स्त्री० चावी
चाय स्त्री० चा. **–पानी**=चापाणी; नास्तो
चार वि० चार (२) थोडुंक (३) पुं० [सं.] चार. **–आँखे होना**=नजर मळवी. **चारों फूटना**=अंध थवुं; अंतर बाह्य चारे आंख जवी
चार-नाचार अ० [फा.] लाचार थईने
चारशंबा पुं० जुओ 'चहारशंबा'
चारपाई धरना, पकड़ना, लेना= बीमारीथी पथारीवश थवुं (२) सूवुं. **–से लगना** = बीमारीथी पथारीमांथी न उठावुं
चालढाल स्त्री० चालचलगत; रीतभात
चालबाज़ वि० कपटी; चालाक; चालबाजीवाळुं
चाला पुं० रवानगी (२) वधूने पहेली वार सासरेथी के पियरथी वळाववी ते (३) जवानुं महुरत
चालान पुं० जुओ 'चलान'
चालिया, चाली वि० 'चालबाज़'
चाव पुं० चाह; प्रेम (२) प्रबळ इच्छा; आतुरता (३) आनंद; उमंग
चाशनी स्त्री० [फा.] चासणी (२) चसको
चास स्त्री० खेती
चासना अ० क्रि० खेडवुं
चासा पुं० खेडूत
चाह स्त्री० चाहना; प्रेम (२) इच्छा (३) माग; जरूर (४) (प.) खबर
चाहना स० क्रि० चाहवुं (२) मागवुं; इच्छा करवी (३) स्त्री० जरूर
चाहिए=उचित छे; घटे छे; जोईए
चाहे अ० गमे तेम; इच्छा मुजब

चिंआँ पुं० कचूको
चिंउँटा पुं० 'चाँटा'; मंकोडो
चिंउँटी स्त्री० 'चाँटी'; कीडी. -के पर निकलना=मरणतोल थवुं
चिंगना पुं० पक्षीनुं-खास करीने मरघीनुं बच्चुं [पाडवी
चिंघाड़ स्त्री०चीस.-ना अ०क्रि०चीस
चिंदी स्त्री० चींदरडी; टुकडो
चिउड़ा,-रा पुं० पौंआ; 'चिड़वा'
चिक स्त्री०[तु.]चक(२)पुं० कसाई(३) स्त्री०चसक;झटको [(२)चीकटुं
चिकट वि०चीकटथी मेलुं;मेल जामेलुं
चिकटना अ०क्रि० मेलुं-चीकटुं थवुं
चिकन स्त्री०[फा.] एक झीणुं कापड
चिकना वि० [सं. चिक्कण] चीकणुं (२) लपसणुं (३) सुंवाळुं; सुंदर (४) माखणियुं;खुशामतियुं(५)प्रेमी(६) पुं० चीकट. -घड़ा = निर्लज्ज. चिकनी चुपड़ी बातें = मीठी मीठी कृत्रिम वात
चिकार पुं० चीत्कार; चीस
चिकारना अ०क्रि० चीस पाडवी
चिकुटी,चिकोटी स्त्री०चपटी (२) चूंटी
चिक्कण वि० [सं.] चीकणुं
चिखुरी स्त्री० 'गिलहरी'; खिसकोली
चिचड़ा पुं०;-ड़ी स्त्री०जुओ 'किलनी'
चिजारा पुं० कडियो
चिट स्त्री० चिट्ठी;रुक्को [वि०सफेद
चिट्टा पुं०खोटो उत्साह के हिंमत(२)
चिट्ठा पुं०रोजमेळ; चोपडो (२) वार्षिक सरवैयुं (३) यादी (४) पगार के मजूरीनी रकम (५) बिल. कच्चा-चिट्ठा = पूरेपूरो हेवाल
चिट्ठी स्त्री०चिठ्ठी;'चिट'(२)कागळ;पत्र
चिट्ठी-पत्री स्त्री० चिठ्ठी-पत्री;कागळपत्र (२) पत्रव्यवहार
चिट्ठीरसाँ पुं० टपाली
चिड़चिड़ा वि० चीडियुं;झट चिडानारुं
चिड़चिड़ाना अ०क्रि०चिडावुं(२)ततडी जवुं (३) बळतां तड तड थवुं
चिड़वा पुं० [सं. चिपिट] पौंआ
चिड़ा पुं० चकलो; चकलीनो नर
चिड़िया स्त्री० पक्षी (२) पत्तांनी एक भात. -का दूध=अप्राप्य वस्तु; गगनकुसुम
चिड़ियाखाना पुं०पशुपक्षीनुं संग्रहस्थान
चिड़ी स्त्री० पक्षी (२) चकली
चिढ़ स्त्री० चीड.-ना अ०क्रि०चिडावुं
चिढ़ाना स०क्रि० चीडववुं
चितकबरा,चितला वि० काबरचीतरुं
चिताना स०क्रि० चेतववुं
चितावनी स्त्री० चेतवणी; 'चेतावनी'
चितेरा पुं० चितारो
चित्ती स्त्री० डाघो;टपकुं(२)नानी कोडी

चित्र उतारना=चित्र काढवुं के वर्णना-
दिथी खडुं करवुं
चिथड़ा पुं० चींथरुं [अपमानवुं
चिथाड़ना स०क्रि० चीरवुं;फाडवुं (२)
चिनिया वि० चिनाई (२) चीनी माटी
जेवुं;सफेद. **-केला**=नानी जातनुं
केळुं.**-बदाम**=चिनाईसींग;मगफळी
चिन्हार वि० परिचित(नाम **-री** स्त्री०)
चिपक(-ट)ना अ०क्रि०चोटवुं; वळगवुं
चिपकाना स०क्रि० चोटाडवुं;लगाडवुं
चिपचिपा वि० चीकणुं; चोटे एवुं
चिपचिपाना अ०क्रि० चीकणुं लागवुं
चिपटा वि० चपटुं [(२)पोपडी
चिप्पड़ पुं०नानो चपटो ककडो;चापडो
चिप्पी स्त्री० नानो 'चिप्पड़'
चिमटना अ०क्रि० चोटवुं(२) वळगवुं
चिमटा पुं० चमठो; चीमटो
चिमटी स्त्री० नानो चीपियो
चिमड़ा वि० जुओ 'चीमड़'
चिरकना अ०क्रि०चरकवुं;जराक अघवुं
चिरकीन वि० [फा.] मेलुं; गंदुं
चिरकुट पुं० फाटेलुं वस्त्र; चींथरुं
चिरना अ०क्रि० फाटवुं; चिरावुं
चिरमि(०टी) स्त्री० चणोठी
चिरा अ० [फा.]केम ? शा माटे ? **चूँ**
व चिरा करना=चेंचूं करवुं
चिरायँध स्त्री० वाळ चामडुं वगेरे
बळवानी गंध
चिरायता पुं० करियातुं
चिरौंजी स्त्री० चारोळी
चिलक स्त्री० चळक (२) सणको
चिलकना अ०क्रि० चमक चमक थवुं;
चळकवुं (२)सणको नांखवो
चिलग़ोज़ा पुं० [फा.] एक मेवो
चिलड़ा पुं० एक पकवान [चंचळ
चिलबिला(-ल्ला) वि० 'चुलबुला';
चिलम स्त्री० [फा.] चलम
चिलमची स्त्री० [तु.] अंदर हाथमों
धोवानुं एक वासण(२)चलम पीनार
चिलमन स्त्री० [फा.] 'चिक'; चक
चिल्लड़ पुं० जुओ 'चीलर'
चिल्लपों स्त्री० शोरबकोर
चिल्ला पुं०[फा.] चाळीस दिवस के तेनुं
व्रत के पुण्यपर्व(२)प्रसवना चाळीस
दिवस. **-बाँधना**=चाळीस दिवसनुं
व्रत करवुं. **-खींचना**=चाळीस
दिवस एकान्तमां ईश्वरोपासनामां
गाळवा [करवुं
चिल्लाना अ०क्रि० शोर करवो;बुमराण
चिल्लाहट स्त्री०शोर करवो ते;'चिल्लपों'
चिहुँटी स्त्री० चूंटी;चीमटी (२)चपटी
चीं स्त्री०[फा.]चहेरा पर पडती कर-
चोळी. **-ब-जबीं होना**=गुस्से थवुं
चीं चपड़ स्त्री०सामे जवाब आपवो ते

चींटा पुं० जुओ 'चिउँटा' (स्त्री० **-टी**)
चीकट वि०बहु मेलुं(२)पुं०तेलनो मेल
चीख़ स्त्री०चीस. **–ना** अ०क्रि० चीस पाडवी
चीखना स०क्रि०'चखना';चाखवुं
चीज़ स्त्री०[फा.]चीज;वस्तु (२)जणस (३)गायन के राग(४) विलक्षण के महत्त्वनी वस्तु [सामान
चीज़-वस्तु स्त्री० जणसभाव (२) सर-
चीढ़ पुं० चीडनुं झाड
चीतना स०क्रि० चिंतवुं; विचारवुं (२) याद करवुं (३) चीतरवुं
चीता पुं० चित्तो (२) चित्त
चीथड़ा(–रा) पुं० चींथरुं
चीथना स०क्रि० (कपडुं) फाडवुं
चीदा वि०[फा.]पसंद करेलुं;चूंटेलुं(२) उत्तम
चीनी स्त्री० खांड
चीन्हना स०क्रि० चीनवुं; ओळखवुं
चीपड़ पुं० चीपडुं
चीमड़ वि० चवड; चामडा जेवुं
चीरफाड़ स्त्री० वाढकाप [एक जंतु
चीलर पुं० गंदा वस्त्रमां पडतुं जू जेवुं
चील्ह स्त्री० चील;समडी [दाण
चुंगी स्त्री०चपटी जेटली वस्तु(२)टोल;
चुंदी स्त्री० चोटली
चुँधलाना अ०क्रि० जुओ 'चौंधियाना'
चुंधा वि० चूंधलुं; चूंखडुं
चुँधियाना अ०क्रि० जुओ 'चौंधियाना'
चुअना अ०क्रि० 'चूना'; चूवुं
चुआन स्त्री० खाई; नहेर
चुक़ंदर पुं०[फा.]गाजर जेवुं एक शाक
चुकना अ०क्रि० चूकवावुं; चूकतुं थवुं; बाकी न रहेवुं; पतवुं (२) पूरुं थवुं (३) (प.) चूकवुं; 'चूकना'
चुकाई स्त्री० चूकते थवुं ते
चुकाना अ०क्रि० चुकाववुं
चुग़द पुं०[फा.] घुवड(२) उल्लु; मुर्ख
चुगना स०क्रि० (पक्षीनुं) चूगवुं (नाम, चुगाई स्त्री०)
चुचकारना स०क्रि० (रव०) चूमवानो अवाज करी बोलवुं; वहाल करवुं
चुचकारी स्त्री० (चूमवानो) बचकारो
चुचाना अ०क्रि० चूवुं; टपकवुं
चुटकी स्त्री० चपटी (२) चूंटी
चुटकुला पुं० मजेदार वात (२) दवानो सारो नुसखो
चुटिया स्त्री० चोटली
चुटीला वि०चोट लागी के घा थयो होय एवुं(२)सौथी उपरनुं;उत्तम
चुटैल वि० 'चुटीला'; घायल
चुड़िहारा पुं० (स्त्री०**-रिन**) चूडगर
चुड़ैल स्त्री० चुडेल
चुनचुना वि० चचणे एवुं

चुनचुनाना अ॰क्रि॰ चणचणवुं
चुनट(-न) स्त्री॰ करचली; गडी
चुनना स॰क्रि॰ चूंटवुं; पसंद करवुं (२) वीणवुं (३) सजवुं; ठीकठाक करवुं (४) (दीवाल इ॰)चणवुं(५) चूंटवुं(जेम के फूल) (६)कपडानी कळी करवी
चुनरी स्त्री॰ चूंदडी
चुनाँचे अ॰ [फा.] दाखला तरीके (२) एटले; अतः
चुनाई स्त्री॰, **चुनाव** पुं॰ चूंटणी
चुनिंदा वि॰ चुनंदा
चुनौटी स्त्री॰ चूनानी डबी
चुनौती स्त्री॰ उश्केरणी (२) आह्वान
चुन्नी स्त्री॰ 'चुनी'; चूनी (२) वहेर (३) अनाजनी कणकी
चुपका वि॰ चूपकी राखनार; मौनी
चुपड़ना स॰क्रि॰ चोपडवुं; 'पोतना'
चुप्पा वि॰ (स्त्री॰ **-प्पी**)'चुपका' जुओ
चुप्पी स्त्री॰ चूपकी; मौन
चुभकना अ॰क्रि॰ डूबकी खावी
चुभकी स्त्री॰ डूबकी
चुभना अ॰क्रि॰ भोंकावुं (**चुभाना, चुभोना** प्रेरक) [करवो
चुमकारना स॰क्रि॰ चूमवानो अवाज
चुम्मा पुं॰ चूमी; 'चूमा'
चुरकी स्त्री॰ चोटली
चुरमुर पुं॰(रव॰)दबावाथी थतो अवाज, जेमके चणानो, सूकां पाननो
चुरमुरा वि॰ 'चुरमुर' अवाज करे एवुं (जेम के, पापड)
चुरना अ॰क्रि॰चडवुं;सीझवुं(२)खानगी मसलत करवी
चुरमुराना अ॰क्रि॰ 'चुरमुर' अवाज करी तूटवुं (२) स॰क्रि॰ तेवा अवाजथी तोडवुं
चुराई स्त्री॰ चोरवुं ते
चुराना स॰क्रि॰ चोरवुं(२)छुपाववुं
चुल(॰चुली) स्त्री॰ खंजवाळ
चुलचुलाना अ॰क्रि॰ खंजवाळ आववी
चुलबुला वि॰चंचळ(२)नटखट
चुलबुलाना अ॰क्रि॰ 'चुलबुला' थवुं
चुल्लू पुं॰ अंजलि; चांगळुं
चुसकी स्त्री॰ चूसवुं ते (२) घूंटडो
चुसना अ॰क्रि॰चुसावुं(२)शोषावुं;सार जतो रहेवो (३) खाली थवुं
चुसनी स्त्री॰ बाळकनी धावणी के दूधनी शीशी
चुस्त वि॰[फा.] तंग; कसेलुं(२)चुस्त; दृढ (३) फुरतीलुं; तत्पर (नाम, **-स्ती** स्त्री॰)
चुहचुहा(॰ता) वि॰ चूतुं; रसयुक्त
चुहचुहाना अ॰क्रि॰ रस टपकवो (२) पक्षीनुं बोलवुं; कलरव करवो

चुहल स्त्री० मजाक
चुहिया स्त्री० उंदरडी
चूँकि अ०[फा.]'क्यों कि';एटला माटे के
चूंदरी स्त्री० 'चुनरी'; चूंदडी
चूकना अ०क्रि० चूकवुं
चूची स्त्री०; चूचुक पुं० [सं.] स्तन
चूज़ा पुं० [फा.] मरघीनुं बच्चुं
चूतड़ पुं० धगडो; कूलो
चून पुं० चूर्ण; आटो
चूना पुं० चूनो (२) अ०क्रि० चूवुं(३) नीचे पडवुं; गरवुं
चूमा पुं० चूमी
चूर पुं०चूरो(२)वि० तल्लीन(३)चकचूर
चूल स्त्री०सालमां बेसाडवा तैयार करेलो लाकडाना सांधानो भाग(२)चणियारामां फरतो बारणानो छेडो (३) पुं० [सं.] चोटली
चूल्हा पुं० [सं. चुल्लि] चूलो
चूहड़(-रा) पुं० (स्त्री० -ड़ी) भंगी
चूहा पुं० उंदर
चूहादान पुं० उंदरियुं
चे अ० [फा.] शुं ?
चेचक स्त्री०[फा.]शीतळा–मातानो रोग
चेतावनी स्त्री० चेतवणी;'चितावनी'
चेना पुं० चीणो
चेप पुं० कोई चीकणो रस; चीकाश
चेर(-रा) पुं० चेलो (२) नोकर
चेरि(-री) स्त्री० 'चेरा'नुं स्त्री०
चेलिन स्त्री० चेली; 'चेला'नुं स्त्री०
चेष्टा स्त्री०[सं.] चेष्टा;चाळा(२)प्रयत्न; कोशिश (३) काम (४) इच्छा
चेहरा पुं०[फा.]चहेरो(२)आगलो भाग. –होना=फोजमां नाम लखाववुं
चैत पुं० चैत्र
चैती स्त्री० रवीपाक(२)वि०चैत्र संबंधी
चैन पुं० चेन. –उड़ाना=मोज करवी
चैला पुं० फाचरो
चैली स्त्री० भूकरी; छोल; वहेर
चोंगा पुं० वांसनी भूंगळी, जेवी के कलमदानीनी (२) मूर्ख
चोंगी स्त्री० धमणनी हवानी नळी
चोंच स्त्री०चांच. दो दो चोंचें होना= बोलाबोली थवी
चोंथ पुं० पोदळो [उखाडवुं
चोंथना स०क्रि० फाडवुं के तोडवुं या
चोआ पुं० एक सुगंधी पदार्थ जे चूवा पेठे बनावाय छे
चोकर पुं० आटानुं चळामण–भूसुं इ०
चोक्ष वि०[सं.] चोख्खुं(२)पवित्र (३) तीक्ष्ण; तेज (४) प्रशस्य (५) दक्ष
चोख(-खा) वि० जुओ 'चोक्ष'
चोग़ा पुं० [तु. चूगा] चोगो; झब्बो
चोचला पुं० हावभाव; नखरां
चोज पुं० मजाकनो बोल

चोट स्त्री० चोट; घा के आघात (२) टोणो (३) दगो; 'धोखा' (४) वार; 'दफा'. **-खाना**=चोट लागवी. **-बचाना**=घा चुकाववो, तेमांथी बचवुं

चोटा पुं० (तमाकुनो)शीरो; काकब

चोटी स्त्री० चोटली के चोटलो(२) शिखर. **-दबना**=लाचार थवुं. **-का** वि० उत्तम

चोट्टा पुं० चोट्टो;चोर [एक औषधि

चोबचीनी स्त्री० [फा.] चोपचीनी–

चोराचोरी अ०चोरीछूपीथी; चूपकीथी

चोलना पुं० चोला; फकीरनो जामो

चोला पुं० फकीरनो चोळो–लांबुं मोटुं जामा जेवुं पहेरण (२) शरीर

चोली स्त्री० चोळी. **-दामनका साथ**=खूब घनिष्ठ संबन्ध

चौंआलिस वि०'चौवालिस;'चूवाळीस

चौंक स्त्री०चोंक. **-ना** अ०क्रि०चोंकवुं

चौंतिस, चौंतीस वि० ३४;चोत्रीस

चौंध स्त्री०आंख अंजावी ते;'चकाचौंध'

चौंधियाना अ०क्रि०आंख अंजावी(२) न देखावुं

चौंर पुं० चमर; 'चँवर' [दोरो

चौंरी स्त्री० चमरी गाय(२)चोटलानो

चौंसठ वि० चोसठ; ६४

चौ वि० चार (समासमां)

चौआ(-वा) पुं० जुओ 'चौवा'

चौक पुं०[सं. चतुष्क,प्रा. चउक्क] चोक

चौकड़ा पुं० कानमां पहेरवानुं चोकडुं

चौकड़ी स्त्री० फाळ; फलंग (हरणनी) (२) चार जणनी चोकडी (३) चार घोडानी गाडी

चौकन्ना वि० सावधान (२) चोंकेलुं

चौकस वि०चोकस(नाम, -साई,-सी)

चौका पुं० चोको (२) चोखंडो टुकडो (३) रोटलीनी आडणी(४) चोक्को (५) चार सरखी चीजोनो समूह. **-फेरना, देना, लगाना**=चोको करवो; लींपवुं. **-लगाना**=सत्यानाश करवुं

चौकी स्त्री० बाजठ के खुरशी (२) चोकी (३) नानी आडणी (४) पडाव; उतारो

चौकोना(-र) वि० चोखंडुं [ऊमरो

चौखट स्त्री० बारणानुं चोकठुं (२)

चौखटा पुं० चोकठुं; 'फ्रेम'

चौखानि स्त्री० चार प्रकारना (अंडज, पिंडज,स्वेदज,उद्भिज्ज) जीव

चौखूंट पुं० चारे दिशा (२) आखुं भूमंडल (३)अ० चोपास; चोखूंट

चौखूंटा वि० चोखंडुं; 'चौकोना'

चौगान पुं०[फा.]गेडीदडा के पोलो या ते रमवानुं मेदान–चोगान (२)

नगारानो दांडियो
चौगिर्द अ० चोगरदम
चौगुना वि० चोगणुं
चौगोशिया वि०[फा.]चोखंडुं;चतुष्कोण
चौवड़ पुं० 'चोभर'; दाढ
चौवड़ा पुं०चार खानांवाळुं पात्र–जेवुं के, पाननो डबो,मसालानुं पात्र इ०
चौड़ा वि० चोडुं;पहोळुं.
चौड़ाई(-न) स्त्री० चोडाई; पहोळाई
चौतरा पुं० चोतरो; चबूतरो
चौथ स्त्री० चोथ (२) चोथाई
चौथा वि० चोथुं (स्त्री० -थी)
चौथिया पुं० चोथियो ताव (२) चोथा भागनो हकदार
चौदह वि० चौद;१४ [बरबाद
चौपट वि० बधेथी खुल्लुं(२)पायमाल;
चौप(–पा)ई स्त्री० चोपाई
चौपाया पुं० चोपगुं
चौपाल पुं० चारे बाजूथी खुल्ली एवी बेठक (२) गामलोकने बेसवानो चोतरो–चोरो (३) एक जातनी पालखी
चौबाइन स्त्री० चोबानी स्त्री
चौबारा पुं० उपला माळनी चारे बाजू खुल्ली मेडी (२) खुल्ली बेठक
(३) अ० चोथी वार
चौबीस वि० चोवीस; २४
चौबे पुं० एक ब्राह्मणनी जात; चोबो
चौभड़ स्त्री० 'चौघड़'; दाढ
चौमंज़िला वि० चार मजला के खंडोवाळुं (मकान)
चौमासा पुं० चोमासुं [चार-रस्ता
चौमुहानी स्त्री०,चौरस्ता,चौराहा पुं०
चौरस वि० सपाट; सरखुं (२) चोरस
चौरा पुं० चोरो (चोतरो;बेठक;देवदेवी के महात्मानुं स्थानक) (स्त्री०-री)
चौराई स्त्री० जुओ 'चौलाई'
चौरानबे वि० चोराणुं; ९४
चौरासी वि० चोराशी;८४(२)पुं० ८४ लाख योनि; लखचोराशी (३) पगमां बांधवाना घूघरा
चौलाई स्त्री० चोळाई शाक
चौवन वि० चोपन; ५४
चौवा पुं० हाथनी चार आंगळी(२)चार आंगळ माप(३)चोक्को(४)चोपगुं
चौवालीस वि० चूंवाळीस; ४४
चौसर पुं० चोसर बाजी [रस्ता
चौहट्ट,-ट्टा पुं० चौटुं; चोक (२)चार
चौहत्तर वि० चुंमोतेर; ७४
चौहद्दी स्त्री० चोपासनी सीमा

छ

छंग पुं० (प.) उछंग; गोद
छँटना अ०क्रि० छंटावुं; कपाईने अलग थवुं (२) अलग, छूटुं पडवुं
छकड़ा पुं० शकट; गाडुं
छकना अ०क्रि० धरावुं (२) नशाथी चकचूर बनवुं;छकवुं (३) छक थवुं
छक्का पुं०छक्को (२)छकडुं(३)होशकोश; सूधबूध. छक्के छूटना=सूधबूध जती रहेवी (२) हिंमत हारवी
छगड़ा पुं० (स्त्री० –ड़ी) छग; बकरो
छगुनी स्त्री० टचली आंगळी
छछिआ(-या) स्त्री० छाश (२) छाश देवानुं मापियुं के वासण
छजना अ०क्रि० छाजवुं (२) शोभवुं
छज्जा पुं० छजुं
छटपटाना अ०क्रि० बेचेन थवुं;तरफडवुं (२) आकुलव्याकुल थवुं
छटपटी स्त्री०चटपटी;बेचेनी(२)आतुरता
छटाँक स्त्री० नवटांक; (पाका) शेरनो १६मो भाग
छठा वि० छठ्ठुं (स्त्री० –ठी)
छड़ स्त्री० धातु के लाकडानो दंडूको
छड़ा पुं० छडो (२) वि० छडुं; एकाकी
छड़िया पुं० दरवान; छडीदार
छतगीर(-री) स्त्री० चंदरवो
छतरी स्त्री० छत्री (२) मंडप (३) समाधिना स्थान परनो मंडप
छतनार वि० फेलायेलुं;घटादार (झाड)
छतियाना स०क्रि०छाती पास लेवुं (२) बंदूकने फोडवा छाती पासे लगाववी
छतीसा विं० चतुर (२) धूर्त
छत्ता पुं० छत्री (२) मधपूडो
छत्तीस वि० छत्रीस ['छतीसा'
छत्तीसा पुं० हजाम (२) वि० जुओ
छत्तीसी स्त्री०भारे बदमास स्त्री;छिनाळ
छदाम पुं० पैसानो चोथो भाग
छन(०क) पुं०क्षण;'छिन' [तळावुं
छनना अ०क्रि० चळावुं (२)छणावुं(३)
छप स्त्री० छब एवो पाणीनो अवाज
छपछपना अ०क्रि० छबछबवुं (२) स०क्रि० छबछबावबुं
छपना अ०क्रि० छाप पडवी (२) छपावुं
छपरख(-खा)ट स्त्री० छप्परखाट
छपरी स्त्री० छापरी
छपाका पुं० छबाको
छब्बीस वि० छव्वीस; २६

छमना स०क्रि० (प.) क्षमा करवी
छरहरा वि० (स्त्री. –री) पातळुं; हलकुं (२)तेज;फुरतीलुं [पर मीठुं)
छरछराना अ०क्रि०चचरवुं (जेमके घा
छर्रा पुं० बंदूकनो छरो
छलकना अ०क्रि० छलकावुं
छलक(०न) स्त्री० छालक; छलकावुं ते
छलकाना स०क्रि० छलकाववुं
छलछंद,छलछिद्र पुं० कपट;चालबाजी
छलनी स्त्री० चाळणी [थवुं ते
छलावा पुं०(भूतप्रेत) देखा दई अलोप
छलिया,छली वि० कपटी;छळ करनार
छवना पुं०(स्त्री०-नी) 'छौना' जुओ
छवाई स्त्री० छावुं ते के तेनी मजूरी
छवाना स०क्रि० 'छाना'नुं प्रेरक
छवैया पुं० छापरुं छानारो
छहराना अ०क्रि० (प.) छवावुं; फेलावुं (२) स०क्रि० फेलाववुं
छहियाँ, छाँ स्त्री० 'छांह'; छाया
छाँगना स०क्रि०(डाळी) तोडवी-कापवी
छाँगुर पुं० छ-आंगळियो
छाँट स्त्री० ऊलटी(२) कापवुं के अलग करवुं ते के तेम करेली वस्तु
छाँटना स०क्रि० कापीने जुदुं करवुं(२) अलग करवुं; जुदुं पाडवुं
छाँद स्त्री० ढोरना पग बांधवानी रसी
छाँदना स०क्रि० जकडवुं; बांधवुं
छाँवँ,छाँह स्त्री०छाया. छाँह न छूने देना=पासे न आववा देवुं. छाँह बचाना=पासे न जवुं
छाक स्त्री० तृप्ति (२) छाक; नशो
छाछ स्त्री० [सं. छच्छिका] छाश
छाज पुं० सूंपडुं (२) छाज (३) छजुं
छाजना अ०क्रि० (प.) छाजवुं; घटवुं
छाता पुं० छत्री (२) विलाडीनो टोप
छान स्त्री० छापरुं
छानना स०क्रि०चाळवुं(२)अलग करवुं; छूटुं पाडवुं (३) तपासवुं
छानबीन स्त्री०बरोबर तपास के विचार
छाना स०क्रि०छावुं (२) बिछाववुं (३) अ०क्रि० प्रसरवुं [थापो(४)छापो
छापा पुं० छाप(२)छापुं;बीबुं(३)हाथनो
छापाख़ाना पुं० छापखानुं
छार पुं० खार (२) छार; राख के धूळ
छाला पुं० छाल (२) फोल्लो
छालिया पुं० कांसानुं छालुं; छालियुं (२) जुओ 'छाली'
छाली स्त्री० सोपारी
छावनी स्त्री० छाज (२) छावणी
छावा पुं०[सं. शावक] बच्चुं (२) पुत्र
छिछला वि० छीछरुं
छिछोरा वि० छीछरुं; पामर; क्षुद्र
छिटकना अ०क्रि० चोतरफ वीखरवुं (प्रेरक छिटकाना)

छिड़कना स०क्रि० छांटवुं (**छिड़कवाना** प्रेरक)
छिड़काई स्त्री० छांटवुं ते के तेनी मजूरी
छिड़काव पुं० छंटकाव
छिड़ना अ०क्रि० शरू थवुं; छेडावुं
छितराना अ०क्रि० वीखरवुं; वेरावुं (२) स०क्रि० वेरवुं; विखेरवुं
छिदना अ०क्रि० छेदावुं; भोंकावुं (**छिदाना**–प्रेरक) [(३)छिद्राळु
छिदरा वि० वीखरायेलुं; छूटुं (२) जर्जर
छिन पुं० (प.) क्षण; 'छन'
छिनक अ० (प.) क्षण वार; जरा वार
छिनकना स०क्रि० छींकवुं
छिनना अ०क्रि० छिनावुं; हरण थवुं
छिनाल स्त्री० छिनाळ. –**ला** पुं० छिनाळुं
छिपकली स्त्री० घरोळी [होवुं
छिपना अ०क्रि० छीपवुं; छुपावुं; ढंकायेलुं
छिपाना स०क्रि० छुपाववुं (२) ढांकवुं
छिपाव पुं० छुपाववुं ते
छिया स्त्री० छी; मळ (२) घृणित चीज (३) वि० गंदुं. –**छरद करना** = छी छी करवुं
छिलका पुं० फळनुं छोडुं–छाल; छीलटुं
छिलना अ०क्रि० छोलावुं; छिलावुं
छींट स्त्री० छांट; सीकर (२) छींट
छींटना स०क्रि० जुओ 'छितराना'
छींटा पुं० छांटो (२) छांटा–थोडो वरसाद
छीका पुं० [सं. शिक्य] शीकुं; 'सीका'
छीछड़ा पुं० मांसनो रद्दी टुकडो
छीछा-लेदर स्त्री० दुर्दशा; बेहाल
छीजना अ०क्रि० क्षीण थवुं; घटवुं
छीदा वि० 'छिदरा'; छिद्राळु (२) आछुं; छूटुं छूटुं; पांखुं
छीनना स०क्रि० छीनवुं; झूंटवुं (२) छूटुं करवुं (३) (घंटी) टांकवी
छीनाझपटी स्त्री० छीनवी लेवुं ते
छीप स्त्री० छीप (२) छाप; डाघ; चिह्न (३) डाघा पडी जाय एवो एक त्वचा-रोग (४) माछली पकडवानी लाकडी
छीपी पुं० छीपो
छीमी स्त्री० [सं. शिंबी] फळी; सींग
छीलना स०क्रि० छीलवुं; छोलवुं
छीलर पुं० (पाणीनो) छछरो खाडो
छुआछूत स्त्री० स्पर्शास्पर्शनो ख्याल (२) अछूतने अडवुं ते
छुईमुई स्त्री० लजामणीनो छोड
छुड़वाना, छुड़ाना स०क्रि० छोडववुं (२) नूर भरी पार्सल लेवुं
छुरा पुं० छरो (२) अस्तरो (स्त्री० –**री**)
छुला(-वा)ना स०क्रि० 'छूना'नुं प्रेरक
छूँछा वि० खाली (२) निःसत्त्व (३) निर्धन
छूत स्त्री० अडवुं ते; स्पर्श (२) अस्पृश्यनो स्पर्श–रोग, गंदकी वगेरेनो (३) वळगण. –**का रोग**=चेपी रोग

छूतछात स्त्री० 'छुआछुत' [स्पर्शवुं
छूना अ०क्रि० स्पर्श थवो (२) स०क्रि०
छेंकना स०क्रि० छेकवुं (२) रोकवुं;
थोभाववुं (३) घेरवुं
छेक पुं० छेद; छिद्र
छेड़ना स०क्रि० छेडवुं; सताववुं (२)
मश्करी करवी (३) खोदवुं (४)
'छिड़ना'; शरू करवुं
छेना पुं० दूध फटवीने कढातो मावो
छेनी स्त्री० छीणी; टांकणुं
छेरी(-ली) स्त्री० बकरी
छेव पुं० छेद;घा(२)पडनार दुःख
छेवना स०क्रि०छेदवुं (२) चिह्न करवुं.
जीव पर छेवना=जान जोखम-
मां नाखवो
छैला पुं० छेल; शोखी माणस
छोटा वि० छोटुं;नानुं(२)तुच्छ;सामान्य
छोटामोटा वि० सामान्य; साधारण
छोटी हाजिरी स्त्री० सवारनो नास्तो
छोप पुं० जाडो लेप के तेनो थर (२)
बचाव;छुपाववुं ते
छोपना स०क्रि०लेप करवो(२) लींपवुं;
छांदी लेवुं
छोभ पुं०(प.) क्षोभ (अ०क्रि० -ना)
छोर पुं० सीमा; हद (२) धार; किनारो
छोलदारी स्त्री० नानो तंबू
छोह पुं० ममता; प्रेम (२) दया
छोहरा पुं० 'छोरा'; छोरो; छोकरो
(स्त्री० –रिया,–री)
छौंक स्त्री०वघार. –ना स०क्रि०वघारवुं
छौना पुं० पशुनुं बच्चुं
छौलदारी स्त्री० जुओ 'छोलदारी'

ज

जंग स्त्री०[फा.]जंग;युद्ध(२)'ज़ंग';काट
ज़ंग पुं०[फा.] लोढानो काट
जंगजू वि० [फा.] लडायक; वीर
जँगला पुं० [पो. जेंगिला] जाळी
ज़ंगार पुं० [फा.] जंगाल;तांबानो काट
ज़ंगारी वि० जंगाली; जंगालना रंगनुं
जँचना अ०क्रि०'जांचना'नुं कर्मणि(२)
ठीक लागवुं; गमवुं (३) मालूम
पडवुं; लागवुं
जँचा वि० बरोबर तपासेलुं (२) अचूक
ज़ंजीर स्त्री०[फा.]जंजीर;सांकळ के बेडी
(२)कमाडनी सांकळ [यंत्र
जंता पुं०जंतरडुं;तार खेचवानुं ओजार
ज़ंबूर पुं०[फा.] जंबूरो; एक नानी तोप

(२) तोपनी गाडी
जंभ पुं०[सं.]दाढ (२)जडबुं(३)बगासुं
जँभाई स्त्री०बगासुं. **–लेना='जंभाना'** अ०क्रि० बगासुं खावुं
जई स्त्री०जव जेवुं एक अन्न(२)'जवारा'
ज़ईफ़ वि०[अ.]जईफ;वृद्ध (२) दुर्बळ. **–उल्-बयान, ज़ईफ़ुल बयान=** बयान करवामां दुर्बळ
ज़क स्त्री०[फा.]हार(२)हानि(३)पराभव
ज़कावत स्त्री० [अ.] बुद्धिमत्ता
ज़की वि० [अ.] बुद्धिमान
ज़ख़ामत स्त्री०[अ.]स्थूलता; जाडपण
ज़ख़ीम वि० [अ.] स्थूल; जाडुं
ज़खीरा पुं० [अ.] जखीरो; संग्रह(२) 'नर्सरी'; फूलझाड फळझाडना उछेरनी जगा
जगजगा वि०झगझगतुं.(-नाअ०क्रि०)
जगना अ०क्रि० जागवुं (२) झगवुं
जगमग,-गा वि०झगमगतुं.(-नाअ०क्रि०)
जगमगाहट स्त्री० झगमगाट
जगह स्त्री० जगा (२) मोको; अवसर
जगात पुं० जकात
जगाती पुं० जकातदार के·तेनुं काम
जगाना स०क्रि० जगाडवुं
ज़च्चा स्त्री० [फा.] प्रसूता
जज़ा स्त्री०[अ.]प्रतिकार(२)फळ;परिणाम
जज़ीरा पुं० [फा.] जंजीरो; बेट
जज़ीरा-नुमा पुं० [अ.] द्वीपकल्प
जज़्ब पुं० [अ.] आकर्षण (२) शोषण
जज़्बा पुं०[अ.]आवेश(२)प्रबळ इच्छा
जटना स०क्रि० ठगी लेवुं
जड़हन पुं० डांगर
जड़ जमना, पकड़ना = 'जमना'; दृढ थवुं
जड़ावर पुं० [हिं. जाड़ा] गरम कपडां
जतलाना,जताना स०क्रि०जणाववुं(२) अगाउथी सूचववुं [चोटनुं लक्ष्य
ज़द स्त्री० [फा.]चोट;मार(२)हानि(३)
जदल पुं० [अ.] जंग; युद्ध
जदीद वि० [अ.] नवुं
जद्द पुं० [अ.] प्रयत्न; कोशिश
जद्दी वि० [अ.] बापदादानुं
ज़न स्त्री० [फा.] स्त्री (२) पत्नी
ज़नखा वि० [फा.] नपुंसक
जजना स० क्रि० जणवुं (२) पेदा करवुं
ज़न-मुरीद वि० [फा.] पत्नीवश
जनमघूँटी स्त्री० गळथूथी
जनरव पुं० [सं.] जनवाद;अफवा (२) लोकनिंदा; लोकापवाद
जनवाना स०क्रि० 'जनना' (जणवुं)नुं, 'जानना' (जाणवुं)नुं प्रेरक
जनवास(–सा) पुं० जानीवासो
जनाई स्त्री० दाई के तेनी मजूरी
जनाज़ा पुं० [अ.] शव (२) जनाजो
जनाना स०क्रि० जुओ 'जनवाना'

ज़नाना वि० [फा.]स्त्रीओनुं(२)नपुंसक (३) निर्बळ (४) पुं० पत्नी (५) जनानखानुं [आली

जनाबे मन=मान्य महोदय; जनाबे

जनाब पुं० जणाववुं ते; सूचना

जनु अ०(प.)यथा;जेम(२)जाणो;मानो

जनूब स्त्री० [फा.] दक्षिण दिशा

जनेऊ(-व) पुं० जनोई

जनेत स्त्री० (प.) जान; 'वरात'

जपनी स्त्री० माळा (२) गोमुखी

ज़फ़र पुं० [अ.] जीत (२) लाभ

जफ़ा स्त्री० [फा.] सखताई (२) जुलम (३)कष्ट. –कश वि० सहनशील

जफील स्त्री० [अ. जफीरी] सीटी के तेनो अवाज

जब अ० ज्यारे. –तब=क्यारे क्यारे

जबड़ा पुं० जडबुं

ज़बर वि० [अ.] 'जबरा'; जबरुं (२) मजबूत (नाम –रई स्त्री०)

जबरन् अ० बळपूर्वक

ज़बह पुं० [अ.] झबे; कतल

जबहा पुं० साहस; हिंमत

ज़बान-ज़द वि० [फा.] सौनी जीभे होय तेवुं; प्रसिद्ध

ज़बान-दराज़ वि०[फा.]लांबी जीभनुं; गमे तेम–अनुचित बकनार

ज़बानी वि०[फा.]मौखिक(२)मोढामोढ

ज़बून वि०[फा.] बूरुं; खराब

ज़ब्त पुं० [अ.] जप्त करेलुं ते

जब्बार वि०[फा.] 'जब्र' करनार

जब्र पुं०[अ.] जबरदस्ती;सखती;जुलम

जब्रन् अ० [अ.] 'जबरन्' जुओ

जब्र व मुकाबला पुं०[अ.]बीजगणित

जमघट पुं०जमाव;भीड [कूवो

ज़मज़म पुं०[अ.]काबा पासेनो पवित्र

ज़मज़मी स्त्री०[अ.] 'ज़मज़म' कूवाना पवित्र जळनुं पात्र

जमना अ०क्रि० जामवुं

जमवट स्त्री० कूवानुं चक्कर

जमहूर पुं०[अ.]जनसमूह;प्रजा(२)राष्ट्र

जमहूरी वि० [अ.] प्रजाकीय; राष्ट्रीय. –सल्तनत=प्रजातंत्र

जमा वि०[अ.]जमा;एकठुं;जमा करेलुं (२)स्त्री०पूंजी;धन(३) महेसूल(४) सरवाळो. –ख़र्च पुं०आवक ने खर्च

जमा(०अ)त स्त्री० जमात;झुंड; समूह (२) श्रेणी; दरज्जो

जमाद पुं०[अ. जिमाद] पथ्थर जेवा पदार्थ (२) वरसाद वगरनो देश (३) कंजूस [पदार्थ

जमादात स्त्री०[अ.]पथ्थर माटी वगेरे

ज़मानत स्त्री०[अ.]जमानी;जामिनगीरी

ज़मानतन् अ० [अ.] जामिनरूपे

ज़माना पुं० [अ.] समय (२) लांबो

समय; जमानो
ज़मानासाज़ वि० [अ.+फा.] जमानो जोई वर्तनार; कार्यदक्ष
जमाबंदी स्त्री० [फा.] जमाबंदीनुं तलाटीनुं पत्रक
जमामार वि० बीजानुं धन दबावी पडनार के लई लेनार
जमाल पुं०[अ.] सुन्दरता (वि०–ली)
ज़मींकंद पुं० सूरण
ज़मींदार पुं० [फा.] जमीनदार
ज़मींदोज वि० [फा.] जमीनदोस्त
ज़मीमा पुं० [अ.] परिशिष्ट
ज़मीर पुं० [अ.] मन (२) विवेक
जमुर्रद पुं० [फा.] 'पन्ना'–हिरो
जमुहाना अ०क्रि० बगासुं खावुं
जमैयत स्त्री०[अ.] जमात; समूह (२) संतोष; शांति (३) फोज
जमोगना स०क्रि०हिसाब तपासवा(२) समर्थनमां बीजाने साक्षी आपवो (३) देवाना जामिन आपवा
जम्म वि० [अ.] खूब (२) बधुं
ज़र पुं० [फा.] जर; पैसो (२) सोनुं
ज़र-ख़रीद वि० [फा.] (पैसा आपीने) खरीदेलुं
ज़रख़ेज वि० [फा.] फळद्रुप; जरखेज
जरगा पुं० [तु. जर्गः] जिर्गा; 'जिरगा'
जरतु(-दु)श्त पुं० जरथुश्त्र
जरन(-नि) स्त्री० (प.) 'जलन'; दाह
ज़रब स्त्री० [अ.] आघात (२) गुणाकार
ज़रबफ़्त पुं०[फा.] भरेलुं रेशमी कपडुं
ज़रबाफ पुं० जरदोज; तारकसबवाळो
जरबीला वि० भभकदार; सुंदर
ज़रर पुं० [अ.] हानि (२) आघात
ज़राअत स्त्री०[अ.]खेती के तेनी पेदाश
ज़राफ़त स्त्री०[अ.]मजाक(२)बुद्धिमत्ता
ज़राफ़तन् अ० [अ.] मजाकमां
जरायम पुं०[अ.'जुर्म'नुं ब.व.]अनेकविध गुना
ज़रिया पुं०[अ.]कारण;सबब(२)संबंध; लाग (३) उपाय; मदद
ज़रीफ़ पुं० [अ.] जरीफ-मजाकी के समजदार माणस [सांकळ
जरीब स्त्री० [फा.] जमीन मापवानी
ज़रूर वि०[अ.ज़ुरूर] जरूरी;आवश्यक (२) अ० जरूर
ज़र्क़ बर्क़ वि० [फा.] झलकदार
ज़र्द वि० [फा.] 'जरद'; पीळुं –चोब स्त्री० हळदर
ज़र्फ़ पुं० [अ.] वासण
ज़र्ब-उल्-मसल स्त्री०[अ.]कहेवत (२) वि० जाणीतुं; सर्वविदित
ज़र्रा पुं० [अ.] अणु; कण
जर्रार वि०[अ.]बहादुर(२)विशाळ(सेना)
जर्राह पुं० [अ.] सरजन; शस्त्रवैद

ज़लक़ स्त्री० [अ. ज़ल्क] हस्तमैथुन
ज़लज़ला पुं० [फा.] धरतीकंप
जलन स्त्री० दाह; ज्वलन (२) ईर्षा
जलना अ०क्रि० जळवुं; बळवुं
जलपान पुं० [सं.] नास्तो
जलवा पुं० जुओ 'जल्वा' [बेठक
जलसा पुं०[अ.] जलसो(२)अधिवेशन;
जलहरी स्त्री०जळधारी के लिंगनी बेठक
जलापा पुं० बळापो; दाझ (ईर्षानी)
जलाल पुं० [अ.] तेज (२) प्रभाव
जलावतन वि० [अ.]निर्वासित;देशपार
थयेलुं (नाम, -नी स्त्री०]
जली-कटी,जली-भुनी (बात)=द्वेष के
क्रोधादिथी कहेली वात
ज़लील वि०[अ.] तुच्छ(२)अपमानित
जलूस पुं० जुओ 'जुलूस'
जल्द अ० [अ.] (नाम, -ल्दी स्त्री०)
जलदी; झटपट. -बाज़ वि०[फा.]
काममां जलदी करनार
जल्वा पुं० [अ.] शोभा; वैभव
जवाब पुं०[अ.] जवाब; उत्तर; सामेथी
प्रतिक्रिया (२) जोड; मुकाबलानी
वस्तु (३) नोकरी छूटवानी आज्ञा
जवाब-दावा पुं० [अ.] प्रतिवादीनी
केफियत [जवाबदार
जवाब-देह वि०[फा.](नाम,-ही स्त्री०)
जवार पुं० [अ.] आसपासनी जगा
ज़वाल पुं०[अ.] अवनति (२) आफत
जवाह(-हि)र पुं०[अ.] जवाहिर; रत्न
जवाहरात पुं० [अ.] झवेरात
जशन,जश्न [फा.] पुं० उत्सव; जलसो;
(२) हर्ष [जाडाई
जसामत स्त्री०[अ.] शरीरनी स्थूलता,
जसीम वि० [अ.] जाडुं; स्थूल
जस्ता पुं० जसत
जहँड़(-ड़ा)ना अ०क्रि० खोटमां पडवुं
(२) फसावुं; छेतरावुं
ज़हन पुं० जुओ 'ज़िहन'
जहदना अ०क्रि० 'जहदा' – कीचड
थवो (२) थाकवुं
जहदा पुं० खूब कादवकीचड
जहन्नुम पुं० [अ.] जहन्नम; नरक
ज़हमत स्त्री० [अ.] जहेमत; मुसीबत
ज़हर स्त्री० झेर (वि० –रीला)
जहल पुं० [अ. जह्ल] अज्ञान; नादान
जहाँ अ० ज्यां (२) पुं०[फा.]'जहान'नुं
समासनुं रूप [माणस
जहाँ-दीदा पुं० [फा.] भारे अनुभवी
जहान पुं० [फा.] संसार; जगत
जहालत स्त्री० [अ.] अज्ञानता; नादानी
ज़हीन वि० [अ.] बुद्धिमान
ज़हूर पुं० [अ.] जाहेरात; प्रकाश
जहेज़ पुं० [अ.] वरने विवाहमां अपातुं
धन इ०; देज

जाँगर पुं० शरीर (२) हाथपगनुं जोर
जाँच स्त्री० तपास
जाँचना स०क्रि० तपासवुं (२) जाचवुं
जाँत(–ता) पुं० दळवानो मोटो घंटो
जा वि० [फा.] उचित (२) स्त्री० जगा
जाकड़ पुं० जांगड दीधेलो माल
जाज़रूर पुं० जाजरू
जाजिम स्त्री० जाजम
जाट पुं० कोलुनो वचलो लठ्ठो (२) तळावनो वच्चेनो स्तंभ
जाड़ा पुं० शियाळो (२) ठंडी
ज़ात स्त्री० [अ.] जात; देह
जातपाँत स्त्री० जाति
ज़ाती वि०[अ.] वैयक्तिक (२)पोतानुं
जान स्त्री० जाण; खबर (२) [फा.] प्राण; जान (३) बळ (४) सार –आना=जीवमां जीव आववो. –के लाले पड़ना=आवी बनवुं. –पर खेलना=जाननी परवा न करवी.–ले जाना=मरवुं
जानकार वि० जाणकार (२) तज्ज्ञ
जानकारी स्त्री० जाण (२) निपुणता
जानना स०क्रि० जाणवुं
जान-पहचान स्त्री०जानपिछान;परिचय
जा-नशीन वि०[फा.] वारस [जणवुं
जाना अ०क्रि० जवुं (२) स०क्रि० (प.)
जानिब स्त्री०(२)अ० [अ.] तरफ;बाजु
जा-ब-जा अ० [फा.] ठेरठेर
जा-बेजा अ० [फा.] टाणेकटाणे
जाबिर वि० [फा.] अत्याचारी
ज़ाब्ता पुं० [अ.] कायदो; नियम (२) जाप्तो; बंदोबस्त. –दीवानी पुं० दीवानी कायदो. –फौजदारी पुं० फोजदारी कायदो
जामगी पुं० जामगरी
जामन पुं० दहीं माटेनुं मेळवण
जामा पुं०[फा.] जामो (२)वि० [अ.] कुल;सब. जामेसे बाहर होना =खूब गुस्से थवुं. –मसजिद= जुमामस्जिद
जामुन पुं० जांबु के जांबुडो
जामुनी वि० जांबुडियुं [जगा
जाय अ० वृथा(२) स्त्री०[फा.] 'जा';
ज़ायचा पुं० [फा.] जन्मोत्री
जायज़ वि० [अ.] उचित
जाय-ज़रूर पुं० [फा.] 'जा-ज़रूर'
जायज़ा पुं० [अ.] तपास (२) इनाम
ज़ायद वि०[अ.] वधारेपडतुं; नकामुं; फालतु [नी चटाई
जाय-नमाज़ स्त्री०[फा.]मुसल्लो;नमाज-
ज़ाया वि० [फा.] वरबाद; नष्ट
ज़ार पुं० [फा.] 'जा';जगा; स्थान(२) अ० खूब. –ब क़तार=सतत
ज़ारी स्त्री० [फा.] रोवुं ते

जारूब पुं० [फा.] झाडु
जाल पुं [अ. जअल] जाळ;दगो;युक्ति
जालसाज़, जालिया वि० दगाबाज
जाली वि० बनावटी; कपटी
जावन पुं० 'जामन' जुओ
जावित्री स्त्री० जावंतरी
जाविया पुं० खूणो
जावेद वि० [फा.] स्थायी; दीर्घजीवी
जासु स० (प.) 'जिसको'; जेने
जाह पुं० [अ.]उच्च पद (२)प्रतिष्ठा
ज़ाहिद पुं० [अ.] जाहेद; धर्मनिष्ठ, त्यागी माणस
ज़ाहिर वि० जाहेर
ज़ाहिरदारी स्त्री०[फा.]मात्र देखाव के ते अर्थेनुं काम के वात
ज़ाहिरा अ०[अ.] जाहेरमां; खुल्ली रीते
जाहिल वि० [अ.] मूर्ख (२) अभण
ज़िंदा वि० [फा.] जीवतुं
ज़िंदा-दिल वि० [फा.] खुश-मिजाज (२) हसमुखुं (३) रसिक
जिंस स्त्री०[फा.]प्रकार(२)जणस;चीज (३) सामग्री (४) अनाज
ज़िक्र पुं० [अ.] जिकर; चर्चा
जिगर पु० [फा.] जीव (२)कलेजुं (३) हिंमत (४) सत्त्व; सार
जिगरा पुं० जिगर; छाती; हिंमत
जिगरी वि०[फा.]जिगरनुं(२)दिलोजान

ज़िच,-च्च स्त्री०[फा.]लाचारी; विवशता
जित अ०(प.) जे बाजु; 'जिधर' (२) वि० [सं.] जितायेलुं
जितना वि० जेटलुं
जिधर अ० ज्यां; जे बाजु
जिन पुं० [अ.] भूतप्रेत
ज़िना पुं० [अ.] व्यभिचार
ज़िनाकार वि० [फा.] व्यभिचारी
ज़िना-बिज्जब्र, –बिल-जब्र [अ.] पुं० स्त्री पर बळात्कार करनार
जिनि अ० मत; नहीं [प्रेरक
जिमाना स०क्रि० जमाडवुं;'जीमना'नुं
ज़िम्मा पुं० [अ.] जुम्मो; जवाबदारी (२) देखरेख; रक्षण
ज़िम्मादा(-वा)र [फा.], जिम्मेवार वि० जुम्मेदार (नाम,–री स्त्री०)
जिय पुं० (प.) मन; चित्त; जीव
जियरा पुं० जीव; जीवडो
ज़ियाँ,ज़ियान पुं०[फा.]घट;तोटो;खोट
जियाना स०क्रि० जिवाडवुं (२) पोषवुं
ज़ियाफ़त स्त्री०[अ.]जाफत;मिजबानी
ज़ियारत स्त्री०[अ.]दर्शन(२)तीर्थयात्रा
ज़ियारती वि०[फा.]दर्शनार्थी(२)यात्री
जियारी स्त्री० जिंदगी(२) आजीविका (३) साहस; हिंमत
जिरगा पुं० [फा.] जुओ 'जरगा'
जिरह स्त्री०[अ. ज़ुरह]चर्चा;वादविवाद

(२) ऊलट-तपास
ज़िरह स्त्री० [फा.] कवच; बखतर
ज़िराअ(-य)त स्त्री०[अ.]जुओ 'जराअत'
जिला स्त्री०[अ.]चमक;प्रकाश(२)मांजी के रंगी-करीने चमकाववुं ते
ज़िला पुं० [अ.] जिल्लो. **-दार** पुं० 'जिलेदार' जुओ [पोषवुं
जिलाना स०क्रि० जिवाडवुं (२)पाळवुं
जिल्द स्त्री० [अ.] खाल;चामडी (२) पुस्तकनी बांधणी (३)पुस्तक; ग्रंथ
जिल्दबंद,जिल्दसाज़ पुं० [फा.] बुक-बाइन्डर (नाम, **-दी,-ज़ी** स्त्री०)
ज़िल्लत स्त्री० [अ.] अपमान; बेआबरू (२) दुर्दशा. **-उठाना या पाना**= अपमानित थवुं
जिस स० 'जो'नुं विभक्ति माटेनुं रूप
जिस्म पुं० [फा.] जिसम; देह
ज़िहन पुं०[अ]समज;बुद्धि.**-खुलना**= बुद्धि खीलवी. **-लड़ाना**=खूब विचारवुं; मगज दोडाववुं
जिहाद पुं० [अ.] जेहाद; धर्मयुद्ध
जिहालत स्त्री० जुओ 'जहालत'
जी पुं० जीव (२) अ० जी. **-करना**= हिंमत करवी (२) जीव घालवो; इच्छवुं. **-का बुखार निकलना**= जीवनो कढापो बळापो इ० नीकळी जीव ठरवो. **-खट्टा होना**=मन फरी जवुं; घृणा थवी. **-टँगा रहना या होना**=चिंता थवी. **-डूबना**=चित्त व्याकुल थवुं.**-पर आ बनना**=आवी बनवुं. **-पर खेलना**=जीव जोखममां नांखवो. **-से उतर जाना**=मनथी ऊतरी जवुं. **-से जाना**=मरी जवुं
जीजा पुं० मोटी वहेननो वर
जीजी स्त्री० मोटी बहेन
जीता वि० जीवतुं. **जीती मक्खी निगलना**= जाणीबूजीने अयोग्य के अन्यायी काम करवुं
ज़ीन पुं०[फा.] घोडानुं जीन (२) एक जाडुं कपडुं
ज़ीनत स्त्री० [फा.] शोभा; शणगार
ज़ीनहार अ०[फा.] 'हरगिज'; कदापि
जीना अ०क्रि० जीववुं
ज़ीना पुं० [फा.] जीनो
जीमना स०क्रि०[सं. जिम्] जमवुं
जीय पुं० जीव;'जी' ['जिगरा'
जीवट पुं० [सं. जीवथ] छाती; हिंमत;
जीवनमूरि स्त्री० जीवनमूळी
जीवनी स्त्री० जीवनचरित
जीवरा पुं० (प.) जीवडो; जीव
जीवसू स्त्री०[सं.] जेनी संतति जीवती होय एवी स्त्री
जीवाजून पुं० जीवजंतु; प्राणीमात्र

ज़ीस्त स्त्री० [फा.] जिंदगी
जीह(-हा,-ही) स्त्री० (प.) जीभ
जुंबिश स्त्री०[फा.]चाल;गति (२)झुंबेश
जुआँ स्त्री० 'जूँ'; जू
जुआ पुं० जुवा; जुगटुं
जुआचोर पुं० ठग; धुतारो
जुआर स्त्री० जुओ 'ज्वार'
जुआर भाटा पुं० जुओ 'ज्वार भाटा'
जुआरी पुं० जुगारी
जुई स्त्री० नानी जू
ज़ुकाम पुं० [अ.] सळेखम; शरदी. मेंढ़कीको .ज़ुकाम होना=न थई शके एवुं थवुं [दक्षता
जुगत स्त्री० युक्ति;उपाय(२)व्यवहार-
जुगनी स्त्री०; जुगनू पुं० आगियो(२) गळानुं रामपगला जेवुं घरेणुं
जुग़राफ़िया पुं० [अ.] भूगोळ
जुगवना,जुगाना स०क्रि० साचवी-संभाळीने राखवुं
जुगालना अ०क्रि० वागोळवुं
जुगाली स्त्री० वागोळवुं ते
जुज़ पुं०[फा.]भाग;हिस्सो(२)८के१६ पानानी थोकडी; फॉर्म
जुज़दान पुं० [अ.+फा.] पुस्तक बांधवानुं कपडुं
जुज़बंदी स्त्री०[फा.]जुस-बांधणी;अकेक फॉर्म शीवीने पुस्तक बांधवानी रीत
जुज़वी(-वी) वि० [फा.] जूज; थोडुं
जुझाऊ वि० युद्ध संबंधी
जुझार वि० झूझे एवुं;लडवीर;बहादुर
जुट स्त्री० जोडी (२) जथो; टोळी
जुटना अ०क्रि० जोडावुं; मळवुं; एकत्र थवुं; संगठित थवुं
जुटाना स०क्रि० 'जुटना'नुं प्रेरक
जुठारना स०क्रि० जूठुं छांडवुं; छांदवुं
जुठिहारा पुं० एठुं खानार
जुड़ना अ०क्रि० जोडावुं; 'जुटना'
जुड़पित्ती स्त्री०शीळस-एक त्वचारोग
जुड़वाँ वि० जोडियुं (२) पुं० जोडियुं जन्मेलुं बाळक
जुड़वाना स०क्रि० जुओ'जुड़ाना' (२) जुओ 'जोड़वाना'
जुड़ाई स्त्री० जुओ 'जोड़ाई'
जुड़ाना अ०क्रि० ठंडुं के शांत थवुं(२) तृप्त थवुं (३)अ०क्रि० ठंडुं पाडवुं (४) तृप्त करवुं [जोतरावुं
जुतना अ०क्रि०हळे के गाडीए जोडावुं;
जुताई स्त्री० जुओ 'जोताई'
जुतियाना स०क्रि० जोडाटवुं (२) भारे अपमान करवुं
जुनून पुं० [फा.] झनून; पागलपणुं
ज़ुन्नार पुं० [अ.] कस्ती के जनोई
जुब्बा पुं० [अ.] फकीरनो झब्बो
.जुमरा पुं० [अ.]जथो; भीड (२)फोज

जुमला पुं० [अ.]पूरुं वाक्य(२)जुमलो; कुल सरवाळो. (३)वि० कुल;बधुं
जुमेरात स्त्री०[अ. जुमअ-रात] गुरुवार
जुरअत स्त्री०[अ.] जुरत;हिंमत;साहस
जुरमाना पुं० जुओ 'जुर्माना'
जुराफ़ा पुं०[अ. जुर्राफ़ः] जिराफ पशु
ज़ुरूफ़ पुं०[अ.'ज़र्फ़'नुं ब०व०]वासण-कूसण
ज़ुरूर, ज़ुरूरी [अ०]जुओ 'ज़रूर,–री'
जुर्म पुं० [अ.] गुनो; अपराध
जुर्माना पुं०[फा.] दंड
जुर्रा पुं० [फा.] बाजपक्षी (नर)
जुर्राब स्त्री० [तु.] पगनो मोजो
जुल पुं० छळ; कपट
जुलाल वि०[अ.] स्वच्छ (पाणी)
जुलाहा पुं० [फा. जौलाह] वणकर
जुलूस पुं०[अ.]राजगादी पर आववुं ते (२)सरघस के उत्सवनी धामधूम
ज़ुल्फ स्त्री०[फा.] वाळनी लट–जुल्फुं
ज़ुल्म पुं०[अ.]जुलम;अत्याचार;अन्याय. –टूटना=आफत आववी. -ढाना =जुलम करवो(२)भारे करवी
ज़ुल्मत स्त्री० [अ.] अंधारुं
ज़ुल्मात स्त्री०[अ.] अंधारी जगा
जुल्लाब पुं०[अ.] 'जुलाब'; दस्त; रेच
जुवा पुं० जुवा; जुगटुं (२) 'जूआ' जुओ
जुस्तजू स्त्री०[फा.]जुस्तेजू ;तपास;शोध
जुहारना स०क्रि०जुहार करवो; प्रणाम करवा (२) मदद मागवी
जुही स्त्री० [सं.यूथी] जूई; 'जूही'
जूँ स्त्री० जू. कानों पर जूँ रेंगना= स्थितिनुं भान थवुं [जुगटुं
जूआ पुं०धूंसरी (२) [प्रा. जूआ] द्यूत;
जूजू पुं० बाळकने डराववानो हाउ
जूझना अ०क्रि०झूझवुं;लडवुं(२)लडतां प्राण आपवा
जूठन स्त्री० एठुं खावानुं; जूठण
जूठा वि० [सं. जुष्ट] (स्त्री० –ठी) एठुं
जूड़ा पुं० जूट; वाळनो अंबोडो
जूड़ी स्त्री० टाढियो ताव
जूता पुं० जूतुं; जोडो
जूताख़ोर वि०निर्लज्ज;शरम वगरनुं
जूती स्त्री० स्त्रीनो जोडो
जूती पैज़ार स्त्री० जोडाथी मारपीट
जून पुं०समय (२) तृण; घास (३) जून मास (४) वि० जूनुं; जीर्ण
जूस पुं० [सं. जूष] दाळनुं ओसामण के सूप(२)[फा. जूफ्त ?] बेकी संख्या
जूस-ताक पुं०एकीबेकी रमवानुं एक द्युत
जूह पुं० जूथ; समूह (२) जूंसरुं
जूही स्त्री० [सं. यूथी] जुओ 'जुही'
जेंवन पुं० भोजन;जमण ['जेवना'
जेंवना स०क्रि० [सं. जेमन] जमवुं;
जे स० 'जो'नुं ब०व०; जेओ

जेइ, जेउ(-ऊ) स० 'जो;' जे
जेठा वि०(स्त्री०-ठी) ज्येष्ठ; मोटुं(२) सौथी सरस
जेठानी स्त्री० जेठाणी
जेठी मधु स्त्री० जेठीमध; 'मुलेठी'
जेठौत(-ता) पुं० जेठनो छोकरो (स्त्री० -ती) [पुं० जीतनार
जेता वि० 'जितना'; जेटलुं(२) [सं.]
जेना स०क्रि० जमवुं
जेब स्त्री० [अ.] जेब; खीसुं
ज़ेब स्त्री० [फा.] जेब; शोभा;सुंदरता
जेबकट पुं० खीसाकातरु
जेबघड़ी स्त्री० खीसानुं घडियाळ
ज़ेब(-बा) वि० [फा.] योग्य; छाजतुं (२) शोभादायी (नाम, ज़ेबाइश)
जेबी वि० खीसानुं(२)घणुं नानुं
जेर स्त्री० ओर; 'आँवल'
ज़ेर वि०[फा.] नीचेनुं; ऊतरतुं (२) वि० जेर; परास्त (३) पुं० फारसी लिपिनुं एक चिह्न
ज़ेरपाई स्त्री०[फा.]हलका स्त्रीना जोडा
ज़ेरबार वि० [फा.] दुःखी; दबायेलुं (नाम,-री स्त्री०) [माठी दशा
ज़ेर-व-ज़बर पुं० [फा.] संसारनी सारी
जेलख़ाना पुं० जेल
जेवना स०क्रि० 'जेंवना'; जमवुं
जेवनार स्त्री० जमणवार
ज़ेवर पुं० [फा.] आभूषण; घरेणुं
जेवरी स्त्री० रसी; दोरी
ज़ेहन पुं० 'ज़हन'; बुद्धि; समज
जेहि स० (प.) जेने (२) जेनाथी
ज़ैतून पुं० [अ.] जेतून
जैयद वि० [अ.] बळवान (२) खूब मोटुं (३) श्रेष्ठ
जैनी पुं० जैन
जैल पुं०[अ.]नीचेनो भाग.-में=नीचे
जैसा वि० (स्त्री०-सी) जेवुं. जैसे का तैसा=पूर्ववत्; जेमनुं तेम
जैसे अ०जेम. जैसे तैसे=जेमतेम करीने
जैसो वि० जुओ 'जैसा'
जों अ० जेम; जेवी रीते
जोंक पुं० जळो
जो स० जे (२) अ० (प.) जो;यदि
जोइ, जोइया स्त्री० जोरु; स्त्री
जोखना स०क्रि० [सं.जुष] जोवुं; तपासवुं; विचारवुं (२) जोखवुं
जोख(-खि)म स्त्री० जोखम
जोखिता स्त्री० (प.) योषिता; पत्नी (२) योगीपणुं
जोगड़ा पुं० जोगटो; नकली जोगी
जोगवना स०क्रि० जुओ 'जुगवना'
जोगिन(-नी) स्त्री० योगिनी; जोगण
जोगिया वि०गेरु रंगनुं(२)जोगी संबंधी (३) पुं० जोगियो; योगी

जोगीड़ा पुं० एक प्रकारनुं गायन के ते गानार वृंद

जोटा पुं० जोटो

जोटी स्त्री० जोडी

जोड़ पुं०सरवाळो के ते करवानी क्रिया (२) जोडाणनी जगा; सांधो (३) जोडीनी वस्तु(४)समानता;वराबरी

जोड़न स्त्री० मेळवण; 'जावन'

जोड़वाँ वि० जोडवुं (बाळक)

जोड़ा पुं०(स्त्री० **-ड़ी**)जोडी; जोटो(२) जोडा (३) पूरो पहेरवेश

जोड़ाई स्त्री० जोडवुं ते के तेनी मजूरी (२) चणतर

जोड़ी स्त्री०जोडी(२)मगदळ-जोडी(३) वेल के घोडा-गाडी

जोत स्त्री० जोतरुं(२) त्राजवानुं दामणुं

जोतना स०क्रि० जोतरवुं (२) खेडवुं

जोताई स्त्री० 'जोतना'-ए काम के तेनी मजूरी [आगळनो)

जोति स्त्री० जोत; घीनो दीवो (देव

जोती स्त्री०जुओ'जोति'(२)लगाम(३) त्राजवानी 'जोत'-दामणुं

ज़ोफ़ पुं० [अ.] बुढापो; घडपण (२) निर्बळता [(३) रोनक

जोबन पुं० जोवन;युवानी(२) सुंदरता

ज़ोम पुं०[अ.]उमंग;उत्साह(२)जोम; शक्ति (३) अभिमान

जोया वि० [फा.] ढूंढनार; खोळनार

ज़ोर पुं०[फा.]जोर. **ज़ोरों पर होना=** जोर पर आववुं के होवुं. **-ज़ोरों पर**=जोरथी; खूब वेगथी

ज़ोर-शोर पुं० [फा.] खूब जोर

जोरू स्त्री० जोरु; पत्नी

जोश पुं०[फा.]जोस. **-खाना**=ऊभरो आववो; ऊकळवुं. **-देना**=पाणी साथे उकाळवुं [घरेणुं(२)कवच

जोशन पुं० [फा. जौशन] हाथनुं एक

जोशाँदा पुं० [फा.] क्वाथ; काढो

जोहना स०क्रि०जोवुं (२) राह जोवी (३) खोळवुं

जोहार पुं० 'जुहार'; प्रणाम

जौं अ० जो (२) 'ज्यों' जुओ

जौ पुं०जव(२)अ० (प.) जो (३) ज्यारे

ज़ौक़ पुं०[अ.]आनंद. **-से**=सुखपूर्वक

ज़ौक़ शौक़ पुं० [अ.] मोजशोख

ज़ौजा स्त्री० [अ.] जोरु; पत्नी

जौर पुं० [अ.] जुलम; अत्याचार

जौहर पुं० [अ.] रत्न (२) सार (३) विशेषता; खूबी

जौहर पुं [जीव+हर] जौहर; जमोर

जौहरी पुं० [फा.] जवेरी

ज्ञान छाँटना = पोतानुं ज्ञान बतावया लांबीपहोळी वातो ठोकवी

ज़्यादती स्त्री० [फा.] अधिकता (२)

अत्याचार; बळात्कार

ज़्याफ़त स्त्री० 'ज़ियाफ़त' जुओ

ज्यूँ,ज्यों अ०जेम;जेवी रीते(२)'जैसे ही'; जेवुं; जे क्षणे; ज्यां

ज्यो(–ज्यौ)नार स्त्री०रसोई(२)जाफत

ज्वार स्त्री० जुवार (२) जुआळ; भरती

ज्वारभाटा पुं० भरतीओट

ज्वारी पुं० जुओ 'जुआरी'

झ

झंक(-ख)ना अ०क्रि० जुओ'झीखना'

झंखाड़ पुं० घीच कांटावाळी झाडी के वृक्ष; झांखरुं (२) रद्दी झाडझांखरांनो समूह

झंझर स्त्री०'झज्झर';एक जातनुं माटीनुं पाणी ठंडुं करवानुं वासण

झँझरा वि० काणांकाणांवाळुं; जाळीदार

झँझरी स्त्री० जाळी; जाळीवाळी बारी

झंझी स्त्री० फूटी कोडी

झँझोड़ना स०क्रि० झंझेडवुं; झटकाथी हलाववुं (जेम के झाडने)

झँडूला पुं० (वाळनी) बाधा उतार्या वगरनुं बाळक (२) घटादार झाड

झंप पुं० [सं.] उछाळो; छलंग

झँपना अ०क्रि०छुपावुं;ढंकावुं(२)ऊछळवुं; कूदवुं (३) घसवुं; 'लपकना' (४) 'झेंपना' जुओ

झंपान पुं० (पहाड चडवानी) डोळी

झँवा पुं०'झांवाँ';झामरो; खूब पकवेलो ईंट के ठींकरानो टुकडो जे हाथ-पग घसवा वपराय छे

झइँ (-ईं)स्त्री०'झाँईं'; पडछायो;अधारुं

झक स्त्री०जक;धून(२)वि०साफ;चोख्खुं

झकझक स्त्री०रकजक; नकामी तकरार

झकझोर पुं० झटको; धक्को (२) वि० झगझगतुं

झकझोरा पुं० झटको; धक्को

झकना अ०क्रि०जक करवी(२)गुस्सामां अघटतुं बोलवुं

झक्की वि०जक्की;हठीलुं [(३)माछली

झख स्त्री०खिजावुं ते(२)दुःख रडवुं ते

झखना अ०क्रि०जुओ 'झकना,झीखना'

झगा पुं० बाळकनो गगा के ढीलुं कुरतुं

झज्झर स्त्री० जुओ 'झंझर'

झज्झी स्त्री०जुओ 'झंझी' [चमक

झझक स्त्री० खमचावुं ते (२) भडक;

झझकना अ०क्रि०खमचावुं(२)चमकवुं (३) खिजावुं (प्रेरक –झझकाना)

झझकारना स॰क्रि॰वढवुं(२)तुच्छकारवुं
झटकना,झटकारना स॰क्रि॰ झाटकवुं
झड़ स्त्री॰ झडी (२) पुं॰ बे के वधारे कळनुं एक जातनुं ताळुं
झड़ना अ॰क्रि॰झरवुं;गरवुं(२)साफ थवुं
झड़प स्त्री॰ झपाझपी(२)क्रोध; आवेश
झड़पना अ॰क्रि॰जोरथी हल्लो करवो (२) लडवुं (३) झडपी लेवुं
झड़बेरी स्त्री॰ रानी बोर
झड़ाझड़ अ॰ लगातार (२) झटपट
झनझनी स्त्री॰ 'झिनझिनी'; झणझणी
झपक स्त्री॰ पलक वार(२)ऊंघनुं झोकुं
झपकी स्त्री॰ पलकारो (२) झोकुं
झपट स्त्री॰ हल्लो; हुमलो; झपाटो
झपटना अ॰क्रि॰हल्लो करवो;तूटीपडवुं
झपट्टा पुं॰जुओ 'झपट' [मींचवी
झपना अ॰क्रि॰ आंख पटपटाववी के
झपाझपी स्त्री॰पडापडी;उतावळ;जलदी
झप्पान पुं॰ जुओ 'झंपान'
झप्पानी पुं॰ झंपान ऊंचकनारो
झबरा, झबुआ वि॰ लांबा लांबा वाळवाळुं; जाफरियुं (पशु)
झबा(-ब्बा) पुं॰ घरेणा के कपडाने छेडे लटकतुं रखातुं शोभानुं फूमतुं के गुच्छ
झमझम स्त्री॰ खूब वर्षानो अवाज(२) छम छम अवाज
झमर झमर अ॰ झरमर झरमर
झमूरा पुं॰ (रींछ इ॰) जाफरियुं पशु (२) बाजीगरनो जंबूरो
झमेला पुं॰ बखेडो; झगडो(२)भीड
झरना पुं॰ झरणुं (२) अ॰क्रि॰ झरवुं
झरी स्त्री॰ झरणुं (२) कर; लागो
झरोखा पुं॰ झरूखो [(३)क्रोध
झल पुं॰ दाह; आंच (२) तीव्र इच्छा
झलका पुं॰ फोल्लो
झलझ(-म)ल स्त्री॰ झलेमले(२) अ॰ झळझळ [क्रि॰ झळकाववुं
झलझलाना अ॰क्रि॰ झळहळवुं(२)स॰
झलना स॰क्रि॰(हवा नांखवा)हलाववुं; वींझवुं(२)अ॰क्रि॰आमतेम हालवुं (३) 'झालना'नुं कर्मणि
झलार पुं॰झाडी;गाढुं वन [चीडववुं
झल्लाना अ॰क्रि॰ चिडावुं(२)स॰क्रि॰
झाँईं स्त्री॰ पडछायो(२)दगो(३)चहेरा पर पडी जतुं काळुं चकामुं. -बताना=दगो देवो
झाँक स्त्री॰;**झाँकना** अ॰क्रि॰आडमांथी के छूपुं जोवुं (२) डोकावvुं
झाँकी स्त्री॰'झाँक';जोवुं ते;झांखी(२)दृश्य
झाँझट स्त्री॰ झंझट; झगडो
झाँझन(-र) स्त्री॰ झांझर–पगनुं घरेणुं
झाँझर वि॰(प.)भांगेलुं;जीर्ण;तूटयुंफूटयुं
झाँप स्त्री॰ ऊंघ (२) पडदो; चक (३)

ढांकणनी कोई पण वस्तु
झाँपना स०क्रि० ढांकवुं (२) शरमाववुं
झाँवना स०क्रि० 'झाँवाँ'थी–झामराथी घसीने(हाथ पग इ०)धोवुं
झाँवर(–रा) वि०काळुं(२)मेलुं(३)सुस्त
झाँवली स्त्री० आंखनो इशारो—नखरुं
झाँवाँ पुं० धुओ 'झँवा'
झाँसना स०क्रि०ठगवुं;दगो देवो;छेतरवुं
झाँसा(०पट्टी)पुं०छेतरपिंडी;धोखाबाजी; दगो. **–देना** = दगो देवो;छेतरवुं
झाँसू पुं० दगाबाज
झाग पुं०'गाज';फीण [स्त्री०झाडवुं ते
झाड़ पुं०छोड(धुंगा जेवो)(२)झाड(३) ['झंखाड़'
झाड़खंड पुं० वन
झाड़-झंखाड़ पुं० झाडझांखरां; जुओ
झाड़ना स०क्रि० दूर करवुं (२) वातो फेंकवी (३) झाडवुं
झाड़-फूँक स्त्री०मंत्रथी झाडवुं के फूंकवुं ते
झाड़-बुहार स्त्री० वाळझूड; सफाई
झाड़ा पुं०'झाड़फूंक' (२) झाडो;तपास के विष्ठा या दस्त
झाड़ू पुं० झाडु (२) पूंछडियो तारो
झापड़ पुं० झापट; थप्पड
झाबा पुं० टोपलो
झाम पुं० एक मोटी कोदाळी
झामक पुं० [सं.] जुओ 'झँवा'
झायँझायँ स्त्री०झणकार(२)नीरव जगामां काने पडतो शून्यकारनो शब्द
झार स्त्री० झाळ; आंच (२) दाह (३) बळतरा; ईर्षा (४) पुं० समूह (५) वि० एक मात्र (६) कुल; समस्त
झारना स०क्रि० ओळवुं (२) जुओ 'झाड़ना'
झाल पुं० झांझ; छबलीकां (२) स्त्री० तीखाट(३)लहेर;मोज(४) वर्षानी झडी के हेली(५) झाळवुं ते
झालना स०क्रि० झाळवुं; रेण करवुं
झावँझावँ स्त्री०बकवाद(२)जक;कजियो
झिझक स्त्री० चोंकवुं के पाछा पडवुं ते
झिझकना अ०क्रि० जुओ 'झझकना'
झिड़कना स०क्रि०झाटकवुं
झिड़की स्त्री० झाटकणी; ठपको (२) झटको
झिड़झिड़ाना अ०क्रि०कढवुं;गुस्सो करवो
झिनझिनी स्त्री० 'झनझनी'; झझणी
झिपना अ०क्रि० शरमावुं; 'झेंपना' (प्रेरक **–झिपाना**)
झिरझिरा वि० झीणुं; बारीक (कपडुं)
झिलँगा पुं० झोळा जेवो खाटलो
झिलमिल स्त्री० झबूकतो प्रकाश (२) वि० झबूका मारतुं
झिलमिला वि० पांखुं;आछुं;जाळीदार (२) चमकतुं (३) अस्पष्ट
झिलमिलाना अ०क्रि०चमकचमक थवुं;

झबूकवुं(२) स०क्रि० झबुकाववुं के तेम थाय एम हलाववुं [चक
झिलमिली स्त्री०बारीनुं खडखडियुं(२)
झिल्ली स्त्री० पातळुं पारदर्शक पड(२) [सं.] झिल्ली; तमरुं [ओरणुं
झींक(–का) पुं० घंटीनुं एक वारनुं
झींखना अ०क्रि०(२)पुं०जुओ 'झीखना'
झींगा पुं० जिंगा; एक जळचर
झींगुर पुं० झिल्ली; तमरुं
झींसी स्त्री० फरफर (वर्षा)
झीखना अ०क्रि० खिजावुं; कढवुं (२) दुःख रडवुं (३) पुं० ते क्रिया (४) आपवीती [(३) दुर्बल
झीना वि०झीणुं(२) काणां काणांवाळुं
झील स्त्री० सरोवर (कुदरती)
झीलर पुं० नानुं सरोवर
झीवर पुं० धीवर; ढीमर; माछी
झुँझलाना अ०क्रि० धूंधवावुं; चिडावुं
झुकना अ०क्रि०झूकवुं (प्रेरक झुकाना)
झुकनी स्त्री० पीडा; दुःख
झुकाव पुं०झूकवुं ते(२) ढाळ(३) झोक
झुटुंग वि० जाफरां के जटावाळुं
झुठलाना स०क्रि०जूठुं ठरावडुं–पाडवुं (२) जूठुं कही छेतरवुं
झुठाई स्त्री० जूठापणुं; असत्य
झुठाना,झुठालना स०क्रि०'झुठलाना'
झुनक स्त्री०झणकार(अ०क्रि०झुनकना)
झुनझुना पुं० बाळकनो घूघरो
झुनझुनी स्त्री० झणझणी; खाली
झुमका पुं०झूमखुं(२)झूमणुं–एक घरेणुं
झुर(-रा)ना अ०क्रि० झूरवुं; चिंताथी दुःखी थवुं (२) सुकावुं
झुरमुट पुं०झोलुं;टोळुं(२)गुटपुट शरीरने ढांकी लेवुं ते(३) झाड पांदडांथी ढंकायेली जगा; घीच झाडी
झुराना अ०क्रि० सुकावुं (२) दुख के भयथी गभरावुं (३) दूबळा पडवुं (४) स०क्रि० सूकववुं
झुर्री स्त्री० चामडीनी करचली
झुलसना अ०क्रि०उपर उपरथी दाझवुं जेथी काळुं पडी जाय(२) स०क्रि० तेवी रीते शेकवुं, दझाडवुं
झुलाना स०क्रि० झुलाववुं (२) धक्का खवडाववा; ढील करवी
झूँझल स्त्री०'झुँझलाहट'; चीड; क्रोध
झूझना अ०क्रि० 'जूझना'; झझवुं
झूठ पुं० जूठ. –सच कहना या लगाना = साचुंजूठुं कही फसाववुं (२) साचांजूठां करवां के कहेवां
झूठमूठ अ० अध्धर; फोकट
झूठा वि०जूठुं (२)नकली(३)एठुं;'जूठा'
झूमड़.झामड़ पुं०खोटो प्रपंच–जंजाळ
झूमना अ०क्रि० झोकां खावां; झूलता डोलवुं(२) (वादळ) झझूमवुं

झूमर पुं०माथा अने काननुं एक घरेणुं (२)गरवा जेवुं फरीने गावानुं एक गीत के तेवो नाच

झूर वि० शुष्क; सूकुं(२)खाली; नकामुं (३) एठुं (४) स्त्री० झूरवुं ते

झूलन पुं० हींडोळानो उत्सव

झूलना अ०क्रि०झूलवुं(२)वि०झूलतुं(३) पुं० झूलणा छंद

झूला पुं० झोलो;हींडोळो (२) झूलतो पूल (३)बे बाजू बांधी सूवा माटे करातो झोलो (४) गामडानी स्त्रीओनो एक खूलतो कबजो

झेंपना, झेपना अ०क्रि०शरमावुं;लाजवुं

झेर स्त्री०(प.)वार; विलंब (२) झघडो

झेल स्त्री०तरवामां हाथपग हलाववा ते (२)हिलोळो(३)वार; विलंब

झेलना स०क्रि०खमवुं ;सहन करवुं(२) तरवामां हाथपगथी पाणी कापवुं (३) ढकेलवुं

झोंक स्त्री० झोक;'झुकाव' (२)जोरनो धक्को (३) पाणीनो हिलोळो

झोंकना स०क्रि० झोंकवुं; पटकवुं (२) ढकेलवुं; ठेलवुं [हींचको

झोंका पुं० धक्को; झपाटो(२)झोकुं(३)

झोंकी स्त्री० जवाबदारी;बोजो;जोखम

झोंझ पुं० पक्षीनो माळो (२) अमुक पक्षीना गळानी लवडती थेली

झोंझल स्त्री० जुओ 'झूंझल'

झोंटा पुं० लांबा वाळनुं झुंड(२)हींचका नांखवा माटे देवातो धक्को

झोंपड़ा पुं० (स्त्री० **-ड़ी**) झूंपडुं

झोंपा पुं० झूमखुं; गुच्छ

झोझ पुं० जुओ 'झोंझ'

झोझा पुं० पेट;होजरी [झाटकवुं

झोरना स०क्रि०धक्को दई हलाववुं (२)

झोरी(-ली) स्त्री० झोळी

झोल पुं०शेरवा के सूप जेवी वानी(२) धातुनो गिलेट(३)कपडा के कशामां पडती झूल; झोलो (४) भूल (५) राख;भस्म (६) गर्भ (७)वि०ढीलुं; तंग नहि एवुं (८) नकामुं; खराब

झोला पुं० झोळो (२) साधुनो झब्बो (३) झटको

झौंसना अ०क्रि० जुओ 'झुलसना'

झौड(-र)पुं०झघडो;रकझक(२)वढवुं ते

झौरे अ० पासे; नजीक (२) साथे

झौवा पुं० टोपली (तुवेरनी सांठीनी)

झौहाना अ०क्रि०घूरकवुं;जोरथी वढवुं

ट

टँकना अ०क्रि० टंकावुं ('टाँकना'नुं कर्मणि)
टंकी स्त्री० टांकी
टँगना अ०क्रि०टंगावुं;लटकवुं (२) पुं० वळगणी के ते कामनी दोरी
टँगारी स्त्री० कुहाडी [मुकादम
टंड(-डै)ल पुं० मजूरोनो जमादार;
टक स्त्री०टस; टकटक नजर. **-बाँधना** = एकटसे ताकवुं
टकटकाना स०क्रि०एकटसे ताकवुं(२) टक टक अवाज करवो
टकटकी स्त्री०टस;एक नजर.**-बाँधना** = एकटसे ताकवुं
टकटो(०र)ना स०क्रि०जुओ '**टटोरना**'
टकराना अ०क्रि० टक्कर खावी; जोरथी अफळावुं (२) स०क्रि० अफाळवुं
टकसार(-ल)स्त्री० टंकशाळ. **-बाहर** = न चालतो (सिक्को) (२) अशिष्ट (शब्द या प्रयोग)
टकसाली वि० टंकशाळनुं(२)खरुं(३) शिष्ट; सर्वसंमत (४) पुं० टंकशाळी
टका पुं० जूनो सिक्को;रूपियो (२)टको; ढबु(३)धन. **-सा जवाब देना**= कोरुं परखाववुं; साफ ना कहेवी. **-सा मुँह लेकर रह जाना**= झांखा पडवुं; शरमावुं
टकासी स्त्री० रूपिये ढबु व्याज
टकी स्त्री० 'टकटकी'; टस
टकुआ पुं० त्राक
टके(-कै)त वि० टकावाळुं; धनी
टक्कर का वि० बरोबरियुं; समान
टखना पुं० घूंटी; गुल्फ
टगरा वि० बाडुं
टटका वि० तात्कालिक;ताजुं; नवुं
टटड़ी स्त्री० खोपरी [थई गयेलुं
टटपूंजिया वि० अत्यंत गरीब; निर्धन
टटोर(-ल)ना स०क्रि० स्पर्श करीने तपासवुं के ढूंढवुं (२) पारखवुं
टट्टर,टट्टा पुं० टाटुं
टट्टी स्त्री० टट्टी;टाटुं(२)चक(३)पातळी दीवाल(४)पायखानुं. **-की आड़ (या ओट)से शिकार खेलना**= कोई विरुद्ध छूपी चाल चालवी के बूरुं काम करवुं. **धोखेकी टट्टी**= जेथी लोक फसाय एवी वात के वस्तु
टट्टू पुं० टट्टु. **भाड़ेका टट्टू**=खांधियो

टन स्त्री० टनटन अवाज
टनकना अ०क्रि० टन टन वागवुं के खखडवुं (२)रही रहीने (माथामां) दर्द नांखवुं
टनमन(–ना) वि० स्वस्थ; तंदुरस्त
टनाका पुं० टनटन अवाज (२) वि० सखत (ताप)
टप पुं० गाडीनी छत्री जे पाडी के चडावी शकाय (२) टव(३) स्त्री० टपकवानो अवाज
टपक स्त्री० टपकवुं ते (२) टप टप पडवानो अवाज (३) सळक जेवुं दर्द
टपकना अ०क्रि० टपकवुं (२) गरवुं (जेम,पाकुं फल) (२) टप दईने –ओचिंतुं आवी पडवुं के गरवुं
टपका पुं०टपकवुं ते के टपकेली वस्तु (२)पाकीने खरेलुं फळ (केरी)(३) सळक जेवुं दर्द [पडवुं ते
टपकाटपकी स्त्री० टपोटप टपकवुं के
टपना अ०क्रि० 'टापना'; खाधा पीधा विना तप्या करवुं–बेठा रहेवुं
टप्पा पुं० उछाळो; फलंग (२) टप्पो; वच्चेनो फासलो(३)टक्कर;जेम के बॉल वच्चे टक्कर खातो जाय छे ते (४) टप्पो गायन
टब्बर पुं० कुटुंब; खानदान
टमाटर पुं० टमेटुं; 'टोमेटो'
टर स्त्री० कडवुं के कर्कश बोलवुं ते (२) देडकानुं बोलवुं (३) हठ
टरकना अ०क्रि० टळवुं; खसवुं (प्रेरक टरकाना)
टरटराना अ०क्रि० वक वक करवुं
टरटरी स्त्री० वकवाट
टर(-ल)ना अ०क्रि०टळवुं [उद्धत
टर्रा वि० अविनीत ने कठोर बोलनार;
टर्राना अ०क्रि० उद्धत जवाब देवो
टर्रू पुं० 'टर्रा' – माणस (२) देडको
टल्ला पुं०टल्लो;'टिल्ला' [होशियारी
टल्लेनवीसी स्त्री० टल्ले चडाववानी
टस स्त्री०भारे चीज खसवानो अवाज. –से मस न होना = जरा पण न चसकवुं
टसक स्त्री०चसक. (अ०क्रि०टसकना)
टसुआ पुं० आंसु; 'टिसुआ'
टहना पुं० (स्त्री०–नी)डाळुं; शाखा
टहल स्त्री० सेवाचाकरी (२) कामधंधो
टहलना अ०क्रि०टहेलवुं; फरवुं. टहल जाना=खसी जवुं
टहलनी स्त्री० दासी; नोकरडी
टहलुआ, टहलू पुं० सेवक; दास
टहलुई स्त्री० 'टहलनी' जुओ
टहोका पुं० धब्बो के लात;झटको;धक्को
टाँक स्त्री० टांक वजन (२)टांक;अणियुं (३)किंमतनो अडसट्टो;अंदाज(४)

सीवणनो टांको
टँकर पुं० बदमाश; लुच्चो लफंगो माणस
टँका पुं० पथ्थरनुं टांकणुं (२) पाणीनुं टांकुं (३) सीवणनो टांको (४) थींगडुं
टँकी स्त्री० नानुं टांकणुं (२) फळ चाखवा कपाती डगळी
टँग स्त्री० टांग; पग. **—अड़ाना**=नकामी डखल करवी, माथुं मारवुं. **—तले से (या नीचे से) निकलना**=हारवुं
टँगना स० क्रि० टांगवुं; टिंगाडवुं
टँग(-घ)न पुं० टांगण; पहाडी टट्टु
टँगा पुं० कुहाडो (२) टांगो; गाडी
टँगी स्त्री० कुहाडी
टँच स्त्री० जुओ 'टँका' ३, ४ अर्थ (२) वि० तकलीफ देनारुं; ऊंधी मतिनुं
टँचडा वि० जुओ 'टांच'
टँट पुं० खोपरी
टँठ(-ठा) वि० कठोर (२) दृढ; मजबूत
टँड स्त्री० खेडूतनो माळो के तेना जेवी कोई रचना (२) मोईनो टोल्लो (३) सामान मूकवानी अभराई; 'परछत्ती'
टँडा पुं० वणजारानी पोठ के माल; टांडुं
टँय टँय स्त्री० टेंटें; नकामो बकवाद. **—फिस**=धामधूम खूब पण फळ कांई नहि; खाली डंफास
टाट पुं० टाट; गूणपाट (२) साहुकारनी बेठक. **—में पाटकी बखिया**= मेळ वगरनो साज. **—उलटना**= देवाळुं काढवुं
टाटक वि० जुओ 'टटका'
टाटबाफ़ी स्त्री० भरतकाम
टाटर पुं० टाटुं (२) 'टाँट'; खोपरी
टाटी स्त्री० टाटुं [टानना)
टान स्त्री० ताण; 'तनाव'; खेंच (स० क्रि०
टाप स्त्री० घोडानी खरी के तेनो अवाज
टापना अ० क्रि० घोडाए पग पछाडवो (२) आमतेम फांफां मारवां के राह जोता तपवुं; 'टपना'
टापा पुं० मेदान (२) छलंग; कूदको (३) ढांकवा माटेनो टोपलो
टापू पुं० टापु; बेट
टामन पुं० टूमण; धंतरमंतरनो टूचको
टाल स्त्री० मोटो ढग (२) टाळवुं ते
टालटूल स्त्री० टाळवानी युक्ति; बहानुं
टालना स० क्रि० टाळवुं
टालमटूल स्त्री० जुओ 'टालटूल'
टाली स्त्री० ढोरना गळानी घंटडी
टिकट पुं० टिकिट
टिकठी स्त्री० टिपाई (२) फटका मारवा माटे गुनेगारने बांधवानी घोडी
टिकड़ा पुं० (स्त्री० **-ड़ी**) गोळ चपटो टुकडो (२) बाटी
टिकना अ० क्रि० टकवुं
टिकली स्त्री० टीकडी (२) टीलडी

टिकस पुं० टॅक्स; कर
टिकाऊ वि० टकाउ [ते
टिकान स्त्री० टकवानुं ठेकाणुं के टकवुं
टिकाव पुं० टकाव
टिकिया स्त्री०टीकडी [नायक;सरदार
टिकैत पुं० टिकायत–पाटवी कुंवर (२)
टिकोरा पुं० आंबानो मरवो
टिक्का पुं० 'टीका'; तिलक
टिक्की स्त्री० टीकडी –जमना,–बैठना,
–लगना=टीकडी लागवी; फाववुं
टिघलना अ०क्रि० जुओ 'टेघरना'
टिचन वि० [इं. एटेन्शन] तैयार
टिड्डा पुं० तीतीघोडो
टिड्डी स्त्री० तीड
टिपका पुं० टपकुं; बुंद
टिपवाना स०क्री० 'टीपना'नुं प्रेरक
टिपारा पुं० कलगीवाळो मुगट
टिमटिमाना अ०क्रि० दीवो झांखो
बळवो के बुझावा टमटमवो
टिल्ला पुं० टल्लो; धक्को
टिरफिस स्त्री०टडपड;डफांसभेर विरोध
टिलिया स्त्री० नानी मरघी के बच्चुं
टिसुआ पुं० 'टसुआ'; आंसु
टिहुनी स्त्री० घूंटण (२) कोणी
टीकना स०क्रि०'टीका'–तिलक करवुं
(२)टीक–निशानी करवी
टीकरा पुं० टेकरो

टीका पुं० तिलक; चांल्लो (२) सगाई
कर्यानो के राज्याभिषेकनो चांल्लो
(३)डाघो;चिह्न (४) रसी मुकाववी
ते; 'इन्जेक्षन' (५) [सं.] टीका
टीड़ी स्त्री० 'टिड्डी'; तीड
टीन पुं० टिन के तेनुं पतरुं या डबो
टीप स्त्री०टीपवुं ते (२) टीप; नोंध (३)
गावामां ऊंचो सूर (४) जन्मपत्री
टीपटाप स्त्री० टापटीप
टीपना स०क्रि० टीपवुं (२) दबाववुं;
चांपवुं (३) टीप करवी
टीबा पुं० टींबो; टेकरो
टीमटाम स्त्री० टापटीप
टील स्त्री० नानी मरघी; 'टिलिया'
टीला पुं०'टीबा';टेकरो;टिंबो(२)डुंगरो
टीस स्त्री० चसक; 'टसक'. –उठना,
–मारना=चसका मारवा के नांखवा
टीसना अ०क्रि० चसका नांखवा
टुंटा(-डा) वि० ठूंठुं; ठूंठुं
टुक अ० थोडुं; जरा [भिखारी
टुकड़गदा पुं० टुकडा मागी खानार;
टुकड़तोड़ पुं० आश्रित; परोपजीवी
टुकड़ा तोड़ना=बीजा पर निर्वाह करवो
टुकड़ासा जवाब देना=साफ ना पाडवी
टुकड़ी स्त्री०नानो टुकडो (२) टुकडी
टुच्चा वि० तुच्छ; क्षुद्र; हीन
टुटका पुं० टुचको; मंत्रनो प्रयोग

टुटपुँजिया वि० थोडी पूंजीवाळुं; तूटेलुं
टुटरूँ पुं० होलो
टुटरूँ टूँ स्त्री० होलानी बोली (२) वि० एकलुं(३)दुर्बळ ने पातळुं (माणस)
टुनगा पुं०, (टुनगी स्त्री०) डाळीनो आगळनो–कूंपळवाळो भाग
टूँगना स०क्रि० करपी खावुं (जेम के कूंपळ)(२)धीरे धीरे करपीने खावुं
टूँड़ पुं० मच्छर वगेरेने वे मूछो जेवुं मों पर होय छे ते
टूँड़ी स्त्री० डूंटी (२) डूंटो; फणगो
टूक,टूकर पुं० टुक; टुकडो
टूका पुं० टुकडो (२) भीख
टूट स्त्री०तूटी अलग पडेलो टुकडो(२) तूटवुं ते(३)लखाणमां रही गयेलो भाग जे पछी उमेराय छे (४) पुं० तोटो; घट
टूटना अ०क्रि० तूटवुं (२) तूटी पडवुं; हल्लो करवो. टूट टूटकर बरसना = मूसळधार वरसवुं
टूटा वि० तूटलुं(२)कमजोर(३)निर्धन
टूटाफूटा वि० तूटयुंफूटयुं
टूठना अ०क्रि० (प.) तूठवुं;प्रसन्न थवुं
टूठनि स्त्री० (प.) संतोष; प्रसन्नता
टूम स्त्री० घरेणुं (२) महेणुं
टूसी स्त्री० फूलनी कळी
टेंगना(-रा) स्त्री०एक जातनी माछली
टेंट स्त्री० ओटी (२) कपासनुं जींडवुं
टेंटी स्त्री०'करील'–केरडो के तेनुं केरडुं
टेंटुवा पुं० टोटो; गळानो हैडियो
टेक स्त्री०टेक;टेको(२) हठ (३) आदत
टेक(-का)न पुं०,टेकनीस्त्री० टेको;टेकण
टेकर(-रा) पुं० टेकरो
टेकी वि० टेकीलुं; टेकवाळुं (२) जिद्दी
टेकुआ पुं० त्राक [के तकली
टेकुरी स्त्री० दोरडुं भागवानी फरकडी
टेघरना अ०क्रि०पीगळवुं; ओगळवुं
टेढ़बिढ़ंगा वि० वांकुंचूकुं
टेढ़ा वि०वांकुं(२)कठण;मुश्केल(३)उद्धत टेढ़ी खीर=अघरुं काम.-पड़ना या होना=गरम थवुं; 'टर्राना.' टेढ़ी सीधी सुनाना=सारुंमाठुं संभळाववुं
टेढ़े अ० सीधुं नहि; वांकमां; फेरमां
टेना स०क्रि० धार काढवा पथ्थर पर घसवुं (२) मूछ मरडवी
टेम स्त्री० दीवानी टश(२)टाईम;समय
टेर स्त्री० ऊंचो अवाज(२)पोकार;हांक
टेरना स०क्रि० ऊंचे अवाजे गावुं के बोलवुं; हांक मारवी
टेरा वि० बाडुं (२) पुं० पडदो
टेवना स०क्रि० जुओ 'टेना'
टेवा पुं० जनमोत्री
टेवैया पुं० धार काढनारो
टेसू पुं० केसूडो के तेनुं फूल (२)

बाळकोनो (दशेरानो) एक उत्सव
टोंट स्त्री० चांच
टोंटी स्त्री० नाळचुं (जेम झारीनुं)
टोकटाक स्त्री० टोकणी; खणखोद
टोकना पुं० टोपलो(२) मोटो हांडो–देगडो (३) स०क्रि० टोकवुं
टोकरा पुं० टोपलो; छाबडुं
टोकरी स्त्री०टोपली; छाबडी(२)वटलोई
टोटका पुं० टुचको; 'टुटका'.–करने आना = आवीने तरत जता रहेवुं
टोटा पुं० कारतूस(२)घट; तोटो
टोनहा(०या) पुं०टुचको करनारो–भूवो
टोना पुं० टुचको; जादू (२)विवाहनुं एक जातनुं गीत (३) स०क्रि० हाथथी स्पर्शी जोवुं; 'टटोलना'
टोप पुं० टोपो; मोटी टोपी (२)टोप; लोढानी लश्करी टोपी
टोपा पुं० टोपो (२) टोपलो (३) मोटो टांको; टेभो
टोपी स्त्री० टोपी (२) बंदूक फोडवानी टीकडी; 'कॅप'
टोबा(-भा) पुं० 'टोपा'; टेभो
टोल स्त्री० टोळी (२) पाठशाळा
टोला पुं० लत्तो; वगो; महोल्लो (२) रोडुं; पथरा के ईंटनो ककडो
टोली स्त्री० नानो महोल्लो (२)टोळी
टोवना स०क्रि० जुओ 'टोना'
टोह स्त्री०खोळ;तपास(२)खबर; संभाळ
टोहना स०क्रि खोळवुं (२)'टटोलना'
ट्रेन छूटना = स्टेशनेथी गाडी ऊपडवी

ठ

ठंठ वि० ठूंठुं (झाड)
ठंड(-ढ) स्त्री० ठंडी
ठंड(-ढ)क स्त्री०ठंडक (२) शांति;तृप्ति
ठंडा(–ढा) वि०ठंडुं (२) प्रसन्न; खुश (३)शांत;निरांतवाळुं. ठंडी साँस= दुःखी श्वास;आह. ठंडे ठंडे=चुपचाप (२) खुशीथी. –होना=ठंडुं पडवुं; मरी जवुं. –मुलम्मा पुं० विना तपाव्ये करातो गिलेट
ठंढाई स्त्री० शरीरनी गरमी शमावे एवी दवा के मसालानुं पीणुं (२) रगडेली भांग
ठकठक स्त्री०ठकठक अवाज(२)खटखट
ठकठकाना स०क्रि० ठकठक करवुं; खटखटाववुं
ठकुरसुहाती स्त्री० खुशामत

ठकुराइन स्त्री॰ ठकराणी(२)क्षत्रियाणी (३) वाळंदण
ठकुराई स्त्री॰ ठकराई; ठकरात
ठकुरानी स्त्री॰ ठकराणी (२) शेठाणी
ठकुरायत स्त्री॰ ठकरात
ठगना स॰क्रि॰ ठगवुं (२) अ॰क्रि॰ ठगावुं(३) चकित थवुं. **ठगा सा** =आश्चर्यचकित [ठगनी स्त्री
ठगनी, ठगिन(-नी) स्त्री॰ ठगणी के
ठगी स्त्री॰ ठगनुं काम के ठगविद्या
ठगोरी स्त्री॰ ठगविद्या जेवी करामत के मोहिनी; जादु
ठट(-ठ) पुं॰ ठठ; भीड (२) ठाठ; सजावट. **-लगना**=ठठ जामवी
ठटना स॰क्रि॰ ठराववुं (२) सजवुं (३) अ॰क्रि॰ ठेरवुं; थोभवुं (४) सजावुं
ठटरी स्त्री॰ हाडपिंजर(२)कोई वस्तुनुं खोखुं; फरमो (३) ठाठडी
ठट्ट पुं॰ जुओ 'ठट'
ठट्ठा पुं॰ [सं. अट्टहास] ठट्ठो; मश्करी
ठठ पुं॰ ठठ; भीड
ठठकना अ॰क्रि॰ 'ठिठकना' जुओ
ठठरी स्त्री॰ जुओ 'ठटरी'
ठठाना स॰क्रि॰ ठोकवुं; ठाठां भागवां (२) अ॰क्रि॰ जोरथी हसवुं
ठठेरा पुं॰ कंसारो. **ठठेरे ठठेरे बदलाई** =जेवो माणस तेवो वहेवार. **ठठेरेकी बिल्ली**=विकट वातथी न गभरानार
ठठेरी स्त्री॰ कंसारण (२) कंसाराकाम
ठठोल पुं॰ मश्करो (२) मश्करी
ठठोली स्त्री॰ मश्करी [नांखवा
ठनकना अ॰क्रि॰ ठणकवुं (२) चसका
ठनगन स्त्री॰ मंगळ प्रसंगे दापुं लेनार वधारे लेवा करे छे ते हठ
ठनठन-गोपाळ पुं॰ ठणठण-गोपाळ; नकामी वस्तु के निर्धन खाली माणस
ठनना अ॰क्रि॰प्रारंभ थवो (२) ठराव थवो; ठरवुं (३) तैयार थवुं
ठनाका पुं॰ ठणकारो
ठपका पुं॰ ठेस; धक्को; आघात
ठप्पा पुं॰ कोई पण बीबुं के तेनी छाप (२) नकसीदार फूलगोटो
ठयना स॰क्रि॰ दृढताथी शरू करवुं के करवा लागवुं(२)ठराववुं(३)अ॰क्रि॰ स्थिर थवुं; 'ठनना' जुओ
ठरना अ॰क्रि॰ ठरवुं; ठंडीथी अकडावुं (२) खूब ठंडी पडवी
ठर्रा पुं॰ जाडुं सूतर (२) महुडी-दारू
ठवनी स्त्री॰ बेसवा के ऊठवानी रीत
ठस वि॰ठस;सज्जड(२) 'ठोस'; संगीन (३)आळसु(४)बरोबर न खखडतो (रूपियो) (५) कंजूस
ठसका पुं॰सूकी उदरस;ठांसो(२)ठोकर

ठहरना अ०क्रि० ठेरवुं;थोभवुं (२)ठरवुं
ठहराव पुं० ठराव; निश्चय (२) स्थिरता
ठहरौनीस्त्री०विवाहमां लेवडदेवडनो ठराव
ठहाका पुं० अट्टहास
ठाँठ वि० नीरस (२) वसूकेल
ठाँयँ पुं०,स्त्री० ठाम; स्थान (२) समीप
ठाँव पु० ठाम; स्थान
ठाँसना स०क्रि० ठांसवुं (२) रोकवुं(३) अ०क्रि० ठांसवुं; खांसवुं
ठाकुरद्वारा पुं०,**ठाकुरबाड़ी** स्त्री०मंदिर
ठाट,–ठ पुं०ठाठ(२)टाट्टुं(३) अधिकता (४) साधनसामग्री; साज
ठाट-बाट पुं० ठाठमाठ (२) आडंबर
ठाढ़ा वि०तद्दन सीधुं ऊंचुं–खडुं;टटार
ठान स्त्री०कार्यनो आरंभ; प्रस्थान (२) ठराव; दृढ निश्चय
ठानना,ठाना स०क्रि० तत्पर थई आरंभवुं (२) ठराववुं
ठाला पुं०बेकारी(२) कमाणीनो अभाव (३) वि० ठालुं; बेकार
ठाली वि० ठालुं; बेकार; खाली
ठिंगना वि० ठींगणुं
ठिकाना पुं०ठेकाणुं(२)स०क्रि०ठराववुं
ठिठकना अ०क्रि० खमचावुं; खचकावुं
ठिठरना,ठिठुरना अ०क्रि० टाढे ठठरवुं
ठिनकना अ०क्रि० डूसकां खाई रोवुं
ठिर स्त्री० 'ठार'; खूब ठंडी
ठिरना स०क्रि०(२)अ०क्रि०जुओ'ठरवुं'
ठिलना अ०क्रि०ठेलावुं(२)धसवुं [घडो
ठिलिया स्त्री०,**ठिल्ला** पुं० गागर; नानो
ठिलुआ वि० ठालुं; बेकार; 'निठल्ला'
ठिल्ला पुं० जुओ 'ठिलिया'
ठीक वि०साचुं;यथार्थ (२) योग्य (३) अच्छुं(४)स्थिर; पाकुं(५)अ०ठीक (६)पुं० निश्चय; ठराव. **–देना**= मनमां नक्की करवुं
ठीकठाक पुं०नक्की, ठीकठाक करेलुं ते; बंदोबस्त(२)ठराव(३)वि० बरोबर
ठीका पुं० ठेको;कंत्राट(२)पटो;इजारो
ठीकेदार पुं० ठेकादार
ठुंठ पुं० झाडानुं ठूंठुं (२) ठूंठो
ठुकना अ०क्रि० ठोकावुं(२)मार खावो (प्रेरक, ठुकवाना)
ठुकराना स०क्रि० ठोकर मारवी
ठुड्डी स्त्री०चिबुक;'ठोड़ी' [नहि
ठुर्री स्त्री० गांगडु दाणो जे शेक्ये फूले
ठुसना अ०क्रि० ठांसावुं
ठुसाना स०क्रि० ठांसाववुं
ठूँठ पुं० जुओ 'ठुंठ'
ठूँठा वि० ठूंठुं(झाड के माणस)
ठूँसना,ठूसना स०क्रि० ठांसवुं
ठेंगना वि० ठींगणुं
ठेंगा पुं०अंगूठो(२)सोटो [नो)दाटो
ठेंठी(–पी) स्त्री०काननो मेल(२)(कान-

ठेकना स०क्रि० टेकवुं(२) टकवुं; ठेरवुं

ठेका पुं०टेको(२) तबलानो ठेको (३) ठोकर(४)ठेरवानुं ठेकाणुं

ठेकाई स्त्री० कपडांने छापवामां काळी पटी ठेकवी ते [स्त्री०बोली

ठेठ वि० शुद्ध (२) बिलकुल; पूरुं (३)

ठेला पुं० ठेलो (२) ठेलण-गाडी (३) धक्कंधक्का

ठैयाँ स्त्री० 'ठाँयँ'; ठाम; ठेकाणुं

ठोंकना स०क्रि० ठोकवुं. –बजाना= तपासवुं; परखवुं

ठोकर खाना, लेना =ठोकर खावी

ठोड़ी,–ढ़ी स्त्री० चिबुक; हडपची

ठोर पुं० ठोर पकवान (२) चांच

ठोस वि० संगीन;पोलुं नहि(२)दृढ(३) पुं० ईर्षा; दाझ

ठौर पुं०ठार;ठाम(२)अवसर.–न आना =पासे न आववुं. –रखना =ठार करवुं [कवखते

ठौर कुठौर अ०कठेकाणे(२)अवसरवगर;

ड

डंक पुं० डंख (२) कलमनी टांक

डंका पुं०[सं.ढक्का] डंको. डंकेकी चोट कहना=दांडी पीटीने कहेवुं

डंगर पुं० 'डांगर'; ढोर [डांखळी

डंठल पुं० नाना छोडनुं थड के

डंड पुं०दंडो(२)दंडनी कसरत(३)दंड. –पेलना=दंड पीलवा

डंडपेल पुं०पहेलवान(२)बळवान माणस

डँवाँडोल वि० जुओ 'डांवांडोल'

डंडी पुं०दंडी; साधु(२)स्त्री०डांडी;नानो दंडो(३) दांडी (४) हाथो; दस्तो. –मारना=तोलवामां हाथचालाकी- थी दांडी नमावी देवी

डँड़ोरना स०क्रि०(प.)ढूंढवुं;खूब खोळवुं

डंडौत अ० (प.) दंडवत्

डंस पुं० डांस(२)दंशनी जगा

डकार पुं० ओडकार (२) वाघसिंहनी गर्जना.–न लेना=परायुं धन चुप- चाप हजम करी जवुं [गर्जवुं

डकारना अ०क्रि० ओडकार खावो(२)

डकैत पुं० डाकु; लूंटारो

डकैती स्त्री० डकाटी

डगडौर वि० डामाडोळ; डगुमगु

डगमगाना अ०क्रि. डगमगवुं

डगना अ०क्रि० जुओ 'डिगना'

डगर स्त्री० रस्तो; मार्ग

डगरा पुं० 'डगर' (२) छाबडुं
डटना अ०क्रि० लागवुं; मंडवुं; जारी रहेवुं. डटा रहना=लाग्या रहेवुं; न हठवुं. डटकर खाना=खूब पेट भरीने खावुं
डट्टा पुं० हूकानो मेर (२) डट्टो
डढ़ार(-रा) वि० दाढ के दाढीवाळुं
डपट स्त्री०वढवुं ते (२) घोडानी रपेट —जोरदार चाल [काढवो
डपटना स०क्रि० वढवुं; ऊंचो अवाज
डपोरसंख पुं०डिंग मारनार(२)डफोळ
डफ(०ला) पुं०डफ(२) चंग; एक वाजुं
डफली स्त्री० खंजरी
डफाली पुं० डफ बजावनार(२)डबगर
डब पुं० थेलो; खीसुं
डबडबाना अ०क्रि०डबडब आंसु आववां
डबरा पुं०पाणीनुं खावडुं के होज या कुंड
डबोना स०क्रि० 'डुबाना' जुओ
डब्बू पुं० पीरसवानो डूघो
डमरूमध्य पुं० संयोगीभूमि
डरावा पुं० डरावबा कहेली वात (२) (खेतरनो) चाडियो
डलना अ०क्रि०पडवुं;नंखावुं [प्रेरक
डलवाना स०क्रि०नंखाववुं;'डालना'नुं
डला पुं०गांगडो(२)करंडियो के छाबडुं
डलिया पुं० 'डला'; छाबडुं
डली स्त्री० गांगडी (२) सोपारी
डहकना स०क्रि० ठगवुं; छेतरवुं (२) अ०क्रि०विलाप करवो(३) दुःखथी डसकां भरवां; डसकवुं
डहकाना स०क्रि० खोवुं; गुमाववुं (२) अ०क्रि० ठगावुं (३) स०क्रि० ठगी लेवुं; छेतरवुं [आनंदी
डहडहा वि० ताजुं; लीलुं (२)प्रसन्न;
डहडहाना अ०क्रि० (वनस्पतिनुं) लीलुं ताजुं होवुं (२) प्रसन्न होवुं
डहना अ०क्रि० बळवुं (२) दाझे बळवुं (३) स०क्रि०बाळवुं(४)दुःखी करवुं
डहर स्त्री० 'डगर'; रस्तो
डाँक स्त्री० डांक; नंग नीचे जडातुं त्रांबा सोनानुं पातळुं पतरुं (२) ऊलटी; ओक [अ०क्रि०ओकवुं
डाँकना स०क्रि० कूदीने पार करवुं(२)
डाँग पुं० जंगल (२) डांग; लाठी
डाँगर वि०'डंगर';चोपगुं(२)तेनी लाश
डाँट स्त्री० काबू; वश (२) धमकी
डाँटना स०क्रि० वढवुं; धमकाववुं
डाँड़ पुं०दंडो(२)हलेसुं (३) सीमा; हद (४)दंड; 'जुरमाना'
डाँड़ना अ०क्रि० दंड करवो
डाँड़ा पुं० जुओ 'डांड १ थी ३'
डाँड़ा मेंड़ा पुं०,-ड़ी स्त्री० बे मालकी वच्चेनी हद(२)झघडो; अणबनाव
डाँड़ी स्त्री० दांडी

डाँवरा पुं० (स्त्री० -री) छोकरो; पुत्र
डाँवा(-वाँ)डोल वि० डामाडोळ
डाइन स्त्री० डाकण
डाक स्त्री०टपाल(२) 'डाँक'; ऊलटी.
-खाना, -घर पुं० टपालऑफिस.
-गाड़ी=मेलगाडी ['डाँकना'
डाकना स०क्रि० (२) अ०क्रि० जुओ
डाका पुं० डाको; धाड
डाकाज़नी स्त्री०धाड पाडवी ते;डकाटी
डाकिया पुं० टपाली
डाट स्त्री० टेको (२)दाटो (३) 'डाँट'
डाटना स०क्रि०दाटो मारवो(२)'डाँटना'
(३)'डटकर खाना;'खूब खावुं(४)
जोर करीने धकेलवुं
डाढ़ स्त्री० दाढ
डाढ़ा स्त्री० दावानळ(२) ताप
डाढ़ी स्त्री० दाढी
डाबर पुं०नीची जमीन(२)तळावडुं(३)
हाथ धोवानुं वासण; 'चिलमची'
(४) मेलुं पाणी [लीलुं नारियेळ
डाभ पुं० दर्भ;डाभ(२)आंबानो मोर(३)
डामर पुं० [सं.] धामधूम(२)ठाठमाठ
(३)चमत्कार(४)डामर [सजा
डामल स्त्री०जनमकेद; काळापाणीनी
डायन स्त्री० डाकण [छाबडुं
डार(-ल) स्त्री० डाळ (२) 'डलिया';
डालना स०क्रि० नांखवुं
डाली स्त्री० डाळी (२) 'डलिया'
डावरा पुं० 'डाँवरा' जुओ
डासन पुं० (प.) बिछानुं; पाथरणुं
डासना स०क्रि० बिछाववुं
डासनी स्त्री० खाटलो; पलंग
डाह स्त्री० दाह (२) ईर्षा
डाहना स०क्रि० बाळवुं (२) सताववुं
डिंगर पुं० ढोरनो डेरो
डिंगल वि०नीच(२)स्त्री० रजपूतानानी
चारणी भाषा [शोरबकोर
डिंब [सं.]पुं० ईंडुं(२)दंगोफिसाद(३)
डिंभ पुं० दंभ;घमंड (२) [सं.] बच्चुं
के बाळक (३) मूर्ख
डिगना अ०क्रि०डगवुं [हुकमनामुं
डिगरी स्त्री०[इं.डिग्री;डिक्री]पदवी (२)
डिठार,डिठियार वि० देखनार
डिठौना पुं० नजर न लागे माटे करातुं
काळुं टपकुं
डिपटी पुं० डेप्युटी-नायब अमलदार
डिबिया स्त्री० डबी
डिब्बा पुं० डबो (२) एक बाळरोग
डिभगना स०क्रि०(प.) मोहित करवुं;
'डहकना'
डिमडिमी स्त्री० डुगडुगी; डिंडिम
डींग स्त्री० [सं.डीन ?] डिंग; शेखी
डीठ स्त्री० दृष्टि; नजर (२) समज
डीठना अ०क्रि० देखावुं (२) स०क्रि०

देखवुं के देखाडवुं [जादूगर

डीठबंध पुं० नजरबंधी के ते करनार

डीमडाम स्त्री० ठाठमाठ

डील पुं०कद(२)डिल;शरीर. **–डौल**= शरीरनुं कद; काठुं

डीह पुं० वस्ती;गाम(२)ऊजड गामनी जगा(३) ग्रामदेवता

डुग्गी स्त्री० डुगडुगी;ढोलकी [प्रेरक)

डुबाना स०क्रि० डुबाडवुं ('डूबना'नुं

डुबाव पुं०डुबाय एटलुं ऊंडाण

डुबोना स०क्रि० जुओ 'डुबाना'

डूँगर पुं० डुंगर (२) टेकरो

डेडहा पुं० डेंडवुं साप

डेढ़ वि० दोढ. **–ईंट की मसजिद बनाना**=मळीने काम न करवुं; अतडुं रहेवुं. **–चावलकी खिचड़ी पकाना** = जमालभाईनो जुदो चोको करवो; बधाथी जुदा पडवुं

डेढ़ा वि० दोढुं

डेरा पुं० डेरो; पडाव(२)तंबू इ०पडाव नांखवानो सामान(३)घर.**-पडना** =डेरो नंखावो

डेल(–ला) पुं० रोडुं

डेला पुं० आंखनो सफेद डोळो (२) रोडुं (३) ढोरनो डेरो

डेवढ़ा वि०'डेढ़ा'(२)पुं०दोढाना आंक

डेवढी स्त्री० डेली; डोढी (२) फाटक; दरवाजो

डैना पुं० पांख

डोंगर पुं० डुंगर

डोंगा पुं० होडी (स्त्री० **–गी**)

डोई(-ही) स्त्री० डोयो; डूघो

डोब(-बा) पुं० डूबकी

डोम,डोमड़ा पुं० एक अस्पृश्य जात

डोमनी,डोमिन स्त्री० डोम स्त्री

डोर स्त्री०[सं.] दोर. **–पर लगाना**= रस्ता पर आणवुं

डोरा पुं० दोरो (२) लीटी

डोरी स्त्री० दोरी (२) पाश; बंधन

डोल पुं० डोल; बालटी (२) हींडोळो (३) डोळी (४) वि० चंचल

डोलची स्त्री० डोलचुं; नानी डोल

डोला पुं० मेनो (२) हींचकानो हेल्लो

डोली स्त्री० डोळी

डोही स्त्री० जुओ 'डोई'

डौंड़ी स्त्री०दांडी पिटाववी ते. **–देना, बजाना**=दांडी पिटाववी

डौआ पुं० लाकडानी कडछी

डौल पुं०ढंग;ढब;रीत(२)युक्ति;उपाय

ड्यौढ़ा वि०दोढुं(२)पुं०दोढा; 'डेवढ़ा'

ड्यौढ़ी स्त्री०जुओ 'डेवढी'. **–दार, –वान** पुं० दरवान

ढ

ढंग पुं० ढंग(२)उपाय;युक्ति (३) ढांग; बहानुं. –का=ढंगवाळुं; चतुर

ढंगी वि० चतुर; चालाक

ढँढोरची पुं० ढंढेरो पीटनार

ढँढोरना स०क्रि० ढूंढवुं

ढँढोरा पुं० ढंढेरो

ढँपना,ढकना अ०क्रि०ढांकवुं; छुपाववुं (२)पुं०ढांकणुं [धरीने बेसवुं

ढई स्त्री० धरणुं; त्रागुं. –देना=धरणुं

ढकनिया,ढकनी स्त्री० ढांकण;ढांकणी

ढकेलना स०क्रि०धकेलवुं [–पीवुं

ढकोसना स०क्रि०एकसाथे खूब ढींचवुं

ढकोसला पुं० ढोंग; पाखंड

ढक्कन पुं० ढांकण

ढक्का स्त्री० [सं.] मोटुं ढोल; नगारुं

ढचर पुं० सहित्यसामग्री (२) बखेडो (३) ढोंग

ढड्ढा वि०बेडोळ ने मोटुं(२)पुं०खोखुं; रूपरेखा (३) जूठो ठाठ

ढपना अ०क्रि० (२)पुं० जुओ 'ढँपना'

ढब पुं० ढब(२)आदत;प्रकृति(३)युक्ति

ढयना अ०क्रि०(दीवाल इ०)धसी आववुं –पडवुं(२)ध्वस्त–जमीनदोस्त थवुं

ढरकना अ०क्रि० ढळवुं

ढरका पुं० ढोरने कांई पावानी नाळ

ढरकी स्त्री० वणकरनो कांठलो

ढर्रा पुं०रस्तो;मार्ग(२)युक्ति;उपाय(३) ढंग; चाल

ढलकना अ०क्रि० ढळवुं (२) गबडवुं

ढलका पुं० आंखनो एक रोग

ढलना अ०क्रि०ढळवुं(२) गबडवुं (३) बीबामां ढळावुं

ढलवाँ वि०भरतर;ढाळेलुं [प्रेरक

ढलवाना,ढलाना स०क्रि० 'ढालना'नुं

ढलाई स्त्री० ढाळवानुं काम के मजूरी

ढहना अ०क्रि०जुओ 'ढयना'[ढहवाना, ढहाना प्रेरक]

ढाँचा पुं०बीबुं;फरमो(२)योजना;खरडो

ढाँस पुं० ठांसो; सूकी खांसी

ढाँसना अ०क्रि० ठांसवुं

ढाई वि० अढी

ढाक पुं०पलाशनुं झाड;खाखरो. –के तीन पात=सदाय सरखुं (निर्धन)

ढाड़ स्त्री०राड;चीस;गर्जना. –मारना =पोक मूकीने रडवुं

ढाढ़(–र)स पुं० धैर्य(२) हिंमत;दृढता

ढाना स०क्रि० धसावी पाडवुं; गबडावी नाखवुं; 'ढाहना'
ढाबर वि० मेलुं; गंदु (पाणी)
ढारना स०क्रि० 'ढालना' जुओ
ढाल स्त्री० ढाल (२) ढाळ (३) ढंग; रीत
ढालना स०क्रि० ढाळवुं (आंसु के आकार) (२) ढोळवुं; रेडवुं (३) दारू ढींचवो
ढालवाँ, ढालू वि० ढळतुं; ढोळवाळुं
ढासना पुं० अठींगण; तकियो
ढाहना स०क्रि० जुओ 'ढाना'
ढिंढोरा पुं० ढंढेरो के ते पीटवानुं ढोल
ढिग अ० पासे (२) स्त्री० किनार (३) तट; किनारो
ढिठाई स्त्री० धृष्टता; निर्लज्जता; अघटित [साहस
ढिबरी स्त्री० दीवानो खडियो के कोडियुं (२) लोढानी चाकी
ढिमका स० (स्त्री०–की) फलाणुं; असुक
ढिलाई स्त्री० ढीलाश (२) सुस्ती (३) ढीलुं करवुं ते
ढिलाना स०क्रि० 'ढीलना'नुं प्रेरक
ढिलड़ वि० ढील करनारुं; मंद
ढीठ(–ठा) वि० धीट; धृष्ट (२) साहसिक
ढीम पुं० ढीमचुं (पथ्थर के माटीनुं)
ढीमर पुं० ढेकवो (कूवामांथी पाणी खेंचवानो)
ढील स्त्री० जुओ 'ढिलाई'
ढीलना स०क्रि० ढीलुं करवुं (२) छोडवुं
ढीला वि० ढीलुं
ढुँढवाना स०क्रि० 'ढूँढना'नुं प्रेरक
ढुकना अ०क्रि० घूसवुं (२) आडमां संतावुं
ढुरहुरी, ढुर्री स्त्री० पगदंडी; पगथी
ढुलकना अ०क्रि० गबडवुं
ढुलना अ०क्रि० ढळवुं (२) रेडावुं; ढोळावुं
ढूँढ स्त्री० तपास; ढूंढवुं ते
ढूह(–हा) पुं० ढगलो (२) टेकरो
ढेंकली स्त्री० ढेकवो (२) पाणीना ढेकवा जेवी युक्तिनो खांडणियो (३) गोटमडुं [खांडणियो
ढेंकी स्त्री० 'ढेंकली'; एक जातनो
ढेबुआ(–वा) पुं० पैसो
ढेर पुं० ढेर; ढग (२) वि० खूब. –करना= मारी नांखवुं; ठार करवुं. –हो रहना या जाना=मरी जवुं (२) थाकीने लोथ थई जवुं
ढेलवाँस स्त्री० गोफण
ढेला पुं० ढेखलो; दगडुं. –चौथ=दगडा-चोथ; भादरवा सुद ४
ढैया स्त्री० अढीशेरियो (२) अढिया
ढोंढ़ पुं० कपास इ०नो दोडो
ढोंढ़ी स्त्री० नाभि; डूंटी
ढोटा(–टौना) पुं० (स्त्री०–टी) पुत्र (२) छोकरो
ढोना स०क्रि० भार वहवो (२) उठावीने लई जवुं

ढोरना स०क्रि०(प.)ढोळवुं
ढोरी स्त्री०ढोळवुं के ढळवुं ते (२) धून; लगनी
ढोलना पुं०ढोलना आकारनुं सादळियुं
ढोलनी स्त्री० पाळणुं; खोयुं
ढोला पुं० सडेली वस्तुमां पडतो धोळो कीडो–इयळ (२) गामनी सीमनुं निशान(३) देह; शरीर (४) मूर्ख–जड माणस (५) पति
ढोली स्त्री० २०० पाननी थोकडी (२) मश्करी
ढौंचा पुं० साडा चारना आंक

त

तंग पुं० (२) वि०[फा.]तंग. –आना, होना=थाकी जवुं;कायर,हेरान थई जवुं. –करना=सतावबुं. हाथ तंग होना=हाथ भीडमां होवो
तंगदस्त वि०[फा.](नाम,–स्ती)कंजूस (२) गरीव
तंगहाल वि०[फा.]गरीब(२)संकटग्रस्त
तंगी स्त्री० [फा.]ताण;टांच(२) गरीबी (३) दुःख
तंज़ पुं० [अ.] टोणो; व्यंग्य
तंतमंत पुं० जंतरमंतर [मलमल
तंज़ेब स्त्री०[फा.]एक जातनुं झीणुं सरस
तंतुवाय पुं० [सं.] वणकर;'तांती'
तंदूर पुं०[फा. तनूर]एक प्रकारनी गोळ भठ्ठी,जेमां रोटली शेकाय छे. (वि० –री) [प्रयत्न; खंत
तंदेही स्त्री० [फा. तनदिही] महेनत;
तंबीह स्त्री० [अ.] चेतवणी; नसियत
तंबूरची पुं० तंबूरावाळो
तअज्जुब पुं० [अ.] ताजुबी; आश्चर्य
तअन पुं० [अ.] तानो; महेणुं
तअल्लुक़ पुं० [अ.] संबंध(२)आधार
तअल्लुक़ः(–क़ा)पुं०[अ.]अनेक गामनी जमीनदारी (२) तालुको
तअस्सुब पुं० [अ.] तासुबी; धर्मांधता
तआला वि० [अ.] सर्वश्रेष्ठ (उदा० खुदाताला)
तआरुफ़ पुं० [अ.] परिचय; पिछान
तइनात वि० जुओ 'तैनात'
तइँ (प्रत्यय) प्रति; तरफ(२) अ० वास्ते
तई स्त्री० जलेवीनी कडाई
तक अ० सुधी; पर्यन्त ['बजेट'
तकदमा पुं० [अ. तकदिमा] अंदाज;
तक़दीर स्त्री० [अ.] तकदीर; नसीब

तक़दीरवर वि० भाग्यवान [लेवुं
तकना अ०क्रि०ताकवुं; जोवुं(२) शरण
तकबीर स्त्री० [अ.]आदर के प्रशंसा करवी ते (२) ईश्वरस्तुति (३) 'अल्लाहो अकबर' के एवा सूत्रनुं वारंवार बोलवुं ते
तकब्बुर पुं०[अ.] अभिमान; घमंड
तकमील स्त्री०[अ.]पूर्णता [अवसर
तक़रीब स्त्री० [अ.]समीपता (२) शुभ
तक़रीबन् अ० [अ.] प्रायः ; लगभग
तक़रीर स्त्री०[अ.] वातचीत(२)भाषण
तक़रीरन् अ० [अ.] मोढेथी; मौखिक
तक़र्रुरी स्त्री० [अ. तकर्रुर] निमणूक
तकला पुं० तराक (स्त्री०-ली)
तक़लीद स्त्री०[अ.] अनुकरण; नकल
तक़लीदी वि० [अ.] नकली; बनावटी
तकल्लुफ़ पुं० [अ.] शिष्टाचार
तक़वा पुं० [अ.] सदाचार
तक़वियत स्त्री० [अ.] ताकात देवी ते; पुष्टि; समर्थन [भागाकार
तक़सीम स्त्री० [अ.] वहेंचणी (२)
तक़ाज़ा पुं० [अ.] तकादो (२) वचन प्रमाणे करवा कहेवुं ते (३) प्रेरणा
तकान स्त्री० थकावट; 'थकान'
तकिया-कलाम पुं०बोलवामां केटलाक असुक शब्द के शब्दो वारंवार कहे छे ते. उदा० छते, समज्याने
तकुआ पुं० तराक
तख़फ़ीफ़ स्त्री० [अ.] कमी; न्यूनता
तख़मीनन् अ०[अ.] अंदाजथी;लगभग
तख़मीना पुं० [अ.] अंदाज; अनुमान
तख़लिया पुं० [अ.] एकांत स्थान
तख़सीस स्त्री०[अ.]विशेषता;खासियत
तख़्त-ताऊस पुं० [फा.+अ.] तख्ते-ताऊस; मयूरासन
तख़्ता पुं०[फा.]तख्तो(२)पाट(३) ता; एक कागळ(४) ठाठडी. **-उलटना** =तैयार काम कथळवुं. **-हो जाना** =अकडावुं
तख़्ती स्त्री० नानो तख्तो (२) स्लेट
तग़य्युर पुं० [अ.] मोटो भारे फेरफार
तग़ाफ़ुल पुं० [अ.] उपेक्षा; बेदरकारी
तग़ार पुं०[अ.], **तगारी** स्त्री० चणवा माटे चूनो के गारो तैयार करवानी जगा (२) तगारुं
तचना अ०क्रि० तपवुं; गरम थवुं
तज पुं० तज के तेनुं झाड
तज़किरा पुं० [अ.] चर्चा
तजम्मुल पुं०[अ.] शणगार (२) शोभा
तजर(-रु)बा पुं० [अ.] अनुभव (२) अजमायश; प्रयोग
तजल्ली स्त्री०[अ.]प्रकाश(२)ईश्वरी नूर, जेवुं मूसाने पर्वत पर मळेलुं
तजवीज़ स्त्री०[अ.] मत (२) फेंसलो;

निर्णय (३) बंदोबस्त; तजवीज
तजावुज़ पुं०[अ.] मर्यादानुं उल्लंघन; हद पार करवी ते
तज्जार पुं० [अ.] 'ताजिर'नुं ब०व०
तज्ञ वि० तज्ज्ञ; तत्त्वज्ञ; ज्ञानी
तड़का पुं० सवार (२) वघार
तड़प(–फ)ना अ०क्रि०दु:खथी तडफवुं
तड़बंदी स्त्री० तड बंधाई जवां ते
तड़ाक(॰पड़ाक) अ० तडाकभडाक; तुरंत [तरत
तड़ाका पुं० तडाको(२)अ० तडाक;
तड़ावा पुं० उपरनो रोफ के मगरूरी
तड़ी स्त्री० धोल; तमाचो (२) बहानुं
ततारना स०क्रि०गरम पाणीथी झारवुं
ततैया स्त्री० 'भिड़'; भमरी
तत्ता वि० (प.) तप्त; गरम
तदरीज स्त्री० [अ.] क्रमिकता
तदरीस स्त्री० [अ.] भणाववुं ते
तदाबीर स्त्री०[अ.]'तदबीर'नुं ब०व०
तदारूक पुं०[अ.] बंदोबस्त (२) दंड; सजा (३) शोध; तपास
तन पुं० तन;देह(२) अ० (प.) तरफ. **–को लगना**=असर पडवी (२) (खोराक)शरीरने फाववो. **–देना**= ध्यान देवुं; तन देवुं
तनक़ीह स्त्री०[अ.]तपास(२) मुकद्दमानो तपासवा जेवो मुद्दो;'इश्यु'
तनख़ा(-ख़्वा)ह[फा.]स्त्री०तनखो;पगार
तनज़न अ०[अ.] कटाक्षमां;महेणारूपे
तनज़ीम स्त्री० तंझीम; संगठन
तनज़्ज़ुल पुं०[अ.],**–ली** स्त्री०अवनति
तनतनहा अ० [फा.] एकलुं
तनतना पुं० [अ.] रोफ (२) क्रोध
तनतनाना अ०क्रि० रोफ के क्रोध देखाडवो
तनदेह वि०[फा.]तन दईने काम करनार
तनदेही स्त्री० जुओ 'तंदेही'
तनना अ०क्रि० तणावुं(२)अक्कड के टटार थवुं(३)गर्व के क्रोधथी रीसमां के अक्कड रहेवुं
तनसीफ़ स्त्री०[अ.]दुभागवुं–अधवारवुं ते (२) भाग पाडवा ते
तनहा वि० तन्हा; एकलुं; एकाकी
तनहाई स्त्री०[फा.]एकाकीपणुं(२)एकांत
तना पुं०[फा.]झाडनुं थड(२) अ० तरफ
तनाज़ा पुं० [अ.]झघडो(२)वेर;शत्रुता
तनाब स्त्री० [अ.] तंबू बांधवानी रसी
तनाव पुं०तणावुं ते;ताण(२)दोरी;रस्सी
तनावर वि० [फा.] मोटुं (२) जबरुं
तनावुल पुं० [अ.] ग्रहण करवुं ते (२) खावुं ते
तनासुख़ पुं० [अ.] विनाश(२)रूपांतर के बीजुं शरीर लेवुं ते
तनासुल पुं० [अ.] प्रजोत्पत्ति

तनि(०क) वि०थोडुं;जरा [चोळी
तनिया स्त्री० लंगोटी(२)काछडो (३)
तनी स्त्री० कपडानी कस (२) जुओ
'तनिया' (३) अ० 'तनिक'
तनूर पुं० [अ.] जुओ 'तंदूर'
तनै पुं० (प.) तनय
तनैया स्त्री० (प.) तनया
तन्ना पुं० ताणो
तन्नाना अ०क्रि०तणावुं(२) अक्कड थवुं
तन्नी स्त्री० त्राजवानां दामणां
तपाक पुं०[फा.]आवेश;जोश(२) वेग
तपिश स्त्री० [फा.] गरमी
तपे-दिक़ पुं० [फा.] क्षयरोग
तफ़ज़ील स्त्री० [अ.] श्रेष्ठता; मोटाई
तफ़्तीश स्त्री० [अ.] तपास
तफ़रक़ा पुं०[अ. तफ़रिक़ः]अंतर;फरक
(२) फासलो (३) वियोग
तफ़रीक़ स्त्री०[अ.]वहेंचणी (२) वर्गी-
करण (३) फरक (४) बादबाकी
तफ़रीह स्त्री०[अ.]खुशी; प्रसन्नता (२)
हांसी (३) सहेल
तफ़सील स्त्री०[अ.]तफसील;विगतवार
वर्णन (२) टीका;'तशरीह'
तब अ० ते वखते; त्यारे (२) तेथी
तबअ स्त्री०[अ.]प्रकृति(२) छाप; महोर
(३) ग्रंथनी आवृत्ति
तबई वि० [अ.] प्राकृतिक

तबक़ पुं० [अ.] पृथ्वीनी उपर नीचे
कल्पातो लोक (२) तबक; तासक
तबक़ा पुं० [अ.] तबक्को
तबदील वि०[अ.](नाम-ली)बदलायेलुं
तबद्दुल पुं०[अ.] 'तबदीली'; परिवर्तन
तबर पुं० [फा.] कुहाडी (२) फरसी
तबर्रा पुं०[अ.]घृणा [तबरूक
तबर्रुक पुं०[अ.]आशीर्वाद(२)परसाद;
तबल पुं० [फा.] मोटुं ढोल(२)नगारुं
तबलिया पुं० तबलची [करावबुं ते
तबलीग़ पुं०[अ.] तबलीघ; धर्मान्तर
तबस्सुम पुं० [अ.] मंद हास्य
तबाक़ पुं०[अ.]एक मोटी थाळी;तबक
तबादला पुं०[अ.]'तबदीली';परिवर्तन
तबाह वि० [फा.] (नाम,-ही स्त्री.)
बरबाद; नष्ट
तबीअत स्त्री०[अ.] तबियत(२)समज.
(किसी पर) तबीअत आना=
चाहवुं.-लगना=चाह पेदा थवी
(२)ध्यान चोंटवुं.-फड़क उठना=
खूब उत्साही के प्रसन्न थवुं
तबीअतदार वि० [फा.] समजदार(२)
भावुक; रसज्ञ
तब्दील वि०जुओ 'तबदील' [ज
तभी अ०ए ज वखते;त्यारे ज(२) तेथी
तमक पुं०जोस; तीव्रता(२) क्रोध (३)
[सं.] दम रोगनो एक प्रकार

तमग़ा पुं० [तु.] चांद (२) महोर

तमतमाना अ० क्रि०ताप के क्रोधथी चहेरो लाल थवो

तमद्दुन पुं०[अ.]नागरिकता(२)संस्कृति

तमसील स्त्री०[अ.]उदाहरण(२)उपमा

तमस्खुर पुं० [अ.] हांसी

तमस्सुक पुं०[अ.] दस्तावेज

तमहीद स्त्री० [अ.] भूमिका;प्रस्तावना

तमाँ(-मा)चा पुं० [फा.] तमाचो. **-जड़ना**=तमाचो देवो [इच्छा

तमा स्त्री०[अ. तमअ]लालच;लोभ(२)

तमाकू पुं० तमाकु. **-चढ़ाना,-भरना** =चलम के हूको भरवो

तमाम होना=पूरुं थवुं(२)मरी जवुं

तमी स्त्री० [सं.] रात (२) हळदर

तमीज़ स्त्री०[अ.]सारासार विवेक (२) पारख; पिछान (३)ज्ञान (४)अदब

तमोली पुं० तंबोळी (स्त्री० -लिन)

तय वि०[अ]समाप्त(२) निश्चित (३) निर्णीत; फेंसलो करेलुं

तरकश पुं० [फा.] तरकस; भाथो

तरका पुं० [अ.] वारसो [युक्ति

तरकीब स्त्री०[अ.] मेळ(२)रचना (३)

तरक़्क़ी स्त्री० [अ.] आबादी; उन्नति

तरग़ीब स्त्री०[अ.]उत्तेजन(२)उश्केरवुं ते (२) आकर्षण [कहेवुं

तरजना अ०क्रि० वढवुं (२) गुस्साथी

तरजीह स्त्री० [अ.] महत्त्व देवुं ते

तरजुमान पुं० [अ.] तरजुमो करनार (२) वक्ता

तरतीब स्त्री० [अ.] क्रम; व्यवस्था

तरतीबवार अ० क्रमवार [पापी

तर-दामन वि०[फा.+अ.]अपराधी(२)

तरदीद स्त्री०[अ.] खंडन (२) रदियो

तरद्दुद पुं०[अ.] चिंता; फिकर;अंदेशो

तरपर अ० उपरनीचे (२)एक पछी एक

तरफ़ैन पुं०[अ.'तरफ'नुं व.व.]बेउ पक्ष

तर-बतर वि०[फा.]भींजायेलुं;भीनुं;तर

तरबियत स्त्री०[अ.] तालीम;केळवणी

तरबूज़ पुं० [फा.तर्बुज] तरबूच

तरमीम स्त्री०[अ.]सुधारो; 'संशोधन'

तरवा पुं०जुओ 'तलवा' [खावी

तरस पुं०दया. **-खाना**=(कोई पर)दया

तरसना अ०क्रि० तरसवुं; तलसवुं

तरह स्त्री० [अ.] तरेह;भात;प्रकार(२) रीत;ढंग(३)युक्ति;उपाय(४) हाल; दशा(५)पादपूर्ति माटे आपेलुं पाद. **-देना**=जवा देवुं; क्षमा करवी

तरहटी स्त्री० तळेटी(२)नीची जमीन

तरहदार वि०[फा.]सुंदर बनावटनुं(२) शोखीन [खीण

तराई स्त्री०तळेटीनो प्रदेश(२)पहाडनी

तराज़ू पुं० [फा.] त्राजवुं

तराबोर वि० तरबोळ

तरावट,-त [अ.]स्त्री०भीनाश(२) तर भोजन [प्रकार (३) ढंग

तराश स्त्री० [फा.] काप (२) रचनानो

तराशना स०क्रि० कापवुं

तरियाना स०क्रि० नीचे–तळे करवुं के बेसाडवुं(२) ढांकवुं; छुपाववुं (३) अ०क्रि० नीचे ठरवुं

तरी स्त्री०भीनाश(२)ठंडक(३)भीनाश-भूमि(४)'तराई'(५)[सं.] होडी

तरीक़ा पुं० [अ.]रीत;ढंग(२) प्रणाली (३)उपाय;तरीको

तरेटी स्त्री० तळेटी; 'तराई'

तरेरना स०क्रि० तरेरुं थवुं

तरोई स्त्री०जुओ 'तुरई' [टोणो

तर्क पुं०[अ.]त्याग (२) [सं.] तर्क (३)

तर्कश पुं०[फा.]तरकस [(३)रचना

तर्ज़ पुं०[अ.]प्रकार;तरेह(२)रीत; ढंग

तर्जुमा पुं० [अ.] 'तरजुमा'; तरजुमो

तर्रार वि० [अ.] वाचाळ (२) चपळ

तलक अ० (ग्राम्य) 'तक'

तलक़ीन स्त्री०[अ.]शिखामण; समजण

तलख़ वि०जुओ 'तल्ख' [काटेडो

तलछट स्त्री०प्रवाही नीचे ठरतो कांप के

तलना स०क्रि० तळवुं

तलपट वि० 'चौपट'; नष्ट; बरबाद

तलफ़ वि० [अ.] जुओ 'तलपट'

तलफना अ०क्रि०जुओ'तड़पना';तलफवुं

तलफ़्फ़ुज़ पुं० [अ.] उच्चारण

तलब स्त्री०[अ.]तपास;शोध(२)तलप; इच्छा(३)जरूर;मांग(४)पगार(५) बोलाववुं ते. –गार वि० चाहनार; इच्छुक.–नामा पुं० समन्स

तलबाना पुं०[फा.]साक्षीओ बोलाववा अदालतने अपातो खरच

तलबी स्त्री०[अ.]मांग(२) बोलाववुं ते

तलबेली स्त्री० तालावेली

तलवा पुं०पगनुं तळियुं. तलवे चाटना =अति खुशामत करवी. तलवे छलनी होना = खूब चालीने तळियां चाळणी थई जवां. तलवोंसे आग लगना=भारे क्रोध चडवो

तलहटी स्त्री० तळेटी

तला पुं० तळियुं (२) सखतळी

तलाक़ पुं० [अ.] तलाक; फारगती

तलातम पुं०[अ.] मोटुं मोजुं; लोढ

तलाफ़ी स्त्री०[अ.] निवारण; प्रायश्चित्त

तलाश स्त्री० [तु.] तलाश; खोज (२) जरूर; आवश्यकता

तलाशी स्त्री० [फा.] तपास; खोळ

तली स्त्री० तळियुं (२) तळिये ठरेलो कचरो; 'तलछट' [उपर

तले अ०तळे;नीचे. –ऊपर अ०तळे-

तलेटी स्त्री० तळियुं (२) तळेटी

तलैया स्त्री० तलावडी

तलौंछ स्त्री०जुओ'तलछट' [अप्रिय
तल्ख़ वि०[फा.]कडवुं (२)बेस्वाद(३)
तल्ली स्त्री० सखतळी; 'तला'
तवक़्क़ा स्त्री० आशा
तवक़्क़ुफ़ पुं० [अ.] विलंब; वार
तवक्कुल पुं० [अ.] ईश्वरश्रद्धा (२) परमार्थ दृष्टि
तवज्जह स्त्री०[अ.]ध्यान (२)कृपादृष्टि
तवना अ०क्रि० तवावुं; तपवुं
तवल्लुद वि०[अ.] जन्मेलुं. -होना= जनमवुं
तवा पुं०तवो. तवेकी बूँद =क्षण वार टकनारुं (२) जेनाथी जराय तृप्ति न वळे एवुं
तवाज़ा स्त्री०[अ.]आदर(२) आतिथ्य
तवाना वि०[फा.]बळवान (नाम,-नाई)
तवायफ़ स्त्री० [अ.'तायफा'नुं ब.व.] वेश्या(२)तायफो; (गानार बजावनारनी) टोळी
तवारा पुं० (प.) ताप; ताव
तवालत स्त्री०[अ.]लंबाई(२)अधिकता (३) झंझट; आपत्ति
तवील वि० [अ.] लांबुं
तवेला पुं०[अ.तवेल]तबेलो [निदान
तशख़ीस स्त्री०[अ.] ठराव (२) रोगनुं
तशदीद स्त्री०[अ.] कठोरता;सखताई; अत्याचार (२) लेखनमां अक्षरनुं द्वित्व सूचववा फारसी लिपिमां वपरातुं चिह्न
तशद्दुद पुं० [अ.] 'तशदीद'; कठोरता
तशफ़्फ़ो स्त्री०[अ.] सांत्वन(२) संतोष
तशबीह स्त्री०[अ.]उपमा(२)उदाहरण
तशरीफ़ स्त्री० [अ.] मोटाई; महत्ता. -लाना=पधारवुं.-रखना=बिराजवुं
तशरीह स्त्री०[अ.] टीका; टिप्पण (२) शरीरशास्त्र
तशवीश स्त्री० [अ.] फिकर;चिंता
तश्तरी स्त्री० [फा.] रकाबी
तस वि० (२) अ०(प.) तेवुं; 'तैसा'
तसकीन स्त्री० [अ.] तसल्ली; दिलासो
तसदीक़ स्त्री०[अ.]सत्यता(२)प्रामाण्य; समर्थन(३)साक्षी [(२)तस्दी
तसदीअ(-ह) स्त्री०[अ.]माथुं दुःखवुं ते
तसद्दुक़ पुं० [अ.] दान (२) बलिदान
तसनीफ़ स्त्री० [अ.] ग्रंथ-रचना
तसफ़िया पुं० जुओ 'तस्फ़िया'
तसवीह स्त्री० [अ.] तसवी; माळा
तसमा पुं० [फा.] चामडानो पटो
तसर्रुफ़ पुं०[अ.]खर्च(२)उपयोग(३) चमत्कार
तसला पुं० तांसळुं (स्त्री० -ली)
तसलीम स्त्री०[अ.]सलाम; प्रणाम(२) स्वीकृति [धीरज
तसल्ली स्त्री०[अ.] तसल्ली; दिलासो(२)

तसव्वुफ़ पुं० [अ.] जुओ 'तसौवफ़'
तसहीह स्त्री०[अ.]शुद्ध करवुं ते(२)मूळ साथे तपासवुं ते
तसू(-स्सू) पुं० तसु
तसौवफ़ पुं० गूढवाद; सूफीवाद (२) ईश्वरपरायणता
तस्फ़िया पुं०[अ.]साफ के स्वच्छ करवुं ते (२) झघडानो निपटारो
तह स्त्री०[अ.]थर (२) पातळुं पड (३) तळियुं(४)गडी. -की बात=गुप्त वात-रहस्य. -तोड़ना=झघडो पताववो. -तक पहुँचना=मर्म पामवो
तहक़ीक़(-क़ात) स्त्री०[अ.] शोधखोळ
तहक़ीर स्त्री० अपमान; बेआबरू
तहख़ाना पुं० [फा.] भोंयरुं
तहज़ीब स्त्री० [अ.] शिष्टाचार (२) सभ्यता; संस्कृति [सभ्य
तहज़ीब-याफ़्ता वि०[अ.+फा.] शिष्ट;
तहत पुं०[अ.]अखत्यार (२) अधीनता
तहत-उस्सरा स्त्री० [अ.] पाताळ
तह-दर्ज़ वि० [फा.] बिलकुल नवुं
तहपेच पुं० [फा.] बोतानुं [लुंगी
तहबंद पुं० [फा.], तहमत(-द) स्त्री०
तहरीक स्त्री० [अ.] आंदोलन (२) उश्केरणी (३) प्रस्ताव; ठराव
तहरीर स्त्री०[अ.]लेखन-शैली के लेख
तहलका पुं०[अ.]मोत(२)बरबादी(३) हिलचाल; खळभळाट
तहलील स्त्री० [अ.] पीगळवुं ते (२) पचवुं ते [(३) खजानो
तहवील स्त्री० [अ.]सुपरत(२)अनामत
तहस-नहस वि०बरबाद; खेदानमेदान
तहसील स्त्री०[अ.] महेसूल उघराववुं ते(२)तहसील;तालुको के महेसूल (३)महेसूलनी कचेरी [राववुं
तहसीलना स०क्रि०वसूल करवुं; उघ-
तहाँ अ० त्यां; तहीं
तहाना स०क्रि० लपेटवुं
तहीं अ० त्यां ज; तहीं ज; 'वहीं'
तही वि०[फा.]रहित; वगरनुं. जेम के, तही-दस्त=खाली हाथनुं; निर्धन. तही-मग़्ज़=मूर्ख
तहोबाला वि०[फा.]ऊंधुंछतुं(२)बरबाद
ताँत स्त्री० तांत(२)तंतु;दोरी(३)पणछ (४) साळनुं राच
ताँता पुं० पंक्ति;हार [पुं०वणकर
ताँती स्त्री० पंक्ति (२)ओलाद;पेढी(३)
ताअत स्त्री०[अ.]सेवाचाकरी(२)उपासना
ताईं अ० प्रति; पासे; तरफ
ताई स्त्री० मोटी काकी(२)तावली(३) टाढियो ताव [टेको
ताईद स्त्री०[अ.]तरफदारी(२)समर्थन ;
ताऊ पुं० मोटा काका

ताऊन पुं० [अ.] प्लेग; मरकी

ताऊस पुं० [अ.] मोर(२)ताऊस वाद्य

ताक़ पुं० [अ.] ताकुं(२)वि० एकी(३) अजोड. **—पर धरना या रखना**=पड्युं रहेवा देवुं

ताक स्त्री० ताकवुं ते (२)स्थिर दृष्टि(३) ताक;तक;लाग (४) तलास. **—में रहना**=लाग जोता रहेवुं.**—रखना, लगाना**=लाग ताकवो

ताक-झाँक स्त्री०वार वार के छूपुं जोवुं ते

ताक़त स्त्री०[अ.] ताकात

ताक़तवर वि० ताकातवाळुं

ता कि अ० [फा.] जेथी करीने

ताकीदन् अ० ताकीदथी; आग्रहपूर्वक

ताकीदी वि० [अ.]ताकीदनुं; जरूरी

ताख़ीर स्त्री० [अ.] वार; विलंब

ताग(-गा) पुं० तागडो; दोरो

तागना स०क्रि०(गोदडा इ० मां)दूर दूर दोरा नांखवा

ताज़ा वि० [फा.]ताजुं (नाम, **—ज़गी**)

ताज़िया पुं० [अ.] ताजियो

ताजिर पुं० [अ.] वेपारी

ताज़ी पुं०[फा.]अरबी घोडो(२)स्त्री० अरबी भाषा

ताज़ीम स्त्री० [अ.] ताजीम; अदब

ताज़ीमी सरदार पुं० प्रतिष्ठावान–मोटो सरदार

ताता वि० तातुं; तपेलुं; गरम

तातील स्त्री० [अ.] रजा; छुट्टी

तादाद स्त्री० [अ.] संख्या; गणतरी

तानना स०क्रि० ताणवुं; खेंचवुं (२) केदमां नांखवुं

ताना पुं०ताणो(२)[अ.] तानो; महेणुं (३) स०क्रि० ताववुं

ताना-बाना पुं० ताणो-वाणो

तानारीरी स्त्री० साधारण गावुं ते

तानी स्त्री०ताणी; ताणानुं सूतर

तापतिल्ली स्त्री० प्लीहानो रोग

तापस्वेद पुं०[सं.]कोई रीते गरमी आपी निपजावेलो परसेवो

ताफ़्ता पुं० [फा.] ताफतो; टाफेटो

ताब स्त्री०[फा.]ताप(२)चमक(३)शक्ति (४) धैर्य [झट झट

ताबड़तोड़ अ०लगातार;एक पछी एक;

ताबदान पुं० [फा.] बारी के प्रकाश माटेनी जाळी

ताबीर स्त्री० (स्वप्ननुं शुभअशुभ) फळ

ताम पुं०तामस;क्रोध(२)तमस; अंधारुं (३) वि०भीषण (४) [सं.] दोष; विकार (५)दुःख

तामलेट पुं० [इं. टंब्लर] टिननुं टमलर

तामीर स्त्री०[अ.] बांधकाम (मकाननुं)

तामील स्त्री०[अ.](आज्ञा)पालन;अमल करवो ते

ताम्मुल पुं०[अ.]संदेह;दुविधा;आनाकानी

तायफ़ा पुं०;स्त्री०[फा.]वेश्या(२)गानार-
नी के वेश्यानी मंडळी

तायर पुं० [अ.] ऊडनार (२) पक्षी

ताया पुं०(स्त्री०ताई)'ताऊ';मोटाकाका

तार पुं०(२)वि०तार.–जमना,बैठना
या बँधना=वेंत बेसवो; बरोबर
गोठवावुं

तारघर पुं० तार-ऑफिस

तारपीन पुं० टर्पेन्टाईन [तार

तार-बर्क़ी पुं० वीजळीथी खबर देनारो

तारा पुं०[सं.] तारो.–गिनना=ऊंघ
वगर रात काढवी. –टूटना=तारो
खरवो. तारे तोड़ लाना=भारे
के चालाकीनुं काम करवुं

ताराज पुं०[फा.]लूंटफाट (२) ताराज
थवुं ते;नाश;खुवारी [(२)काळुं

तारीक वि०[फा.](नाम,–की) अंधारुं

तारीफ़ स्त्री०[अ.]लक्षण(२)विशेषता;
गुण (३)वर्णन (४)तारीफ;प्रशंसा

ताल पुं० ताल (२)तळाव. –ठोंकना
लडवाने आह्वान देवुं [वगर

ताल बेताल अ० टाणेकटाणे;ठेकाण।

तालमेल पुं० ताल–सूर मेळववो ते
(२) योग्य अवसर (३) बरोबर
योजना; तालमेल

ताला पुं० ताळुं

तालाकुंजी स्त्री० ताळाकूंची

तालाब पुं० तळाव

तालाबेली स्त्री०'तलबेली'; तालावेली

तालिका स्त्री०कूंची(२)सूची;अनुक्रम-
णिका (३) यादी

तालिब पुं०[अ.]शोधनार(२)पूछनार;
मागनार

तालिब-इल्म पुं०[अ.] विद्यार्थी

ताली स्त्री०[सं.] कूंची (२)ताडी (३)
ताळी (४) नानुं 'ताल'–तळावडी

तालु(–लू) पुं० ताळवुं. –में दाँत
जमना=खराब दहाडा आववा.–से
जीभ न लगना=बोल्या करवुं;जीभ
झाली न रहेवी

ताल्लुक पुं० जुओ 'तअल्लुक़'

ताव पुं० ताप;गरमी (२) अधिकार के
सत्तानो गर्व(३)ताव;ता.–आना=
जोईए तेवुं तपवुं. –खाना=गरम
थवुं.–देना=गरम करवुं. मूँछों पर
ताव देना=मूछ पर ताल देवी.
–चढ़ना=प्रबळ इच्छा थवी

ताव भाव पुं० लाग; मोको [दंड

तावान पुं०[फा.]नुकसानीनी भरपाई;

तावीज़ पुं० [अ. तअवीज़] तावीज

ताश(–स) पुं०[अ.]एक प्रकारनुं कसबी
कपडुं (२) गंजीफो

ताशा(–सा) पुं०[अ. तासः]ताछुं;तासुं

तासु स० (प.) तेनुं ['उससे'
तासूँ(-सों) स० (प.) ते वडे के प्रत्ये;
तास्सुब पुं० जुओ 'तअस्सुब'
ताहम अ०[फा.]तोपण [खीचडी
ताह(–हि)री स्त्री० [अ.]एक प्रकारनी
तिंतिडी स्त्री० [सं.] आमली
तिकोना(–निया) वि० त्रिकोण
तिक्की स्त्री० पत्तांनी तीरी–तरियो
तिगुना वि० तगणुं
तिजरा पुं० जुओ 'तिजारी'
तिजारत स्त्री०[अ.]वेपार;धंधोरोजगार
तिजार पुं०,तिजारी स्त्री०त्रीजे दिवसे आवतो ताव
तिड़ी-बिड़ी, तितर बितर वि० छिन्न-भिन्न; अस्तव्यस्त; वेरणछेरण
तित अ० (प.) त्यां (२) ते बाजु
तितली स्त्री० पतंगियुं
तित-लौकी स्त्री०कडवी तूमडी के दूधी
तितारा पुं० त्रण तारनुं वाद्य
तितिंबा(–मा) [अ.]पुं०बचत;परिशिष्ट
तिते वि० (प.) 'उतने'; एटलुं
तितेक वि० (प.) 'उतना'; एटलुं
तितै अ० (प.) त्यां
तितैया पुं० भमरी
तितो वि० (प.) 'उतना'; एटलुं
तिधारा पुं०[सं.त्रिधार]एक जातनो थोर
तिन स० (प.) 'तिस'नुं ब०व०
तिनक(-ग)ना अ०क्रि० चिडावुं
तिनका पुं०तृण(२)तणखलुं. –तोड़ना =संबंध तोडवो(२)नजर न लागे एम करवुं के इच्छवुं (स्त्री बाळकने करे छे ते). तिनकेको पहाड़ करना =रजनुं गज करवुं [त्रिपाई
तिपाई स्त्री०त्रण पायानी घोडी के टेबल;
तिफ़्ल पुं० [अ.] बच्चुं; बाळक
तिबाबत स्त्री० [अ.] तबीबी; वैदुं
तिबारा अ० त्रीजी वार
तिब्ब स्त्री०[अ.]हकीमी. (वि० -ब्बी)
तिमुहानी स्त्री० त्रण मों—मार्ग के फाटकवाळुं स्थान
तिय(–या) स्त्री० त्रिया; स्त्री
तिरकुटा पुं० त्रिकटुं;सूंठ मरी ने पीपर
तिरछा वि० [सं. तिरश्चीन] तीरछुं
तिरछ(–छा)ई स्त्री० तीरछापणुं
तिरछौहाँ वि० जरा तीरछुं
तिरछौहें अ० वांकथी; वक्रतापूर्वक
तिरना अ०क्रि० तरवुं
तिरनी स्त्री० घाघरानुं नाडुं
तिरपाई स्त्री० त्रिपाई
तिरपाल पुं० छापराना छाजनुं सांठी वगेरे (२) शणनी ताडपत्री
तिरमिरा पुं० आंखे अंधारां आववां के खूब प्रकाशमां ते अंजावी ते
तिरमिराना अ०क्रि० आंखो अंजावी

तिरयाक़ पुं०[अ.]सापनो महोरो (२) सर्व रोगनी रामबाण दवा
तिरानबे वि० त्राणुं; ९३
तिराना स०क्रि० तरावबुं (२) तारबुं
तिरासी वि० त्र्याशी; ८३
तिरेन्दा पुं०समुद्रमां तरतुं रखातुं नीचेना पहाड के विघ्ननुं निशान; 'बॉय' (२) जाळमां माछली फसाई एम बतावनार तरतुं रखातुं चिह्न
तिलंगा पुं०अंग्रेजी फोजनो देशी सिपाई
तिलंगाना पुं० तैलंगण देश
तिलमिल स्त्री० जुओ 'तिरमिरा'
तिलमिलाना अ०क्रि०जुओ'तिरमिराना'
तिलवा पुं० तलनो लाडु
तिलस्म पुं० जादु; चमत्कार
तिलहन पुं० तेली बियांना छोड
तिला पुं० [अ.] सोनुं (वि० –लाई)
तिलाक़ पुं० 'तलाक़' जुओ
तिल्ली स्त्री० प्लीहा (२) तल
तिशना पुं० [अ.] तानो; महेणुं
तिस स० (प.) 'उस' 'ता'नुं विभक्ति पूर्वेनुं रूप [छतां
तिस पर=ते उपरांत; वळी (२) तोपण;
तिसरैत पुं० त्रीजो–तटस्थ माणस
तिहरा वि० 'तेहरा'; त्रेवडुं (२) त्रीजी वारकुं.–ना स०क्रि०'तिहरा' करवुं
तिहवार पुं० [सं. तिथिवार] तहेवार
तिहाई स्त्री० त्रीजो भाग (२) फसल
तीतर पुं० तेतर पक्षी
तीता वि० तीखुं (२) तिक्त; कडवुं
तीन वि० त्रण
तीनत स्त्री० [अ.] प्रकृति; स्वभाव
तीमारदार वि० [फा.] सहानुभूतिवाळुं (२) रोगीनी बरदास करनार
तीय(–या) स्त्री० स्त्री; ओरत
तीली स्त्री०सळी के तार(२)पगनी पिंडी
तीस वि०त्रीस. –दिन,तीसो दिन= हंमेश
तीसरा वि० त्रीजुं
तीसी स्त्री० अळसी (२) फळ गणवानुं (१५०नुं) एक मान
तुंद वि०[फा.] तुंड; चडाउ; उग्र (२) विकट; घोर
तुक स्त्री० टूक;तूक. –जोड़ना=जोड-कणा जेवी रद्दी क़विता करवी
तुकार स्त्री० तुंकारो
तुकारना स०क्रि० तुंकारवुं
तुख़्म पुं०[अ.] तुखम; बीज
तुग़यानी स्त्री० [अ.] (नदीनुं) पूर
तुझ स०'तू'नुं विभक्ति पूर्वेनुं रूप
तुज़ुक पुं०[तु.] शोभा (२) कानून (३) आत्मकथा (प्रायः बादशाहनी)
तुझे स०'तू'नुं ४थी तथा बीजीनुं रूप
तुड़वाना,तुड़ाना स०क्रि०तोडाववुं(२)

मोटा सिक्कानुं परचूरण कराववुं
तुतलाना अ०क्रि० तोतडावुं
तुनक वि० [फा.] नाजुक (२) कमजोर
तुनक-मिज़ाज वि०[फा.]जरामां छंछेडाई जाय एवा स्वभावनुं
तुफ़ैल पुं० [अ.] साधन
तुम स० तमे
तुम्हारा स० तमारुं
तुम्हें स० तमने; 'तुमको'
तुरई स्त्री० तूरियुं [सीववुं ते
तुरपई(–न) स्त्री० दोरो भरी ओटीने
तुरपना स०क्रि०दोरो भरी ओटीने सीववुं
तुरबत स्त्री०[अ.]कबर [जलदी
तुराई स्त्री०तळाई;गादलुं (२)अ०तरत;
तुर्की-ब-तुर्की जवाब देना=रोकडो–बरोबर उत्तर देवो
तुर्रा पुं०[अ.] तोरो (२) कलगी (३) वि० [फा.] अद्भुत
तुर्श वि०[फा.] (नाम,–र्शी) खाटुं
तुलना स्त्री०तुलना(२)अ०क्रि०तोलावुं (३) गाडीनां पैडां आंजवां (४) तैयार थवुं [आंजवानी मजूरी
तुलवाई स्त्री०तोलवानी मजूरी(२)पैडां
तुलवाना स०क्रि०तोलाववुं [के क्रिया
तुलाई स्त्री०रजाई(२)तोलवानी मजूरी
तुलुअ पुं०[अ.] (सूर्यादिनो) उदय
तुष,–स पुं० [सं.] अनाजनुं भूसुं; फोतरुं (खास चोखानुं)
तुसी स्त्री० जुओ 'तुस'
तूँ, तू स० तुं. तू तड़ाक, तू तुकार, या तू तू मैं मैं करना=सामसामे तुंतां करीने बोलाबोली करवी
तूत पुं०[फा.] एक फळझाड; 'शहतूत'
तूदा पुं० [फा.] ढगलो (२) हदनी निशानी; पाळी (३) बांध
तूफ़ान पुं०[अ.] तोफान (२) तहोमत (३) आफत (४) भारे मोटुं पूर; रेल (वि० –नी)
तूम तड़ाक स्त्री०[फा.] ठाठमाठ;सजावट
तूमार पुं०[अ.] वातनो व्यर्थ विस्तार; लांबुं पुराण.(–बाँधना श०प्र०)
तूल पुं०[अ.] लंबाई; विस्तार
तूल-तवील वि० लांबुंपहोळुं; विस्तृत
तूस पुं० जुओ 'तुस' (२) [अ.] उत्तम पशमीनो के कामळी
तें (प्रत्यय) द्वारा; थी (२) –ना करतां (३) –मांथी
तेंतालिस वि० तेंताळीस
तेंति(-ती)स वि० तेत्रीस; ३३
तेंदुआ पुं० चित्ता जेवुं एक हिंस्र प्राणी
तेग़ स्त्री० [अ.] तलवार
तेगा पुं० खांडुं; कटार
तेज़ वि०[फा.] तेज;तीक्ष्ण;उग्र; चपळ
तेरह वि० तेर; १३

तेरहीं स्त्री० तेरमुं

तेरा स० तारुं. **तेरी सी** = तारा लाभ के मतलबनी वात (प.)

तेरे अ०(प.)'से';ने; प्रति–एवा अर्थमां

तेलहन पुं० तेली बी

तेवन पुं०बाग (२) खेल; क्रीडा

तेवर पुं० गुस्सानी नजर. **–चढ़ना**= क्रोधनी आंख थवी. **–बदलना या बिगड़ना** = मिजाज जवो

तेशा पुं० [फा.] वांसलो

तेहरा वि०, **तेहराना** स०क्रि० जुओ 'तिहरा, तिहराना'

तेहवार पुं० तहेवार;'तहिवार,त्योहार'

तेहा पुं०गुस्सो(२)शेखी;घमंड(वि०**-ही**)

तेही स० (प.) एने; तेने

तैंतालीस वि० तेंताळीस

तैंतीस वि० तेत्रीस

तै अ० एटलुं (२) पुं० [अ.] फेंसलो (३) समाप्ति (४) वि० जुओ 'तय'

तैनात वि० नियत; मुकरर (नाम,**-ती**)

तैयार वि० [अ.] तैयार (२) हृष्टपुष्ट

तैरना अ०क्रि० तरवुं

तैश पुं० [अ.] क्रोध; ग़ुस्सो

तैसा वि० तेवुं. **तैसे** अ० तेम

तोंद स्त्री० फूलेलुं पेट; दुंद; फांद

तोंदल वि० दुंदाळुं; फांदवाळुं

तो अ० तो (२) स० (प.) तारुं

तोड़ पुं० तोडवुं ते (२)नदीनुं जोरथी वहेण(३) दहींनुं पाणी (४) तोड; निकाल करवानो उपाय

तोड़ा पुं०तोडो(२)१००० रू. राखवानी थेली (३) नदीनो कांठो (४) पलीतो(५)चकमकथी आग करवानो लोढानो ककडो [तोतडावुं

तोतरा(**–ला**) वि०तोतडुं. **–ना** अ०क्रि०

तोता पुं० [फा.] तोतो; पोपट (२) बंदूकनो घोडो. **हाथोंके तोते उड़ जाना**=बहु गभराई जवुं. **तोतेकी तरह आँखें फेरना या बदलना**= ('बेमुरव्वत होना') बेशरम बनवुं [**–श्मी**)

तोताचश्म पुं० [फा.] बेशरम (नाम,

तोदा पुं० जुओ 'तूदा'

तोबड़ा पुं० तोबरो

तोबा स्त्री०[अ. तौबः]तोबा.**-बुलवाना**= तोबा पोकरावववी.**-तिल्ला करना या मचाना**=रडतां के नम्र बनीने तोबा पोकारवी

तोशक स्त्री०[तु.] रूनी गादी

तोशदान पुं० [फा.] भाथानी थेली के बचकी;कारतूसनी सिपाहीनी थेली

तोशा पुं०[फा.] वटेशरी; भाथुं

तोशाख़ाना पुं० [तु.+फा.] वस्त्रादिनो अमीर वगेरेनो भंडार;तोशाखानुं

तोहफ़गी स्त्री० [फा.] उत्तमता
तोहफ़ा वि०[अ.] उमदा; उत्तम (२) भेट; उपहार
तोहमत स्त्री० [अ.] तहोमत
तोहमती वि० तहोमत मूकनार
तोहि स० तने
तौंस स्त्री०तापथी लागती सखत तरस
तौंसना अ०क्रि० "तौंस"–तरस लागवी
तौंसा पुं० सखत गरमी
तौक़ पुं० [अ.] गळानुं एक घरेणुं (२) कांठलो (३) चपरास
तौक़ीर स्त्री० [अ.] आदर; सन्मान
तौफ़ीक स्त्री०[अ.] ईश्वरकृपा(२) श्रद्धा
तौबा स्त्री० [अ.] तोबा
तौर पुं०[अ.]ढंग;रीत;चाल (२) दशा
तौर-तरीक़ा पुं०[अ.]चालचलगत;रहेणी
तौरा(-रे)त पुं० यहूदीओनो धर्मग्रंथ जे मूसाने प्रगट थयेलो;जूना करार
तौल पुं०[सं.] त्राजवुं(२) स्त्री० तोल; वजन (३) तोलवुं ते; 'तौलाई'
तौलना स०क्रि० तोलवुं
तौला पुं० तोलाट
तौलिया स्त्री०; पुं० टुवाल
तौसीअ स्त्री० [अ.] विस्तार; लंबाण
तौसीफ़ स्त्री० [अ.] प्रशंसा; स्तुति
तौहीन(–नी) स्त्री० [अ.] अपमान; अनादर; बेआबरू
त्यागपत्र पुं० [सं.] राजीनामुं
त्यों अ० तेवी रीते; तेम (२) तत्काल
त्योरुस पुं० बे वर्ष पूर्वेनुं के बे वर्ष पछी आवनारुं वर्ष
त्योरी स्त्री० जुओ 'तेवर'
त्योहार पुं० तहेवार
त्योहारी स्त्री०तहेवारने दहाडे बाळको, नोकर वगेरेने मीठाई इ०अपाय ते
त्यौनार पुं० ढंग; रीत; 'तौर'
त्यौर पुं० जुओ 'त्योरी'
त्रिपिताना अ०क्रि० (प.) धरावुं; तृप्त थवुं (२) स०क्रि० तृप्त करवुं

थ

थंब(–भ) पुं० थंभ; थांभलो (२) टेको (स्त्री० –बो)
थकना अ०क्रि० थाकवुं(२)धीमुं पडवुं; रोकावुं (३) घडपणथी अशक्त थवुं (४) मुग्ध थवुं
थकान स्त्री० थकावट; थाक

थका-माँदा वि० थाकेलुं
थकाव(–ह)ट स्त्री० जुओ 'थकान'
थकित वि० थाकेलुं (२) मुग्ध
थक्का पुं० जामेलो थर, पोपडी. जेम के दहींनी
थगित वि० स्थगित (२) शिथिल
थन पुं० थान (चोपगानुं); आंचळ
थनी स्त्री० अजागलस्तन
थनैत पुं० गामनो मुखी के तलाटी
थपकना स०क्रि० थाबडवुं
थपकी स्त्री० थाबडी
थपड़ा पुं० टपलो
थपड़ी स्त्री० ताळी (२) टपली
थपथपाना अ०क्रि० थाबडवुं
थपुआ पुं० नळियुं (छतुं गोठववानुं जरा चपटुं होय छे ते)
थपेड़ा पुं० थप्पड (२) धक्को; आघात
थमना अ०क्रि० थंभवुं; थोभवुं
थर स्त्री० थर; पड
थरथराना,थर्राना अ०क्रि० थरथरवुं
थल पुं० थळ;स्थळ(२)(कठण) जमीन (३) रण (४) वाघसिंहनी बोड
थलकना अ०क्रि० लथडी–लची पडी झूलवुं(२)जाडुं शरीर लथडपथड थवुं
थलथल वि०लथडपथड झूलतुं(क्रि०–ना)
थलबेड़ा पुं० नाव थोभवानी जगा–घाट
थवई पुं० कडियो (२) स्थपति
थहाना स०क्रि०ऊंडाण मापवुं(२)अंदाज काढवो [तपास
थाँग स्त्री० चोरडाकुनुं गुप्त स्थान (२)
थाँवला पुं० खामणुं (झाडनुं); थाणुं
था अ०क्रि० हतुं (स्त्री० थी)
थाती स्त्री० थापण;संघरो(२)अनामत
थान पुं०थान;स्थान(२)देवदेवीनुं थानक (३)गमाण के तबेलो(४)थान;ताको (५) संख्या
थाना पुं० थाणुं
थानेदार पुं० थाण(–णे)दार
थानैत पुं०थानकनी देवता; ग्रामदेवता
थाप स्त्री० तबलानी थाप(२)थप्पड(३) प्रतिष्ठा(४)सोगान
थापा पुं० थापो;पंजानी छाप(२)छापनुं बीबुं के फरमो
थापी स्त्री० थापडी(कडियानी)
थाम पुं० थांभलो(२)वहाणनो मस्तूल
थामना स०क्रि० थंभाववुं; रोकवुं (२) पकडवुं(३) मदद करवी
थाल पुं० थाळ; मोटी थाळी
थाला पुं० थाणुं; खामणुं
थाली स्त्री० थाळी. –का बैंगन=आम के तेम, लाभ जोई गबडनार
थाह स्त्री० ऊंडाईनुं तळियुं (२) हद
थाहना स०क्रि० जुओ 'थहाना'
थिगली स्त्री० थींगडुं

थिति स्त्री० स्थिति
थिर वि० स्थिर; स्थायी
थिरकना अ०क्रि०थनथन नाचवुं;ठमकवुं
थिरना अ०क्रि०(प्रवाही)हालतुं स्थिर थवुं (२) कचरो नीचे ठरवो के तेथी प्रवाही नीतरवुं
थुक्का फ़ज़ीहत स्त्री० निंदा ने तिरस्कार
थुड़ी स्त्री०थू थू करवुं ते;धिक्कार. **–थुड़ी करना**=धिक्कारवुं
थूक पुं० थूंक. **थूकों सत्तू सानना**= थोडी ज सामग्रीथी मोटुं काम उपाडवुं
थूकना अ०क्रि०थूंकवुं(२)स०क्रि० निंदा करवी
थूथन पुं०,**–नी** स्त्री० (ऊंट घोडा इ०नुं) लांबुं मोढुं
थून स्त्री० जुओ 'थूथन'(२)'थूनी'
थूनी स्त्री० थांभलो (२) टेको
थूवा पुं० माटीनो लोंदो के मोटो टेकरो
थूहर पुं० थूवर; थुवेर
थेगली स्त्री० जुओ 'थिगली'
थैला पुं० (स्त्री० **–ली**) थेलो
थोड़ा(-र,-रा)वि० थोडुं [नकामुं
थोथा वि०(स्त्री० **–थी**)खाली;पोलुं(२)
थोपड़ी स्त्री० धोल
थोपना स०क्रि०थापवुं(२)जुओ'छोपना'
थोबड़ा पुं० जुओ 'थूथन'
थोर वि० थोडुं (२) पुं० थोरियो

द

दंगई वि० दंगो करनार; झघडाळु (२) प्रचंड [वत् प्रणाम
दंडप्रणाम पुं०, **दंडवत्** स्त्री०;पुं० दंड-
दँतिया स्त्री० दंतूडी; नानो दांत
दँतुला वि०(स्त्री० **–ली**)दंताळुं; दांतवुं
दंद स्त्री०वाफ;गरमी(२)पुं० द्वंद्व;लडाई
दंदाना पुं०[फा.]दांतो(जेवो के आरीनो)
दंभोलि पुं० [सं.] वज्र ['दांय'
दँवरी स्त्री०बळद फेरवी खळुं करवुं ते;
दई पुं०दई; दैव; ईश्वर. **–का घाला, दई-मारा** वि० कमनसीब
दक़ियानूस पुं० [अ.] एक अत्याचारी अरबी बादशाह (२) वि० प्राचीन (३)घणुं घरडुं [(३)कठण
दक़ीक़ वि०[अ.]बारीक;पातळुं(२)नाजुक
दक़ीक़ा पुं०[अ.]बारीकाई(२)कठिनता. **कोई दक़ीक़ा बाक़ी न रखना** =बधा उपाय करी चूकवुं

दक्खिन पुं०(वि० **–नी**)दक्षिण;दख्खण
दख़ल पुं०[अ.दख़्ल]अधिकार(२)दखल (**–देना** श०प्र०)(३)पहोंच;प्रवेश (**–रखना** श०प्र०)
दख़लनामा पुं०अधिकार के कवजाहक दर्शावतुं सरकारी आज्ञापत्र
दखिनहा वि० दक्षिणनुं; दखणी
दख़ील वि०[अ.]अधिकारी; कवजेदार
दख़ीलकार पुं०[अ.+फा.] जमीन पर ओछामां ओछां १२ वर्षनो कवजो धरावनार
दग़दग़ा पुं०[अ.]डर;भय (२)दगदगो; वसवसो(३)एक जातनुं फानस
दगना अ०क्रि०(बंदूक इ०) फूटवुं (२) दहवुं; बळवुं
दगर(–रा) पुं० विलंब; ढील
दग़ल पुं० [अ.] दगो (२) बहानुं
दग़लफसल पुं० [अ.] दगोफटको
दगल(–ला) पुं० जाडो मोटो डगलो
दग़ा स्त्री० [अ.] दगो; कपट
दगैल वि०डाघावाळुं (२) पुं०दगाबाज
दच्छिन वि० दक्षिण
दढ़ियल वि० दाढीवाळुं
दतवन स्त्री० दातण; 'दतुअ(–व)न'
दतिया स्त्री० जुओ 'दँतिया'
दतुअ(-व)न, दतौन स्त्री० दातण
ददा पुं० दादा
ददिया(-हा)ल पुं०दादानुं कुळ के घर
ददोरा पुं० ढीमणुं (जेवुं के मच्छर करडवाथी थाय)
दफ़ स्त्री० [फा.] डफ
दफ़अतन् अ० [अ.]अचानक;एकाएक
दफ़ती स्त्री० [अ. दफ़्तीन] पूठुं; पत्तुं
दफ़ा स्त्री०[अ. दफ़अ]वार(२)कायदानी कलम (३) वि० दूर करेलुं
दफ़ादार पुं० एक फोजी अमलदार; टुकडीनो नायक
दफ़ीना पुं० [अ.] दाटेलो खजानो
दफ़्तर पुं० [फा.] दफतर (कार्यालय; कागळियां) (२) सविस्तर वृत्तांत
दफ़्तरी पुं० [फा.]दफ्तरी (२) चोपडी बांधनार; बुकबाइन्डर
दबंग वि० प्रभावशाळी; दाबवाळुं
दबक स्त्री० दबावुं, छुपावुं के संकोच पामवुं ते
दबकना अ० क्रि० डरथी छुपावुं (२) स०क्रि०धातुने चपटी करवा पीटवुं
दबगर पुं० डबगर
दबना अ०क्रि० दबावुं
दबिस्ताँ पुं० [फा.] निशाळ
दबीज़ वि० [फा.] जाडुं; मोटुं; घाटुं
दबोचना स०क्रि० एकदम पकडीने दबाववुं (२) संताडवुं
दम पुं०[फा.]श्वास; दम (२) पळ (३)

फोसलामणी. –घुटना=श्वास घूंटावो. –घोंटकर मारना=गळुं दबावी मारवुं (२) खूब दुःख देवुं. –तोड़ना=छेल्लो श्वास लेवो. –भरना=दम भराववो; अभिमान ने विश्वासथी कहेवुं.–मारना=थाक खावो(२)बोलवुं.–मारना,लगाना =(चलम इ०नो)दम खेंचवो. –के दम=क्षणभर. –नाक में आना= खूब हेरान थवुं. –सूखना=प्राण सुकावा.–गनीमत होना=जीवतो नर भद्र पामे. –देना=दगो देवो; छेतरवुं. [(२)गुलाबदानी

दमकल स्त्री०,–ला पुं०पंप; डंकी;बंबो

दमख़म पुं० [फा.] दृढता (२) प्राण

दमचूल्हा पुं० लोढानी सगडी

दमझांसा पुं० छळकपट

दमदमा पुं० [फा.] मोरचो; रेतीना थेलानुं कामचलाउ रक्षण

दमदार वि०[फा.]दमवाळुं(२)मजबूत (३) तेज [जूठी आशा

दम-दिलासा पुं०,–**पट्टी** स्त्री०पटामणी;

दमा पुं० [फा.] दमनो रोग

दमाद पुं० जमाई; 'दामाद'

दयानत स्त्री० [अ.]सत्य दानत; ईमान

दयानतदार वि० दानतवाळुं;ईमानदार

दयार पुं० [अ.] प्रदेश

दर पुं० [सं.]दर;काणुं;गुफा(२)डर(३) शंख(४)स्त्री० दर;भाव(५)किंमत; कदर(६)पुं० [फा.] द्वार (७) अ० अंदर; महीं [आयात

दर-आमद स्त्री० [फा.] आगमन (२)

दरकना अ०क्रि०चिरावुं;फाटवुं;तरडावुं

दरका पुं०फाट;चीरो(२)चीरी नांखे एवो फटको(स०क्रि०(२)अ०क्रि०–ना)

दरकार वि०[फा.]जरूरी(२)स्त्री० जरूर

दरकिनार अ० [फा.] दूर; अलग

दरकूच अ० [फा.] सतत कूच करतां

दरख़्त,दरख़्त पुं० [फा.] झाड

दरगुज़र वि० [फा.] दरगुजर;माफ(२) अलग [एवा अर्थमां

दर-गोर श०प्र० 'जा जहानममां; मर'

दरज स्त्री० 'दर्ज'; फाट

दरजन पुं० 'दर्जन'; डझन

दरदर अ० जगा जगाए

दरदरा वि० रवादार; झीणुं नहि एवुं

दरदराना स०क्रि०भरडा जेवुं थाय एम पीसवुं के कूटवुं

दर-परदा अ०[फा.] गुप्त रीते;पडदामां

दर-पेश अ० [फा.] सामे; आगळ

दर-पै अ० [फा.] (कोईनी) पूठे

दरबा पुं०पक्षी राखवानुं खानादार खोखुं; कबूतरखानुं

दरमा पुं० वांसनुं टाटियुं

दरमान पुं० [फा.] उपचार (२) दवा
दरमाहा पुं० [फा.] दरमायो
दरमियान पुं० [फा.] मध्य; वच (२) अ० दरमियान
दरमियानी वि०[फा.] मध्यनुं(२)पुं० मध्यस्थ; पंच [जेवुं
दरवेशाना वि०[फा.]दरवेश–फकीरना
दर-हक़ीक़त अ० [फा.+अ.] खरुं जोतां; हकीकतरूपे
दरहम वि० [फा.] अव्यवस्थित
दरहम-बरहम वि० वेरणछेरण (२) गुस्से थयेलुं [खूब
दराज़ वि०[फा.] लांबुं;विस्तृत (२)अ०
दराज स्त्री०चीरो;फाट(२) मेजनुं खानुं
दरार स्त्री० चीरो; फाट
दरिंदा पुं० [फा.] हिंसक पशु
दरिया पुं० [फा.] नदी (२) दरियो
दरियाए शोर पुं० [फा.] समुद्र
दरियाफ़्त वि० [फा.] मालूम; ज्ञात
दरी स्त्री०शेतरंजी(२)[सं.]गुफा के खीण
दरीख़ाना पुं०[फा.]घणां द्वारवाळुं घर के महेल; दरीखान (२) शाही दरबार [(२)जरूखो
दरीचा पुं०[फा.] (स्त्री० –ची) बारी
दरीदा वि० [फा.] फाटेलुं
दरीबा पुं० [फा. ?] पाननी दुकान
दरेग़ पुं०[फा.] दुःख (२) कमी; कसर (३) पश्चात्ताप
दरोग़ पुं० [अ.] असत्य
दरोग़-हलफ़ी स्त्री०[अ.]साचुं बोलवाना सोगन खाईनेय जूठुं बोलवुं ते
दर्ज़ स्त्री०[फा.]'दराज'; 'दरार' जुओ (२) वि० लखेलुं
दर्जन पुं० 'दरजन'; डझन
दर्जा पुं० [अ.] दरज्जो
दर्ज़ी पुं० [फा.] (स्त्री० –र्ज़िन) दरजी
दर्द खाना=दया करवी–खावी
दर्द-अंगेज़,–आमेज़,-नाक वि०[फा.] दर्द करे एवुं; करुणाजनक
दर्द-मंद, दर्दी वि० [फा.] दरदी;दुःखी (२) दयावान
दर्दे-सरी स्त्री०[फा.]माथाकूट; महेनत
दर्रा पुं० [फा.] खीणनो मार्ग
दर्शक पुं० [सं.] प्रेक्षक
दर्स पुं० अभ्यास; भणवुं ते
दलकना अ०क्रि० चिरावुं(२)कंपवुं(३) स०क्रि० डराववुं
दलदल स्त्री० कळण-भूमि (२) कादव-कीचड. –में फँसना=आफतमां फसावुं; मुश्केलीमां आववुं
दलदला वि० कळणवाळुं
दलबंदी स्त्री० पक्ष के टोळी बांधवी ते
दलमलना स०क्रि० मसळी नांखवुं; कचरी नांखवुं; नाश करवो

दलहन पुं० द्विदळ
दलिया पुं० थूलीना दळेला ककडा
दलेल स्त्री० सजारूपे सिपाहीने करावाती कवायत
दवागि(०न,-रि) स्त्री०(प.)दावाग्नि;दव
दवात स्त्री०[अ.दावात] दवात;खडियो
दवाम पुं० [अ.]सदा स्थायी रहेवुं ते (२) अ० हमेश
दवामी वि० [अ.] कायमी; स्थायी. –बंदोबस्त=कायमी महेसूलपद्धति
दशमलव पुं०[सं.] दशांश (गणित)
दश्त पुं० [फा.] जंगल
दस्तंदाज़ी स्त्री०[फा.] हस्तक्षेप;दखल
दस्तक स्त्री०[फा.] बोलाववा दरवाजो खखडाववो ते (२) महेसूल (३) महेसूल के कर वसूल करवानुं हुकमनामुं
दस्तकार पुं० [फा.] हाथकारीगर
दस्तकारी स्त्री०[फा.] हाथकारीगरी
दस्तख़त पुं०[फा.] दसकत; हस्ताक्षर
दस्तगीर वि०[फा.] मददगार;सहायक
दस्त-पनाह पुं० [फा.] चीपियो
दस्त-ब-दस्त अ० [फा.] हाथोहाथ
दस्तबरदार वि० [फा.] कशा परथी पोतानो अधिकार उठावी लेनार
दस्तबस्ता अ० [फा.] हाथ जोडीने
दस्तयाब वि० [फा.] हस्तगत; प्राप्त
दस्तरस स्त्री०[फा.] शक्ति (२) पहोंच
दस्ता पुं०[फा.]दस्तो(हाथो के कागळनो घा)(२)फूल-गोटो(३)मूठीभर वस्तु
दस्तार स्त्री० [फा.] पाघडी
दस्तावर वि० [फा.] रेचक
दस्ती वि०[फा.]हाथनुं(२)स्त्री० मशाल (३) नानो दस्तो [दस; १०
दह पुं०हृद;धरो(२)कुंड(३)वि०[फा.]
दहक स्त्री० दाह (२) ज्वाळा
दहकना अ०क्रि० तपवुं; बळवुं
दहक़ान पुं० [अ.] गामडियो
दहन पुं० [फा.]मों(२)[सं.]दहन; दाह
दहर पुं० [सं. हृद] जुओ 'दह' (२) [फा. दह्र] जमानो; युग
दहल स्त्री० भयनो कंप–ध्रुजारी
दहलना अ०क्रि० भयथी कंपवुं
दहला पुं० पत्तानो दस्सो–दहेलो
दहलीज़ स्त्री० [फा.] ऊमरो
दहशत स्त्री० [फा.] दहेशत
दहा पुं०[फा. दह] महोरमनो महिनो के तेना प्रथम १०दिवस(२)ताजिया
दहाई स्त्री० दशक
दहाड़ स्त्री०गर्जना(२)चीस(अ०क्रि०-ना)
दहाना पुं०[फा.]मोढुं;द्वार(२) नदीनो संगम–मुख (३) मोरी; गटर
दहिना वि०(स्त्री.–नी)जमणुं;'दाहिना'
दहिने अ० जमणी तरफ. –होना=

अनुकूल के प्रसन्न थवुं
दही पुं० दहीं
दहेंड़ी स्त्री० (दहींनी) दोणी
दहेज़ पुं० [अ. जहेज़] देज
दाँ पुं० [फा.] 'जाणनार' ए अर्थनो प्रत्यय. उदा. कद्र–दाँ=कदरदान
दाँत पुं०दांत(२)दांतो. –काटी रोटी=भारे मैत्री. –खट्टे करना,तोड़ना=खूब पजववुं के बरोबर हराववुं. –रखना या लगाना=खूब इच्छा राखवी(२)वेर लेवानो विचार राखवो
दाँता पुं० दांतो
दाँताकिटकिट, दाँताकिलकिल स्त्री० झघडो;बोलाबोली (२) गाळागाळी
दाँती स्त्री०दातरडुं (२) बत्रीस दांतनो समूह; बत्रीसी
दाँना स०क्रि०खळुं करवा बळद फेरववा
दाँयँ स्त्री० जुओ 'दँवरी'
दाँवनी स्त्री०माथानी दामणी–घरेणुं
दाई वि०स्त्री० 'दाहिनी'; जमणी
दाई स्त्री०दाई;धाव.–से पेट छिपाना=जाणकारथी कांई छुपाववुं
दाऊ पुं० मोटाभाई
दाख स्त्री० द्राक्ष
दाख़िल वि० [अ.] दाखल
दाख़िल-ख़ारिज पुं०[अ+फा.]दफतरमां हकदारनुं नाम बदलवुं ते
दाख़िल-दफ़्तर वि०[अ.+फा.] विचार पर न लेतां दफतरमां नांखेलुं
दाख़िला पुं० [अ.] प्रवेश
दाग पुं०दाह.–देना=दाह देवो(मडदाने)
दाग़ पुं०[फा.](वि०–ग़ी)डाघ(२)चिह्न
दागना स०क्रि० दागवुं;सळगाववुं (२) डाम देवो(३)डाघ के निशानी पाडवी
दागबेल स्त्री०जमीन पर कोदाळी के कशाथी करातुं निशान(सडक,पायो इ० करवामां)
दाग़ी वि० डाघवाळुं (२) कलंकित
दाढ़ स्त्री० दाढ(२)जुओ 'दहाड़'
दातुन,दातौन स्त्री० दातण
दाद स्त्री० दादर;दराज(२)[फा.]दाद; न्याय. –चाहना=दाद मागवी. –देना=न्याय करवो(२) वखाणवुं
दादनी स्त्री०देवुं(२)'एडवान्स';'पेशगी'
दादफ़रियाद स्त्री० [फा.] न्यायनी मागणी; फरियाद
दाना पुं० [फा.]दाणो(२)वि०बुद्धिमान
दानाई स्त्री० [फा.] बुद्धिमत्ता
दानापानी पुं० दाणोपाणी; अन्नजळ
दानिश स्त्री० [फा.] बुद्धि; समज
दानिस्ता अ०[फा.] जाणी जोईने
दानेदार वि०[फा.] दाणादार; रवादार
दाप पुं० [सं. दर्प, प्रा. दप्प] अहंकार (२) जोर (३) दाब (४) क्रोध

दाब स्त्री० दाब; काबू के दबाव(२) पुं० [अ.]रोफ; दबदबो [पैसो
दाम पुं० [फा.]जाळ; फांसो(२)दाम;
दामन पुं० [फा.] दामन; कपडानो नीचलो भाग–कोर के पालव(२) पहाड नीचेनी जमीन–तळेटी
दामन-गीर पुं०[फा.] पीछो पकडनार (२) दावो करनार
दामाद पुं० [फा.] जमाई
दायज,दायजा पुं० जुओ 'दहेज़'
दायम अ० [अ.] सदा
दायम-उल्-हब्स,दायमुल्हब्स पुं० [अ.] जनमटीप
दायर वि० [अ.] जारी; चालु
दायाँ वि० 'दाहिना' जुओ
दायें अ० 'दाहिने' जुओ
दार स्त्री०[फा.] शूळी के फांसी(२)पुं० [अ.]जगा(३)घर(४) वि० [फा.] 'वाळुं' अर्थनो प्रत्यय
दारचीनी स्त्री०[फा.] दालचीनी;तज
दार-मदार पुं०[फा.]मदार;;आश्रय(२) अवलंबन [(२)राजधानी
दारुल्ख़िलाफ़त पुं०[अ.]खलीफनुं घर
दारुल्शफ़ा पुं० [अ.] इस्पिताल
दारू स्त्री० [फा.] दवा (२) दारू
दाल स्त्री० दाळ. –गलना=दाढ गळी थवी; कार्यमां फाववुं
दालमोठ स्त्री० दाळनुं एक चवाणुं
दालान पुं० [फा.] वरंडा; ओसारो
दालिम पुं० दाडम
दावँ पुं० दाव; वारी (२) लाग; मोको
दावँना स०क्रि० जुओ 'दाँना'
दावत स्त्री०[अ.] नोतरुं(२) मिजबानी
दावात स्त्री० [अ.] 'दवात'; खडियो
दास्तान स्त्री०[फा.]हेवाल; वृत्तांत(२) कथा; किस्सो (३) वर्णन
दाहिना वि० जमणुं (२) अनुकूल
दाहिने अ० जमणी बाजू
दिअली स्त्री० माटीनो नानो दीवो
दिआ पुं० 'दीया'; दीवो
दिक़ वि० [अ.] हेरान (२) बीमार (३) पुं० क्षय रोग
दिखलवाना स०क्रि० देखाडाववुं(नाम–दिखलवाई)
दिखलाना स०क्रि० देखाडवुं (नाम–दिखलाई)
दिखाई स्त्री० दर्शन; देखवुं के देखाडवुं ते
दिखाऊ वि० देखावडुं (२)देखवामात्र; देखाडा पूरतुं
दिखाना स०क्रि० देखाडवुं
दिखाव पुं० देखवुं ते (२) देखाव
दिखावटी वि० देखाडा पूरतुं
दिखावा पुं० देखाडो; आडंबर
दिगर वि० [फा.] बीजुं; अन्य

दिनाई पुं० दराज [चिकित्सा
दिरमान पुं० [फा.दरमानः] उपचार;
दिल पुं०[फा.] दिल; हृदय (२) मन. —के फफोले फोड़ना=दिल ठालवी जीव हळवो करवो.—देना=प्रेम करवो. —बुझना=दिलमां उत्साह के उमंग न रहेवो
दिलकश, दिलकुशा वि० [फा.] आकर्षक; मनोहर [बहादुर
दिलचला वि०छातीचलुं; साहसिक(२)
दिलचस्प वि० [फा.] (नाम,—स्पी) मन लागे एवुं; आकर्षक
दिल-ज़दा वि० [फा.] दुःखी; खिन्न
दिल-जमई स्त्री०[फा.]तसल्ली;दिलासो
दिल-जला वि० दुःखी
दिल-जोई स्त्री०[फा.]जुओ'दिलजमई'
दिल-दादा वि० [फा.] प्रेमी; आशक
दिलबस्तगी स्त्री०[फा.]दिल लागवुं ते; प्रेम (२) मनोरंजन
दिलबस्ता वि०[फा.]आसक्त; प्रेमी
दिलरुबा पुं०स्त्री०[फा.]प्रेमपात्र; प्यारुं
दिलवाना,दिलाना स०क्रि०देवडाववुं
दिलशाद वि० [फा.] प्रसन्न; आनंदी
दिला पुं० [फा.] हे दिल !
दिलारा वि० [फा.] प्रिय; माशूक
दिली वि० दिलनुं; हार्दिक
दिलेर वि०[फा.] 'दिलचला' (नाम-री)
दिल्लगी स्त्री० मश्करी [काढवुं
दिवाला पुं० देवाळुं. —मारना=देवाळुं
दिवालिया पुं० देवाळियो
दिसंबर पुं० डिसेंबर मास
दिसावर पुं० देशावर [(माल)
दिसावरी वि०देशावरथी आवतुं;बहारनुं
दिहंदा वि० [फा.] दाता; दानी
दिहाड़ा पुं बूरी हालत (२) दहाडो
दिहात पुं० 'देहात'; गामडुं
दीखना अ०क्रि० देखावुं
दीगर वि० [फा.] जुओ 'दिगर'
दीठ स्त्री० दृष्टि;नजर(२)नजर लागे ते (३) कृपादृष्टि. —उतारना या झाड़ना=नजर उतारवी.-जलाना =नजर उतारवा राईमरचां बाळवां
दीद स्त्री० [फा.] दर्शन
दीदा पुं०[फा.]आंख(२)दृष्टि(३)धृष्टता. —लगना=ध्यान लागवुं. दीदेका पानी ढल जाना=निर्लज्ज बनी जवुं. दीदे निकालना =आंखो काढवी
दीदार पुं०[फा.] देदार; दर्शन;देखाव
दीदी स्त्री० मोटी बहेन
दीन-दुनिया स्त्री०आ लोक ने परलोक
दीमक स्त्री० [फा.] ऊधई
दीयट पुं०जुओ 'दीवट' [राणो करवो
दीया पुं० दीवो.—ठंडा करना=दीवो

दीयासलाई स्त्री० दीवासळी
दीर्घिका स्त्री०[सं.]नानुं जळाशय-तळाव
दीवट स्त्री० दीवी
दीवान-आम पुं० [अ.] दीवानेआम
दीवान-ख़ास पुं० [अ.] दीवानेखास
दीवाना वि० [अ.] दीवानुं; गांडुं
दीवानी स्त्री०दीवानी कचेरी(२)दीवानगीरी (३) वि०स्त्री० गांडी
दीवार(–ल) स्त्री० [फा.] दीवाल
दीवार-गीर पुं० [फा.] दीवालनी अंदरनी चाडा जेवी बनावट
दीवाली स्त्री० 'दिवाली'; दिवाळी
दुंबा पुं०[फा.]घेटो [उदा०'दुविधा'
दु वि० 'दो'नु समासमां आवतुं रूप.
दुआबा पुं० [फा.] दोआब
दुकड़ा पुं० जोटो (२) दोकडो
दुकान स्त्री० [फा.] दुकान. –बढ़ाना =दुकान बंध करवी. –लगाना =दुकान मांडवी.
दुकेला वि० (स्त्री०–ली) बेकलुं
दुकेले अ० बेकल; साथे कोईने लईने
दुक्का वि० बेकलुं (२) जोडकुं
दुक्की स्त्री० दूरी (गंजीफानी); दूओ
दुखड़ा पुं० दुःखडुं (२) आपवीती
दुखाना स०क्रि० दुखाडवुं
दुख़ानी वि०[अ.]आगना जोरथी चालतुं
दुख़्तर स्त्री० [फा.] दीकरी; पुत्री

दुगना,दुचंद वि० बमणुं; 'दूना'
दुचित(–त्ता) वि० अस्थिर चित्तनुं(२) संदेहमां पडेलुं [रता(२)संदेह
दुचिताई,दुचित्ती स्त्री०चित्तनी अस्थि-
दुज़्द पुं०[फा.]चोर(स्त्री०-ज़्दी=चोरी)
दुज़्दीदा वि०[फा.]चोरीनुं. –निगाहें= कोई न देखे तेम जोनारी आंखो
दुत् अ० धुत; तुच्छकारनो उद्गार
दुतकार पुं० धुत्कार
दुतकारना स०क्रि० धुत्कारवुं
दुतर्फ़ा वि० (स्त्री० –र्फ़ी) बे तरफनुं
दुतिया स्त्री० बीज; द्वितीया
दुधार,दुधैल वि० दुधाळ; दूझणुं (२) दूधवाळुं [आखी दुनियामां
दुनियाँ स्त्री०दुनिया. –के परदे पर=
दुनियासाज़ वि०[फा.] मतलबी
दुपट्टा पुं० बे फाळनी ओढवानी चादर (२)दुपट्टो;खेस. –तानकर सोना= निरांते सूवुं; निश्चिंत होवुं
दुपहर,–रिया स्त्री० बपोर; 'दोपहर'
दुबधा स्त्री० दुविधा
दुबारा अ० बीजी वार; 'दोबारा'
दुबाला वि०बमणुं;'दोबाला' [(मकान)
दुमंज़िला वि०[फा.]बे खंड के मजलानुं
दुम स्त्री० [फा.] पूंछडी
दुमाता स्त्री० खराब के सावकी मा
दुरदुराना स०क्रि०दूर दूर करवुं;अपमान-

पूर्वक हठाववुं-हांकवुं (कूतरां माटे)
दुरमुस पुं० कूवा जेवुं ठोकवानुं ओजार
दुराना अ०क्रि०दूर थवुं(२)छुपावुं (३) स०क्रि०दूर करवुं (४) छोडवुं (५) छुपाववुं
दुराव पुं० दूरतानो भाव (२) कपट
दुरुस्त वि०[फा.]दुरस्त(२)योग्य;उचित
दुरुस्ती स्त्री० दुरस्ती; सुधारो
दुरूद स्त्री०[फा.]दुआ; आशीर्वाद
दुरूह वि० [सं.] कठण; दुर्गम
दुर्रा पुं० [फा.] कोयडो; चाबुक
दुलकी स्त्री० घोडानी रवाल
दुलत्ती स्त्री०चोपगानी पाछला बे पगनी लात [एक खच्चर
दुलदुल पुं० [अ.] पेगंबरने भेट मळेलुं
दुलराना स०क्रि० बाळकने लाड करवुं (२)अ०क्रि०बाळकनी जेम प्रेममां खेल करवा
दुलहन स्त्री० नववधू; नवी वहु
दुलहा पुं० वर; 'दूल्हा'
दुलाई स्त्री० थोडा रूवाळी रजाई
दुलार पुं०लाड;प्रेम [गेल करवुं
दुलारना स०क्रि० लाड करवुं; प्रेमथी
दुलारा वि० (स्त्री०,-री) लाडकुं
दुली(-लै)चा पुं० (प.) गलीचो
दुशनाम,दुश्नाम स्त्री०[फा.] गाळ
दुशवार,दुश्वार वि० [फा.](नाम,-री) कठण; मुश्केल (२) दुःसह
दुसार(-ल) अ० (प.) आरपार;सोंसरुं
दुसूती स्त्री०मोद जेवुं चोतारुं एक बिछानुं
दुहता पुं०दौहित्र;पुत्रीनो पुत्र;'दोहता'
दुहना स०क्रि० दोहवुं
दुहनी स्त्री० [सं.दोहनी] दोणी
दुहाई स्त्री०दोहवुं ते के तेनी मजूरी(२) दुहाई;आण (३) घोषणा. -देना= आण देवी. -फिरना=आण वर्तवी (२) ढंढेरो पिटावो
दुहाग पुं० दुर्भाग्य (२) रंडापो
दुहागिन स्त्री० विधवा
दुहागी वि० दुर्भागी
दूकान स्त्री० दुकान
दूज स्त्री० 'दुतिया'; बीज (तिथि)
दूजा वी० बीजुं
दूध पुं० दूध. -उतरना=छातीमां दूध भरावुं. -का दूध और पानीका पानी करना=चोख्खो न्याय तोळवो. -की मक्खी की तरह निकालना,निकालकर फेंक देना =तुच्छ समजी दूर करवुं [विधि
दूध-पिलाई स्त्री०धाव(२)लग्ननी एक
दूध-पूत पुं० धन अने संतति
दूध-मुँहा,-मुख वि० धावणुं
दून स्त्री०बमणापणुं(२)पुं०खीणनो भाग -की लेना या हाँकना=गप हांकवी

दूना वि० बमणुं; बे गणुं
दूब स्त्री० दरो घास
दू-बदू अ० सामसामे
दूभर वि० कठण; अघरुं
दूरकी बात स्त्री० बारीक, कठण के भविष्यनी वात
दूर-दराज़ वि०[फा.] दूर दूर; बहु दूर
दूरी स्त्री० दूरत्व; अंतर
दूलह,दूल्हा पुं० वर (२) पति
दूसरा वि० बीजुं [करवुं
दृढ़ाना अ०क्रि०दृढ थवुं(२)स०क्रि० दृढ
देउ(–व)र पुं० देवर; दियेर
देखना स०क्रि० देखवुं;जोवुं(२)तपासवुं (३)पारखवुं(४) समजवुं; विचारवुं (५)वांचवुं.–**सुनना**=जाणवुं करवुं; खबर मेळववी. देखतेदेखते=आंखो सामे(२) जोतजोतामां. देखते रह जाना=जोता ज रही जवुं;छक थवुं
देखभाल,देखरेख स्त्री० देखरेख;संभाळ
देखाऊ वि० खाली देखाडावाळुं; कृत्रिम
देखादेखी स्त्री० दर्शन; देखावुं ते (२) अ० देखादेखी
देगचा पुं० नानो देग–देगडो
देगची स्त्री० देगडी
देन स्त्री० दान; देवुं ते
देनदार पुं० देणदार; देवादार
देना स०क्रि० देवुं (२) पुं० देणुं; देवुं
देर(–री) स्त्री०[फा.]ढील;वार(२)समय
देरपा वि० [फा.] टकाउ; मजबूत
देरीना वि० [फा.] प्राचीन; जूनुं
देवठान पुं० देवऊठी एकादशी
देवधुनि स्त्री० [सं.] गंगा नदी
देवपथ पुं० [सं.] आकाश
देवरानी स्त्री० देराणी (२) इंद्राणी
देवल पुं० [सं.]पूजारी(२)देवळ;मंदिर
देसवाल वि० देशनुं; स्वदेशी
देसावर पुं० 'दिसावर'; देशावर
देह स्त्री० देह;शरीर(२)पुं०[फा. दिह] देहात(३) वि० देनार (समासमां)
देहरा पुं० देरुं;देवालय(२)मनुष्य-शरीर
देहरी,–ली [सं.] स्त्री० ऊमरो
देहात पुं० [फा. 'दिह'नुं ब० व०] 'दिहात'; गाम (वि० –ती)
दैन पुं० [अ.] देण; देवुं
दैनदार पुं०[अ.+फा.]देणदार;देवादार
दैवात् अ० [सं.] दैववशात्
दो वि०[फा.]बे.(आ अर्थमां समासमां 'दु' जेम पण आवे छे)
दोग़ला पुं० [फा.]जारज के वर्णसंकर मनुष्य
दोचंद वि० [फा.] 'दुचंद'; बेगणुं
दो-चार स्त्री०[फा.] मुलाकात; मेळाप
दोचित्ता,दोचित्ती जुओ'दुचित्ता,–त्ती'
दोज़ख़ पुं०[फा.] दोजख; नरक

दोज़ानू अ०[फा.]घूंटणिये (वेसवुं)
दोना पुं०(स्त्री० –नी) द्रोण;दडियो
दोनों वि० बन्ने
दोपहर पुं०;–रिया स्त्री०'दुपहर'; बपोर
दोबारा अ०[फा.] 'दुबारा' जुओ
दोबाला अ० [फा.] 'दुवाला'; 'दूना'
दोयम वि० [फा.] दुय्यम; दूयम
दोरसा पुं०एक जातनी पीवानी तमाकु (२) वि० बे रस के स्वादवाळुं. दोरसे दिन=स्त्रीना महिना
दोश पुं० [फा.] खभो
दोशंबा पुं०[फा.]सोमवार [–ज़गी)
दोशीज़ा स्त्री० [फा.] कुंवारिका (नाम
दोसूती वि० चोतारुं(२) स्त्री०'दुसूती'
दोस्ताना वि०[फा.]दोस्तीनुं(२)पुं०दोस्ती
दोहता पुं० 'दुहता'; दौहित्र
दोहद स्त्री० [सं.]दोहद(२)गर्भनुं चिह्न के गर्भावस्था
दोहरा वि० बेवडुं
दोहराना स०क्रि० बेवडवुं(२)बीजी वार करवुं के कहेवुं
दौंरी स्त्री० जुओ 'दँवरी'
दौड़ स्त्री० दोड (२) प्रयत्न
दौड़धूप स्त्री० दोडधाम; परिश्रम
दौड़ना अ०क्रि० दोडवुं
दौना पुं० एक छोड(डमरो ?)(२)'दोना'
दौर पुं० [अ.]दोर (सत्ता;भभको)(२) भ्रमण; फेरो(३)वार; 'दफा' (४) काळचक्र; जमानो
दौरदौरा पुं० प्रबळता; सत्ता
दौरा पुं०भ्रमण करवुं ते;प्रवास(२)फेरो. –सुपुर्द करना=सेशन्स जज पासे मोकलवुं [(३)जमानो
दौरान पुं० [फा.] भ्रमण;फेरो(२)वारी
दौरी स्त्री० टोपली; छाबडी
दौलत स्त्री० [अ.] दोलत
दौलतख़ाना पुं० [फा.] घर; मकान (मानार्थे बोलाय छे)
द्वैध पुं० [सं.]विरोध(२) बेभथ्थु राज-पद्धति; 'डायर्की'

ध

धंगर पुं० भरवाड; आहीर
धँधला पुं० ढोंग (२) बहानुं
धँसना अ०क्रि० अंदर खची–पेसी जवुं
धँसान स्त्री०, धँसाव पुं० अंदर पेसी जवुं ते (२) कळण
धक स्त्री० हृदयनी धडक

धकधकाना अ०क्रि० धडकवुं
धकियाना,धकेलना स०क्रि०धकेलवुं; धक्को देवो
धगड़ा पुं० यार; उपपति
धज स्त्री० सुंदर रचना के ढंग
धजीला वि० सुंदर
धज्जी स्त्री० चींदरडी के लांबी पट्टी. धज्जियाँ उड़ाना=चीरा के टुकडा करी नांखवा
धड़ल्ला पुं० धडाको. धड़ल्लेसे या धड़ल्लेके साथ=वेधडक
धड़ा पुं०त्राजवानो धडो. –बाँधना= धडो करवो (२) कलंक लगाडवुं
धड़ी(-री) स्त्री० चार के पांच पाका शेरनो एक तोल
धत् अ० धत; धुत्
धत स्त्री० लत; बूरी आदत
धतकारना स०क्रि० धुत्कारवुं
धता वि० धत करायेलुं. –करना या बताना=भगाडवुं;धत करी काढवुं
धन पुं० गायोनुं धण; गोधन
धनिया पुं० धाणा
धनुआ पुं० धनुष (२) पींजण
धनुई स्त्री० नानो 'धनुआ'
धनुक पुं० धनुष (२) इंद्रधनुष
धनुकबाई स्त्री० धनुर्वा
धन्ना पुं० धरणुं
धन्नासेठ पुं० मोटो धनी आदमी
धप स्त्री० धब अवाज (२) धप्पो
धप्पा पुं० धप्पो (२) नुकसान
धब्बा पुं० धाबुं; डाघ
धमकना अ०क्रि० धम अवाज करवो (२)(माथुं)दुखवुं. आ धमकना= आवी पहोंचवुं
धमाचौकड़ी स्त्री० धमाचकडी
धमार स्त्री०धमाल (२) धमार ताल के होळीनुं एक गीत
धरता पुं० धारण करनार (२) देणदार
धरन स्त्री०धारण करवुं ते (२) धारण; पाटडो (३) धरणुं
धरना स०क्रि०धरवुं(२) रखात राखवी (३) गीरो मूकवुं (४) पुं० धरणुं
धरहरा पुं० मिनारो
धराऊ वि० कीमती;खास अवसर माटे साचवी रखातुं
धराहर पुं० जुओ 'धरहरा'
धरी स्त्री० जुओ 'धड़ी'
धरोहर स्त्री० अनामत राखेलुं ते
धर्षण पुं० [सं.] अनादर(२)आक्रमण
धवाना स०क्रि० दोडाववुं
धाँधल स्त्री० धांधळ (२) दगो; फरेब
धाँस स्त्री०तमाकु मरचां इ०नी तेज गंध
धाँसना अ०क्रि० (पशुओनुं) खोंखारवुं
धाक स्त्री०धाक.–बांधना=धाक पाडवी

धाप स्त्री० मेदान(२)लंबाईनुं एक माप (एक बे माईल जेवडुं) (३) तृप्ति
धापना अ०क्रि० धरावुं;तृप्त थवुं (२) दोडवुं;धावुं (३) स०क्रि० धरववुं
धाबा पुं०मकाननुं धाबुं के तेमांनी ओरडी
धा-भाई पुं० दूधभाई
धामिन स्त्री० धामण साप
धाय स्त्री० धात्री; धाव
धारी स्त्री० लीटी; रेखा (२) समूह
धारीदार वि० लीटीदार; लीटीओवाळुं
धावा पुं० आक्रमण;हल्लो(२)दोट
धिंग(-गाई) स्त्री० धींगामस्ती
धिंगा पुं० जुओ 'धींग'
धिराना अ० क्रि० धीरज राखवी (२) धीरुं के धीमुं थवुं
धींग पुं० लठ्ठ माणस (२) वि० धिंगुं
धींगड़ा,-रा पुं० 'धींग' (२) बदमास
धींगाधींगी, धींगामुश्ती स्त्री०बदमासी (२)धींगामस्ती;तोफान
धींवर पुं० धीवर; ढीमर; माछी
धी, धीदा(-य,-या) स्त्री०धी; दुहिता
धुँगार स्त्री० वघार
धुँगारना स०क्रि० वधारवुं
धुँद(-ध) स्त्री० धूंध;दृष्टिनी झांख (२) धूळ ऊडीने थतो अंधकार
धुँधरा(-ला)ना अ० क्रि० धूंधळावुं; 'धुँधला' थवुं
धुँधला वि०काळाश पडतुं (२) धूळना रंगनुं; धूंधळवुं (३) अस्पष्ट
धुआँ पुं०धुमाडो. –धुएँका धौरहर= जरामां नाश थनार वस्तु.–धुएँ के बादल उड़ाना=भारे गप हांकवी.–निकालना या काढ़ना= शेखी मारवी
धुआँकश पुं० आगबोट
धुआँधार वि० धुमाडाथी भरपूर (२) काळुं (३) घोर [बगडवो
धुआँना अ०क्रि० धुमाडी पेसी स्वाद
धुकड़ पुकड़ पुं० गभराट के तेथी आघुंपाछुं थवुं ते [डर
धुकधुकी स्त्री०हृदय के तेनी धडक(२)
धुन स्त्री० धून. –का पक्का=आरंभेलुं न छोडे एवो
धुनकना स० क्रि० जुओ 'धुनना'
धुनकी स्त्री० पींजण
धुनना स०क्रि०पींजवुं(२)मारवुं पीटवुं (३)वार वार कहेवुं (४)कोई काम कर्ये ज जवुं
धुनियाँ पुं० पींजनार; पींजारो
धुपेली स्त्री० 'अँभौरी'; अळाई
धुर पुं० धुरा (२)भार(३)धर;शरूआत (४)अ० बरोबर. –सिरसे=तद्दन शरूथी; धरमूळथी
धुरवा पुं० मेघ; वादळ

धुरां पुं०रज;धूळ;कण. **धुर्रे उड़ाना**=धूळ काढवी; खूब मारवुं (२)छिन्न-भिन्न करवुं
धुलना अ०क्रि० धोवावुं
धुलवाना,धुलाना स०क्रि०धोवडाववुं
धुलाई स्त्री० धोवुं ते के तेनी मजूरी
धुलेंडी स्त्री० धुळेटी
धुवन पुं० [सं.] अग्नि
धुवाँ पुं० 'धुआँ' जुओ
धुस्स पुं० माटीनो ढेर(२)नदीनो बांध
धुस्सा पुं० धूंसो; जाडो कामळो
धूँध स्त्री० जुओ 'धुँध'
धूआँ पुं० धुमाडो; 'धुआँ'
धूना पुं० लोबान के तेनुं झाड
धूनी स्त्री० साधुनी धूणी (२) धूप
धूप पुं०[सं.]धूप(२)स्त्री०ताप. **–चढ़ना या निकलना**=ताप थवो; दहाडो चडवो. **–दिखाना**=तडके नांखवुं. **–में बाल या चूँड़ा सफेद करना**=विना कांई कर्ये जीवन वीतवुं
धूम-धड़क्का पुं०, **–धाम** स्त्री० धामधूम
धूरधान पुं० धूळनो ढग
धूरधानी स्त्री० धूळधाणी(२)'धूरधान'
धूवाँ पुं० 'धुवाँ'
धोंधा पुं० (माटीनो) लोंदो [दाळ
धोई स्त्री०छोडां विनानी अडद मगनी
धोका(–खा) पुं० धोको;दगो(२)भ्रम. **–खाना**=ठगावुं(२) भ्रममां पडवुं. **–देना**=छळवुं (२)भ्रममां नांखवुं. **धोखेमें, धोखेसे**=भूलथी; अजाणमां. **–उठाना**=भ्रममां पडी. हानि उठाववी
धोखेबाज़ वि० धूर्त; कपटी
धोती स्त्री० धोतियुं के साडी (२)धोती
धोना स०क्रि०धोवुं. **धो बहाना**=धोई काढवुं; रहेवा न देवुं
धोबिन स्त्री० धोबण
धौंक स्त्री०धमणनी फूंक (२) ताप; लू
धौंकना स०क्रि०फूंकवुं(धमणथी);धमवुं
धाकनी स्त्री० फूंकणी के धमण
धौंताल वि० धूनवाळुं(२)चालाक(३) साहसिक (४) हृष्टपुष्ट; मजबूत
धौंस स्त्री० धमकी (२) धाक
धौंसना स०क्रि० धमकाववुं (२) मारवुं (३) धाक देवी
धौरा वि० धोळुं
धौराहर पुं० मिनारो; बुरज
धौल स्त्री० धोल (२) नुकसान
धौल-धप्पड़ पुं०धोलधापट; धोलधक्को
धौला वि०धोळुं (नाम, **–लाई** स्त्री०)
ध्वन्य पुं० [सं.] व्यंग्यार्थ

न

नंग पुं०नग्नता(२) गुह्येंद्रिय (३) [फा.] प्रतिष्ठा (४) लज्जा; शरम
नंग-धड़ंग,-मुनंगा वि० साव नागुं
नंगा वि० नागुं [पण-तपास
नंगा-झोली स्त्री० पूरेपूरी-नागुं करीने
नंदेऊ,नंदोई पुं० नणदोई
नंबरदार पुं०गामनुं महेसूल उघरावनार
नंबरी वि० नंबर लागेलुं (२) प्रसिद्ध
नकटा वि० (स्त्री०,-टी) नाक-कट्टुं
नकघिसनी स्त्री० नाकलीटी
नकचढ़ा वि० खराब मिजाजनुं;चीडियुं
नक़द पुं०[अ.]नगद धन(२)वि०नगद (३) अ० रोकडा; नगद
नक़द-दम अ० [अ.] एकलुं
नक़ब स्त्री० [अ.] चोरे भींतमां पाडेलुं खातर. -देना,-लगाना=खातर पाडवुं; (चोरनुं) कोचवुं
नक़ल स्त्री०[अ.] नकल (२) अनुकरण (३)चाळा पाडवा ते(४)हास्यरसनी आकृति के टुचको
नकसीर स्त्री०नसकोरी. -भी न फूटना =जराय तकलीफ के हानि न थवी
नक़ाब स्त्री० [अ.] मोढुं ढांकवा माथे ओढातुं (स्त्रीनुं) कपडुं (२) घूंघट
नकियाना अ०क्रि०नाकमां बोलवुं (२) नाकमां दम आववो (३) स०क्रि० नाकमां दम आणवो
नक़ीब पुं०[अ.] नकीब; छडीदार (२) भाटचारण
नकेल स्त्री० ऊंटनी नाथ
नक्का पुं० (सोयनुं) नाकुं
नक़्क़ारख़ाना पुं० [फा.] टकोरखानुं; नगारखानुं
नक़्क़ारची पुं०[फा.]नगारुं बजावनार
नक़्क़ारा पुं० [फा.] नगारुं; नोबत
नक़्क़ाल पुं०[अ.]नकल करनार(२)भांड
नक़्क़ाश पुं० [अ.] नकशी करनार
नक़्क़ाशी स्त्री० [अ.] नकशी
नक्कू वि०लांबा नाकवाळुं(२)सौथी ऊंधुं वर्तनार (३) पोताने मोटुं माननार
नक़्श वि०[अ.] चीतरेलुं, अंकायेलुं के लखायेलुं(२)पुं० चित्र(३) महोर; छाप (४) तावीज
नक़्शा पुं०[अ.]नकशो(२)चित्र;आकृति (३) हाल; दशा
नक़्शी वि० नकशीदार

नख़रा पुं० [फा.] नखरुं(२) चंचळता
नख़्वत स्त्री० [अ.] घमंड; शेखी
नख़्ख़ास पुं० [अ. नख़्ख़ास] गुलाम के पशुओनुं बजार [चित्तो इ०
नखी पुं०[सं.]नखवाळुं हिंस्र प्राणी-वाघ
नग पुं०[फा.]नंग;रत्न(२)[सं.]नग;पर्वत
नगण्य वि० [सं.] तुच्छ
नगी(–गीं) [फा.]पुं०नंग;रत्न;नगीनो
नगीच अ० नजदीक; नजीक
नगीना पुं०[अ०]नगीनो;रत्न(२)वि० ठीक जडेलुं
नग़्मा पुं०[अ.]मधुर स्वर(२)राग;गायन
नज़दीक वि०[फा.](नाम,वि० ,–की) नजदीक; नजीक
नज़्म स्त्री० [अ. नज़्म] कविता
नज़र स्त्री०[अ.] नजर; दृष्टि (२) भेट; नजराणुं. –आना=देखावुं. –पर चढ़ना=नजरमां आववुं; पसंद के ठीक लागवुं.–पड़ना=नजरे पडवुं
नजरबंद वि० नजरकेदमां राखेलुं (२) पुं० नजरबंधीनो खेल
नज़रबंदी स्त्री०नजरकेद(२)नजरबंधी
नज़र-हाया वि० नजर लगाडनार
नज़राना अ०क्रि० नजर लागवी (२) स०क्रि०नजर लगाडवी(३)[अ.] नजराणुं; भेट
नज़ला पुं० [अ.] नजलो–एक रोग
नज़ाकत स्त्री० [फा.] नाजुकता
नजात स्त्री० [अ.] मुक्ति; छुटकारो
नज़ामत स्त्री०[अ.] जुओ 'निज़ामत'
नज़ारत स्त्री० [अ.] नाजरपणुं
नज़ारा पुं० [अ०] दृश्य (२) नजर
नजिस वि०[अ.]मेलुं(२)अशुद्ध;अपवित्र
नज़ीर स्त्री० [अ.] उदाहरण; दृष्टांत
नजूम पुं०[अ.]'नुजूम';जोश; ज्योतिष विद्या(२) 'नज्म'नुं ब० व०
नजूमी पुं० जोषी; 'नुजूमी'
नज़ूल पुं० [अ.]सरकारी जमीन (२) 'नज़ला' रोग
नज्म स्त्री० [अ.] तारो ['नज़्म'
नज़्म स्त्री० [अ.] प्रबंध;बंदोबस्त(२)
नटखट वि० चंचळ; उधमातियुं (२) नटखट; धूर्त; पाकुं
नतर(–रु), नतु अ० नहितर; नहि तो
नतिनी स्त्री०'नातिन';दीकरीनी दीकरी
नतीजा पुं० [अ.] नतीजो; फळ
नत्थी स्त्री० पिन के दोराथी जोडेला कागळो (२) एक साथे नाथेलुं के जोडेलुं ते
नथना पुं० नसकोरुं; नाकनो आगलो भाग(२)अ०क्रि० नथावुं (३) एक साथे जोडावुं के बंधावुं
नदामत स्त्री० [अ.] शरम(२)पश्चात्ताप
नदारद वि० [फा.] गेब; लुप्त

नदीदा वि० [फा. नादीद:]नहि देखेलुं (२) लोभी

नधना अ०क्रि०जोडावुं(बळद,घोडानुं)

ननँद, ननद स्त्री०नणंद (पुं०ननदोई)

ननसार स्त्री०,**ननिहाल** पुं०नानानुं घर

नन्हा वि० नानुं.–**सा**=नानुंशीक

नन्हाई स्त्री०(प.) नानपण (२) नानम

नफ़र पुं०[अ.]एक जण;व्यक्ति(२)नोकर

नफ़रत–आमेज़ वि०[अ.+फा.] घृणाजनक [(२)शाप;बददुवा

नफ़री स्त्री०[फा.]एक दिवसनी मजूरी

नफ़ा पुं० नफो; फायदो. –**उठाना,** –**करना**=नफो मेळववो के थवो

नफ़ाक़ पुं० जुओ 'निफ़ाक़'

नफ़ासत स्त्री० [अ.] उत्तमता

नफ़ी स्त्री०[अ.]अभाव;न होवुं ते (२) दूर करवुं ते (३) नकार; इन्कार

नफ़ीरी स्त्री०[अ.] एक वाद्य; नफेरी

नफ़ीर वि०[अ.]नफरत–घृणा करनार (२)स्त्री०फरियाद;पोकार [स्वच्छ

नफ़ीस वि०[अ.]उमदा(२)सुंदर (३)

नफ़्स पुं०[अ.]प्राण;आत्मा(२) सत्त्व; तत्त्व(३)कामवासना(४)नफस;दम

नबात स्त्री०[अ.] शाकभाजी

नबी पुं० [अ.] ईश्वरनो दूत; पेगंबर

नबातात स्त्री०[अ.'नबात'नुं ब०व०] लीलोतरी; शाकभाजी

नबेड़ना स०क्रि० निवेडो आणवो

नबेड़ा(–रा) पुं० निवेडो; फेंसलो

नब्ज़ स्त्री०[अ.]नब्झ;नाडी [हकीम

नब्बाज़ पुं०[अ.] नाडी जोनार; वैद,

नम वि० (नाम, –**मी**) भीनुं

नमक पुं०[फा.]निमक. –**अदा करना**= उपकारनो बदलो चूकववो. –**मिर्च मिलाना या लगाना** =मीठुंमरचुं भभराववुं. –**फूटकर निकलना**= निमकहरामीनी शिक्षा मळवी

नमकख़्वार वि०[फा.] लूण खानार

नमकसार पुं०[फा.]ज्यां मीठुं बने के नीकळे ते जगा

नमकीन वि०[फा.]मीठावाळुं के खारुं (२)सुंदर(३)पुं० मीठावाळी वानी

नमदा पुं०[फा.]नमदो;दबावीने करेलुं जाडुं गरम कपडुं

नमाज़ पुं० [फा.] नमाज. (श. प्र. –**अदा करना,**-**गुज़ारना,**-**पढ़ना**) –**क़ज़ा होना**=वखत परनी नमाज पडवी [मुसल्लो

नमाज़ी पुं०[फा.]नमाज पढनार (२)

नमाज़े-जनाज़ा,–मैयत स्त्री०[फा.]मरण वखते शब आगळ पढाती नमाज

नमिश(–स) स्त्री० [फा. नमिश्क]दूधमांथी तैयार कराती एक वानी

नमी स्त्री० [फा.] भीनाश

नमूद स्त्री० [फा.] प्रगट थवुं ते (२) निशान; चिह्न [थयेलुं
नमूदार वि०[फा.]प्रगट;जाहेर(२)उदय
नयनू पुं० नवनीत; माखण
नया वि० नवुं; नवीन
नयाम पुं० [फा.] तलवारनुं म्यान
नरकट पुं०सरकट के बरु [छडी ?
नरगिस स्त्री०[फा.]एक फूलझाड;गुल-
नरद स्त्री० [फा. नर्द] सोगटुं के महोरुं
नरदा पुं० मेला पाणीनी मोरी
नरमा पुं० नरमो कपास; देवकपास
नरमाना स०क्रि० नरम करवुं(२)शांत के धीमुं करवुं(३) अ०क्रि० नरम के शांत या धीमुं थवुं
नरमी स्त्री० जुओ 'नर्मी'
नरिया पुं० नळियुं
नरी स्त्री० [फा.] बकरीनुं नरम चामडुं
नर्द स्त्री० [फा.] जुओ 'नरद'
नर्म वि० [फा.]'नरम' (२) [सं.] नर्म
नर्मी स्त्री० [फा.] नरमाश
नला पुं०पेशाबनी नळी(२)हाथ के पगनुं लांबुं हाडकुं (नळो)
नवंबर पुं० नवेम्बर मास
नवसप्त पुं०[सं.](९+७)सोळ शणगार
नवाज़ वि०[फा.] कृपा करनार,दयाळु (समासमां) [बक्षिस
नवाज़िश स्त्री० [फा.] नवाजिश; कृपा;
नवाना स०क्रि०नमाववुं(२) नम्र करवुं
नवाला पुं० [अ.] नवालो; कोळियो
नवासा पुं०[फा.] (स्त्री०–सी) दौहित्र
नवासी वि० ८९; नव्यासी
नवाह पुं०[सं.]नव दिननी के कोई सप्ताह (२) [अ.] आसपासनो प्रदेश
नविश्त स्त्री० [फा.] कागळ; लेख (२) दस्तावेज
नवीस पुं० [फा.] लखनार; लेखक
नवेला वि०(स्त्री०–ली)नौजवान(२)नवुं
नशा पुं०[अ. नश्शः]नशो के तेनी चीज –किरकिरा हो जाना=नशानी मजा वच्चे बगडवी. (आँखोंमें) नशा छाना=नशो चडवो.
नशापानी पुं०नशो ने तेनी सामग्री
नशीन वि०[फा.] बेसनार (समासमां. उदा. तख्तनशीन)
नशीला वि० मादक(२)केफ चडेलुं
नशेब पुं० [फा. निशेब] नीचाण (२) नीची जगा के जमीन
नशो पुं०[अ. नश्व] उन्नति;चडती;वृद्धि
नशोनुमा पुं० 'नशो'; चडती
नश्तर पुं० [फा.] नस्तर
नसल स्त्री० जुओ 'नस्ल'
नसना अ०क्रि० नासवुं (२)नाश पामवुं
नसब पुं०[अ.]कुळ;खानदान(पितृपक्षनुं)
नसर स्त्री० जुओ 'नस्र'

नसल स्त्री० जुओ 'नस्ल'
नसवार स्त्री० छींकणी
नसाना,नसावना अ०क्रि०नाश पामवुं
नसीनी स्त्री० 'निसेनी'; निसरणी
नसीबवर वि०[अ.]नसीबदार
नसीम स्त्री० [अ.]ठंडी धीमी मजेदार हवा
नसीहत स्त्री०[अ.]नसियत;शिखामण; [सारी सलाह
नसेनी स्त्री० जुओ 'नसीनी'
नस्क़ पुं०[अ.]दस्तूर;धारो(२) व्यवस्था
नस्ता स्त्री० [सं.] पशुना नाकनो वेध जेनाथी ते नथाय छे [पशु
नस्ति(-स्तो)त पुं०[सं.]नाथवाळुं-नाथेलुं
नस्य पुं [सं.] छींकणी
नस्योत पुं० [सं.] जुओ 'नस्तित'
नस्ल स्त्री० [अ.] नसल;वंश(२)संतति
नहछू पुं० विवाहनो एक विधि
नहर स्त्री० [फा.] नहेर
नहरनी स्त्री० [सं. नखहरणी] नराणी
नहरुआ पुं० नारुं के वाळानो रोग
नहलाना स०क्रि० नवडाववुं
नहस वि० अशुभ;अपशुकनियाळ(२) पुं० अपशुकन
नहान पुं० स्नान के तेनुं पर्व
नहाना अ०क्रि० नाहवुं
नहार पुं० [अ.]दिवस (२)वि० नयणा कोठावाळुं.**-तोड़ना**=नास्तो करवो
नहारी स्त्री० [फा.] नास्तो
नहीफ़ वि०[अ.]सूकलकडी;दूबळुं-पातळुं
नहूसत स्त्री० [अ.] उदासीनता (२) अशुभता
नाँउँ पुं० नाम
नाँघना स०क्रि० लंघवुं; ओळंगवुं
नाँठना अ०क्रि० नाश पामवुं
नाँद स्त्री० माटीनुं मोटुं कूंडुं जेमां पशुने निराय छे
नाँवँ पुं० नाम
नाइत्तिफ़ाक़ी स्त्री०[फा.]विरोध;मतभेद
नाइन स्त्री० नाईनी स्त्री;वाळंदण
नाईं स्त्री० समानता(२)अ० बरोबर
नाई,-ऊ पुं० नाई; हजाम
नाकंद वि०नहि पलोटेलो(बेल,घोडो इ०)
नाक स्त्री० नाक (२) वि० [फा.] पूर्ण अर्थमां समासने अंते. उदा० दर्द-नाक(३)[सं.]पुं०नाक; स्वर्ग. **-का बाल**=नजीकनो मित्र के सलाहकार. **नाकों चने चबवाना**=खूब पजववुं. **-रगड़ना**=खूब दीन बनी आजीजी करवी. **नाकों आना**=खूब हेरान थवुं. **-सिनकना**=नाक नसीकवुं **-सिकोड़ना**=नाक मरडवुं
नाक़दर;नाक़द्र वि०[फा.]कदर वगरनुं; अगुणज्ञ(नाम,-री,-द्री स्त्री०)
नाका पुं०नाकुं; **-छेकना,-बाँधना**=

नाकुं रोकवुं
नाकारा वि०[फा.]नकामुं(२)अयोग्य
नाक़िस वि०[अ.]अधूरुं(२)खराब
नाक़ूस पुं०[अ.] शंख
नाख़ु(-ख़ू)न पुं०[फा.]नख(२)खरी
नाग खेलना = जीवना जोखमवाळुं काम करवुं
नागफनी स्त्री० फाफडा घाटनो थूवर
नागरमोथा पुं०नागरमोथ घास
ना-गवार(-रा) वि०[फा.] असह्य (२) अप्रिय(३)पचवामां भारे
नागहाँ अ०[फा.]अचानक
नागहानी वि० [फा.] आकस्मिक (२) स्त्री०अचानक होवुं ते
नाग़ा पुं०[अ.]वच्चे गेरहाजरी;नियमित कार्यमां भंग; खाली गाळो
नागा पुं०नागो बावो
नागाह अ०[फा.]अचानक [नागण
नागिन स्त्री०नागण(२)पीठ पर वाळनी
नाचाक़ी स्त्री० [फा. नाचाक़ वि०] बीमारी(२)अणबनाव [विवश
नाचार वि०[फा.](नाम,-री) लाचार;
नाचीज़ वि०[फा.]तुच्छ;हीन
नाज पुं०अनाज(२)खावानुं
नाज़ पुं० [फा.] नखरां; हावभाव (२) नाज;लाड(३)गर्व [सुंदर स्त्री
नाज़नीं(-नीन) स्त्री०[फा.]नाजनीन;
नाज़रीन पुं०जुओ 'नाज़िरीन'
नाज़ाँ वि०[फा.]'नाज़'-गर्ववाळुं
ना-जायज़ वि०[अ+फा.]अनुचित
नाज़िम वि०[अ.]प्रबन्ध करनार(२) पुं० राजव्यवस्थापक(मुसलमान काळमां)
नाज़िर पुं० [अ.] कोर्टनो नाजर (२) निरीक्षक(३)भडवो
नाज़िरीन पुं०[अ. 'नाज़िर'नुंब०व०] प्रेक्षकगण(२)भणनार
नाज़िल वि० [फा.] नीचे ऊतरनारुं-अवतरनारुं
नाज़ुक वि०[फा.] नाजुक (२) पातळुं; बारीक(३)सूक्ष्म(४)झट कथळे के तूटे एवुं(५) जोखमवाळुं; -**दिमाग़**, -**मिज़ाज** वि०जरामां चिडाई जाय एवुं [अयोग्य
ना-ज़ेब(-बा) वि० [फा.] बेडोळ (२)
नाटना अ०क्रि० प्रतिज्ञाभंग थवुं; फरी जवुं(२)स०क्रि०ना पाडवी; कबूल ना करवुं
नाटा वि०नीचुं; गट्टु
नाठना अ०क्रि० नासवुं (२) जुओ 'नाँठना'(३)स०क्रि०नाश करवो
नाठा पुं० वारस वगरनो माणस
नाड़ स्त्री०गरदन;नाड
नातमाम वि०[अ.+फा.]अधूरुं;अपूर्ण
नातवाँ वि०[फा.] कमजोर; अशक्त;

नातवान [तो;'नतर'
नातर(-रि,-रु) अ०(प.)नहींतर; नहीं
नातराश वि०[फा.] असभ्य;अनघड
नाता पुं० नातो; संबंध के सगाई
नाताक़त वि० नातवान; ताकत वगरनुं
नातिक़ा पुं०[अ.] वाचा
नाती पुं०(स्त्री०नतिनी,नातिन्)पुत्रनो
के पुत्रीनो पुत्र
नाते अ०संबंधथी(२)माटे;वास्ते
नातेदार वि० सगुं; संबंधी
नादार वि० [फा.] गरीब; अकिंचन
नादिम वि० [अ.] शरमिंदुं; लज्जित
नादिया पुं०नंदी;पोठियो [उत्तम
नादिर वि० [फा.] अद्भुत; अद्वितीय;
नादिहंद वि०[फा.] (नाम,-दी स्त्री०)
लेणुं न देनार-न चूकवनार
नाधना स०क्रि०(बेल, घोडो) जोडवुं
(२) शरू करवुं
नान स्त्री० [फा.] नान; रोटी
नान-खताई स्त्री० [फा.] नानखटाई
नानबाई पुं०[फा. नानबा]नान बनावी
वेचनार
नाना पुं० नानो; मातामह (२) [अ.]
फुदीनो(३)अ०[सं.) नाना प्रकारनुं
(४) अनेक
नानिहाल पुं०नाना,नानीनुं घर के स्थान
नाप पुं० माप (२) मापवुं ते के तेनुं
परिमाण
नाप-जोख,नाप-तौल स्त्री० मापवुं के
जोखवुं ते के तेनुं परिमाण
नापना स०क्रि० मापवुं
नाफ़ स्त्री०[फा.]नाभि [माननार
नाफरमाँ पुं०[फा.]नाफरमान;आज्ञा न
नाफ़हम वि० [फा.) नासमज; मूरख
नाफ़ा पुं०[फा.]कस्तूरीमृगनी नाभिनी
कस्तूरीनी थेली
नाबदान पुं० मोरी; गटर
नाबालिग़ वि० [अ.+फा.] सगीर
ना-बीना वि० [फा.] अंध
नाम-आवर वि०[फा.] नामवर; प्रसिद्ध
नामए-ऐमाल पुं०[फा.+अ.]'ऐमाल-
नामा'; कारकिर्दी
नाम-ज़द वि० [फा.] प्रसिद्ध (२) नाम
जेनुं दाखल करायुं होय एवुं
नामधराई स्त्री० बदनामी
नामलेवा पुं० वारस
नामवर वि० प्रसिद्ध;नामी (नाम,-री)
नामहदूद वि० [फा.] बेहद
नामा पुं० [फा.] पत्र (२) ग्रंथ
ना-माक़ूल वि० [फा.+अ.] अयोग्य
नामा-निगार वि० [फा.] खबरपत्री
नामुमकिन वि० [फा.] असंभव
नामूस स्त्री० [फा.] इज्जत (२) शील;
स्त्रीनुं शियळ (३) लज्जा

नामूसी स्त्री० नामोशी; बेआबरू
नामौजूँ वि०[फा.]अयोग्य;गेरवाजबी
नायन स्त्री०नाई स्त्री; वाळंदण; 'नाइन'
नायाब वि०[फा.] अप्राप्य;दुर्लभ(२)श्रेष्ठ
नारंजी वि० [फा] नारंगी रंगनुं
नार स्त्री०गरदन(२) वणकरनो कांठलो (३)पुं०नाळुं(४)नाडुं(५)[अ.]अग्नि
नारा पुं०नाडुं (२) [अ.] घोष; पोकार (३) विजयघोष
नाराज़ वि०[फा.]गुस्से थयेलुं(२)नाखुश
नारियली स्त्री० काछली के तेनो हुक्को
नारू पुं० 'नहरुआ'; नारुं
नाल स्त्री० [सं.] नाळ (२) पुं० [अ.] घोडानो नाळ
नालबंद पुं० [अ.+फा.] जोडा के घोडाने नाळ जडनार
नाला पुं० पाणीनुं नाळुं
नालिश स्त्री० [फा.] फरियाद
नाली स्त्री० नीक (२) मोरी
नाश स्त्री० [अ. नअश] लाश;शब (२) ठाठडी (३) पुं० [सं.] नाश
नाशपाती स्त्री. [तु.] नासपाती
नाशाद वि०[फा.] दुःखी; नाराज (२) कमनसीब
नाश्ता पुं०[फा.]नास्तो [छींकणी
नास स्त्री० सूंघीने लेवानी दवा (२)
ना-सज़ा(०वार) वि०[फा.] अनुचित
नासदान पुं०छींकणीनी डबी [मूर्ख
नासमझ वि०(नाम, -झी)अणसमजु;
नासाज़ वि० [फा.] विरोधी; प्रतिकूळ (२) बीमार (नाम,-ज़ी)
नास(-से)ह वि०[अ. नासिह]नसियत देनार; सलाहकार; उपदेशक
ना-सिपास वि०[फा.]कृतघ्न;निमकहराम
नासेह वि० जुओ 'नासह'
नाह पुं० (प.) नाथ [(३)नीच
नाहंजार वि०[फा.] बदचालनुं(२)दुष्ट
नाहमवार वि०[फा.]असमान;ऊंचुंनीचुं
नाहर पुं० वाघ (२) सिंह
नाहरू पुं० जुओ 'नारू'
निँदासा वि० ऊंघ भरायेलुं; 'उनींदा'
निअर अ० [सं. निकट, प्रा. निअड] (प.) पासे (२) वि० समान
निअराना अ०क्रि० (प.)नजीक आववुं
निआमत स्त्री०[अ.] दुर्लभ के कीमती वस्तु
निकम्मा,निकर्मा वि०नकामुं(२)आळसु
निकलना अ०क्रि०नीकळवुं [प्रेरक;
निकलवाना स०क्रि० 'निकालना'नुं
निकाई स्त्री०भलाई (२) सुंदरता (३) जुओ 'निराई'
निकाना स०क्रि० जुओ 'निराना'
निक़ाब स्त्री० जुओ 'नकाब'
निकालना स०क्रि० (बहार)काढवुं(२)

निकाल करवो
निकाला पुं० निकाल; बहार काढवुं ते
निकास पुं० [सं.] निकाल (२) मूळ; ऊगम(३) नीकळवानुं द्वार
निकासी स्त्री० रवानगी; जवुं ते (२) परदेशनी निकास(३) आय;लाभ; नफो (४) खपत; उपाड
निकाह पुं० [अ.] निका; लग्न
निखंड वि० मध्य; बरोबर वचलुं
निखट्टू वि० ठेकाणा वगरनुं; रखडेल (२) नकामुं; आळसु
निखरना अ०क्रि०साफ थवुं; नीखरावुं
निखरी स्त्री०चोखडियात-घीनी रसोई
निखार पुं० स्वच्छता;सफाई(२)सजावट
निखारना स०क्रि० निखारवुं; धोवुं; साफ के पवित्र करवुं
निख़ालिस वि० अशुद्ध (२) (ग्राम्य) निखालस; शुद्ध
निखोट वि० खोटाई के दोष वगरनुं
निगंदना स०क्रि० गोदडा इ०मां दोरा नांखवा [नांखवा ते
निगंदा पुं० [फा.] बखियो (२) दोरा
निगराँ वि०[फा.]निरीक्षक(२)राह जोनार
निगरानी स्त्री०[फा.]देखरेख;निरीक्षण
निगलना स०क्रि० गळवुं (२) गटाप करी जवुं [रक्षक
निगहबान पुं०[फा.]देखरेख राखनार;

निगार पुं० [फा.] चित्र(२) भरतकाम
निगाली स्त्री० हूकानी नेह
निगुरा वि० नगरुं; गुरुमंत्र वगरनुं
निगोड़ा वि० नघरोळ(२)दुष्ट
निघरघट वि०नहि घरनुं के नहि घाटनुं (२)निर्लज्ज. —देना=निर्लज्ज थई खोटी सफाई करवी
निघरा वि० जुओ 'निगोड़ा'
निचला वि० नीचलुं (२) निश्चल
निचाई स्त्री० नीचाण (२) नीचता
निचान स्त्री० नीचाण (२) ढाळ
निचिंत वि० निश्चित
निचुड़ना अ०क्रि० निचोवावुं
निचोड़ना, निचोना स०क्रि० निचोववुं
निछक्का पुं० एकांत
निछावर स्त्री०माथे उतारीने दान कराती वस्तु(२)न्योछावर करेलुं–बलिदान
निछोह(-ही) वि० प्रेमरहित(२)निर्दय
निज(-जी,०का) वि० निज; पोतानुं. निज करके=अवश्य; जरूर
निज़ाम पुं०[अ.] बन्दोबस्त(२)निझाम
निज़्द अ०[फा.]पासे(२)सामे [वगरनुं
निठल्ला(-ल्लू) वि० ठालुं; कामधंधा
निठाला पुं० बेकारी; नवराश;ठालापणुं
निडर वि० नीडर (२) साहसिक
निढाल वि०ढीलुं; अशक्त (२) उत्साह-रहित; मंद

निथरना अ०क्रि० नीतरवुं
निथार पुं०नितार;नीतरेलुं साफ प्रवाही के नीतरीने नीचे बेसे ते
निथारना अ०क्रि० नितारवुं
निदरना स०क्रि० (प.) निरादर करवो
निधड़क अ० बेधडक
निधन(-नी) वि० निर्धन
निनानवे वि० नव्वाणुं; ९९.-के फेर में आना या पड़ना=धननी धूनमां पडवुं
निनार(-रा) वि०(प.)निरालुं;जुदुं;अलग
निपजी स्त्री० (प.) नीपज (२) लाभ
निपट अ०नींपट;केवळ;बिलकुल(२)खूब
निपटना अ०क्रि० जुओ 'निबटना'
निपटारा पुं० जुओ 'निबटाव'
निपूत(-ता) वि० अपुत्र
निफ़ाक़ पुं० [अ.] विरोध (२) वेर(३) अणबनाव
निबकौरी स्त्री० लींबोळी
निबटना अ०क्रि०छूटवुं(२)पूरुं थवुं(३) निवेडो आववो(४)परवारवुं (जेमके शौचादि) [आणवो
निबटाना स०क्रि०पूरुं करवुं के निवेडो
निबटाव, निबटेरा पुं० समाप्ति (२) निवेडो; फेंसलो
निबहना अ०क्रि०पार पामवुं(२)नभवुं
निबाह पुं० निभाव; गुजारो
निबाहना स०क्रि०'निभाना';नभाववुं; चलाववुं [निवेडो आणवो
निबेड़(-र)ना स०क्रि० छोडाववुं (२)
निबेड़ा(-रा) पुं० निवेडो; फेंसलो(२) अन्त;पार(३)मुक्ति
निबौरी(-ली) स्त्री० लींबोळी
निभना अ०क्रि० नभवुं
निभाना स०क्रि० नभाववुं
निमकौड़ी स्त्री० जुओ 'निबकौरी'
निमाना वि०नीचुं;ढळतुं(२)नरम;भोळुं
नियर,नियराना जुओ'निअर''निअराना'
नियाज स्त्री०[फा.]इच्छा (२) आजीजी (३)कृपा(४)भेट. -हासिल करना =मोटानी सेवामां हाजर थवुं
नियाज़-नामा पुं० [फा.] कृपापत्र (कागळमां वपराय छे)
नियामत स्त्री० जुओ 'निआमत'
नियार पुं०सोनीनी दुकाननो पूंजो,कचरो
नियारिया पुं० धूळधोयो
निरंध वि० भारे अंध(२)महामूर्ख
निरख़ पुं०जुओ 'निर्ख़' [निर्णय
निरजोस पुं० [सं निर्यास]निचोड(२)
निरा वि० (स्त्री०-री) शुद्ध;केवळ;नयु
निराई स्त्री० नींदामण
निराना स०क्रि० नींदवुं; 'निकाना'
निराला पुं० एकांत जगा(२)वि०एकांत (३)निरालुं(४)अजोड;उत्तम

निर्ख़ पुं० [फा.] भाव; दर [ते
निर्ख़बन्दी स्त्री०[फा.] भाव नक्की करवो
निर्भीक वि०[सं.] नीडर [चामडी
निर्मोक पुं० [सं.] सापनी कांचळी(२)
निर्यात पुं० [सं.] निकास थतो माल
निर्यातन पुं० [सं.] बदलो;प्रतिकार
निर्यास पुं० [सं.] वनस्पतिमांथी झरतो के कढातो रस (२) गुंदर
निर्वाचक पुं०[सं.]चूंटनार;मताधिकारी
निर्वाचन पुं०[सं.]चूंटणी [आवेल
निर्वाचित वि० [सं.]चूंटायेल;चूंटणीमां
निर्वाह पुं० [सं.] निर्वाह; गुजारो (२) टकवुं–नभवुं ते; निभाव(३)पालन (४) समाप्ति
निवाज़ वि० जुओ 'नवाज़'
निवाज़ना स०क्रि०निवाजवुं;कृपा करवी
निवाज़िश स्त्री० कृपा; दया
निवाड़(–र) स्त्री० खाटलानी पाटी(२) कूवानुं चक्कर; 'जमवट'
निवाला पुं० जुओ 'नवाला'
निशस्त स्त्री० [फा.] बेठक
निशाख़ातिर स्त्री० संतोष; निरांत
निशानची पुं०[फा.]निशान–झंडो लई चालनार; झंडाधारी
निशान-देही स्त्री०[फा.]निशानी आपवी –ओळखाववुं ते [एंधाण
निशाना पुं० [फा.] ताकवानुं निशान;
निशास्ता पुं० [फा.] घउं पलाळी तेने वाटीने कराती एक वानी
निशीथ पुं० [सं.] रात
निषंग पुं०[सं.]तीरनो भाथो(२)तलवार
निसबत स्त्री० [अ.]निस्बत;संबंध (२) विवाहनी वात; सगाई (३) तुलना
निसबती वि० संबंधी
निसबती भाई पुं० बनेवी के साळो
निसवाँ स्त्री०[अ.'निसा'नुं ब.व.]स्त्रीओ
निसार पुं०[अ.] जुओ 'निछावर' (२) वि० न्योछावर (३) निःसार
निसास पुं० (प.) निसासो (वि०–सी)
निसे(–सै)नी स्त्री० निसरणी
निसोत वि० (प.) शुद्ध
निस्फ़ वि० [अ.] अरधुं
निहंग वि०निःसंग;एकाकी(२) एकल; नमारमूंडुं(३)पुं०[फा.]मगर; ग्राह. –लाड़ला वि० मावापनां लाडथी बगडेलुं (छोकरुं)
निहत्था वि० शस्त्रहीन (२) गरीब
निहाँ वि०[फा.] छूपुं; गुप्त
निहाई स्त्री०; निहाउ पुं० एरण
निहायत वि० [अ.] खूब; बेहद
निहारना स०क्रि० (प.) निहाळवुं
निहाल वि० [फा.] न्याल; कृतकृत्य
निहाली स्त्री०[फा.]गादी (२) 'निहाई'
निहोरना स०क्रि० (प.) वीनववुं (२)

मनाववुं (३) कृतज्ञ थवुं

निहोरा पुं०(प.)उपकार(२)विनंति(३) आशरो; भरोंसो

नींद स्त्री० निद्रा;ऊंघ. **–उचटना,– –खुलना, –टूटना** = ऊंघ ऊडी जवी; जागवुं. **–पड़ना** = ऊंघ आववी. **–लेना**=सूवुं; ऊंघवुं

नींदना स०क्रि० नींदवुं (२) निंदवुं

नीक(–का),नीको [फा.] वि० भलुं; अच्छुं (२) सुंदर

नीके अ० ठीक रीते; बरोबर

नीकोई स्त्री०[फा.] भलाई (२) सुंदरता

नीज़ अ०[फा.] उपरांतमां; पण; वळी

नीबू पुं० लींबु

नीबू-निचोड़ वि० भारे कंजूस

नीम पुं० लीमडो(२)वि०[फा.] अडधुं

नीम-जाँ वि०[फा.] अधमूउं; मृतप्राय

नीम-रोज़ पुं०[फा.] बपोर

नीमास्तीन स्त्री० नीचे पहेरवानुं अर्धी बांयनुं एक कुरतुं के बंडी

नीयत स्त्री०[अ.]नैयत;भावना; दानत

नीला-थोथा पुं०[सं.नीलतुत्थ]मोरथूथुं

नीलाम पुं० लिलाम

नीलोफ़र पुं०[फा.] नीलोत्पल; कमळ

नीवँ,नीव स्त्री० पायो. **–जमाना, डालना या देना**=पायो नांखवो

नुक़ता पुं० [अ.] टपकुं; बिंदु; नुक्तो

नुक़ताचीं वि०नुक्तेचीन;दोष शोधनार

नुकताचीनी स्त्री [फा.] नुक्तेचीनी

नुक़रा पुं० [अ.] चांदी (२) घोडानो सफेद रंग

नुक़ल पुं० जुओ 'नुक़्ल' [सुंदर

नुकीला वि० नोकदार; अणीदार (२)

नुक्कड़ पुं० अणी (२) खूणो नीकळेलो होय ते; ढेको

नुक़्ल पुं०[अ.]एक जातनी मीठाई(२) नशा पर खावानुं ते

नुक़्स पुं० [अ.] दोष; ऊणप

नुचना अ०क्रि०ऊखडवुं(२) उझरडावुं

नुजूम पुं०[अ.]नजूम;ज्योतिष

नुजूमी पुं०[अ०]नजूमी;जोशी

नुतफ़ा,नुत्फ़ा पुं०[अ.]वीर्य(२)ओलाद

नुनख(-खा)रा वि०मीठावाळुं;'नमकीन'

नुनना स०क्रि०लणवुं;कापणी करवी

नुमा वि०[फा.] 'देखातुं', 'दर्शक' के 'समान' अर्थमां समासमां. उदा० 'खुश-नुमा' [ठाठमाठ

नुमाइश स्त्री०[फा.]प्रदर्शन(२)सजावट;

नुमाइशी वि०[फा.]देखाडा पूरतुं

नुमाई स्त्री०[फा.]देखाडवुं ते

नुमायाँ वि०[फा.]जाहेर;प्रत्यक्ष

नुसख़ा पुं०[अ.] नुसखो **–बाँधना**= नुसखा प्रमाणे दवा आपवी

नून पुं० लूण;मीठुं; **–तेल**=मीठुं मरचुं

वगेरे घरनो सामान
नूरका तड़का पुं०प्रातःकाळ
नूरानी वि०[अ.] नूरवाळुं; चमकदार (२)सुंदर
नूह पुं०[अ.] एक पेगंबर; 'Noah'
नेअमत स्त्री० [अ.] जुओ 'निअमत'
नेइँ(-ई) स्त्री०'नीव';पायो [थोडुं;जरा
नेक वि० [फा.] नेक;भलुं;शिष्ट (२)अ०
नेकचलन वि० सदाचारी (नाम,-नी)
नेकनिहाद वि०[फा.]सुशील;चारित्रवान
नेकनीयत वि० नेक नैयतवाळुं; उच्चाशयी [सुशील
नेकबख़्त वि० [फा.] नसीबदार (२)
नेग पुं० लग्न के उत्सवने अंगे संबंधीओ तथा नोकरोने अपातुं दापुं
नेगचार,नेगजोग पुं० 'नेग'नो रिवाज
नेगी पुं० 'नेग'नुं हकदार
नेगीजोगी पुं० 'नेगी'; वसवायां
नेज़ा [फा.], **नेजाल** पुं० नेजो
नेज़ बरदार पुं० [फा.] भालावाळो के राजानो निशानची [स्त्री०नैयत
नेत पुं०निरधार; ठराव (२) संकल्प (३)
नेनुआ(-वा) पुं० एक शाक-गलकुं
नेम पुं०नियम(२)रिवाज(३) धर्मक्रिया (वि०, **-मी**)
नेमधरम पुं० पूजापाठ इ०
नेरा,नेरे अ० नेरुं; पासे; 'नियर'
नेवज पुं० नैवेद्य; भोग
नेवत(-ता) पुं० 'न्योता'; नोतरुं
नेवतना स०क्रि० नोतरवुं
नेवर पुं० नूपुर(२) वि० खराब; बूरुं
नेवला पुं० नोळियो
नेवाज वि०जुओ 'निवाज' [डंख
नेश पुं०[फा.] नोक;अणी(२)कांटो(३)
नेशकर पुं० [फा.] शेरडी
नेस्त वि० [फा.] अस्तित्व वगरनुं. **-नाबूद** वि०नष्टभ्रष्ट;खेदानमेदान
नेस्ती स्त्री० [फा.] न होवुं ते; अभाव (२) आळस (३) नाश
नै स्त्री० वांसनी नळी के वांसळी (२) हूकानी नेह [फा.](३) (प.) नदी (४) नीति; नय
नैचा पुं० [फा.] नेचो; हूकानो मेर
नैन पुं० (प.) नयन
नैनसुक(-ख) पुं०नेनसूक कपडुं
नैनू पुं० 'नयनू'; माखण
नैयर पुं० [अ.] खूब चळकतो तारो
नैयरे-असग़र पुं० [अ.] चंद्रमा
नैयरे-आज़म पुं० [अ.] सूर्य
नैसा वि०(प.) 'अनैस'; अनिष्ट; खराब
नैहर पुं० पियर
नैरंगी स्त्री० [फा.] चालबाजी
नोक-झोंक स्त्री०ठाठमाठ;सजावट (२) व्यंग; कटाक्ष (३) छेडछाड

नोच स्त्री० छीनवी के उखाडी या खेंची के झूंटवी लेवुं ते [ते; लूंट

नोच-खसोट स्त्री०छीनवी के झूंटवी लेवुं

नोचना स०क्रि० उखाडी नांखवुं (२) ऊझरडवुं (३) झूंटवी लेवुं

नोन पुं० लूण; 'नून'

नोना पुं०लूणो(२)वि० खारुं (३) सुंदर

नोनिया पुं० खारी माटीमांथी मीठुं बनावनार

नौ वि०नव;९(२)नवुं (३) स्त्री० रीत; प्रकार. **–दो ग्यारह होना**= अगियारा गणी जवुं

नौकर पुं०[फा.](स्त्री० **–रानी**) नोकर

नौकरीपेशा पुं० [फा.] नोकरियात माणस [वपराय छे.

नौज अ० 'न करे नारायण'–ए अर्थमां

नौता वि०नवुं;नौतम (२)पुं०'न्योता'

नाना अ०क्रि० 'नवना'; नमवुं

नौबत स्त्री०[फा.]नोबत(२)वारी;प्रसंग (३)दशा. **–आना**=दशा आववी. **–झड़ना**=नोबत वागवी.**–बजना** =आनंदउत्सव थवो (२) प्रताप के दोरनो डंको वागवो

नौरोज़ पुं०[फा.]नवरोज;पारसी बेसतुं वर्ष (२) तहेवार

नौलखा पुं० नवलख; खूब कीमती

नौशा पुं० [फा.] नौशाह; वरराजा

नौसत पुं० जुओ 'नवसप्त'

नौसादर पुं० [फा. नौशादर] नवसार

नौसिख (-खिया,-खुआ)वि० शिखाउ; काचुं; नवुंसवुं

न्यारिया पुं० जुओ 'नियारिया'

न्याव पुं० न्यायी वात (२) न्याय

न्योतना स० क्रि० नोतरवुं

न्योतहरी पुं० नोतरे आवेल

न्योता पुं० नोतरुं

न्योला पुं० 'नेवला'; नोळियो

न्योली स्त्री०हठयोगनी नौलीनी क्रिया

प

पंख पुं०पांख.**–जमना**=बहेकवुं;वंठवुं. **–लगना**=पांखो आववी; पक्षी जेम वेगवान थवुं [(?)

पँखुड़ा पुं०खभा ने हाथनो सांधो;पांगोठुं

पँखुड़ी स्त्री० फूलनी पांखडी

पंग,पंगा वि० पंगु;लंगडुं(२)अपंग

पंचकी भीख=सौना आशीर्वाद

पंचकी दुहाई=सौने अन्याय सामे के

मदद माटे पोकार

पँचमेल वि॰ पांच के अनेक वस्तुओना मेळवाळुं; सेळभेळ

पँचरंग,-गा वि॰ पचरंगी

पंछी पुं॰ पंखी; पक्षी

पंज वि॰ पांच

पंजा पुं॰[फा.]पांचनो समूह(२)हाथनो पंजो. **पंजे झाड़कर पीछे पड़ना या चिमटना**=केड बांधीने लागवुं

पंजारा पुं॰ पींजारो

पँजीरी स्त्री॰ पंजरी; पंचाजीरी

पँजेरा पुं॰ वासण सांधनारो

पँडवा पुं॰ पाडो (बच्चुं)

पंडा पुं॰ तीर्थनो पूजारी के ब्राह्मण

पंडाल पुं॰ मंडप

पंडिताइन,पंडितानी स्त्री॰ पंडिताणी

पंडिताऊ वि॰ पंडितना जेवुं;पंडितियुं

पंडुक पुं॰ होलो पक्षी(स्त्री॰,-की)

पंडुर पुं॰ पाणीनुं परडवुं;डेंडवुं

पंद स्त्री॰ [फा.] नसियत; उपदेश

पँवाड़ा पुं॰ [सं. प्रवाद] पवाडो

पंसारी पुं॰ मसालानो वेपारी; गांधी

पँसुरी,-ली स्त्री॰ पांसळी; 'पसली'

पंसेरी स्त्री॰ पांचशेरी

पकड़-धकड़ स्त्री॰ धरपकड

पकना अ॰क्रि॰ पाकवुं (२) सीझवुं

पकाई स्त्री॰ पाकवुं ते के पकाववानी मजूरी [जेवी वानी

पकौड़ा पुं॰ (स्त्री॰ **-ड़ी**) पकोडी; वडा

पक्का वि॰ पाकुं; पाकेलुं (२) पक्कुं (३) स्थिर; टकाउ; **-खाना, पक्की रसोई**=घीमां करेली रसोई

पखड़ी स्त्री॰ पांखडी; 'पँखड़ी'

पखवाड़ा,-रा पुं॰ पखवाडियुं

पखान पुं॰ (प.) पाषाण

पखाना पुं॰ 'पाखाना' जुओ (२)(प.) उपाख्यान; कथा

पखारना अ॰क्रि॰ पखाळवुं

पखावज स्त्री॰ पखवाज; पखाज

पखेरू पुं॰ पंखेरु; पक्षी

पगड़ी स्त्री॰ पाघडी. **-उतारना**= बेइज्जत करवी (२) ठगवुं (**किसीके साथ)पगड़ी बदलना**=मैत्री करवी

पगना अ॰क्रि॰ तरबोळ-रसबस थवुं

पगरा पुं॰पग; डगलुं (२) (प.) प्रभात

पगला वि॰ पागल

पगहा पुं॰ [सं. प्रग्रह] जुओ 'पघा'

पगा पुं॰ दुपट्टो (२) पाग; पागडी (३) 'पघा' जुओ

पगार पुं॰ चार तरफनी हद-दिवाल (प.) (२) पग नीचेनी धूळ के कचरायेलुं ते (३) पार कराय एवुं जळाशय के नदी [सवार

पगाह स्त्री॰ [फा.]नीकळवानो समय;

पगुराना अ०क्रि० वागोळवुं (२) हजम करवुं

पघा पुं० ढोर बांधवानुं दोरडुं

पचड़ा पुं० झंझट; बखेडो

पच मरना=काम करी करीने थाकी जवुं

पचरंग पुं०चोक पूरवानी सामग्री [चोक

पचरंगा वि० पचरंगी (२) पुं० पूरेलो

पचहरा वि० पांच-वेवडुं

पचासा पुं० पचास नंगनो समूह

पचोतर सो पुं० एकसो पांच

पच्चड़(–र) पुं० साल के सांधो इ० कांई सखत करवा माराती फांस

पछड़ना अ०क्रि० पछडावुं; पाछा पडवुं

पछताना अ०क्रि० पस्तावुं

पछतावा पुं० पस्तावो

पछेवड़ा पुं० पछेडो; मोटी चादर

पछोड़ना स०क्रि० ऊपणवुं; झाटकवुं

पज़मुरदा वि० [फा.] करमायेलुं

पजारना स०क्रि०(प.) प्रजाळवुं;बाळवुं

पज़ावा पुं० [फा.] ईटनो भट्ठो

पज़ीर वि० [फा.] माननार; पाळनार ए अर्थमां (समासमां)

पट पुं० पट;वस्त्र(२)कमाड(३) पडदो. **–उघड़ना,खुलना**=देवना दरवाजा ऊघडवा. **–पड़ना**=धीमुं पडवुं; न चालवुं [फट दईने फाटवुं

पटकना स०क्रि० पटकवुं(२) अ०क्रि०

पटकनी(–निया),पटकान स्त्री०पटकवुं ते; पटक [के खेस

पटका पुं० कमरे बांधवानो फटको

पटतर पुं० समानता (२) उपमा

पटतारना स०क्रि० सपाट-सरखुं करवुं

पटना अ०क्रि० सरखुं–एकसमान थवुं (२)बेने बनतुं आववुं के सहमत थवुं (३) चूकते थवुं

पटपर वि० सपाट; सरखुं

पटबीजना पुं० आगियो

पटरा पुं० चोखंडुं घडेलुं पाटियुं.**–कर देना**=मारी झूडी सपाट करी देवुं (२) खलास करी देवुं

पटरी स्त्री० पाटियुं (२) पगथी; फूट-पाथ(३)लखवानुं पाटियुं.**–जमना या बैठना**=बेनुं पाटियुं बरोबर गोठवुं; मन मळवुं

पटवा पुं० (स्त्री० **पटइन**) पटवो

पटवारी पुं०तलाटी (नाम, **पटवारगरी**)

पटसन पुं० शण

पटाना स०क्रि० पिटावी करी बरोबर कराववुं(२) चूकते करवुं(३)अ०क्रि० शांत बेसवुं ['पाटना']

पटाव पुं० 'पाटना'–ए क्रिया (जुओ

पटिया स्त्री० पथ्थरनो चोखंडो टुकडो (२) पाटी; स्लेट

पटीलना स०क्रि० पटाववुं; समजावी

लेवुं (२) पूरुं करवुं
पटुवा पुं० 'पटसन'; शण
पटेबाज़,पटैत पुं० पटावाज
पटे(-टै)ला पुं०समार;'हेंगा'(२)कुस्तीनो एक दाव [भूंगळ
पटैला पुं० जुओ 'पटेला' (२)कमाडनी
पठाना स०क्रि० पाठववुं; मोकलवुं
पठानी स्त्री० पठाण स्त्री (२)पठाणपणुं (३)वि०पठाणने लगतुं [स्त्री
पठिया स्त्री०['पट्ठा'नुं स्त्री०]पट्ठी जुवान
पड़छती(-त्ती) स्त्री० जुओ 'परछत्ती'
पड़त स्त्री०,**पड़ता** पुं० पडतर किंमत
पड़ताल स्त्री० तपास. **-ना** स०क्रि० तपास करवी
पड़ती स्त्री० पडतर जमीन. **-उठना**= पडतरनी खेती थवी. **-छोड़ना**= पडतर छोडवी [रहेवुं
पड़ना अ०क्रि०पडवुं. **पडा होना**=पडया
पड़पोता पुं० प्रपौत्र
पड़रा(-वा) पुं० पाडुं (नर)
पड़री स्त्री० 'पड़िया'; पाडी
पड़वा पुं०जुओ'पड़रा'(२)स्त्री० पडवो
पड़िया स्त्री० पाडी; 'पडवा'नुं स्त्री०
पड़ि(-रि)वा स्त्री० पडवो; 'पड़वा'
पड़ोस पुं०पडोश. **-करना**=पडोशी थवुं
पड़ोसी पुं० (स्त्री० **-सिन**) पडोशी
पढं(-ढ)त स्त्री०पडवुं ते (२) जादुमंत्र
पढ़ना स०क्रि० भणवुं (२) वांचवुं (३) गोखवुं [पद्धति
पढ़ाई स्त्री० भणतर (२) भणाववानी
पढ़ाना स०क्रि०भणाववुं(२) शीखववुं; समजाववुं (३) पक्षीने पढाववुं
पढ़ा-लिखा वि० भणेलुं; शिक्षित
पतंगा पुं० पतंग (२) पतंगियुं
पत स्त्री०पत;आबरू;इज्जत. **-उतारना, -लेना**=लाज लेवी
पतझड़,पतझाड़(-र)स्त्री०पानखर ऋतु
पत-पानी स्त्री० पत; प्रतिष्ठा; लाज
पतरी स्त्री० पतराळुं
पतला वि०पातळुं. **-पड़ना**=दुर्दशामां होवुं. **-हाल**=दुर्दशा
पतलून पुं० पाटलून
पतवार(-री) स्त्री० सुकान
पता पुं० पत्तो (२) सरनामुं. **पतेकी, पतेकी बात**=रहस्य खोलती वात. **-निशान**=नामनिशान
पताई स्त्री० खरेलां पांदडांनो ढग
पतिआ(-या)ना स०क्रि० पतियार करवो; पतीजवुं
पतिआर,पतियारा पुं०पतियार;विश्वास
पतीला पुं०[फा.]एक वासण;तपेलुं (?)
पतीली स्त्री०नानो'पतीला';तपेली (?)
पतुरिया स्त्री० 'पातुर'; वेश्या
पतोखा पुं० पडियो

पतोह,-हू स्त्री० पुत्रवधू
पत्तर पुं० पतरुं (२) 'पत्तल' जुओ
पत्तल स्त्री० पतराळुं (२) पतराळी
पत्ता पुं० पान; पांदडुं (२) पत्तुं. **-हो जाना**=छू थई जवुं [भाग
पत्ती स्त्री० नानुं पान(२) पांखडी (३)
पत्तीदार पुं० हिस्सेदार
पत्थर पुं० पथ्थर. **-की लकीर**=स्थिर; स्थायी. **-पर दूब जमना**=असंभव काम बनवुं. **-पड़ना** = नष्टभ्रष्ट थई जवुं. **-पानी**=तोफानी समय
पथरना स०क्रि० पथ्थर पर घसी धार काढवी; पथरी पर चडाववुं
पथराना अ०क्रि०पथ्थर जेवुं (कठण के स्तब्ध) थई जवुं
पथरी स्त्री० पथ्थरियुं (२) पथरीनो रोग के धार काढवानी पथरी
पथरीला वि०(स्त्री० **-ली**) पथ्थरवाळुं
पदार पुं० [सं.] पगरज
पन (प्रत्यय) पणुं. उदा. लडकपन
पनकपड़ा पुं०वाग्या पर बांधवानुं भीनुं कपडुं
पनघट पुं० पणघट; पाणीनो घाट
पनच स्त्री० पणछ
पनचक्की स्त्री० पाणीथी चालती चक्की
पनडुब्बा पुं० मरजीवो (२) पाणीमां डूबी माछली पकडनार पक्षी
पनडुब्बी स्त्री० 'सब-मेरीन'
पनपना अ०क्रि० पाणी मळतां फरी लीलुं थवुं (२) फरी साजुं थवुं
पनवाड़ी पुं० पानवाळो; तंबोळी
पनवारा पुं० जुओ 'पत्तल'
पनस पुं० [सं.] फणस
पनसारी पुं० जुओ 'पंसारी'
पनसाल स्त्री० परब
पनहरा पुं० पाणियारो
पनहा पुं० कपडानो पनो (२) मर्म; भेद
पनहारा पुं०(स्त्री० **-रन,-रिन,-री**) जुओ 'पनहरा'
पना पुं० पनुं; एक पेय
पनाला पुं० जुओ 'परनाला'
पनाह स्त्री० [फा.] रक्षा (२) शरण
पन्ना पुं० एक जातनो हीरो
पन्नी स्त्री० पित्तळ के कलाईनो वरख जे वस्तुनी पर शोभा माटे चोटाडाय छे
पपड़ा पुं० पोपडो (स्त्री० **-ड़ी**)
पपीहा पुं० पपैयो; चातक
पपीता पुं० पपैयो के पपैयुं
पपोटा पुं० पोपचुं
पबारना स०क्रि० (प.) फेंकवुं
पयान पुं० प्रयाण
पयाम पुं० [फा.] पेगाम; संदेश
पयार,-ल पुं० पराळ
पर पुं० [फा.] पींछुं के पांख

परकार पुं० [फा.] कंपास
परकाला पुं० सीडी; जीनो (२) [फा.] टुकडो (३) चिनगारी
परकोटा पुं० कोट; किल्लो
परगना पुं० परगणुं
परचना अ०क्रि० परिचय थवो; हळी जवुं (२) टेव पडवी
परचा पुं० परिचय (२)[फा.]कागळनो ककडो (३) पत्र (४) प्रश्नपत्र
परचाना स०क्रि० परिचय करवो; हळतुं करवुं (२) टेव पाडवी
परचून पुं० सीधुंसामग्री
परचूनी पुं० मोदी
परछत्ती स्त्री०अभराई(२)दीवाल जोडेनुं एकढाळियुं–छापरुं [पोंकणुं
परछन स्त्री० वरने पोंकवानी क्रिया;
परछना स०क्रि० पोंकवुं
परछाईं स्त्री० पडछायो
परजाता पुं० पारिजातक
परत स्त्री० थर (२) गडी
परतला पुं०तलवारनो के चपरासनो पटो
परती स्त्री० जुओ 'पड़ती'
परथन पुं० जुओ 'पलेथन'
परदा पुं० [फा.] पडदो
परदादा पुं० दादानो बाप
परनाना पुं० नानानो बाप
परनाला पुं० मोरी; 'पनाला'

परपराना अ०क्रि० (जीभ पर) चचरवुं
परपोता पुं० जुओ 'पड़पोता'
परबाल पुं०आंखनी पांपणनो रोग(२) प्रवाल [चवाणुं
परमल पुं०जुआर घउंना दाणानुं एक
परला वि०(स्त्री०–ली)ते तरफनुं.**परले दरजे या सिरेका**=हद पारनुं;खूब
परवर वि०[फा.](समासमां अंते)पालक
परवरिश स्त्री० [फा.] पालनपोषण; परवरश
परवल पुं० परवळनुं शाक के वेलो
परवस्ती स्त्री० परवरशी; पालनपोषण
परवा स्त्री० पडवो (२) [फा.] परवा
परवाना पुं०[फा.]परवानो(२) पतंगियुं
परसना स०क्रि० स्पर्शवुं (२) पीरसवुं
परसा पुं० जुओ 'परोसा'
परसाल अ० गये के आवते वर्षे
परसों अ० परम दिवसे
परस्त वि०[फा.] (समासने अंते) पूजक
परस्तिश स्त्री० [फा.] पूजा; उपासना
परहुमा पुं०[फा.] कलगी
पराँठा पुं० 'परौठा'; चोपडुं
परागंदा वि०[फा.]विखरायेलुं(२)बेहाल
पराना अ०क्रि० पलायन करवुं
पराया,परावा वि० परायुं (स्त्री० –ई)
परिंदा पुं०[फा.] परिंदुं; पक्षी
परिकरमा,परिक्रमा स्त्री० परकंमा

परिच्छद पुं०[सं.] ढांकण; आच्छादन
परिधन पुं० (प.) परिधान (धोतियुं वगेरे नीचे पहेरवानुं कपडुं)
परिभाषा स्त्री०[सं.] स्पष्ट कथन (२) लक्षण; व्याख्या (३) परिभाषा
परिया पुं०दक्षिणनी एक अस्पृश्य जात
परिवा स्त्री०प्रतिपदा; पडवो; 'पड़िवा'
परीज़ाद वि० [फा.] अति सुंदर
परे अ०पेले पार; पार(२)बाद;पछी(३) बहार; पर; अतीत
परेई स्त्री० मादा पारेवुं
परेखना स०क्रि० (प.) परीक्षवुं (२) राह जोवी [फाळको
परेता पुं० दोरो लपेटवानी फरकडी के
परेवा पुं० पारेवुं
परों अ० जुओ 'परसों' [मांथी छूट
परोल पुं० [इं.] पेरोल;केद के पहेरा-
परोसना स०क्रि० पीरसवुं
परोसा पुं० एक जणनुं भाणुं–पिरसण
परोहा पुं० कोस; 'चड़स'
पर्वरिश स्त्री० जुओ 'परवरिश'
पलक स्त्री०[फा.]पलक;क्षण(२)पोपचुं. **–बिछाना**=प्रेमथी स्वागत करवुं. **–मारना** = पोपचुं पटपटाववुं. **–लगना**=पलकवुं(२)ऊंघ आववी
पलटनिया पुं० पलटणनो सिपाई
पलटे अ० बदले; अवेजमां
पलड़ा(-रा) पुं०त्राजवानुं पल्लुं–पालडुं
पलथी स्त्री० 'पालथी'; पलांठी
पलना अ०क्रि०पालन थवुं;पलवावुं(२) हृष्टपुष्ट थवुं
पलरा पुं० जुओ 'पलड़ा'
पलस्तर पुं० प्लास्टर. **–ढीला होना, –बिगड़ना**=बहु हेरान थवुं
पला पुं० पळ (२) पल्लुं
पलाना अ०क्रि० (२)स०क्रि० पलायन करवुं के कराववुं
पली स्त्री० पळी [पुं० पलीत
पलीद वि० [फा.] गंदुं(२)नापाक(३)
पलेट स्त्री० प्लेट; टांको. **–डालना**= प्लेट मारवो–भरवो
पले(-लो)थन पुं०अटामण.**-निकलना**= खूब मार खावो के हेरान थवुं; आटो नीकळवो
पलोटना स०क्रि० [सं. प्रलोठन] पग दाबवा(२)अ०क्रि०कष्टथी तडफडवुं
पलोथन पुं० जुओ 'पलेथन'
पल्ला अ०दूर (२) पुं० पल्लो; छेडुं (३) पल्लुं (४) कमाड (५) त्रण मण (६)[फा.]पल्लो; पालव. **–छूटना** =छुटकारो मळवो. **–पसारना**= पालव-खोळो पाथरवो; मागवुं. **पल्ले पड़ना** = मळवुं. **पल्ले बाँधना**=जमे थवुं

पल्लेदार पुं० अनाज तोलनार के ते वही जनार
पवनी स्त्री० वसवायां
पवाना स०क्रि० 'पाना'नुं प्रेरक
पशेमान वि० [फा.] (नाम, –नी) पस्तायेलुं (२) लज्जित
पश्म स्त्री० [फा.] पशम
पश्मीना पुं० पशमीनो [धोवुं
पषार(–ल)ना स०क्रि०(प.) पखाळवुं;
पसंग,–गा,–घा पुं० 'पासंग';धडो(२) वि० जराक
पस अ० [फा.] पछी (२) अंते (३) तेथी
पस-अंदाज़ पुं०[फा.] संकट के घडपण माटेनो धनसंग्रह
पस-ख़ुरदा पुं० [फा.] एठवाड
पस-पा वि०[फा.]पाछुं हठनार [पसलो
पसर पुं०ढोरनुं पसर (२) अर्धी पोश–
पसरहट्टा पुं० हाट; बजार
पसली स्त्री०पांसळी.–फड़कना=मनमां जोश आववुं; उत्साह होवो
पसाउ पुं० (प.) प्रसाद; कृपा
पसाना स०क्रि० ओसाववुं
पसारी पुं० जुओ 'पंसारी'
पसाव(०न) पुं० ओसामण [गाडी)
पसिंजर पुं० पेसेन्जर (उतारु के तेवी
पसीजना अ०क्रि० झरवुं (२) पीगळवुं
पसूजना स०क्रि०सीधा दोराथी सीववुं
पसेरी स्त्री० पांचशेरी
पसेउ,–व पुं० पसीनो; परसेवो
पसोपेश पुं०[फा.पस+पेश]आघापाछी; दुविधा;आनाकानी(२) लाभालाभ
पस्त वि०[फा.]परास्त(२)नीच कोटिनुं
पस्त-हिंमत वि०[फा.] भीरु; डरपोक
पहँसुल स्त्री० दातरडा जेवी पाटिये जडेली शाक कापवानी बनावट
पहँ अ०(प.) पासे; नजीक
पहचान स्त्री० पिछान; ओळख
पहचानना स०क्रि०पिछानवुं;ओळखवुं
पहन पुं०(प.) पहाणो;पथ्थर(२)[फा.] पानो; प्रेमथी माने दूध छूटवुं ते
पहनना स०क्रि० पहेरवुं
पहनाव(–वा) पुं० पहेरवेश
पहर पुं० प्रहर; पहोर
पहरना स०क्रि० पहेरवुं
पहरा पुं० पहेरो
पहरावनी स्त्री० पोशाकनी भेट
पहरी पुं० पहेरेदार [प्रारंभ
पहल पुं०पहेल; बाजू;पासुं (२) पहेल;
पहलवान पुं० [फा.] पहेलवान
पहला वि० पहेलुं (स्त्री० –ली)
पहलू पुं० [फा.] पहेल; पासुं; पक्ष
पहलू-तिही स्त्री० [फा.] उपेक्षा
पहले अ० पहेलां. –पहल अ०पहेल-वहेलुं; सौथी शरूमां

पहलौठा वि०(स्त्री०–ठी)पहेला खोळानुं
पहलौठी स्त्री० पहेली प्रसूति
पहाड़ा पुं० आंकनो पाडो
पहिचान स्त्री० 'पहचान' जुओ
पहिनना स०क्रि० 'पहनना' जुओ
पहिया पुं० पैडुं
पहिला वि० पहेलुं
पहुँच स्त्री० पहोंच
पहुँचना अ०क्रि० पहोंचवुं
पहुँचा पुं० पहोंचो
पहुँची स्त्री० पहोंची
पहुना पुं० परोणो; 'पाहुना'
पहुनाई स्त्री० परोणाचाकरी
पहेली स्त्री०समस्या;उखाणो.–**बुझाना** =समजाय नहि एम लांबुंलांबुं कहेवुं
पह्लवी स्त्री० पहेलवी भाषा
पाँउ(–व) पुं० पग; 'पाउँ'
पाँक पुं० पंक; कीचड
पाँचा पुं० खंपाळी
पाँजर पुं०पासुं;पांसळानो भाग(२)पांसळी
पाँजी स्त्री० पार कराय एटली नदी सुकावी ते [काचो खरडो
पांडुलिपि स्त्री०, **पांडुलेख** पुं० [सं.]
पाँति स्त्री० पंक्ति (२) पंगत
पाँयँचा पुं० [फा.]जाजरूमां बेसतां पग मूकवानी जगा
पाँयँता पुं० खाटलानी पांगत
पाँस स्त्री० खेतरमां नांखवानुं खातर
पाँसा पुं० [सं. पाशक] रमवानो पासो. –**उलटना**=बाजी फरी जवी
पा-अंदाज़ पुं० [फा.] पगलुछणियुं
पाउँ पुं० पग; 'पावँ' [वती(स्त्री)
पाक-दामन वि०[फा.] पतिव्रता;शील-
पाकर पुं० पीपळनुं (?)झाड
पाकीज़ा वि०[फा.] पाक; पवित्र; शुद्ध
पाख पुं० पक्ष;पखवाडियुं(२)मकानना करानो उपलो त्रिकोण भाग
पाख़ाना पुं० [फा.] पायखानुं (२)मळ
पाग स्त्री० पाघडी
पागुर पुं० वागोळवुं ते; 'जुगाली'
पाछ स्त्री० चीरो; फाट
पाछना स०क्रि० चीरवुं; फाट करवी
पाजामा पुं० [फा.] पायजामो
पाज़ेब स्त्री०[फा.] नूपुर; झांझर
पाट पुं०पहोळाई;जेम के धोतियानो पनो; नदीनो पट (२) चक्कीनुं पडियुं
पाटना स०क्रि० सपाट-समतल करवुं (२)तृप्त करवुं(३)खाडा परथी के अध्धर जवाने अध्धर पूल जेवी गोठवण करवी
पाटसन पुं० जुओ 'पटसन'
पाटा पुं० पाटलो(२) खेडूतनो समार
पाटी स्त्री० परिपाटी; रीत (२) श्रेणी; पंक्ति(३)पाटीगणित(४)पुं० पाटी;

स्लेट (५) खाटलानी ईस (६) लेसन
पाड़ पुं० किनार(२)मांचडो(३)फांसीनो मांचडो(४) कूवा परनी जाळी
पाड़ा पुं०पाडो;महोल्लो(२)भेंसनो पाडो
पाढ़ पुं०सोनी इ०नी पाड(२)खेडूतनो चोकी करवा बेसवा माटेनो माळो
पातर,-ल स्त्री०पतराळुं (२)वेश्या
पातशाह पु० पादशाह
पाताबा पुं० [फा.] पगनां मोजां
पातुर स्त्री० पातर; वेश्या
पाथना स०क्रि०घडवुं(२)थापवुं(३)पीटवुं
पाधा पुं० उपाध्याय (२) पंडित
पान-पत्ता पुं०पानपट्टी(२)जुओ'पानफूल'
पान-फूल पुं०फूल नहि तो फूलनी पांखडी
पाना स०क्रि० प्राप्त करवुं; पामवुं (२) खावुं; जमवुं
पानी पुं० पाणी.—**का बतासा या बुलबुला**=पाणीना परपोटा जेवुं क्षणभंगुर ते.—**टूटना**=पाणी खूब खूटवुं (जळाशयमां).—**देना**=पाणी पावुं(२)पितृओने अंजलि आपवी. —**पानी होना**=खूब शरमावुं
पानीदेवा वि० तर्पण करनार; वारस
पाप पुं० पाप. —**कटना**=पाप टळवुं—नाश थवुं (२)झघडामांथी छूटवुं. —**मोल लेना**=जाणीजोईने कशा झघडामां पडवुं. —**पड़ना**=मुश्केल के कठण पडवुं
पापोश पुं० [फा.] जोडा
पा-प्यादा अ०[फा.] पगपाळुं; 'पैदल'
पाबंद वि० [फा.] (नाम,—दी) बद्ध; केद (२) नियमित (३) नियमबद्ध
पामाल वि० [फा.] (नाम, —ली) पायमाल; बरबाद
पायँता पुं०, पायती स्त्री० पांगत
पायंदाज़ पुं०[फा.]जुओ 'पा-अंदाज़'
पायतख़्त पुं० [फा.] राजधानी
पायताबा पुं० [फा.] पगनुं मोजुं
पायदार वि० [फा.] टकाउ; मजबूत (नाम, —री)
पायबंद वि० जुओ 'पाबंद'
पायल स्त्री० नूपुर (२) जनमतां पहेला पग बहार आव्या होय तेवुं बाळक
पाया पुं० [फा.] खाटला इ० नो पायो (२) स्तंभ (३) दरज्जो
पायाब वि० [फा.] चालीने पार करी शकाय एवुं छछरुं (पाणी)
पारखी पुं० पारेख; परखनार
पारचा पुं० [फा.] टुकडो
पारना स०क्रि० पाडवुं
पारसा वि० [फा.]सदाचारी; धर्मनिष्ठ
पारा पुं० पारो (२) [फा.] टुकडो
पारावार पुं० [सं.] बेउ कांठा (२) हद (३) समुद्र

पारी स्त्री० पाळी; वारो
पाल पुं०सढनुं कपडुं (२)तंबू (३)स्त्री० (पाणीनी) पाळ (४)फळ पकाववा नांखवां ते [भाजी
पालकी स्त्री० पालखी (२) पालकनी
पालतू वि० पाळेलुं; पोषेलुं
पालथी स्त्री० 'पलथी'; पलांठी
पालना स०क्रि० पाळवुं (२)पुं० पाळणुं
पालव पुं० पल्लव; कोमळ पान
पाला पुं०झाकळ;हिम(२)ठंडी(३)संबंध; जोग (४)अखाडो. **-मार जाना**= हिम पडवाथी नुकसान थवुं.**-पड़ना** =पालां पडवां; व्यवहार बंधावो
पालागन स्त्री० पायलागणुं; पायवंदन
पालू वि० जुओ 'पालतू'
पाँव पुं० पग
पाँवड़ा पुं० पग मूकवा पाथरेलुं वस्त्र
पाँवड़ी स्त्री० पावडी (२) जोडा
पाँवर वि० (प.) पामर; क्षुद्र
पाव पुं० पाभाग (२) पाशेर
पावना स०क्रि० जुओ 'पाना'
पावस पुं० वरसाद
पासंग पुं० [फा.] धडो; पाशंग. **(किसीका) पासंग भी न होना** =मुकाबले बहु ऊतरतुं होवुं
पास पुं०पास; बाजु (२)समीपता (३) अ०पासे (४) पुं० [फा.] पहेरो; चोकी (५) तरफदारी; शरम (६) ख्याल; 'लिहाज़'
पास-पड़ोस पुं० पासेनी जगा; पडोश
पासबान पुं०[फा.]पहेरेगीर(२) स्त्री० रखात [(२)स्त्री०पाश
पासी पुं०[सं. पाशी]एक अस्पृश्य जात
पाहन पुं० पाषाण; पथ्थर
पाहरू पुं० पहेरेगीर; रक्षक
पाहिँ,-हीं अ० (प.) पासे (२) प्रत्ये
पाहुना पुं० परोणो;महेमान(२)जमाई
पाहुनी स्त्री०स्त्री-महेमान(२)परोणागत
पिंजड़ा,-रा पुं० पांजरुं; पिंजर
पिंजरापोल पुं० पांजरापोळ
पिंडली स्त्री० पिंडी.**-हिलना**=भयथी कंपवुं [**देना**=सरावबुं
पिंडा पुं०पिंड(२)देह(३)पिंडो. **-पानी**
पिंडालू स्त्री० एक कंद
पिघलना अ०क्रि० पीगळवुं
पिघलाना अ०क्रि० पिगळाववुं
पिचकना अ०क्रि०दबावुं;गोबो पडवो; दबावाथी बेसी जवुं
पिच्चित,पिच्ची वि० दबायेलुं; बेठेलुं
पिच्छ(-च्छि)ल वि०[सं.]चीकणुं;लीसुं
पिछड़ना अ०क्रि० पाछळ पडवुं-रहेवुं
पिछलगा,-ग्गू पुं० अनुयायी(२)नोकर
पिछलगी स्त्री०अनुयायी के नोकर होवुं ते
पिछला वि० पाछलुं (२) गत

पिछवाड़ा पुं०मकान पछवाडेनो भाग के जमीन; पछवाडुं [पछाडी

पिछाड़ी स्त्री०पछाडीनो भाग(२)घोडानी

पिछौरा पुं० पिछोडो; पछेडो

पिछौरी स्त्री०पिछोडी(२)स्त्रीओनुं उपरणुं

पिटना अ०क्रि०पिटावुं;मार खावो(२) पुं० थापडी (कडियानी)

पिटारा पुं० (वांस नेतर इ०नी) पेटी

पिठौरी स्त्री०'पीठी'–वाटेली दाळनुं वडुं

पिट्ठू पुं० अनुगामी (२) मददगार (३) रमतनो भेरु

पित्ता पुं०पित्ताशय (२) साहस;हिंमत. –उबलना या खौलना = पित्तो ऊछळवो.–मारना=क्रोध दबाववो

पित्ती स्त्री० अळाई (२) एक पित्तरोग

पिदड़ी,पिद्दी स्त्री०, **पिद्दा** पुं०एक पक्षी

पिनकना अ०क्रि०ऊंघथी के अफीणना नशाथी झोकां खावां

पिनकी पुं० अफीणियो

पिरकी स्त्री० फोल्ली

पिराना अ०क्रि० पीडावुं

पिरोना स०क्रि० परोववुं

पिलना अ०क्रि० एक साथे कशा पर तूटी पडवुं (२) पिलावुं

पिलपिला वि० अंदरथी नरम ने भीनुं

पिलपिलाना स०क्रि० दबाववुं; घोळवुं (जेम के केरी)

पिलाना स०क्रि०पिवडाववुं(२)पीवाने माटे आपवुं (३) अंदर भरवुं

पिल्ला पुं० कुरकुरियुं

पिल्लू पुं० इयळ

पिशवाज़ स्त्री०[फा.]नाचती वखते पहेराय छे एवो एक जातनो घाघरो

पिसना अ०क्रि० पिसावुं; दळावुं (२) थाकीने लोट थई जवुं

पिसर पुं० [फा.] पुत्र

पिसवाना स०क्रि० पिसाववुं

पिसाई स्त्री०पीसवुं ते के तेनी मजूरी (२) कडी महेनत

पिसान पुं० आटो; लोट

पिस्तई वि० पिस्ताना रंगनुं

पिस्तौल स्त्री० पिस्तोल

पिस्सू पुं० डांस

पिहकना,पीकना अ०क्रि० टहुकवुं

पीच स्त्री० भातनुं ओसामण

पीछा पुं०पाछलो भाग (२) पीछो (३) पछीनो समय

पीछे अ० पाछळ (२) पछीथी

पीटना स०क्रि० पीटवुं (२) टीपवुं

पीठी स्त्री० पलाळीने पीसेली दाळ

पीढ़ा पुं० बेसवानो पाटलो

पीढ़ी स्त्री० पेढी (२) नानो पाटलो

पीतल पुं० पित्तळ धातु

पीदड़ी स्त्री० जुओ 'पिदड़ी'

१५

पीनक स्त्री०अफीणियानुं अडबडियुं(२) झोकां खावां ते [रोग

पीनस स्त्री०पालखी(२)पुं०[सं.]पीनस

पीप स्त्री० परु

पीपा पुं० पीप

पीर स्त्री०पीडा(२)[फा.]पीर;सिद्ध;बुजर्ग

पीरी स्त्री०[फा.]पीरपणुं(२)बुढापो(३) चेला मूंडवानो धंधो

पील पुं० [फा.] हाथी

पीलवान पुं० महावत

पीला वि० पीळुं (२) पुं० पीळो रंग

पीलिया पुं० कमळो

पीसना स०क्रि०पीसवुं(२)कडी महेनत करवी (३) पुं० दळणुं

पीहर पुं० पियेर

पुआल पुं० 'पयाल'; पराळ

पुकार स्त्री० पोकार(बूम के फरियाद)

पुकारना स०क्रि०पोकारवुं [पुख़्तगी)

पुख़्ता वि० [फा.] दृढ; मजबूत (नाम

पुचकार,-री स्त्री० बचकारो

पुचकारना स०क्रि० प्रेमथी बचकारवुं

पुचारा पुं० भीनुं पोतुं फेरववुं ते (२) पातळो लेप(३)खुशामत(४)उत्तेजन

पुच्छल वि० पूंछडियुं, पूंजडीवाळुं

पुछल्ला पुं० लांबुं पूंछडुं(२)पूंछडा जेम साथे लागेलुं ते(३) आश्रित

पुजना अ०क्रि०पूजावुं;'पूजना'नुं कर्मणि

पुजवाना,पुजाना स०क्रि० पूजाववुं

पुजाई स्त्री० पूजवुं ते के तेनी मजूरी

पुजापा पुं० पूजापो

पुजा(-जे)री पुं० पूजारी

पुटकी स्त्री० पोटकी(२)अकस्मात् मृत्यु (३)शाकमां घलातो चणानो लोट

पुटी स्त्री० नानो दडियो के कटोरी(२) पडीकी (३) लंगोटी

पुट्ठा पुं० थापानो उपरनो भाग (२) पुस्तकनी बांधणीनी पटी

पुठवार अ० पूठे; पाछळ

पुठवाल पुं० मददगार; सागरीत

पुड़ा पुं० पडो; मोटुं पडीकुं

पुड़िया स्त्री० पडीकुं के पडीकी

पुण्याई स्त्री० पुण्यनुं फळ के पुण्यता

पुतला पुं०नर-पूतळी;ढींगलो. **किसीका पुतला बाँधना**=बदनामी करवी

पुंतली स्त्री० ढींगली

पुतली-घर पुं० कारखानुं; मिल

पुताई स्त्री० 'पोतना' परथी नाम

पुदीना पुं० [फा. पोदीनः] फुदीनो

पुनर्भू स्त्री० [सं.] फरी परणेली विधवा

पुनि(-नी) अ० पुनः;फरीथी [वृद्धजन

पुरखा पुं०(स्त्री०-खिन)पूर्वज(२)घरनो

पुरचक स्त्री० 'पुचकार'; बचकारो (२) उत्तेजन (३) उश्केरणी (४) समर्थन; पक्ष

पुरज़ा पुं० [फा.] टुकडो (२) अवयव (३) अंश; भाग

पुरबला वि० पूर्वनुं (२) पूर्वजन्मनुं

पुरबिया वि०(स्त्री० ०नी)पुरबियुं; पूर्वनुं

पुरवट पुं० पाणीनो कोस

पुरवा पुं० नानुं पुर–गाम (२) पूर्वनो पवन (३) कुलडी

पुरवाई, पुरवैया स्त्री०पूर्वनो वायरो

पुरसाँ वि० [फा.] पूछनार

पुरसा पुं० माथोडुं; एक माप

पुरसिश स्त्री० [फा.] पुरसीस; पूछपरछ

पुराना वि०पुराणुं (२)स०क्रि० पुराववुं. –घाघ=भारे-चालाक, अनुभवी

पुरिखा,–षा पुं० जुओ 'पुरखा'

पुरी स्त्री० [सं.] पुरी;नगरी(२)जगन्नाथ (३) [फा.] पूर्णता

पुर्त्तगाल पुं० पोर्टुगल देश

पुल पुं०[फा.]पुल.–टूटना=खूब वधवुं. (किसी बात का) –बाँधना=अति-शयता करवी

पुलटिस स्त्री० पोटीस

पुलपुला वि० अंदरथी नरम ने पोचुं

पुलपुलाना स०क्रि० नरम चीज दबा-ववी; घोळवुं(२) घोळीने चूसवुं

पुलिंदा पुं० बंडल; थोकडो

पुलिस स्त्री० पोलीस

पुश्त स्त्री० [फा.] पीठ(२) पेढी (वंश-परंपरानी)

पुश्तक स्त्री० [फा.] घोडा गधेडानी पाछला पगनी लात

पुश्तनामा पुं० [फा.] वंशावळी

पुश्ता पुं०[फा.]पुस्तो;बांध(२)चोपडीना 'पुट्ठा'

पुश्तारा पुं० [फा.] पीठ पर लेवाय एटलो भार

पुश्ती स्त्री० [फा.] टेको (२)मदद(३) तरफदारी (४) तकियो

पुश्तैनी वि० [फा.] वंशपरंपरा चालतुं आवेलुं के चालनारुं

पुष्टई स्त्री० पुष्टिनी दवा

पुह(-हु)प पुं० (प.) पुष्प

पुहुमी स्त्री०(प.)पृथ्वी;भूमि

पूँछ स्त्री० पूंछडी (२) पछवाडेनो भाग

पूआ पुं० पूडो के मालपूओ

पूछ स्त्री०पूछवुं ते(२)तपास; खोळ(३) कोई पूछे ते; आदर; गणना

पूछताछ स्त्री० पूछपरछ

पूड़ा पुं० मालपूडो

पूड़ी स्त्री० पूरी

पूतड़ा पुं० बळोतियुं

पूति स्त्री० [सं.] पवित्रता (२) दुर्गंध

पूती स्त्री० गांठ (२) लसणनुं जोडवुं

पूनी स्त्री० पूणी

पूनो स्त्री० पूनम

पूरनपूरी स्त्री० पूरणपोळी

पूरब पुं० (२) वि० पूर्व

पूला पुं० पूळो (स्त्री० –ली)
पूस पुं० पोष मास
पेंग स्त्री० हींचकानो हेल्लो. **–मारना**= हींचकाने हेल्लो मारवो; हींचवुं
पेंडुकी स्त्री० होलो(२) जुओ 'गुझिया'
पेंदा पुं०,**पेंदी** स्त्री० तळियुं
पेच पुं० [फा.]पेच. **–घुमाना**=पेच मरडवो; युक्ति करी पलटी नांखवुं
पेचक स्त्री०[फा.]दोरनी गूंचळी(२)पुं० [सं.] घुवड
पेचकश पुं० [फा.] पेचियुं
पेचताब पुं० [फा.] दाझ;मननो गुस्सो
पेचिश स्त्री० [फा.] मरडानो रोग
पेचीदा वि०[फा.](नाम,–दगी) पेच-वाळुं (२) कठण; आंटीघूंटीवाळुं
पेचीला वि० जुओ 'पेचीदा'
पेट पुं० पेट. **–काटना**=बचत करवा ओछुं खावुं. **–का पानी न पचना** =रही के रोकाई न शकावुं. **–का हलका**=हलका पेटनुं; क्षुद्र. **–चलना**=दस्त थवा. **–में दाढ़ी होना**=बचपणथी होशियार होवुं. **–गिरना**=गर्भपात थवो.**–देना**= मननी वात बतावવી
पेटार्थी,-र्थू, **पेटू** वि० खाउधरुं; पेटडुं
पेठा पुं० भूराकोळुं(२)तेनी एक मीठाई
पेड़ पुं० झाड
पेड़ा पुं० पेंडो
पेड़ी स्त्री० झाडनुं थड (२) धड
पेड़ू पुं० पेढु (२) गर्भाशय
पेरना स०क्रि० पीलवुं (२) पीडवुं (३) प्रेरवुं (४) मोकलवुं
पेलना स०क्रि० घुसाडवुं (२) धकेलवुं
पेवस पुं०,**–सी** स्त्री० करेटुं; तरतना वियायेला ढोरनुं दूध
पेश अ०[फा.] सामे; आगळ. **–आना** =थवुं; बनवुं(२)व्यवहार के वर्तन करवुं.**-जाना,-चलना**=जोर चालवुं
पेशकार पुं०[फा.] अदालतनो शिरस्तेदार
पेश-कब्ज़ स्त्री० [फा.] कटारी
पेशख़ेमा पुं० [फा.] फोजनी आगळ जती टुकडी के आगळ रवाना थतो तेनो सामान
पेशगी स्त्री० [फा.] कोई काम माटे अगाउथी अपाती रकम; बानुं
पेशतर अ० [फा.] पहेलां
पेशबंद पुं०[फा.]घोडानी छाती परनो पटो, जेथी जीन पाछळ सरे नहि
पेशबंदी स्त्री० [फा.] अगमचेती; पहेलेथी सावधानी
पेशराज पुं० पथ्थर लावनार मजूर
पेशवाज़ स्त्री०[फा.] जुओ 'पिशवाज़'
पेशा पुं०[फा.] पेशो; धंधो
पेशानी स्त्री० [फा.] कपाळ (२) नसीब

पेशावर पुं० [फा.] पेशावाळो; धंधादार
पेशी स्त्री०[फा.] रजूआत(२)सुनावणी (३) [सं.] पेशी
पेश्तर अ० जुओ 'पेशतर'
पैंग स्त्री० जुओ 'पेंग'
पैंठ स्त्री० पेंठ; वजार
पैंड़ पुं० डगलुं (२) रस्तो
पैंत स्त्री०[सं.पणकृत;प्रा.पणइत] पेंतरो
पैंतालीस वि० पिस्ताळीस; ४५
पैंतीस वि० पांत्रीस; ३५
पैंसठ वि० पांसठ; ६५
पै प्रत्यय–(सातमीनो)उपर(२)(त्रीजीनो) द्वारा(३)अ०प्रति; तरफ (४) पासे (५) पछी (६) पण
पैक पुं० [फा.] खेपियो [वेपारी
पैकार पुं०[फा.पायकार]फेरियो के नानो
पैख़ाना पुं० पायखानुं
पैग़ंबर पुं० [फा.] पेगंबर
पैग पुं०(प.) पग; कदम
पैगाम पुं० [फा.] पेगाम
पैज स्त्री० (प.) प्रतिज्ञा; पण (२) होड
पैज़ार स्त्री० [फा.] पेजार; जोडा
पैठ स्त्री० पेस; प्रवेश; गति
पैठना अ०क्रि० पेसवुं
पैड़ी स्त्री० सीडी
पैतरा पुं० पेंतरो; पवित्रा
पैदल वि०(२)अ०पगे चालतुं;पगपाळुं (३) पुं० पायदळ
पै-दर-पै अ०[फा.]क्रमशः(२)लगातार
पैदा वि०[फा.] पेदा
पैदाइश स्त्री० [फा.] पेदाशः
पैदाइशी वि०जनम साथेनुं(२)स्वाभाविक
पैदावार स्त्री०[फा.] खेतीनी पेदाश
पैना वि०[सं.पैण] तीक्ष्ण;तेज(२)हांकवा-नो परोणो (स०क्रि०–पैनाना)
पैमाइश स्त्री०[फा.] मापवुं ते
पैमाना पुं० [फा.] माप; धोरण
पैयाँ स्त्री० पग
पैया पुं० पोचो दाणो; खोखुं
पैर पुं० पेर; पग [साईकल
पैर-गाड़ी स्त्री० पगनी गाडी, जेवी के
पैरना अ०क्रि० तरवुं [(३)पेरवी
पैरवी स्त्री०[फा.]अनुसरण(२)आज्ञापालन
पैराक पुं० तारो; तरनारो
पैराव पुं०तरीने जवाय एवुं ऊंडुं पाणी
पैरी स्त्री०खळामां एकठां करेलां दूंडांनो ढग के खळुं करवुं ते
पैरो वि० [फा.] अनुयायी
पैवंद स्त्री०[फा.]थींगडुं(२)झाडनी कलम
पैवस्त वि० [फा.] (प्रवाहीथी) तरबोळ
पैहारी वि०पय-दूध ज पीने रहेनार(साधु)
पोंकना अ०क्रि०छेरवुं(२)डरवुं(३)पुं० छेरवानो (पशुनो) रोग
पोंगा पुं० नळी (वांस के धातुनी) (२)

वि० पोलुं (३) मूर्ख
पोंछ स्त्री० पूंछ; पूंछडी [कपडुं
पोंछना स०क्रि० घसवुं(२)पुं०घसवानुं
पोआ पुं० सापनो कणो [दार ग्वाल
पोइया स्त्री०[फा. पोयः]घोडानी जोर-
पोइस स्त्री०सपाटाबंध दोडवुं ते(२)अ० पोईस; हठो; खसो
पोखर(-रा) पुं० तळाव (स्त्री० -री)
पोच वि० [फा. पूच] तुच्छ(२)अशक्त
पोट स्त्री०पोटली(२)ढेर [बच्चुं
पोटा पुं० पेट(२)(चकलीनो) पोटो-
पोढ़ा वि० [सं. प्रौढ] दृढ (२) कठण
पोत पुं० जमीनमहेसूल; 'पोता'
पोतड़ा पुं० 'पूतड़ा'; बळोतियुं
पोतना स०क्रि० धोळवुं;लींपवुं(२) पुं० पोतुं; कूचडो
पोतला पुं० 'पराँठा'; चोपडुं
पोता पुं० पौत्र(२)महेसूल(३)पोतुं
पोती स्त्री० पौत्री
पोदना पुं० वामन (२) एक नानुं पक्षी
पोदीना पुं० [फा.] फुदीनो
पोना स०क्रि०(रोटलो) हाथे घडवो(२) परोववुं(३) गूंथवुं
पोपला वि० दांत वगरनुं; बोखलुं (२) पोपलुं; पोचकण
पोपलाना अ०क्रि०बोखुं थवुं [पिराई
पोर स्त्री०आंगळ के आंगळीनो वेढो(२)
पोश पुं०[फा.](समासमां)ढांकण. उदा. मेजपोश (२) पोशाक
पोशाक,पोशिश [फा.] स्त्री० पोशाक
पोशीदा वि० [फा.] गुप्त; ढंकायेलुं
पोस्त पुं०[फा.]छोडुं(२)पोस;अफीणनो दोडो (३) जुओ 'पोस्ता'
पोस्ता पुं० अफीणनो छोड
पोस्ती पुं० [फा.] पोस्ती; पोस उकाळी पीनार (२) आळसु
पोस्तीन पुं० [फा.] चामडानो (रुंवाटी वाळो) कोट के अमुक पोशाक
पोहना स०क्रि०'पिरोना'(२)छेदवुं(३) अंदर घूसवुं [शेरडी
पौंडा,पौंड़्क [सं.] पुं० जाडी मोटी
पौ स्त्री० परब(२) रमतनुं पो(३) पोह; पो. -बारह होना=पो पडवुं(२) लाभनो लाग मळवो
पौआ(-वा) पुं० पाशेरो के तेनुं माप
पौडर स्त्री० पावडर [पोढवुं
पौढ़ना अ०क्रि० जुओ झूलवुं (२)
पौद स्त्री० छोड (२) धरु
पौदर स्त्री०पगदंडी(२)रेंट के कोस या कोलुना बळदथी पडी जती वाट
पौधा पुं० छोडवो [प्राण(४)भूत
पौन वि०पोणुं(२)पुं०,स्त्री० पवन(३)
पौना पुं० पोणाना आंक (२) झारो
पौनी स्त्री०वसवायां(२)नानो'पौना'-झारो

पौने वि० पोणुं
पौरा पुं० पगलुं [पुरनुं
पौर स्त्री० जुओ 'पौरि' (२) वि० [सं.]
पौरि,–री स्त्री०सीडी(२)डेली; खडकी
(३) पावडी
पौवा पुं० जुओ 'पौआ'
पौसर(–रा,-ला) पुं० परव
पौहारी वि० जुओ 'पैहारी'
प्याऊ पुं० परव
प्याज़ी वि०प्याजना रंगनुं;आछुं गुलाबी
प्यास स्त्री० तरस (२) प्रबळ इच्छा
प्यासा वि० तरस्युं
प्यून पुं० [इं.] पटावाळो; सिपाई
प्योसर पुं० करेटुं (गायनुं)
प्योसार पुं० (प.) पियर
प्रकोष्ठ पुं०[सं.]मुख्य दरवाजा पासेनी
ओरडी (२) आंगण; वाडो
प्रण पुं० पण; प्रतिज्ञा
प्रणवना स० क्रि० प्रणामवुं; नमवुं
प्रतिंचा स्त्री० प्रत्यंचा
प्रतिदान पुं०[सं]परत करवुं ते(२)बदलो
प्रतिफल पुं०[सं.] छाया; प्रतिबिंब(२)
परिणाम; फळ
प्रतिभू पुं० [सं.] जामिन [पक्षी
प्रतुद पुं०[सं.]चांचथी तोडीने खानार
प्रतोली स्त्री० [सं.] नानी सडक; गली
प्रत्न वि० [सं.] प्राचीन; पुराणुं
प्रत्युत अ० ऊलटुं; विरुद्ध
प्रत्यूष पुं० [सं.] सवार (२) सूर्य
प्रभाती स्त्री० प्रभातियुं
प्रमीला स्त्री० [सं.] तंद्रा(२)शिथिलता
प्रयागवाल पुं० प्रयागनो पंडो
प्रविसना अ०क्रि० (प.) प्रवेशवुं
प्रश्रय पुं० [सं.] आश्रय(२)टेको
प्रसू स्त्री०[सं.]जणनारी [–सुवारोग
प्रसूत पुं० प्रसूति बाद थतो स्त्री-रोग
प्रसेद पुं० (प.) प्रस्वेद; परसेवो
प्रस्थ पुं०[सं.]पहाड परनो सपाट प्रदेश
प्रांजल वि०[सं.] सीधुं;सरळ(२)साचुं;
प्रामाणिक
प्राकार, प्राचीर पुं०[सं.] कोट;किल्लो
प्रापना स० क्रि० प्राप्त करवुं; पामवुं
प्रायद्वीप पुं० [सं.] द्वीपकल्प
प्राशी वि० [सं.]प्राशन करनार;खानार
प्रूम पुं०दरियानी ऊंडाई मापवा नखाती
दोरीनो सीसानो गठ्ठो
प्रेक्षण पुं० [सं.] आंख (२) जोवुं ते
प्रेक्षा स्त्री०[सं.]जोवुं ते(२)नजर(३)प्रज्ञा
प्रेतनी स्त्री० भूतडी
प्रेता स्त्री० [सं.] पिशाचणी
प्रेती पुं० प्रेतपूजक
प्रेमिक वि० प्रेमी
प्रोत वि० [सं.] ओतप्रोत(२)छुपायेलुं
प्लक्ष पुं० [सं.] पींपळनुं झाड
प्लुत पुं०[सं.]'पोई';घोडानी एक रवाल

फ

फंक स्त्री० फांक; चीरी
फंका पुं० फाको (२) फांक; चीरी
फंकी स्त्री० फाकी
फंद,-दा पुं० फंद; बंधन; जाळ; कपट
फंदाना स०कि० फंदमां नांखवुं
फँसना अ०क्रि०फसावुं(फँसाना प्रेरक)
फँसिहारा वि०फसावनार(स्त्री०,-रिन)
फ़क़ वि०[अ.]फग; सफेद (२) विवर्ण
फक्किका स्त्री० [सं.] कोयडो; प्रश्न(२) फसामणी
फ़क़त अ० [अ.] फक्त; केवळ; मात्र
फ़क़्र स्त्री०[अ.] दीनता(२)फकीरी(३) जरूर पूरती ज कामना होवी ते
फ़ख़र,फ़ख़्र [अ.] पुं० घमंड; शेखी
फगुआ पुं० होळी (२) फाग. –खेलना या मनाना=होळी रमवी, रंग गुलाल वगेरे नांखवां
फगुहारा पुं० फगवो; घेरैयो
फ़ज़ल पुं० जुओ 'फ़ज़्ल'
फ़ज़ा स्त्री०[अ.]खुल्लुं मेदान(२)शोभा
फ़ज़ीलत स्त्री० [अ.] मोटाई; श्रेष्ठता. –की पगड़ी=विद्वत्तानुं आदरमान
फ़ज़ीहत स्त्री०[अ.] फजेती; दुर्दशा के बदनामी [उडाउ
फ़ज़ूल वि०जुओ 'फ़ुज़ूल'. –खर्च=
फ़ज़्ल पुं०[अ.]अधिकता(२)कृपा;दया
फटकना स०क्रि० झाटकवुं; ऊपणवुं. –पछोरना=झाटकीने साफ करवुं (२) बरोबर तपासीने जोवुं
फटकारना स०क्रि०फटकारवुं(२)झटको मारी खंखेरवुं (३) पटकी पछाडीने धोवुं (४) मेळववुं; काढी लेवुं (५) झटका साथे दूर फेंकवुं (६) साफ साफ ने सखत वात कही चूप करवुं
फटना अ०क्रि०फाटवुं [पहोंचवुं
फट पड़ना अ०क्रि० ओचिंतुं आवी
फटा पुं० फाट; छेद
फड़ स्त्री०जुगारखानुं(२)दाव(३) सोदा करवानुं बजार के जगा
फड़बाज़ पुं०पोताने त्यां बोलावी जुगार खेलावनार
फ़त(–ते)ह स्त्री० [अ.] फतेह
फतिंगा पुं०ऊडनारुं जीवडुं(२)पतंगियुं
फ़तीलसोज़ पुं० [फा.] दीवी
फ़तीला पुं० [अ.] पलीतो
फ़तूर पुं० जुओ 'फ़ुतूर'

फ़तूरिया वि० फितूरी; उपद्रवी
फ़तूह स्त्री० [अ.'फ़तह'नुं ब.व.] फतेह
फ़तूही स्त्री० [अ.] सदरो (२) लूंट के लडाईनो माल
फन पुं० फणा; फेण
फ़न पुं०[फा.] खूबी (२) विद्या; कळा-कौशल्य (३) फंद; छळ
फनकार स्त्री०फूं अवाज(जेमके,सापनो)
फ़ना स्त्री० [अ.] नाश; खुवारी
फ़ना-फी-अल्लाह पुं० [अ.] ईश्वरमां तन्मय दशा
फन्नी स्त्री० फाचर
फफूँदी स्त्री० फूग
फफोला पुं० फोडलो; फफोलो
फबती स्त्री०समयने अनुकूळ वात (२) व्यंग्य; कटाक्ष. **–उड़ाना**=हांसी करवी. **–कहना**=कटाक्ष करवुं
फबना अ०क्रि० शोभवुं (नाम, **फबन** स्त्री०) [(नाम, –ज़ी)
फ़य्याज़ वि०[अ.] उदार; दानी; दोलुं
फ़र पुं० [फा.] शोभा; सजावट
फ़रऊन पुं०[अ.]मगर(२)मिसरनो एक अभिमानी नास्तिक बादशाह (३) अत्याचारी के घमंडी
फ़रऊनी स्त्री० घमंड के दुष्टता
फरक(०न) स्त्री० फरकवुं ते
फ़रक़ पुं० फरक;फेर(२)अंतर; फ़ासलो
फ़रज़ी पुं०[फा.]शेतरंजनो वजीर (२) वि० जुओ 'फ़र्ज़ी'
फ़रज़ीबंद पुं०[फा.]शेतरंजमां वजीरथी मात करवानो एक दाव
फ़रद स्त्री०[अ.फ़र्द]यादी(२)जोडमांनुं एक कपडुं(३)वि०अजोड;अद्वितीय
फ़रदा अ०[फा]आवती काले(२)स्त्री० कयामतनो दिन
फरफंद पुं० दावपेच(२)फंद; नखरां
फ़रबा वि०[फा.]जाडुं;स्थूल शरीरवाळुं
फ़रमाँ-बरदार वि० [फा.] फरमान माननार [(२)बादशाह
फ़रमाँ-रवा पुं०[फा.] फरमान करनार
फ़रमाइश स्त्री०[फा.] फरमाश; आज्ञा
फ़रमाइशी वि०[फा.]फरमाव्या प्रमाणेनुं
फरवरी पुं० फेब्रुआरी
फरवी स्त्री० ममरा
फ़रश पुं०[अ.फ़र्श]बिछानुं(२)बेसवानी सपाट जमीन (३) फरसबंधी के पाकी बनावेली जमीन
फ़रशबंद पुं०जुओ'फरश' [लगतुं
फ़रशी स्त्री०[फा.]हूको(२)वि०फरसने
फरसा पुं० फरशी; परशु
फ़रसूदा वि०[फा.]जरीपुराणुं; रद्दी(२) थाकेलुं(३)बेहाल [बुद्धिमत्ता
फ़रहंग स्त्री० [फा.] शब्दकोश (२)
फ़रह(०त) स्त्री०[अ.]आनंद; खुशी

फरहरा पुं० धजा; पताका

फ़रहाँ वि० [फा.] खुश; आनंदी

फ़रहाद पुं०[फा.] शिल्पी; पथ्थरफोडो (२)एक प्रसिद्ध प्रेमी [विशाळ

फ़राख वि०[फा.] विस्तृत;लांबु पहोळुं;

फ़रागत स्त्री०[अ.]छुटकारो(२)निश्चिंतता (३) मळत्याग.–जाना=शौच जवुं

फ़रामोश वि०[फा.]भुलायेलुं; विस्मृत

फ़रायज़ पुं० [अ. 'फ़र्ज़'नुं ब. व.] कर्तव्यकर्मो [नाठेलुं

फ़रार(–री) वि०[अ. फ़िरार] भागेलुं;

फ़रासीस पुं०[फा.]फ्रांस देश के तेनो निवासी. (वि०,–सी)

फ़राहम वि०[फा.]एकठुं;जमा.(नाम, –मी =संग्रह)

फरिया पुं० एक जातनो लेंघो

फरियाना स० क्रि० वस्तु प्रथम धोईने तारवी काढवी–चोख्खा पाणीमां फरी झबोळवी के धोवी(२) फेंसलो करवो;'निबटना'(३)अ०क्रि०फेंसलो थवो (४) वस्तु तारवी कढावी

फ़रिश्ता पुं० [फा.] फिरस्तो; देवदूत

फ़रीक़ पुं० [अ.] टोळी; जथो (२) झघडानो कोई एक पक्ष

फ़रीक़-सानी पुं०[अ.]केसनो प्रतिवादी

फ़रीक़ैन पुं० 'फ़रीक़'नुं ब०व०

फरुही स्त्री० नानो पावडो

फ़रेफ़्ता वि०[फा.] फरेबमां सपडायेलुं (२) आसक्त

फ़रो अ०[फा. फ़िरो]नीचे; वशमां(२) वि०नीच(३)शांत; दाबमां आवेलुं

फ़रोख़्त स्त्री० [फा. फ़िरोख़्त] वेचाण

फ़रोग पुं० प्रकाश; चमक

फ़रो-गुज़ाश्त स्त्री० [फा.] उपेक्षा (२) आनाकानी (३) भूल; त्रुटी

फ़रोद अ०[फा.] नीचे (२)पुं०ऊतरवुं –मुकाम करवो ते [–शी)

फ़रोश पुं०[फा.फ़िरोश]वेचनार (नाम,

फ़र्क़ पुं० [अ.]फरक [मान्यता

फ़र्ज़ पुं० [अ.] फरज; कर्तव्य (२)

फ़र्ज़न् अ० मानीने; मान्यतापूर्वक

फ़र्ज़न्द पुं० [फा.] फरजंद

फ़र्जन्दी स्त्री०[फा.]पुत्रपणुं.–में लेना= दत्तक लेवुं (२) जमाई करवो

फ़ज़ानगी स्त्री० [फा.] बुद्धिमत्ता (२) विद्या (३) योग्यता; गुण

फ़र्ज़ाना वि०[फा.] बुद्धिमान(२)पंडित

फ़र्ज़ी वि०[फा.]मानेलुं;कल्पित(२)नामनुं

फ़र्द स्त्री०(२)वि०[फा.] जुओ 'फरद'

फर्राटा पुं० वेग; तेजी

फ़र्रार वि० [अ.] जोरथी दोडनारुं

फ़र्राश पुं० [अ.] फरास (२) नोकर

फ़र्राश-खाना पुं०[अ.+फा.] फरासखानुं

फ़र्रुख वि० [फा.]सुंदर;मनोहर(२)सरस

फ़र्श पुं० [अ.] जुओ 'फरश'
फर्शी स्त्री०(२)वि०[फा.]जुओ 'फरशी'
फर्शी-सलाम स्त्री० फरस सुधी नमीने करेली सलाम; कुर्निश
फ़लक पुं० [अ.] फलक; आकाश
फलका पुं० फफोलो; छालुं
फलदान पुं० सगाई करवानो विधि
फलना अ०क्रि०फळवुं(२)फळदायी थवुं. –**फूलना**=फूलवुंफालवुं
फ़लाँ वि० [फा.] फलाणुं; अमुक
फलाँग स्त्री० फलंग. (अ०क्रि०, –**ना**)
फ़लाकत स्त्री० [अ.] गरीबी (२) कष्ट
फ़लातूँ पुं० प्लेटो; अफलातून
फलाना वि० फलाणुं
फ़लासिफ़ा पुं०फिलसूफी [परोपकार
फ़लाह स्त्री०[अ.]फतेह (२) सुख (३)
फ़लाहत स्त्री० [अ.] खेती
फ़लीता पुं० पलीतो; 'फतील:'
फ़ल्सफ़ा पुं० फिलसूफी
फ़ल्सफ़ी वि० फिलसूफ
फ़वायद पुं० [अ.] 'फायदा'नुं ब०व०
फ़व्वारा पुं० फुवारो; 'फौव्वारा'
फ़सद स्त्री० 'फ़स्द' जुओ
फ़सल,फ़सली जुओ 'फ़स्ल, फ़स्ली'
फ़साद पुं०[अ.] फिसाद (वि०, –**दी**)
फ़साना पुं० [फा.] कल्पित कथा (२) विवरण
फ़साहत स्त्री० [अ.] सुंदर वर्णन के भाषणनी शक्ति
फ़सील स्त्री०[अ.]नगरनो कोट [कार
फ़सीह वि०[अ.]सुंदर वक्ता के वर्णन-
फ़सूँ पुं० [अ.] जंतरमंतर; 'टोटका'
फ़सूँगर पुं० [फा.] जादुगर (२)जंतर-मंतर करनार; भूवो
फ़स्ख़ पुं०[अ.]विचार बदलवो ते (२) तोडवुं के रद करवुं ते
फ़स्द स्त्री० [अ.] फस खोलाववी ते
फ़स्ल स्त्री०[अ.]फसल(ऋतु के खेतीनी ऊपज) (२) ग्रंथनुं प्रकरण (३) फासलो (४) छळ; दगो
फ़स्ली वि०[फा.]फसली(२)पुं०कोलेरा
फ़स्ले-बहार स्त्री०[अ.+फा.]वसंत ऋतु
फ़स्साद पुं० [अ.] फस खोलनार
फ़हम स्त्री० [अ.] ज्ञान; समज
फ़हमाइश स्त्री० [फा.] चेतवणी
फ़हमीद स्त्री०[फा.]समज;बुद्धि. (वि० –**दा**) [फहराना)
फहरना अ०क्रि०फरकवुं;ऊडवुं (प्रेरक
फहरान स्त्री० फरकाववुं ते
फ़हरिस्त जुओ 'फ़ेहरिस्त'
फ़हश वि०[अ.फ़ुहश]अश्लील(२)फूवड
फ़हीम वि०[अ.]'फहमीदा';समजदार
फाँकना स०क्रि० फाकवुं [पाश
फाँद स्त्री०उछाळो(२)पुं०; स्त्री० फंद;

फाँदना अ०क्रि०ऊछळवुं(२) स०क्रि० कूदी जवुं; ओळंगवुं
फाँस स्त्री० फांस (२) पास; जाळ
फाँसना स०क्रि० फसाववुं
फाँसी स्त्री०पाश; फांसो (२) फांसी
फ़ाका पुं०[अ.] फाका; उपवास (२) गरीबी [निर्धन
फ़ाक़ा-कश वि०[अ.+फा.] भूख्युं(२)
फ़ाक़ा(–के)मस्त वि० [फा.] भूखे मरतुं छतां बेपरवा [होलो
फ़ाख़ता, फ़ाख़्ता स्त्री०[अ.]एक पक्षी;
फ़ाख़तई, फ़ाख़्तई स्त्री० होला जेवो–आछो जांबुडियो रंग
फागुन पुं० फागण मास
फ़ाज़िल वि०[अ.] वधारेपडतुं;फाजल (२) विद्वान. –बाकी स्त्री०हिसाबे नीकळतुं लेणुं के देणुं
फाटक पुं०मोटो दरवाजो(२)झाटकण; झटकामण
फ़ातिहा पुं०[अ.]प्रार्थना (२) फातियो
फ़ानूस पुं०[फा.]फानस(२)दीवानुं झाड
फ़ाम पुं०[फा.] रंग; वर्ण
फाया पुं० जुओ 'फाहा'
फ़ारख़ती स्त्री०[फ़ारिग+खती]फारगती
फ़ारिग वि० [अ.] फारग; छूटुं
फ़ारिग़-उल्-बाल वि० [अ.] सौ रीते सुखी; निश्चिंत
फ़ारूक़ वि० [अ.] सारासारनुं विवेकी
फाल स्त्री०हळनी कोस[सं.](२)कापेली सोपारी (३) पुं० फाळ; छलंग
फ़ाल स्त्री०[अ.]पासाथी जोश जोवा ते
फालतू वि०वधारेनुं;फालतु(२) नकामुं
फालसई वि० फालसाना रंगनुं
फालसा पुं०[फा.]फालसी के फालसुं
फ़ालिज पुं० [अ.] लकवो; पक्षाघात
फावड़ा पुं० पावडो
फ़ाश वि०[फा.]प्रगट; खुल्लुं; जाणीतुं
फ़ासिद वि० [अ.] फसाद करनार; 'फसादी' (२) खराब; दुष्ट
फाहा पुं० घी तेल अत्तर इ०नुं पूमडुं
फ़ाहिश वि०[अ.] अनाचारी (२)गंदुं; अश्लील
फाहिशा स्त्री० छिनाळ [टोणो
फ़िक़रा पुं०[अ.] वाक्य(२)फकरो(३)
फिकैत पुं० अस्त्र इ० फेंकी जणनार; 'फैंकनैत' [धर्मशास्त्र
फ़िक़्ह स्त्री० [अ. फ़िक़्ह:] मुसलमाननुं
फ़िक्र स्त्री० [अ.] फिकर
फ़िगार वि० [फा.] घायल
फिचकुर पुं० मोंमांथी नीकळतुं फीण (जेमके, मूर्छामां)
फिटकिरी स्त्री० फटकडी
फिटन स्त्री० फेटन गाडी
फिट्टा वि० फिटकार पामेलुं

फ़ितना पुं०[अ.]झघडो;दंगो; फितनो
फ़ितरत स्त्री० [अ.] स्वभाव; प्रकृति (२) धूर्तता
फ़ितरती वि० धूर्त; दगाबाज
फ़िदविया स्त्री०दासी;नोकरडी [दास
फ़िदवी वि० [अ.] आज्ञाकारी(२)पुं०
फ़िदाई पुं०]अ.] फिदवी; दास
फ़िन्नार अ०[अ.] 'जा जहान्नममां'
फ़िरंग पुं० चांदीनो रोग(२) फिरंगीनो देश; 'फिरंगिस्तान'
फिरंट वि०विरुद्ध(२)लडवा सामे थयेलुं
फिर अ० फरी (२) पछी (३) तो पछी
फ़िरक़ा पुं० [अ.] फिरको
फिरकी स्त्री० फरकडी (२) फीरकी
फ़िरता पुं०अस्वीकार(२) पाछुं फेरववुं ते(३)वि०पाछुं फेरवेलुं(स्त्री०–ती)
फ़िरदौस पुं०[अ.] बाग (२) स्वर्ग
फिरना अ०क्रि०फरवुं(प्रेरक, फिराना)
फ़िरनी स्त्री० [फा.] एक प्रकारनी चोखाना लोटनी खीर
फिरवाना स०क्रि० फेरवाववुं
फ़िराक़ पुं०[अ.]वियोग(२)चिंता (३) खोळ; शोध [संतोष
फ़िराग़ पुं०[अ.]छुटकारो(२)खुशी(३)
फ़िरार पुं०[अ.] नासवुं ते (वि०,–री)
फ़िरासत स्त्री० [अ.]बुद्धिमता
फ़िरिश्ता पुं० [फा.] फिरस्तो
फ़िरोख़्त स्त्री० जुओ 'फरोख़्त'
फ़िल्-जुमला अ०[अ.]टूंकमां;सारांश के
फ़िल्फ़िल स्त्री० [अ.] मरी
फ़िल्-फ़ौर अ० [अ.] तरत
फ़िल्-वाक़ा,-हक़ीक़त अ०[अ.]वस्तुतः, हकीकतमां [अत्यारे
फ़िल्-हाल अ०[अ.]हमणां;आ वखते;
फिस अ० कांई नहीं; मींडुं
फ़िसड्डी वि० काममां मंद; ढीलुं
फिसलन स्त्री० लपसवुं ते
फिसलना अ०क्रि०लपसवुं(२)ढळी जवुं
फ़िसाना पुं० जुओ 'फसाना'
फ़िहरिस्त स्त्री० [फा.]यादी;'फेहरिस्त'
फ़ी अ० [अ.] दर; प्रति एक
फ़ी-ज़माना अ० [अ.+फा.]आजकाल; हालना समयमां
फ़ीता पुं० फीत
फ़ीरनी स्त्री० जुओ 'फ़िरनी'
फ़ीरोज़ा पुं० [फा.] पीरोज(वि०–जी)
फ़ील पुं० [फा.] हाथी
फ़ीलपा पुं० [फा.] हाथीपगो रोग
फ़ील-पाया पुं० [फा.] थांभलो
फ़ीला पुं० [फा.] शेतरंजनो हाथी
फ़ी-सदी अ० [अ.+फा.] सेंकडे
फ़ीस स्त्री० [इं.] फी
फुँकना अ०क्रि० 'फूंकना'नुं कर्मणि(२) पुं० फूंकणी(३) फुक्को;मुत्राशय

फुँकनी स्त्री० फूंकणी (२) धमण
फुँदना पुं०,**फुँदिया** स्त्री० फूमतुं
फुंसी स्त्री० झीणी फोल्ली [रूंछुं
फुचड़ा पुं० कपडा इ०मांथी नीकळतुं
फ़ुज़ूल वि० जुओ 'फ़ज़ूल'
फुट वि०एकाकी(२) अलग(३)पुं०फूट
फुटकर,–ल वि० 'फुट' (२) फुटकळ; विविध (३) छूटक
फुटका पुं०फोडलो [चणावटाणा
फुटेहरा पुं०धाणी जेवा फूलेला शेकेला
फ़ुतूर पुं० [अ.] फितूर
फ़ुतूह स्त्री०[अ.]जुओ'फतूह' [आववुं
फुदकना अ०क्रि० ऊछळवुं(२)उमंगमां
फुदकी स्त्री० एक नानुं पक्षी
फ़ुनून पुं०[अ.] 'फ़न'नुं ब०व०
फुनगी स्त्री० फणगो; अंकुर
फुफँदी स्त्री० नाडुं
फुफकार पुं० फुफवाटो(अ०क्रि०**–ना**)
फुफू स्त्री० जुओ 'फूफी'
फुफेरा वि० (स्त्री०, **–री**) फोईनुं
फुर वि० (प.) साचुं; सत्य
.फुरक़त स्त्री० [अ.] वियोग
फुरती स्त्री० फूर्ति;स्फूर्ति(वि०**–तीला**)
फुरना अ०क्रि० स्फुरवुं
.फुरसत स्त्री० [अ.] फुरसद (२) रोग मटवो ते; आराम
फुरेरी स्त्री० छेडे पूमडुं लपेटेली सळी (२) रोमांच साथे कंप
फुलका पुं० फफोलो(२)फूलको-रोटली
फुलझड़ी स्त्री० दारूखानानी फूलकणी के तारामंडळ (२) पंचातनी वात
फुलवर पुं० फुलेवर रेशमी कापड
फुलवार वि०प्रफुल्ल;प्रसन्न [फूलवाडी
फुलवारी स्त्री० बगीचो (२) कागळनी
फुलहारा पुं० माळी
फ़ुलाँ वि० जुओ 'फ़लाँ'
फुलाना स०क्रि० फुलाववुं
फुलाव पुं० फूलवुं के फुलाववुं ते
फुलौरी स्त्री० एक जातनुं भजियुं
फुसफुसा वि० फासफूसियुं [बोलवुं
फुसफुसाना अ०क्रि०गुसपुस धीमे धीमे
फुसलाना स०क्रि० फोसलाववुं
फुहार स्त्री० पाणीनी झीणी छांट
फुहारा पुं० फुवारो (२) झीणी छांट
फुही स्त्री० जुओ 'फुहार'
फूंका पुं० ढोरनुं दूध खेंची काढवानी एक क्रूर युक्ति (२) फोल्लो
फूट स्त्री० फूट; फूटवुं ते (२) एक जातनी काकडी
फूटना अ०क्रि० फूटवुं. **फूट फूटकर रोना**=विलाप करवो.**फूटी आँखों न भाना**=बहु खराब देखावुं-लागवुं
फूफा पुं० फुओ (स्त्री०, **–फी**)
फूलगोभी स्त्री० फलावरनुं शाक

फूली स्त्री० आंखमां पडतुं फूल
फूहड़,–र वि० फूवड; ठेकाणा वगरनुं
फूही स्त्री० जुओ 'फुही, फुहार'
फेंट स्त्री० कमरनी भेट के कमर (२) 'फेंटना'नी क्रिया
फेंटना स०क्रि० फीणवुं; हलाववुं
फेंटा पुं० 'फेंट' (२) फेंटो
फेनी स्त्री० सूतरफेणी
फेफड़ा पुं० फेफसुं
फेफड़ी,–री स्त्री० तरस के गरमीथी होठ पर वळती पोपडी
फेर पुं० फेर (चक्कर; तफावत) (२) दुविधा; मूंझवण (३) संशय (४) फेरफार (५) उपाय; युक्ति (६) लेवडदेवड; हेरफेर. –**खाना**= फेरावामां पडवुं. –**में पड़ना**= गूंचवावुं [करवुं
फेरना स०क्रि०फेरववुं (२) पाछुं लेवुं के
फ़ेल पुं०[अ०] कार्य(२) दुष्कर्म; फेल
फ़ेल-ज़ामिनी स्त्री०सारी चालना जामीन
फ़ेलन् अ० [अ.] कार्यरूपे
फ़ेली वि०[अ.] 'फेल'वाळुं; दुराचारी (२) फेलबाज; ढोंगी
फ़ेहरिस्त स्त्री० यादी; 'फिहरिस्त'
फैंकनैत पुं० घा करवामां होशियार; 'फिकैत' [फेज; परिणाम
फ़ैज़ पुं०[अ.]फायदो(२)परोपकार(३)
फ़ैयाज़ वि० जुओ 'फ़य्याज़'
फ़ैयाज़ी स्त्री० जुओ 'फ़य्याज़ी'
फैलना अ०क्रि० फेलावुं
फ़ैलसूफ़ पुं०[फा.]फिलसूफ(२) 'फजूलखर्च'; उडाउ (३) दगलबाज
फ़ैलसूफ़ी स्त्री०अपव्यय(२) दगलबाजी
फैलाव पुं० फेलावो [फेंसलो
फ़ैसल पुं०[अ.]न्यायाधीश(२) न्याय;
फ़ैसला पुं० [अ.] फेंसलो
फोक पुं०नकामो कूचो(२)नीरस चीज
फोड़ा पुं० फोडलो
फोड़िया स्त्री० फोल्ली [महेसूल
फ़ोता पुं०[फा.]थेली(२) अंडकोष (३)
फ़ोतेदार पुं० [फा.] खजानची
फ़ोश वि० [अ.] गंदु; बीभत्स
फ़ौआरा पुं० फुवारो
फ़ौक़ वि०[अ.]उच्च;श्रेष्ठ(२)पुं०उच्चता
फ़ौक़ियत स्त्री०[अ.]श्रेष्ठता(२) उन्नति
फ़ौज स्त्री० [अ.] फोज
फ़ौजी वि० [फा.] फोजने लगतुं
फ़ौत वि०[अ.] गत; मृत(२)स्त्री०नाश (३) मृत्यु
फ़ौती स्त्री० [फा.] मृत्यु
फ़ौरन अ० [अ.] तरत
फ़ौलाद पुं०[फा.]पोलाद (वि०,–दी)
फ़ौव्वारा पुं०[अ. फव्वारः] फुवारो
फ़्रांसीसी वि० फ्रांसनुं

ब

बंक वि०बंकुं;वांकुं(२)दुर्गम(३)पुं०बॅन्क
बंकनाल स्त्री०सोनीनी फूंकवानी नळी
बँगला वि०बंगाळी (२) स्त्री० बंगाळी भाषा (३) पुं० बंगलो
बंजर पुं० ऊसर जमीन
बँटना अ०क्रि० 'बाँटना'नुं कर्मणि
बँटवारा पुं० वहेंचणी
बंटा पुं० गोळ के चोखंडो नानो डबो
बँटाई स्त्री०बांटवुं ते (२) भागनी खेती
बंडा पुं० एक कंद; रताळु (?)
बँडेरी स्त्री० छापरानुं मोभनुं लाकडुं
बंद पुं० (२) वि० [फा.] बन्ध
बंद गोभी स्त्री० करमकल्लो
बंदनवार पुं० तोरण
बंदना स०क्रि० वंदवुं (२) स्त्री० वंदना
बंदर पुं० वांदरो (२) [फा.] बन्दर. –घुड़की,-भबकी=खाली डराववा माटे धमकाववुं ते
बंदरगाह पुं० [फा.] बन्दर
बंदा पुं० [फा.] दास; सेवक
बंदा-नवाज़ वि० [फा.] दास पर दया करनार;दीनदयाळ [(३)पेंतरो
बंदिश स्त्री०[फा.] बांधवुं ते (२) प्रबंध
बंदोबस्त पुं०[फा.] बंदोबस्त (२)महेसूलनी जमाबंधी [साधन
बँधना अ०क्रि०बंधावुं(२) पुं०बांधवानुं
बंधान पुं०धारो;बंधी;करार(२)पाणीनो बांध (३)समताल [करार
बंधेज पुं० बंधी;प्रतिबंध(२)बंधामणी;
बंपुलिस स्त्री०सार्वजनिक जाजरूनुं स्थान
बंबा पुं०[अ.मंबा] बंबो(२)स्रोत; झरणुं
बँबाना अ०क्रि० (ढोरनुं) बांघडवुं
बंसकपूर,बंसलोचन पुं० वांसकपूर
बँहगी स्त्री०'बहँगी',पाणीनो बांगो-कावड
ब [फा.] पूर्वग; 'स' जेम, सहित एवा अर्थमां. उदा० बकौल
बईद अ० [अ.] दूर
बकचा पुं० जुओ 'बकुचा'
बकची स्त्री० 'बकुची'; बचकी
बकतर पुं० बख्तर
बकर-कसाब पुं०बकरांनुं मांस वेचनार
बकरना स०क्रि०एकला बकवुं–बबडवुं
बकलस पुं० [इं. बकल्स] बकल
बकला पुं० वल्कल(२)फळनुं छोडुं
बकवाद,बकवास स्त्री०बकवाद;बकबक
बकस पुं० पेटी; 'बॉक्स'

बकसना स०क्रि०बक्षवुं (२) माफ करवुं
बकसुआ(-वा) पुं० 'बकलस'; बकल
बकायन स्त्री० एक झाड
बक़ाया पुं० [अ.] बाकी; बचत
बकावल पुं० [फा.] बबरची
बक़िया वि० [अ.] बचेलुं; परिशिष्ट
बकुचा पुं०(स्त्री०,-ची)बचको; पोटलुं
बकेन(-ना) स्त्री० वाखडी गाय भेंस
बकैयाँ पुं० घूंटणिये चालवुं ते
बकोटना स०क्रि०नखथी उझरडो भरवो
ब-क़ौल अ०[अ.]कोल प्रमाणे [छोडुं
बक्कल पुं०[सं.वल्कल]'बकला';छाल(२)
बक्काल पुं० [अ.] बकाल
बक्र-ईद स्त्री० [अ.] बकरी-ईद
बक्स पुं० 'बकस'; पेटी
बख़रा पुं० [फा.] भाग
बखरी स्त्री० रहेवा लायक घर
बखान पुं० वर्णन (२) वखाण
बखानना स०क्रि० वर्णववुं(२)वखाणवुं
(३) गाळो भांडवी [वखार)
बखार पुं० वखार (स्त्री० -री = नानी
बखियाना स०क्रि० बखिया दई सीववुं
बखीर स्त्री०शेरडीना रसमां रांधेलो भात
बख़ूबी अ०[फा.] खूबीथी;अच्छी तरेह
बखेरना स०क्रि० विखेरवुं
ब-ख़ैर अ० [फा.] बरोबर; खूबीथी
बख़्त पुं०[फा.]नसीब

बख़्शना स०क्रि० बक्षवुं (२) त्यागवुं
(३) क्षमा करवी
बख़्शिश स्त्री०[फा.]बक्षिश(२)उदारता
(३) क्षमा [भ्रष्ट थवुं
बगदना अ०क्रि० बगडवुं(२)भूलवुं(३)
बगमेल पुं० बराबरी; स्पर्धा
बग़ल स्त्री०[फा.]बगल(२)पासुं; पडखुं
(३)पासेनुं स्थान.-गरम करना=
सहवास करवो. बगलें बजाना=
काखलियो कूटवी;राजी राजी थवुं.
बगलें झाँकना=आमतेम भागवा
मथवुं(२)गल्लांतल्लां करवां
बगलगंध पुं०बगलबामणी(२)बगलमां
खराब पसीनो नीकळवानो रोग
बगलबंदी स्त्री० बगलबंडी
बगला-भगत पुं० बगभगत
बगली वि०बगलनुं(२) स्त्री० बगलनुं
कपडुं (३) दरजीनी थेली
बग़ावत स्त्री०[अ.] बळवो(२)राजद्रोह
बगुला पुं० बगलो
बगूला पुं० वंटोळियो
बग़ैर अ० [अ.] वगर; विना
बग्गी,-ग्घी स्त्री० बगी
बघंबर पुं० व्याघ्रचर्म
बघनहाँ(-हियाँ) पुं० वाघनख
बघारना स०क्रि०वघारवुं(२) योग्यता
बहारनुं बोलवुं-छांटवुं

बच्चा पुं० बच्चुं (२) बाळक (३) वि० नादान; बालिश [गर्भाशय
बच्चा-दान पुं०[फा.],**बच्चेदानी** स्त्री०
बछड़ा पुं०(स्त्री० –ड़ी,बछिया)वाछडो
बछेड़ा पुं० घोडानो वछेरो
बजंत्री पुं०(वाजुं)वगाडनार–बजावनार
बजना अ०क्रि० वागवुं;बजवुं(२)(शस्त्र) चालवुं [फीण आववुं
बजबजाना अ०क्रि०सडाथी खदबदवुं–
बजरी स्त्री० कांकरेट(२)कोटनो कांगरो (३)वाजरी [बजाववुं; करवुं.
बजा वि०[फा.]उचित;ठीक. **–लाना**=
बजा–आवरी [फा.] स्त्री० कर्तव्य के आज्ञानुं पालन
बज़ाज़ा पुं०[फा.] बजाजोनुं–कापडियाओनुं बजार; कापड-बजार
बजाय अ० [फा.] बदले; अवेजमां
बजुज़ अ०[फा.]सिवाय;(अमुक)छोडीने
बज़्म स्त्री०[फा.]सभा; मंडळी [वावुं
बझना अ०क्रि०;बंधावुं(२)फसावुं;गूंच-
बझाव पुं० ०ट स्त्री०गूंचवण;फसावुं ते
बट पुं० वट;वड(२)वडुं(३)वजन;वाट (४) वळ (५) वाट; रस्तो
बटखरा पुं० वजन; बाट
बटन स्त्री०आमळवुं ते;वळ(२)पुं० बटन
बटना स०क्रि० वळ देवो; आमळवुं (२) पुं० उपटण
बट-परा,-पार,-मार पुं० वाटपाडु;डाकु
बटली,–लोई स्त्री० वटलोई; तांबडी
बटवार पुं० नाकेदार (२) पहेरेगीर
बटाऊ पुं० वटेमार्गु; मुसाफर **–होना** =चालवा मांडवुं
बटिया स्त्री० नानी गोळी
बटी स्त्री० गोळी
बटुरना अ०क्रि० टोळे वळवुं;एकठा थवुं
बटुवा पुं० वाटवो (२) मोटी वटलोई
बटेर स्त्री० एक पक्षी
बटोर पुं० टोळुं (२) ढगलो
बटोरना स०क्रि० समेटवुं; एकठुं करवुं
बटोही पुं० मुसाफर; 'बटाऊ'
बट्टा पुं०[सं. वार्त्त;प्रा. वट्ट]दलाली(२) तोटो; घट (३)खलनो बत्तो
बट्टा-खाता पुं० डूबेली रकमनुं खातुं
बट्टाढाल वि० लीसुं अने सपाट
बड़ स्त्री० बकवाद
बड़प्पन पुं० मोटाई; महत्ता
बड़बेरी स्त्री० 'झडबेरी'; जंगली बोर
बड़बोल(–ला) वि० बडी बडी वातो हांकनार [भाग्यशाळी
बडभाग(–गी) वि० बडभागी; महा
बड़हार पुं० लग्न पछीनुं महाभोजन
बड़ा पुं० वडुं(२)वि०वडुं;मोटुं (उंमर, कद, गुण इ०मां)
बड़ाई देना=आदर करवो

बड़ा घर पुं० केदखानुं
बड़ा दिन पुं० २५मी डिसेम्बर
बड़ी स्त्री० वडी (२) वि० मोटी
बड़ी माता स्त्री० शीतळा; बळिया
बढ़ई पुं० सुतार
बढ़ती स्त्री० वृद्धि (२) चडती
बढ़ना अ०क्रि०वधवुं (२) उन्नति थवी (३) दुकान इ० बंध थवुं के दीवो बुझावो. **बढ़कर चलना**=फुलावुं; घमंड करवो
बढ़नी स्त्री० सावरणी
बढ़ाव पुं० वृद्धि (२) उन्नति
बढ़ावा पुं० उत्तेजन (२) उश्केरणी
बढ़िया वि० उत्तम
बढ़ोतरी स्त्री० उत्तरोत्तर चडती
बतकही स्त्री०वातचीत (२) वादविवाद
बतख़ स्त्री० [अ. बत] बतक
बतचल वि० बकवाद करनारुं
बतबढ़ाव पुं० वात वधवी ते; झघडो
बतरस पुं० वातचीतनो रस
बताना स०क्रि०बतावबुं [(३)परपोटो
बताशा(–सा) पुं०पतासुं(२)फूलकणी
बतिया स्त्री० फळनो मरवो
बतियार स्त्री० वातचीत
बतौर अ० [अ.] रीत प्रमाणे; ढंगथी
बत्तक(–ख) स्त्री० बतक
बत्ति(-त्ती)स वि० बत्रीस; ३२
बथुआ पुं० बथवो–एक भाजी
बद स्त्री० बदलो; अवेज (२) वद रोग (३) वि० [फा.] 'बद' पूर्वग
बद-ज़ेब वि०[फा.] शोभारहित;कदरूपुं
बदना स०क्रि०वदवुं;कहेवुं(२) ठराववुं (३)शरत के होड बकवी(४) बदवुं; गांठवुं [बेईमान
बदनीयत वि० [फा.] बददानतवाळुं;
बदबख़्त वि० [अ.] कमबख्त; दुर्भागी
बद-मआश, बदमाश वि० [फा.] बद-मास; दुष्ट (२) लफंगुं; दुराचारी
बदर अ० [फा.] बहार (२) [सं.] बोर
बदर-रौ स्त्री० [फा.] मोरी
बद-राह वि० [फा.] बदरस्ते चडेलुं;बूरुं
बदल(–ला) पुं० [अ.] बदलो (२) फेरफार(३)अवेज [निरंकुश
बद-लगाम वि० [फा.] बेलगाम;
बदला पुं०जुओ 'बदल' [बदलवुं
बदलना अ०क्रि०बदलावुं(२)स०क्रि०
बदली स्त्री०वादळांनी घटा(२) बदली
बदलौवल स्त्री० अदलाबदली
ब-दस्त अ०[फा.] हाथे; द्वारा; मारफत
ब-दस्तूर अ० [फा.] दस्तूर मुजब; जेमनुं तेम; यथापूर्व
बद-हवास वि० [फा.] बेहोश; विकळ
बदा वि० नसीबमां लखायेलुं; नियत
बदाबदी स्त्री० चडसाचडसी; होड

बदाम पुं०जुओ'बादाम' [बूराई
बदी स्त्री०वदी;कृष्णपक्ष(२)[फा.]बदी;
ब-दौलत अ०[फा.] कृपाथी; कारणथी
बद्दु पुं० बदमास; दुराचारी
बद्दर(–ल) पुं० वादळ
बद्र पुं०[फा.] पूनमनो चांदो
बध पुं० वध
बधना स०क्रि० वध करवो (२) पुं० नाळचावाळुं जळपात्र, जेवुं के मुसलमानो बहुधा वापरे छे
बधाई स्त्री०वृद्धि (२) वधाई; वधामणी (३) आनंदोत्सव (४) धन्यवाद
बधाया(–वा) पुं०वधामणी [शिकारी
बधिक पुं० वध करनार(२) जल्लाद(३)
बधिया पुं०खस्सी करेलुं पशु [नववधू
बधूटी स्त्री०पुत्रवधू(२)सधवा स्त्री (३)
बन पुं० वन
बनकर पुं० वननी पेदाश
बनजारा पुं० वणझारो (२) वेपारी
बनत स्त्री० बनावट (२) मेळ; बनवुं ते
बनना अ०क्रि० बनवुं. बनकर=बनी-ठनीने; बरोबर. बना रहना= कायम रहेवु (२) जीवतुं रहेवुं
बनफ़शा पुं० [फा.] बनफशा; एक औषधिनी वनस्पति
बनबिलाव पुं० रानी बिलाडो
बनरा पुं० वनडो (वर; लग्ननुं गीत)
बनरी स्त्री० वनडी; कन्या
बनवारी पुं० श्रीकृष्ण
बना पुं०वनडो; वर [विरुद्धमां
बनाम अ० [फा.] नामथी (२) प्रति;
बनासपती स्त्री० (प.) वनस्पति;शाक, घासपालो इ०
बनिया पुं० वाणियो (२) मोदी
बनियाइन स्त्री०वाणियण(२)[इं.वॅनियन] गंजीफराक [मुकाबले
बनिस्बत अ० [फा.] सरखामणीमां;
बनीनी स्त्री० 'बनिया'नी स्त्री
बनेठी स्त्री० बनेटी
बनैला वि०वननुं;जंगली [दगो देनार
बप(-पु)मार वि०बापने मारनार(२)सौने
बपतिस्मा पुं०[इं. बॅप्टिझम] जलदीक्षा
बपुरा वि० बापडुं; बीचारुं
बपौती स्त्री०बापीकी जायदाद–वारसो
बफारा पुं० (वराळनो) नास
बबर पुं० [अ.] सिंह
बबुआ पुं० (स्त्री०,–ई) पुत्र के जमाई माटे लाडनुं संबोधन;बाबु;बचु
बबूल पुं० [सं. बब्बूर] बावळ
बबूला पुं० जुओ 'बगूला'(२)परपोटो
बभूत स्त्री० भभूत; भस्म
बम पुं० बॉम्ब (२) बम बम अवाज. –बोलना या बोल जाना=ठंठण गोपाळ थवुं

बमकना अ०क्रि० शेखी मारवी; बडाई हांकवी
बमचख स्त्री० शोरबकोर (२) झघडो
बमपुलिस पुं० जुओ 'बंपुलिस'
बमूजिब अ० [फा.] मुजब; अनुसार
बयाज़ स्त्री० [अ.] नोंध के तेनी चोपडी
बयाना पुं०[अ. बैयानः]बानुं;'पेशगी'
बयाबान पुं० [फा.] बियावान; जंगल
बर पुं०वर(२)वरदान(३)बळ(४)वि० वर;श्रेष्ठ(५)[फा.]उपर. **–आना, पाना**=बर आववुं;सफळ नीवडवुं
बर-अक्स अ० [फा.+अ.] ऊलटुं
बर-आमद वि० [फा.] जुओ 'बरामद'
बरई पुं० तंबोळी (स्त्री०, **–इन**)
बरकत स्त्री०[अ.]बरकत(२)एक वे . . एम गणतरीमां एक माटे वपराय छे(३)समाप्ति (शुभसूचक अर्थमां) (४) कृपा
बरकती वि०बरकतवाळुं [मोजूद
बर-करार वि० [फा.+अ.] कायम (२)
बरकाज पुं० विवाह
बरख़िलाफ़ अ०[फा.]प्रतिकूळ: विरुद्ध
बर-ख़ुरदार पुं० [फा.] पुत्र (२) वि० खाधेपीधे सुखी (नाम; **–री**)
बरगद पुं० वडनुं झाड
बरछैत पुं० बरछो चलावी जाणनार
बरज़बान वि० [फा.] कंठस्थ
बरज़ोर वि० जोरावर (२) अत्याचारी
बरज़ोरी अ० बळपूर्वक (२) स्त्री० जबरदस्ती
बरत पुं० व्रत (२) वरत; दोरडुं
बरतन पुं० वासण
बरतना अ०क्रि०वर्तवुं(२)स०क्रि०वापरवुं
बरताना स०क्रि० वहेंचवुं
बरताव पुं० वर्ताव; वर्तन
बरतोर पुं० बालतोड [गुलाम
बरदा पुं०[तु.]दास; लडाईमां पकडेलो
बरदाना स०क्रि०मादाने नर देखाडवो
बरदा-फ़रोश वि०[फा.]गुलामनो वेपारी (नाम,**–शी**=गुलामी वेपार)
बरदार वि० [फा.] वही जनार
बरदाश्त स्त्री० [फा.] खमवुं ते; सहन
बरधा पुं० बळद
बरना स०क्रि० वरवुं(२) अ०क्रि०बळवुं
बरपा वि० [फा.] खडुं थयेलुं; मचेलुं
बरफ़ स्त्री० 'बर्फ़'; बरफ
बरबस अ० बळपूर्वक (२) व्यर्थ
बर-मला अ०[फा.]खुल्लामां;सौनी सामे
बरमा पुं० (स्त्री० **–मी**) सारडी
बरमी पुं० बर्मी;ब्रह्मदेशवासी(२)स्त्री० ब्रह्मदेशनी भाषा(३)वि०तेने लगतुं (४) स्त्री० नानी सारडी
बरवट स्त्री० प्लीहानो रोग
बरस पुं० वरस. **–गाँठ**=वर्षगांठ

बरसना अ० क्रि० वरसवुं
बरस पड़ना=खूब गुस्से थई वढवुं
बरसाइत स्त्री०वटसावित्री [–ती)
बरसात स्त्री० वरसादनी ऋतु. (वि०
बरसी स्त्री० वरसी; वार्षिक मृतक्रिया
बर-हक़ वि० [फा.] हकनुं (२) उचित (३) साचुं
बरहना वि०[फा.] नागुं(नाम, –नगी)
बरहम वि०[फा.]गुस्से थयेलुं(२)चकित
बरहा पुं० पाणीनो ढाळियो(२)वरत
बरही पुं०मोर;वर्ही(२)मरघो(३)स्त्री० जन्म पछी बारमा दिवसनी अमुक क्रिया (४) भारो वांधवानुं दोरडुं (५) लाकडांनो भारो
बरा पुं० वडुं
बरात स्त्री० जान
बराती पुं० जानैयो
बरानकोट पुं०[इं. ब्राउनकोट]बुरानकोट
बराना अ०क्रि०बचवुं;अलग रहेवुं(२) स०क्रि०.वरवुं; पसंद करवुं; चूंटवुं
बराबर वि० वराबर;समान (२) सरखुं; सपाट (३) अ०लगातार;सतत(४) हमेश. **–करना**=पूरुं करवुं
बरामद वि०[फा.]वहार के सामे आवेलुं; उपस्थित (२) स्त्री० जुओ 'गंग-बरार; दियारा' (३) आमदानी
बरामदा पुं० [फा.] वरंडा (२) छज्जुं
बराय अ० [फा.] वास्ते; माटे
बरायन पुं० विवाहमां वरने पहेरावातुं लोढानुं कडुं
बराह पुं० वराह (२)अ० [फा.] तरीके (४) द्वारा; मारफत
बरी स्त्री०वडी(२)वि०[फा.]मुक्त;छूटुं
बरु अ० (प.) भले; ठीक
बरुआ(-वा) पुं०वडवो;वटुक(२)उपनयन
बरुनी स्त्री० पांपण
बरेंड़ा पुं० छापरानो मोभारो
बरेखी स्त्री०सगाई,विवाहसंबंध ठराववो ते
बरोक पुं० सगाई कर्यानो चांल्लो
बरोह स्त्री० वडवाई [तेज
बर्क़ स्त्री०[अ.]वीजळी (२)वि०चपळ;
बर्ग पुं० [फा.] झाडनुं पान
बर्फ़ स्त्री० [फा.] बरफ
बर्फ़ानी वि० [फा.] बरफनुं
बर्फ़िस्तान पुं० [फा.] बरफनो प्रदेश
बर्र पुं०[अ.] स्थळ; जमीन (२) वन
बर्र-ए-आज़म पुं० [अ.] महाद्वीप
बर्राक वि०[अ.] चमकतुं (२) 'बर्क'; तेज; चपळ [करवी
बर्राना अ०क्रि०बकवुं(२)बवडवुं;लवरी
बर्रै पुं० 'तितैया'; भमरी
बलंद वि०[फा.]बुलंद(२)बहु ऊंचुं;श्रेष्ठ
बल पुं०वळ;आमळ(२)आंटो(३)आंटी; गांठ (४) लचकवुं–झूकवुं ते (५)

कमी; कसर (६) [सं.] बल
बलकट वि० 'पेशगी'; अगाउथी अपातुं
बलकना अ०क्रि० ऊकळवुं (२) ऊमटवुं
बलग़म पुं० [अ.] कफ (वि०, –मी)
बलना अ०क्रि० बळवुं [बोलवुं
बलबलाना अ०क्रि० व्यर्थ बकवुं (२) ऊंटनुं
बलवा पुं० [फा.] बळवो
बलवाई पुं० बळवाखोर
बला स्त्री० [अ.] बला (२) दुःख; आफत
(३) रोग. –का=गजब; भारे
बलाग़त स्त्री० [अ.] प्रसंगोचित बोलवुं
ते (२) जुवानी
बलाय स्त्री० बला
बलि पुं० [सं] महेसूल; करभार (२)
भेट (३) पूजापो (४) बळि; भोग (५)
स्त्री० सखी. –जाना=वारी जवुं
बलिहारी स्त्री० वारी जवुं–कुरवान थवुं
ते. –जाना=वारी जवुं. –लेना=
प्रेम बतावववो
बलीग़ पुं० [अ.] सरस वक्ता
बलुआ वि० (स्त्री० –ई) रेतीवाळुं
बले अ० [फा.] हा; ठीक
बलैया स्त्री० बला. (किसीकी) **बलैया**
लेना = धन्यवाद के शुभाशिष
बतावबी [प्रत्युत
बल्कि (–ल्के) अ० [फा.] बल्के (२) परंतु;
बल्ग़म पुं० [अ.] जुओ 'बलग़म'

बल्लम पुं० सोटो; दंडो (२) बरछी (३) छडी
बल्लमटेर पुं० 'वोलंटियर'; स्वयंसेवक
बल्ला पुं० सोटो (२) हलेसुं (३) बोलनुं बेट
बवंडर पुं० वंटोळियो (२) आंधी
बवासीर स्त्री० [अ.] हरसनो रोग
बशर पुं० [अ.] मनुष्य
बशारत पुं० [अ.] शुभ समाचार
बशीर वि० [अ.] 'बशारत' लावनार
(२) सुंदर
बशाशत स्त्री० [अ.] खुशी; प्रसन्नता
बश्शाश वि० [अ.] राजी; खुश
बसंदर पुं० आग
बसर पुं० [अ.] निर्वाह; गुजारो
बसवार पुं० वघार
बसवास पुं० वास; वसवाट
बसह पुं० वृषभ; बेल
बसारत स्त्री० [अ.] दृष्टि (२) समज
बसीक(–ग)त स्त्री० वस्ती (२) वसवाट
बसीठ पुं० दूत
बसीरत स्त्री० जुओ 'बसारत'
बसूला पुं० वांसलो (स्त्री०, –ली)
बसेरा वि० वसनार (२) पुं० निवास (३)
उतारो [कपडुं
बस्ता पुं० [फा.] कागळपत्र इ० बांधवानुं
बहँगा पुं० मोटो बांगो. (स्त्री० –गी)
बहकना अ०क्रि० बहेकवुं; वंठी जवुं
(२) फुलावुं (३) बीजी वातमां पडी

राजी थवुं (बाळके)
बहन स्त्री० बहेन (२) वहन; वहेवुं ते
बहना अ०क्रि० वहेवुं
बहनापा पुं० बहेनपणां
बहनेली स्त्री० बहेनपणी
बहनोई पुं० बनेवी [शुभ कार्य
बहबूदी स्त्री०[फा.] भलाई;उपकार(२)
बहम अ० [फा.] साथे;जोडे(२) (प..) वहेम.-**पहुँचाना**=आणी आपवुं
बहर अ० [फा.] माटे; सारु (२) पुं० [अ. बह्र] समुद्र [कोई रीते
बहर-हाल अ० [फा.] गमे तेम करीने;
बहरा वि० बहेरुं (२)पुं० [फा.] नसीब (३) हिस्सो
बहराना स०क्रि०बहार काढवुं(२) (प.) राजी करवुं;दुःख भूले एम करवुं(२) फोसलाववुं
बहरावर वि० [फा.] नसीबदार
बहरियाना स०क्रि० 'बहराना'; बहार काढवुं
बहरी वि०स्त्री० बहेरी (२)वि० [अ.] 'बहर' –समुद्र संबंधी (३) स्त्री० [अ.] बाज जेवुं एक पक्षी
बहल स्त्री० वहेल; रथ
बहलना अ०क्रि० चित्त प्रसन्न थवुं
बहलाना स०क्रि०बहलाववुं;'बहकाना'; चित्त प्रसन्न करवुं
बहलाव पुं० बहलाववुं ते; मनोरंजन
बहली स्त्री० वहेल; 'बहल'
बहस स्त्री०[अ.] वादविवाद;चर्चा;बोस
बहा पुं०[फा.] मूल्य; किंमत
बहाना स०क्रि० 'बहना'नुं प्रेरक (२) पुं० [फा.] बहानुं
बहार स्त्री०[फा.]बहार;भभको के आनंद; मजा (२) वसंत ऋतु (३) विकास
बहाल वि०[फा.] कायम; पूर्ववत् (२) प्रसन्न; स्वस्थ [कायम राखवुं ते
बहाली स्त्री० बहानुं(२)[फा.] बहाली;
बहाव पुं० प्रवाह; वहेण
बहिन स्त्री० बहेन
बहिला वि० वांझियुं (ढोर)
बहिश्त पुं०[फा.]बहिस्त;स्वर्ग [रहेनार
बहिस्ती पु०[फा.]भिस्ती (२) स्वर्गमां
बही स्त्री० वही; चोपडो
बहीर स्त्री० जनसमूह; भीड (२) फोज साथेनो मददनीश नोकर वगेरेनो वर्ग के तेमनी सामग्री
बहुत वि० बहोत; घणुं; अनेक
बहुताई(–त,-यत)स्त्री०बहुता;अधिकता
बहुतेरा वि०बहोत(२)अ० अनेक रीते
बहुतेरे वि० संख्यामां बहु [मळवुं
बहुरना अ०क्रि०पाछुं आववुं (२) फरी
बहुरि अ०फरी;पुनः(२)उपरांत;वधुमां
बहुरूपिया पुं० बहुरूपी

बहू स्त्री० वहु (पत्नी के पुत्रवधू) (२) कन्या; वधू
बहेतू वि० भटकतुं; रखडतुं
बहेलिया पुं० पारधि
बह्र पुं० [अ.] 'बहर'; समुद्र
बह्र-रवाँ पुं० [फा.] जहाज; वहाण
बाँका वि० वांकुं (२) बहादुर (३) बंको; छेलबटाउ
बाँगड़ू वि० मूर्ख;बेवकूफ [छोडवुं
बाँचना स०क्रि०वांचवुं(२)वंचित करवुं;
बाँझ स्त्री० वांझणी; वंध्या
बाँट स्त्री० वहेंचणी (२) भाग
बाँटना स०क्रि०वहेंचवुं(२)भाग पाडवा
बाँटा पुं० जुओ 'बाँट'
बाँद पुं०[फा.बंदा]सेवक;दास(स्त्री०–दी)
बाँधनूँ पुं० पहेलेथी बांधेली अटकळ; मनसूबो (२) रंगरेजनी बांधणी
बाँबी स्त्री० ऊधई के सापनुं घर
बाँसली स्त्री० वांसळी(वाद्य के रूपियानी)
बाँसुरी स्त्री० वांसळी
बाँह स्त्री० बांय (हाथ; के कपडानी बांय). **–गहना या पकड़ना**= मदद करवी (२) परणवुं. **–देना**= मदद करवी. **–बोल**=मदद के रक्षा करवानुं वचन
बा अ०[फा.]साथे;सहित(२)सामे;समक्ष
बाइबिल स्त्री० बाइबल
बाइस पुं० [अ.] कारण; सबब
बाई स्त्री० वायु (२) बाई
बाईस वि० २२; बावीस
बाक़र पुं०[अ.]मोटो विद्वान के धनी
बाक़र-ख़ानी स्त्री०[अ.]एक जातनी रोटी
बाकला पुं०[अ.]वटाणा जेवी एक फळी
बाक़ियात स्त्री० [अ.] बाकी रकमो
बाक़ी वि०[अ.]बाकी(२)स्त्री०बादबाकी (३) अ० बाकी; नहि तो
बा-ख़बर वि० [फा.] वाकेफ
बाग,बागडोर स्त्री० लगाम
बाग़ पुं० [अ.] बाग; बगीचो
बाग़बान पुं० [फा.] माळी
बागर पुं०वागड;नदीकांठानो ऊंचो प्रदेश ज्यां कदी पाणी न पहोंचतुं होय
बागा पुं० वाघो; जामो
बाग़ाती स्त्री० [फा.] बागायती जमीन
बाग़ी पुं० [अ.] राजद्रोही(२)वि०बाग संबंधी [नानो बाग
बाग़ीचा पुं० [फा. बाग़्चः] बगीचो;
बागुर पुं० जाळ; फांदो
बाघ पुं० वाघ [कामळो
बाघंबर पुं०वाघ-चामडुं(२)एक जातनो
बाछा पुं० वाछडो (२) वत्स; छोकरो
बाज़ पुं० [अ.] बाज पक्षी (२) [फा.] 'वाळुं'अर्थनो प्रत्यय(३)वि० वगरनुं; वंचित; रहित (४) [अ. बअज]

थोडुंक; केटलुंक; अमुक.–**आना**=पाछुं आववुं (२) वगरनुं थवुं;खोवुं (३)दूर रहेवुं. –**करनां,–रखना**=रोकवुं; मना करवी

बाज़-गश्त वि०[फा.]पाछुं आवतुं;ऊलटुं

बाज़-गुज़ार पुं० [फा.] कर भरनार

बाज़-दावा पुं०[फा.] दावा-अधिकारनो त्याग; फारगती

बाजना अ०क्रि०वागवुं;बजवुं(२)बाझवुं; लडवुं(३)जाहेर थवुं(४)वागवुं;लागवुं

बाजा पुं० वाजुं

बाजा-गाजा पुं० वागतुं गाजतुं ते; अनेक वागतां वाजांनो समूह

बा-ज़ाब्ता अ० [फा.] जापताथी; नियमथी (२) वि० नियमवाळुं

बाज़ार पुं० [फा.] बजार. –**करना**=खरीदी करवा बजारमां जवुं.–**गर्म होना**=घराको खूब होवा (२)काम जोरथी चालवुं

बाज़ारी(–रू) वि०[फा.] बजार संबन्धी (२) बजारु; सामान्य के अशिष्ट

बाज़िन्दा पुं०[फा.]खेलाडी(२)बाजंदुं–धूर्त माणस (नाम,–न्दगी स्त्री०)

बाज़ी स्त्री० [फा.] बाजी. –**मारना**=बाजी जीतवी. –**ले जाना**=फाववुं; आगळ जवुं

बाज़ीचा पुं० [फा.] रमकडुं

बाट पुं० वाट;रस्तो (२) तोलवानुं बांट (३) बत्तो

बाटना स०क्रि०वाटवुं(२)जुओ 'बटना'

बाटी स्त्री० बाटी–रोटी (२) गोळी

बाड़ स्त्री० वाड (२) धार

बाड़ा पुं० वाडो (स्त्री० –**ड़ी**)

बाढ़ स्त्री०वृद्धि(२)रेल(३)नफो(४)सतत शस्त्र चालवुं ते(५)शस्त्रादिनी धार. –**दगना**=सतत तोप छूटवी

बात स्त्री० वात (२) पुं० वात; वायु. –**बनाना**=जूठुं बोलवुं (२) बहानुं काढवुं.–**का बतंगड़ करना**=रजनुं गज करवुं. –**का धनी,पक्का** या **पूरा**=प्रतिज्ञा के वचन पाळनार. –**खोना**=शाख बगाडवी.–**पाना**=रहस्य समजी जवुं

बातिन पुं० [अ.] बातेन–अंदरनो भाग (२) अंत:करण

बातिनी वि०[अ.]अंदरनुं(२)मननुं

बातिल वि०[अ.]मिथ्या;जूठुं;नकामुं(२) बातल; रदबातल

बाती स्त्री० बत्ती; वाट

बातुल वि०[सं. वातुल] वायल; पागल

बातूनिया,बातूनी वि० वातोडियुं

बाथ पुं० बाथ; गोद

बाद पुं० वाद; बोस (२) वाद; होड; शरत(३)[फा.]वात;हवा (४) अ०

[अ.] बाद; पछी (५)व्यर्थ;'बादि' (६) वि० बाद; कम [झघडवुं

बादना स०क्रि०(प.)वादविवाद करवो;

बाद-फ़रोश पुं० [फा.] खुशामतियुं(२) बकबक करनारुं

बादबान पुं० [फा.] वहाणनुं सढ

बादल पुं० वादळ

बादला पुं०[फा.]कसबनुं बादलुं [कष्ट

बाद-सख़्त स्त्री० [फा.] आंधी(२) भारे

बाद-हवाई अ० [फा.] व्यर्थ; 'फजूल'

बादाम पुं० [फा.] बदाम. (वि० **–मी**)

बादि अ० (प.) व्यर्थ; नकामुं

बादियान पुं० [फा.] वरियाळी

बादी वि० [फा.] वायु संबंधी(२)वायु करनारुं (३) स्त्री० वातविकार

बादे-सबा स्त्री० [फा.] पूर्वनी हवा

बाधना स०क्रि०(प.)बाध नाखवो;रोकवुं

बान पुं० बाण(२) स्त्री० वान; वर्ण के बांधो के रचना(३) टेव; आदत

बानगी स्त्री० वानगी; नमूनो

बा-नबा वि०[फा.] सारा अवाजवाळुं (२) संपन्न (३) समर्थ

बाना पुं० पहेरवेश; पोशाक(२) रीत; ढंग (३) वणाट (४) वाणो (५) पतंगनो दोर (६) भाला जेवुं एक शस्त्र (७) स०क्रि० पहोळुं करवुं; खोलवुं (जेम के मोढुं)

बानी स्त्री० वाणी (२) प्रतिज्ञा(३) पुं० वाणियो(४)[अ.]प्रवर्तक; नेता

बानैत पुं० 'बाना' शस्त्र के बाण चलावी जाणनार (२) योद्धो

बापुरा वि० बापडुं;बीचारुं [कपडुं

बाफ़्ता पुं० [फा.] एक जातनुं रेशमी

बाब पुं० [अ.] प्रकरण; अध्याय

बाबरची पुं० बवरची; 'बावर्ची'

बाबू पुं०बाबु; सद्‌गृहस्थ (आदरसूचक)

बाम वि० वाम (२) पुं० [फा.] घरनी मेडी के छत (३) स्त्री० एक जातनी माछली (४) वाम माप

बायँ वि० 'बाया'; डाबुं (२) दाव के लक्ष्य चूकेलुं

बायद अ०[फा.]जेम जोईए एम. –व शायद वि० आदर्श; उत्तम

बायाँ वि० डाबुं (२) ऊलटुं (३)विरुद्ध (४)पुं० बायुं तबलुं. –देना=बची जवुं; सरकी जवुं; जाणीने छोडवुं

बायें अ० डाबी बाजू (२) विपरीत. –होना=विरुद्ध के नाराज थवुं

बार पुं०[फा.]भार;बोजो (२)परिणाम (३) बार; द्वार (४) स्त्री० वार

बारक स्त्री० बराक; फोजनुं मकान

बारकश पुं०[फा.]बोजो लई जनार गाडी

बारग(–गा)ह स्त्री०[फा.]दरबार(२)तंबू

बारगीर पुं० [फा.] बोजो उठावनार

(२) बारगीर–घोडेसवार सैनिक

बारजा पुं० खडकीनो मेडो के कठेरो–अटारी अथवा वरंडो

बारतिय स्त्री० 'वारस्त्री'; वेश्या

बारदाना पुं०[फा.]बारदान(२)फोजनुं सीधुंसामान

बारना स०क्रि०वारवुं; रोकवुं(२)बाळवुं

बार-बरदार पुं०[फा.]बोजो लई जनार; मजूर. (नाम,–री)

बारयाब वि०[फा.] (नाम,–बी) मोटा माणस पासे जनार

बारह वि०बार; १२. **–बाट करना या घालना**=बारेवाट–छिन्नभिन्न करी नांखवुं. **–बाट जाना या होना**= छिन्नभिन्न–रफेदफे थवुं

बारहखड़ी स्त्री० बाराखडी

बारहदरी स्त्री०(मंडप जेवी)चारे पास खुल्ली बेठक

बारहमासा पुं० बार महिनानुं गीत

बारहमासी वि० बारमासी(२) हमेश लीलुं रहेनार

बारह-वफ़ात स्त्री० [फा.] बारेवफात; महंमद पेगंबरना अंतिम मांदगीना बार दिवस

बारह-सिंगा पुं० बारसींगुं हरण

बारहा अ०[फा.] वारंवार (२) प्रायः; घणुं करीने

बारहीं स्त्री० 'बरही';बाळकना जन्म पछी बारमा दिवसनो उत्सव

बाराँ पुं० [फा.] वरसाद

बारात स्त्री० 'बरात'; जान; वरयात्रा

बारानी वि०[फा.]वर्षा संबंधी(२)स्त्री० चोमासु खेती कराती जमीन (३) वरसादथी बचवा पहेरातुं कपडुं

बारिश स्त्री०[फा.]वरसाद(२)वर्षाऋतु

बारी स्त्री०वारी;पाळी(२)वाडी;बगीचो (३) वाड (४) किनार; धार (५) शस्त्रादिनी धार(६)घर;मकान (७) वहाणनुं बारुं(८)नादान छोकरी के युवती (९) पुं० पडिया पतराळां बनावती एक जात

बारीक-बीं वि०[फा.]बारीकाई जोनार के समजनार

बारूद स्त्री०[फा.]बारूत;फोडवानो दारू

बारे अ० [फा.] अंते; छेवटे

बारेमें अ० संबंधमां; विषे

बारोठा पुं० द्वारपूजा; वर द्वारे आवतां कराती क्रिया

बाल पुं०[सं.]वाळ(२)बाळक(३) स्त्री० घउं इ०नुं डूंडुं(४)पुं०[फा.]पांख. **–पकना**=वाळ धोळा थवा. **–न बाँकना**=वाळ वांको न थवो. **–बाल बचना**=मांड मांड बचवुं

बालना स०क्रि० बाळवुं; लगाडवुं

बालम पुं० वहालम; पति; वल्लभ
बाला अ० [फा.]ऊंचे; उपर (२) वि० उपरनुं; उपलुं
बालाई वि०[फा.] उपरनुं (२) स्त्री० दूधनी मलाई (३) ऊंचाई
बालाख़ाना पुं० [फा.] मेडो
बालाबर पुं०[फा.]एक जातनुं अंगरखुं
बालिग़ पुं०[अ.]उंमरे पहोंचेल जुवान
बालिश स्त्री० [फा.] ओशीकुं
बालिश्त स्त्री० [फा.] वेंत; 'बित्ता'
बाली स्त्री० काननी वाळी–कडी (२) 'बाल'; दूंडुं (३) वालि वानर
बालीन पुं० [फा.] ओशीकुं
बालुका स्त्री०, **बालू** पुं०रेती. **–की भीत**=क्षणभंगुर वस्तु
बालूसाही स्त्री० एक मीठाई
बाव पुं० वायु(२)अपानवायु. **–गोला** पुं० गोळानो रोग
बावड़ी स्त्री० वाव
बा-वजूद अ० [फा.] तोपण
बावन(-ना) वि०वामन;ठींगणुं [मूर्ख
बावर(-रा,–ला) वि० बावरुं;घेलुं (२)
बावरची,बावर्ची पुं० [तु.] बबरची
बावली स्त्री० वाव (२) ऊंडी तलावडी
बावाँ वि० डाबुं;'बायाँ'(२)प्रतिकूल
बाशिंदा पुं० [फा.] निवासी; रहीश
बास पुं०वास;रहेठाण(२)वास,गंध(३) कपडुं (४) स्त्री० वासना (५)आग
बासन पुं० वासण
बासमती पुं०ए नामना चोखानी जात
बासा पुं० वीशी:(२) वास; रहेठाण
बासिरा पुं० [अ.] दृष्टि; नजर
बासी वि० वासी. **–कढ़ी में उबाल आना**=घडपणमां जुवानीनो उमंग थवो(२)कसमये कोई वासना ऊठवी
बाहना स०क्रि० वही लाववुं(२) हांकवुं (३) खेडवुं (४) हथियार चलाववुं
बाहम अ० [फा.]आपसमां;अंदरेअंदर
बाहर अ० बहार. **–करना**=दूर करवुं
बाहरी वि०बहारनुं(२)परायुं(३)देखवा मात्र; उपरनुं
बिंदा स्त्री० वृंदा गोपी(२)मोटो चांल्लो
बिंदी स्त्री०बिंदु;मींडुं(२)चांल्लो(३)टपकुं
बिआना स०क्रि०वावुं;जणवुं(ढोर माटे)
बिकना अ०क्रि० वेचावुं
बिकाऊ वि० वेचाउ;वेचावा माटेनुं
बिक्री स्त्री० वेचाण
बिखरना अ०क्रि० वीखरावुं
बिखराना, बिखेरना स०क्रि०विखेरवुं
बिगड़ना अ०क्रि०बगडवुं(२)कोधे भरावुं (३) सामे थवुं के न बनवुं
बिगड़ेदिल पुं०बगडेला दिलनुं;कुमार्गी (२) झघडाळु [बगडेलुं
बिगड़ैल वि० झघडाळु(२) जिद्दी (३)

बिगसना अ०क्रि०(प.) विकसवुं;खीलवुं
बिगहा पुं० वीघुं [अणबनाव
बिगाड़ पुं०बगाड(२)खराबी;वूराई(३)
बिगाना वि० 'बेगाना' जुओ
बिगुल पुं० ब्यूगल
बिगुलर पुं०ब्यूगलवाळो [मुश्केली
बिगूचन स्त्री० गूंचवण; मूंझवण (२)
बिगूचना अ०क्रि०गूंचावुं; मूंझावुं
बिगोना स०क्रि०(प.)वगाडवुं(२)छुपा-
ववुं(३)विताववुं(४)भ्रममां नांखवुं
बिच अ० जुओ 'बीच'
बिचकना अ०क्रि० वचकवुं(२)भडकवुं
बिचकाना अ०क्रि०वचकावुं;चिडावुं(२)
मों मरडवुं [ति;मध्यस्थी
बिचबिचाव पुं० झघडामां वच्चे पडवुं
बिचला वि० वचलुं
बिचवई,बिचवान(–नी) पुं०झघडामां
मध्यस्थ, वचलो माणस
बिच्छू पुं० वींछी [कर्मणि
बिछना अ०क्रि०बिछावावुं;'बिछाना'नुं
बिछाना स०क्रि० बिछाववुं; पाथरवुं
(२)मारीने जमीन पर सुवाडी देवुं
(३) विखेरवुं
बिछुआ पुं० वींछियो; पगनी आंगळीनुं
घरेणुं(२)चुलेतरुं [विखूटुं थवुं
बिछुड़(–र)ना अ०क्रि०वछोडावुं;वछूटवुं;
बिछोड़ा पुं०विरह(२)वछूटवुं ते;वियोग
बिछोय(–ह) पुं 'विछोड़ा'; वियोग
बिछौना पुं० विछानुं
बिजन वि० एकलुं; विजन; एकांत
बिजन(–ना) पुं० वींझणो; पंखो
बिज़न पुं० [फा.] कत्लेआम [गर्जवुं
बिजलीस्त्री०वीजळी.–कड़कना=आकाश
बिजौरा पुं० बिजोरुं
बिज्जु स्त्री० वीजळी
बिटारना स०क्रि० वटाळवुं; गंदुं करवुं
बिटिया स्त्री० बेटी
बिठाना स०क्रि० 'बैठाना' जुओ
बिडर वि० विखरायेलुं (२) नीडर
बिडरना अ०क्रि०विखेराई जवुं(२)डरवुं
बिढ़वना स०क्रि० वधारवुं; संघरवुं
बित पुं० वित्त; धन(२)शक्ति(३) कद
बितरना स०क्रि० वहेंचवुं
बिताना स०क्रि० वितावबुं
बित्ता पुं० वेंत
बिथकना अ०क्रि०चकित थवुं(२)मोहवुं
बिथरना अ० क्रि० (प.) विखेरावुं; छूटुं
छूटुं थवुं
बिथा स्त्री० (प.)व्यथा [घायल थवुं
बिदकना अ०क्रि०फाटवुं; चिरावुं (२)
बिदकाना स०क्रि० 'बिदकना'नुं प्रेरक
बिदा स्त्री०[अ. विदाअ]विदाय; जवुं ते
बिदाई स्त्री० विदाय थवुं ते के तेनी
आज्ञा के ते वेळा कांई आपवुं ते;

विदायगीरी
बिदून अ० [फा.] विना; वगर
बिद्दत स्त्री०[अ. बिदअत]खराबी(२)कष्ट (३)आफत (४) जुल्म (५) दुर्दशा
बिध स्त्री०रीत; प्रकार (२)विधि; ब्रह्मा (३) जमा उधारनो हिसाब. –मिलाना=हिसाब मेळववो
बिधना पुं० विधाता; ब्रह्मा
बिन अ० विना;विण (२)[अ.]पुं०पुत्र
बिनती स्त्री० विनंती; अरज
बिनना स०क्रि० वीणवुं (२) वणवुं
बिनसना अ०क्रि०(प.) विनाश पामवुं
बिना अ० विना(२)[अ.] स्त्री० पायो (२) जड; मूळ (३) आरंभ
बिना-बर अ० [फा.]आथी;आ वास्ते
बिनाई स्त्री० 'बिनना' ए क्रिया
बिनावट स्त्री० वणाट
बिनौला पुं० कपासियो
बिफरना अ०क्रि० वीफरवुं
बिबा(–वा)ई स्त्री० पग फाटवा ते
बिबि वि० (प.) द्वि; बे
बिया पुं० बियुं;बीज (२)वि० बीजुं
बियाना स०क्रि० 'बिआना' जुओ
बियाबान पुं० [फा.] 'बयाबान' जुओ
बियारी(–रू,–लू) स्त्री० (रातनुं) वाळु
बिरंज पुं० [फा.] बिरंज (२) पीतळ
बिरंजी वि० [फा.] पीतळनुं
बिर(–रि)छ पुं० (प.) वृक्ष
बिरता पुं० शक्ति; बळ; ताकात
बिरथा अ० (प.) वृथा
बिरयाँ वि० [फा.] शेकेलुं
बिरला वि० विरल; कोक
बिरवा पुं० छोड(२)झाड
बिरवाही स्त्री० बाग; वाडी
बिरादराना वि० [फा.]भाई जेवुं (२) बिरादरीनुं [जातनो समूह
बिरादरी स्त्री०[फा.]भाईचारो (२) एक
बिराना स०क्रि० चीडववुं; सामे मोंथी चाळा करवा(२)वि०जुओ 'बेगाना'
बिरियाँ स्त्री० समय;वेळा(२)वार; फेरो
बिलंद वि० बुलंद; ऊंचुं; मोटुं
बिल् [अ.]'साथे,सहित' अर्थमां शब्दना पूर्वग तरीके. उदा. बिलकुल
बिल्-अक्स अ०[अ.]एथी विरुद्ध-ऊलटुं
बिल्-उमूम अ०[अ.]साधारणतः
बिलखना अ०क्रि० विलाप करवो;रोवुं (२) दुःखी थवुं (३) संकोचावुं
बिलग वि०अलग;जुदुं(२)पुं० जुदाई
बिलगाना अ०क्रि० अलग थवुं (२) स०क्रि० अलग करवुं
बिल्-जब्र अ० [अ.] जबरदस्तीथी
बिल्-ज़रूर अ० [अ.] जरूर; अवश्य
बिल्-जुमला अ०[अ.]कुल मळीने
बिलटी स्त्री० रेलवे–रसीद

बिलनी स्त्री० माटीना घरवाळी काळी भमरी(२)आंखनी आंजणी
बिल्-फ़र्ज़ अ० [अ,] फरज मानीने
बिल्-फेल अ०[अ.] आ समये
बिल्बिलाना अ०क्रि०कीडा खदवदवा (२)व्याकुळ थईने बकवुं के रोवुं
बिलम पुं०विलंब;ढील [मोडुं करवुं
बिलमना अ०क्रि० विलंबवुं; थोभवुं के
बिल-मुक़ाबिल अ० [अ.] तुलनामां; मुकाबले [वलवलवुं
बिललाना अ०क्रि० विलाप करवो;
बिलल्ला वि० मूर्ख; गमार
बिलवाना स०क्रि० नष्ट करवुं; विलय करवुं के करावबुं(२)छुपाववुं;संताडवुं
बिला अ०[अ.] वगर; विना
बिलाई स्त्री०बिल्ली(२) कूवामां नांखवानी बिलाडी (३) बारणुं बंध करवानी आंकडी
बिलाना अ०क्रि० विलय पामवुं
बिलैया स्त्री०बिल्ली (२) छीणी
बिलोड़ना स० क्रि० वलोववुं (२) अस्तव्यस्त करवुं
बिलोना स०क्रि० वलोववुं
बिल्मुक्ता वि०[अ.]अचल;निश्चित(२) पुं० कायमी महेसूल
बिल्ला पुं० बिलाडो(२)बिल्लो; पदक
बिल्लौर पुं०[फा.] बिलोर (वि०–री)

बिवर(–रा)ना स०क्रि० वाळ ओळवा
बिसनी वि० व्यसनी
बिसमिल वि० जुओ 'बिस्मिल'
बिसरात पुं० (प.)खच्चर
बिससना अ० क्रि० विश्वास करवो
बिसाँयँध वि० सडेलानी गंधवाळुं(२) स्त्री० सडेलानी गंध; बदबो
बिसात स्त्री०[अ.]विसात (२) शेतरंज के बाजी रमवानुं चीतरेलुं कपडुं (३) पाथरणुं; जाजम (४) पूंजी
बिसाती पुं०[अ.]नानी नानी चीजोनो दुकानदार [खरीदी; सोदो
बिसाहना स०क्रि० खरीदवुं (२) पुं०
बिसाहनी स्त्री०, **बिसाहा** पुं० सोदो
बिसियार वि० [फा.] खूब; अधिक
बिसु(–सू)रना अ०क्रि० (प.) चिंता करवी (२) स्त्री० चिंता; फिकर
बिस्तर पुं० पथारी; बिस्तरो
बिस्तुइया स्त्री० घरोळी [माटे)
बिस्मिल वि०[अ.] घायल(प्रायः प्रेमी
बिस्मिल्लाह पुं०[अ.] श्रीगणेश;आरंभ
बिस्वा पुं० वसो;वीघानो वीसमो भाग
बिहान पुं०वहाणुं;प्रभात(२)आवती काल
बिहाना अ०क्रि० (प.) वहेवुं; वीतवुं (२) स०क्रि० छोडवुं; त्यागवुं
बिहिश्त पुं० [फा.] बेहेस्त; स्वर्ग
बिही स्त्री० [फा.]एक झाड. –दाना

पुं० 'बिही'ना फळना दाणा
बींड़ी स्त्री० ऊंढाणी (२) वेलगाडीमां आगळ जोडातो त्रीजो बळद के तेनुं दोरडुं
बींधना स०क्रि०वींधवुं;छेद पाडवो
बी स्त्री० बीबी; स्त्री
बीघा पुं० वीघुं [(२)अवश्य
बीच पुं०वच;मध्य. **–खेत**=खुल्लेखुल्लुं
बीच-बचाव पुं० जुओ 'बिचबिचाव'
बीचोबीच अ० वच्चोवच्च
बीछना स०क्रि० वीणवुं; चूंटवुं
बीजन,–ना पुं० वींजणो
बीजु(०री) स्त्री०वीजळी [ऊलटुं
बीजू वि० बीज वाव्ये थतुं;'कलमी'थी
बीट स्त्री० अघार; पक्षीनी विष्टा
बीड़ स्त्री० रूपियानी थोकडी
बीड़ा पुं० पाननुं बीडुं.**–उठाना**=बीडुं झडपवुं [दांतनी मसी
बीड़ी स्त्री०पाननी के पीवानी बीडी(२)
बीतना अ०क्रि० वीतवुं
बीनना स०क्रि० वीणवुं (२) वणवुं
बीनाई स्त्री०[फा.] जोवानी शक्ति;दृष्टि
बीनी स्त्री० [फा.] नाक
बीफै पुं० गुरुवार
बीबी स्त्री०[फा.]कुलीन स्त्री (२)पत्नी
बीमा पुं० [फा.] वीमो
बीमारदार वि०[फा,]बीमारनी बरदास करनार (नाम,**–री**) [पूछवी ते
बीमार-पुरसी स्त्री०[फा.]बीमारनी खबर
बीरन पुं० वीरो; भाई
बीरबहूटी स्त्री० इंद्रगोप जीवडुं
बीस वि० वीस. **–बिस्वे** = वीस वसा; घणुं करीने [विकट
बीहड़ वि० असमान; ऊंचुंनीचुं (२)
बुंद स्त्री० बुंद; टीपुं; 'बूँद'
बुआ स्त्री० जुओ 'बूआ'
बुक़चा पुं० [तु.]बचको;गांसडी;पोटलुं
बुकनी स्त्री० बूकणी; भूकी; चूर्ण
बुक्का स्त्री० [सं.] हृदय
बुख़ार पुं०[अ.] ताव(२)वाफ;वराळ(३) शोकक्रोधादिनो आवेग
बुख़्ल स्त्री० [अ.] कंजूसाई; बखीलता
बुगदा पुं०[फा.] कसाईनो छरो
बुग्ज़ पुं० [अ.] द्वेष; कीनो; वेर
बुज़ स्त्री [फा.] बकरी
बुज़दिल वि० [फा.] डरपोक
बुझना अ० क्रि० बुझावुं; ओलावुं
बुझाना स० क्रि०बूझववुं(२) बुझवाववुं
बुड़बुड़ाना अ०क्रि० मनमां बबडवुं
बुड्ढा वि०बुढ्ढुं;वृद्ध(नाम,**बुढाई,–पा**)
बुढ़ाना अ०क्रि० बूढुं थवुं
बुत-शिकन वि० [फा.] मूर्तिभंजक
बुताना स० क्रि० बूझववुं
बुताम पुं० बटन; बोरियुं

बुत्ता पुं० दगो (२) बहानुं
बुनना स०क्रि० वणवुं
बुनाई स्त्री० वणाट के वणकरी
बुनावट स्त्री० वणाटनो प्रकार
बुनियाद स्त्री० [फा] जड; पायो (२) वास्तविकता (वि०–दी)
बुयाम पुं० चीनी माटीनी बरणी
बुरकना स०क्रि० भभरावबुं
बुरक़ा पुं० [अ.] बुरखो
बुरा वि०बूरुं; खराब. –भला=भलुंबूरुं
बुराक़ पुं० [अ.] कल्पित घोडो (एम मनाय छे के एनी पर बेसी पेगंबर साहेब आकाशमां गया हता)
बुरादा पुं० [फा.] लाकडानो वेर
बुरुश पुं० ब्रश; पींछी के कूचडो इ०
बुर्क़ा पुं० [अ.] जुओ 'बुरक़ा'
बुर्ज पुं०[अ.] बुरज (२) राशि; नक्षत्र
बुर्द स्त्री०[फा.]नफो; लाभ (२) होड; शरत (३) शेतरंजमां फक्त राजा रहे एवी बाजी. –देना=खोवुं; गुमाववुं. –मारना = मफतनी रकम लेवी [शील(२)सुशील
बुर्दबार वि०[फा.] (नाम,–री) सहन-
बुर्राक़ वि०जुओ 'बर्राक़' [महान
बुलंद वि०(नाम,–दी) बुलंद;ऊंचुं(२)
बुलबुला पुं०बुद्‌बुद;परपोटो [मोती
बुलाक़ स्त्री० [तु.] बुलाख–नथनुं एक
बुलाना स०क्रि० बोलाववुं
बुलावा पुं०नोतरुं [पहोंचवुं ते
बुलूग़ पुं०[अ.] 'बालिग' थवुं ते; उंमरे
बुल्ला पुं० परपोटो
बूँद स्त्री० बुंद; टीपुं
बूँदाबाँदी स्त्री० छांटा जेवो वरसाद
बूआ स्त्री० फोई (२) मोटी बहेन
बूकना स०क्रि० पीसवुं; दळवुं
बूचड़ पुं० कसाई. –ख़ाना=कसाईवाडो
बूचा वि० कान वगरनुं (२) कदरूपुं
बूज़ना पुं० [फा.] वांदरुं
बूझ स्त्री० बूज; समज
बूट पुं० चणानो लीलो दाणो; पोपटो
बूटा पुं० छोड (२)फूलवेल इ० वेलबुट्टो
बूटी स्त्री० बुट्टी (२) भांग
बूत,बूता पुं० बळ; शक्ति
बूदो-बाश स्त्री०[फा.] रहेठाण; निवास
बूम पुं० [अ.] घुवड
बूरा पुं० खांडनुं बूरुं
बेंट(–ठ) स्त्री० दस्तो; हाथो
बेंत पुं० नेतर के तेनी सोटी
बेंवड़ा पुं० बारणानी भुंगळ
बे अ०[फा.] 'विना'ना अर्थनो पूर्वग. उदा. बेईमान
बे-असल वि० [फा.) निराधार; जूठुं
बे-आब वि०[फा.]पाणी वगरनुं;निस्तेज
बेकल वि०विकल; व्याकुळ(नाम,–ली)

बेकहा वि० कह्युं न माननार
बेक़ाबू वि० [फा.] काबू खोई बेठेलुं; विवश (२) काबूमां न आवे एवुं
बेकाम, बेकार वि० नवरुं(२)नकामुं;रद्दी
बेक़ायदा वि०[फा.] कायदा विरुद्ध
बेख़ स्त्री [फा.] जड; मूळ
बेखटक वि० खटका-संकोच वगरनुं
बेख़तर वि० निर्भय; नीडर
बेख़ता वि० बेकसूर; बेगुना; निर्दोष
बेख़बर वि० अजाण्युं (२) बेहोश
बेख़ुद वि० बेहोश; बेभान
बेख़ौफ वि० नीडर; खोफ वगरनुं
बेग पुं० वेग [व्यर्थ
बेग़रज़ वि० गरज वगरनुं; बेपरवा (२)
बेगाना वि० [फा.] (नाम, –नगी) परायुं (२) अजाण्युं
बेगार स्त्री०[फा.]वेठ. –टालना=वेठ उतारवी [करनार
बेगारी स्त्री०[फा.] वेठियो; वेठे काम
बेचना स०क्रि० वेचवुं
बेचारा वि०[फा.] बीचारुं; दीन
बेचैन वि०(नाम, –नी)बेचेन;व्याकुळ
बेजड़ वि०जड–मूळ वगरनुं;नापायादार
बेज़बान वि० [फा.] मूक (२) दीन
बेजा वि० [फा.] ठेकाणा वगरनुं (२) अनुचित (३) खराब; बूरुं
बेजान वि०जान वगरनुं;मृत(२)निर्बळ
बेज़ाब्ता वि० बेकायदा; नियम विरुद्ध
बेज़ार वि० [फा.] नाराज (२) दुःखी
बेजोड़ वि० अखंड (२) अजोड
बेठन पुं०लपेटवा माटेनुं कपडुं; वेष्टन
बेठिकाने वि० ठेकाणा वगरनुं(२)व्यर्थ
बेड़ा पुं० तरापो (२) वहाणोनो समूह
बेडौल वि० बेडोळ
बेढंगा वि० कढंगुं
बेढ़ना स०क्रि०खेतर, छोड इ०ने वाड वाडोलियुं करवुं(२)ढोर हांकी जवां
बेढब वि० कढंगुं; ढब वगरनुं
बे-तकल्लुफ़ वि० सरळ; चोख्खाबोलुं; निर्व्याज(२)अ०साफसाफ; बेधडक
बे-तमीज़ वि० अविवेकी; बेअदबी
बे-तरह अ०बूरी तरेहथी(२)असाधारण रीते (३) खूब; बेहद
बे-तहाशा अ०उतावळथी(२)अधीराईथी (३) विना समज्ये [बेचेन
बेताब वि०[फा.](नाम, –बी)दुर्बळ(२)
बेतार वि० तार विनानुं
बेतार का तार पुं० 'वायरलेस'
बेतुका वि०मेळ के ढंग वगरनुं;'बेढब'
बेदख़ल वि०[फा.](नाम, –ली)अधिकार रहित [दम वगरनुं
बेदम वि०[फा.] मरेलुं(२)अधमूउं(३)
बेद-मुश्क पुं० [फा.] एक फूलझाड
बेदर्द वि०[फा.]कठोर हृदयनुं; निष्ठुर

बेदाग़ वि० [फा.] डाघ वगरनुं (२) निष्कलंक

बेदाना पुं० सरस काबुली अनार(२) बेदाणा (३) वि० मूर्ख; बेवकूफ

बेदार वि० जागतुं; जाग्रत (नाम,–री)

बेधड़क वि० (२) अ० निःसंकोच (२) नीडर (३) निःशंक

बे-नज़ीर वि० [फा.] अनुपम; अजोड

बे-नवा वि० [फा.] गरीब (२) फकीर

बेना पुं० वांसनो पंखो

बेनागा अ०सतत;लगातार [बेपरवा

बे-नियाज़ वि०[फा.] सौथी पर (२)

बेनी स्त्री० वेणी (२) त्रिवेणी

बेनुली स्त्री० घंटीनी मांकडी

बेपरद,बेपर्द वि० पडदा वगरनुं;खुल्लुं (२) नग्न (नाम, बपर्दगी)

बेपीर वि०बीजानी पीड न समजनारुं; निष्ठुर;निर्दय (२)[फा.] पीर–गुरु वगरनुं; नगरुं

बेपेंदी वि०तळिया वगरनुं.–का लोटा= ढोचका जेम गबडता विचारनो

बेफ़ायदा वि०(२)अ०[फा.]व्यर्थ;नकामुं

बेफ़िक्र वि०[फा.]बेफिकर (नाम,–क्री)

बेबस वि०लाचार;विवश (नाम,–सी)

बेबहा वि०[फा.]भारे किंमतनुं;अमूल्य

बेबाक़ वि० [फा.] चूकते थयेलुं (ऋण)

बेभाव अ० बेहद

बे-महल वि० कवखतनुं [होवो ते

बेमौक़ा वि०कवखतनुं(२)पुं०मोको न

बेर पुं०बोर(२)स्त्री०वार;फेरो(३)विलंब

बेरहम वि० [फा.] निर्दय

बेरुख़ वि०[फा.] काम पडे त्यारे मों फेरवी बेसनार (२) गुस्से थयेलुं

बेरोक वि० रोक वगर; निर्विघ्न

बेल पुं०बीली के बीलुं(२)स्त्री०वेल(३) [फा.] एक जातनी कोदाळी के पावडो [मजूर

बेलदार पुं० [फा.] पावडो चलावनार

बेलन पुं० रोलर (रस्ता माटे के कोई यंत्रनो)(२)पींजणनो गोटीलो(३) वेलण [इ० वणवुं

बेलना पुं० वेलण (२) स०क्रि० रोटली

बेला पुं० मोगरानुं फूलझाड (२) वेळा; वखत

बेलौस वि० साचुं; खरुं

बेवक़्त अ० [फा.] कवखते

बेवरेवार वि० तफसीलवार; विस्तृत

बेवा स्त्री० [फा.] विधवा

बेश वि०[फा.]वधारे(२)श्रेष्ठ(नाम,–शी)

बेशऊर वि०मूर्ख;अणसमजु(नाम,–री)

बेसन पुं० चणानो लोट

बेसबरा वि० बेसबूर; अधीरुं

बेसर पुं० खच्चर (२) वेसर; नथ

बेसरोसामान वि०[फा.]गरीब;कंगाळ

बेसवा,बेसा स्त्री० वेश्या; रंडी
बेसाहना स०क्रि० जुओ 'बिसाहना'
बेसूर(-रा) वि० बसूरुं (२) कवखतनुं
बेहंगम वि० कढंगु
बेह वि० [फा.] उत्तम [भले
बेहतर वि०[फा.]बहेतर(२)अ० ठीक;
बेहतरी स्त्री०[फा.]उत्तमता(२) भलाई
बेहमैयत वि० [फा.] बेहया; बेशरम
बेहुनरा वि० हुन्नर कसब वगरनुं
बेहूदगी स्त्री० [फा.] बेहूदापणुं
बेहूदा वि०[फा.]बेहूदुं;अशिष्ट; असभ्य
बेहैफ़ वि० बेफिकर; चिंतारहित
बैंगन पुं० वेंगण; वंताक
बैंगनी वि० वेंगणना रंगनुं
बै स्त्री० [अ.] वेचाण
बैआना पुं०[अ.] वानुं; 'बयाना'
बैकल वि० पागल; गांडुं
बैज़ पुं०ब०व० [अ.]ईंडां(२)अंडकोश
बैज़वी वि० [फा.] अंडाकार
बैज़ा पुं० [फा.] ईंडुं (२) अंडकोश
बैठक स्त्री० बेठक
बैठका पुं० बेठक; दीवानखानुं
बैठकी स्त्री० बेठकनी कसरत
बैठना अ०क्रि० बेसवुं [अचानक
बैठे बैठे, बैठे बैठाए=अकारण (२)
बैत स्त्री० [अ.] बेत; श्लोक (२) पुं० (समासमां) घर;स्थान. उदा. बैत-उल्-इल्म=विद्यामंदिर; शाळा
बैत-उल्-ख़ला पुं [अ.] पायखानुं
बैत-उल्-माल पुं० [अ.] सरकारी खजानो (२) बिनवारसी माल
बैत-उल्-मुक़द्दस,बैत-उल्-हराम पुं० [अ.] मक्का
बैत-उल्ला पुं० [अ.] कावानो पथ्थर
बैद पुं० (स्त्री० -दिन) वैद
बैन अ० [अ.] वच्चे; मध्ये
बैना पुं० विवाह वगेरे शुभ निमित्ते मित्रादिने मोकलाती मीठाई इ०
बै-नामा पुं० [अ.] वेचाणखत
बैपार पुं० वेपार
बैरंग वि० 'बेरर'नुं; लेनारे नाणां आपवानां करीने मोकलेलुं (पार्सल इ०)
बैर पुं० वेर
बैरा पुं० [इं-बेरर] चाकर; दास
बैरी वि० वेरी; विरोधी
बैरूँ अ० [फा.] बहार
बैरूनी वि० [फा.] बहारनुं
बैल पुं० बेल; बळद (२) मूर्ख
बैसर स्त्री० फणी
बैसाख पुं०वैशाख [राखी चालवानी)
बैसाखी स्त्री०लंगडानी लाकडी(बगलमां
बोआई स्त्री० वावणी के तेनी मजूरी
बोझ पुं० बोजो
बोझना स०क्रि० बोजो लादवो

बोझ(–झि)ल वि० वजनदार
बोझा पुं० 'बोझ'; बोजो
बोटी स्त्री० मांसनो टुकडो
बोतल स्त्री० बाटली
बोदा वि०मूर्ख(२) जड; मंद (३) बोदुं
बोना स०क्रि० वाववुं
बोबा पुं०(स्त्री०–बी)स्तन (२) गांसडी
बोय स्त्री० बू; गंध
बोरना स०क्रि० बोळवुं
बोरसी स्त्री० माटीनी सगडी
बोरा पुं० थेलो; कोथळो; बोरो
बोरिया पुं०[फा.] सादडी (२) बिस्त्रो
बोरी स्त्री० नानो कोथळो; थेली
बोलता पुं० प्राण;जीव(२)वि० वाचाळ
बोश पुं० [अ.] दबदबो; दमाम
बोसा पुं०[फा.] चुंबन [पुराणुं
बोसीदा वि०[फा.] दम वगरनुं; जरी-
बोसो-कनार पुं०[फा.]चूमवुं ने भेटवुं ते
बोहनी स्त्री० बोणी
बोहतान पुं०[अ.]खोटो आरोप;आक्षेप.
–जोड़ना=कलंक लगाडवुं [लता
बौंड़ स्त्री०(प.)लांबी गयेली शाखा के
बौखल वि० पागल
बौखलाना अ०क्रि० जरा गांडपण दाखववुं—गांडा जेवुं थवुं
बौछाड़(–र) स्त्री०पाणी,वायु के कशानी झडी (२) टाणो; कटाक्ष
बौना पुं० वामन–ठींगणो माणस
बौरहा,बौरा वि० बावरुं; पागल
ब्याना स०क्रि० वियावुं; जणवुं
ब्यारी स्त्री०, **ब्यालू** पुं० वाळु
ब्याह पुं० विवाह; लग्न
ब्याहना स०क्रि० विवाह करवो
ब्योंत स्त्री० वेंत; व्यवस्था; वेतरण
ब्योंतना स०क्रि० (कपडुं) वेतरवुं
ब्योरना स०क्रि० (प.) वाळ ओळवा
ब्योरा पुं० विवरण; वर्णन
ब्योहर पुं० व्याजवटानो व्यवहार
ब्योहरिया पुं० व्याजवटुं करनार
ब्यो(–ब्यौ)हार पुं० व्यवहार

भ

भँगरा पुं० भांगरो
भँगार पुं० कूवो खोदवा करेलो खाडो (२) घास इ० कचरो
भँजना अ०क्रि० भंगावुं;तूटवुं(२)मोटो सिक्को वटावावो(३)भागवुं;वळ देवो
भंटा पुं० भट्टो; गोळ मोटुं वेंगण

भँड़फोड़ पुं० भांगफोड
भंडा पुं० भांड;वासण(२) मर्म; भेद.
 –फुटना = भेद खूलवो
भँडारा पुं० भंडारो (साधुनो) (२)
 भंडार (३) समूह (४) पेट
भँवना अ०क्रि० भमवुं;फरवुं;रखडवुं
भँवर पुं० भमरो
भँवरी स्त्री० पाणीनो भमरो(२)शरीर
 परना वाळनो भमरो (३) फेरी
भइया पुं० भाई
भगदड़(–र) स्त्री०भागवुं–नासवुं ते
भगना अ०क्रि० भागवुं; नासवुं(२)पुं०
 भाणेज [(२) कायर
भगड्डू(–लु),भगोड़ा,भग्गू वि०भागेलुं
भजनी पुं० भजनिक
भटा पुं० 'भंटा'; भट्टो
भठियारा पुं०धर्मशाळानो व्यवस्थापक
 (२)मुसलमानोनुं रांधनार–भठियारो
भड़क स्त्री० चमक (२) भडक; बीक
भड़कदार,भड़कीला वि० चमकतुं(२)
 भडकामणुं
भड़भूँजा पुं० भाडभूंजो
भड़ी स्त्री० खोटी उश्केरणी
भड़ुआ पुं० भडवो
भतीजा पुं०(स्त्री०–जी) भत्रीजो
भत्ता पुं० भथ्थुं
भदई स्त्री० भादरवानी फसल
भद्दा वि० कुरूप; कढंगु
भनक स्त्री० भणकारो [गणगणवुं
भनभनाना अ०क्रि० गुंजारव करवो;
भन्नाना अ०क्रि० क्रोधथी भभूकवुं
भबका पुं० अर्क काढवानुं वासण
भभक स्त्री० ऊभरो; उछाळो
भभकना अ०क्रि० ऊकळवुं; उछाळो
 मारवो (२) भभकवुं
भभकी स्त्री० खाली धमकी
भया='हुआ';थयुं;बन्युं(स्त्री० भई,-यी)
भयावन(–ना) वि० भयामणुं;भयंकर
भरता पुं० भरतनुं शाक
भरती स्त्री० भरावुं के उमेरावुं ते (२)
 दाखल थवुं ते.–**होना**=दाखल थवुं
भरनी स्त्री० 'ढरकी'; कांठलो
भरपाई अ० बरोबर; पूरेपूरुं (२) स्त्री०
 भरपाई [= भेद खोलवो
भरम पुं०संदेह(२)भेद;रहस्य.–**गँवाना**
भरमाना स०क्रि०भरमाववुं(२)भमाववुं;
 रखडाववुं(३)अ०क्रि०चकित थवुं
भरमार स्त्री० खूब होवुं ते
भरसक अ० यथाशक्ति; बने तेटलुं
भरसाईं पुं०भाडभूंजानी भठ्ठी; 'भाड़'
भलमनसत,भलमनसाहत,भलमनसी
 स्त्री० भलमनसाई
भले ही श०प्र० भलेने;छोने [डूबवुं
भसना अ०क्रि०पाणी पर तरवुं के तेमां

भहराना अ०क्रि०ढसडाई पडवुं;एका-एक तूटवुं [परचूरण
भाँज स्त्री० भांगवुं ते(२)सिक्का के नोटनुं
भाँजना स०क्रि० भांगवुं; तोडवुं
भाँजी स्त्री० काममां फांस मारवी ते
भाँटा पुं० भट्टो; वेंगण [पस्तावुं
भाँड़ा पुं०भांड;वासण. भाँड़े भरना=
भाँत,भाँति स्त्री० रीत; प्रकार
भाँपना स०क्रि० ओळखवुं; पारखवुं
भाँयँ भाँयँ पुं० शून्यकारनो ध्वनि
भाँवर स्त्री० परिकम्मा (२) लग्ननी चोरीमां वरकन्या फेरो फरे छे ते
भा अ०(प.)या;अथवा(२)स्त्री०[सं.]तेज
भाई-दूज स्त्री० भाईबीज
भागड़ स्त्री० भंगाण; 'भगदर'
भागनेय,भागिनेय पुं० [सं.] भाणो
भाजी स्त्री० शाकभाजी; तरकारी
भाटा पुं० ओट; भरतीथी ऊलटुं
भाड़ पुं०भाडभूंजानी भट्टी. -झोंकना =नकामा के तुच्छ काममां वखत काढवो [(२) नकामुं
भाड़ा पुं०भाडुं. भाड़ेका टट्टू=क्षणिक
भाथी स्त्री० धमण
भादों पुं० भादरवो
भानजा पुं० (स्त्री०-जी) भाणेज
भानमती स्त्री० जादुगर स्त्री. -का पिटारा=नकामी वरकूस

भाना अ०क्रि०भाववुं;गमवुं(२) मालूम पडवुं; लागवुं (३) शोभवुं
भाप स्त्री० वराळ; बाष्प
भायप पुं० भाईचारो
भाया वि० प्रिय; प्यारुं
भारी वि०भारे. -भरकम=मोटुं ने भारे
भालू पुं० रींछ
भावज स्त्री० भाभी
भावताव पुं० भावताल
भिंगा(-जा)ना स०क्रि० 'भिगाना'जुओ
भिंडी स्त्री० भींडो-शाक
भिखमंगा पुं०भिखारी;भीख मागनार
भिगा(-गो)ना स०क्रि० भिजाववुं; पलाळवुं (भिजवाना प्रेरक)
भिजा(-जो)ना स०क्रि०जुओ'भिगोना' (२) जुओ 'भिजवाना'
भिड़ स्त्री० भमरी; 'बँरें'
भिड़ना अ०क्रि० टक्कर खावी(२)लडवुं (३)भिडावुं;साथे साथे लागी जवुं
भितल्ला वि० भीतरनुं(२) पुं० अस्तर
भिनकना अ०क्रि०गगणवुं(२)घृणा थवी
भिन(-नु)सार पुं० प्रभात; सवार
भिलनी स्त्री० भीलडी
भिलावाँ पुं० भिलामुं
भिश्ती पुं० भिस्ती [हुं पण
भी अ०'पण'. जेम के, 'मैं भी'=हुंय,
भीग(-ज)ना अ०क्रि०भींजावुं; पलळवुं

भीटा पुं० ऊंची टेकराळी जमीन
भीड़भड़क्का पुं०, भीड़भाड़ स्त्री०भीड
भीत स्त्री०भींत;दीवाल. –में दौड़ना= गजा उपरवटनुं काम करवुं
भीतर अ०अंदर(२)पुं० अंतःकरण(३) जनानखानुं
भीतरी वि० अंदरनुं; गुप्त
भीलनी स्त्री० 'भिलनी'; भीलडी
भुँई स्त्री० (प.)भोंय; भूमि; 'भुइँ'
भुँइहरा पुं० भोंयरुं
भुँजना अ०क्रि० भूंजावुं; शेकावुं
भुअन पुं० (प.) भुवन
भुआल पुं० (प.) भूपाल
भुइँ स्त्री०(प.) जुओ 'भुँइ' [दरिद्र
भुक्खड़ वि० भूख्युं के भुखारवुं (२)
भुगतना स०क्रि० भोगववुं; सहवुं (२) अ०क्रि० चूकते के पूरुं थवुं(३)वीतवुं
भुगतान पुं० चुकादो;फेंसलो; पतावट
भुच्च(०ड़) वि० मूर्ख
भुजाली स्त्री० छरो; कूकरी
भुजी स्त्री० भाजीनुं तैयार शाक
भुट्टा पुं० भुट्टो (२)जुवार बाजरीनुं डूंडुं
भुनगा पुं० पतंगियुं
भुनना अ०क्रि०भूंजावुं;शेकावुं(२)मोटो सिक्को के नोट वटाववी
भुरकना अ०क्रि० सुकाईने छूटुं पडी जवुं–भभरुं थई जवुं
भुरक(–कु)स पुं० भूको; चूर्ण. –निकलना=आदो नीकळवो(२) नाश पामवुं [जाय एवुं
भुरभुरा वि०भभरुं;कण कण छूटुं पडी
भुरभुराना अ० क्रि० 'भुरकना' जुओ (२) स०क्रि० भभराववुं
भुलक्कड़ वि० भुलकणुं
भुवाल पुं० (प.) भूपाल
भुस पुं० जुओ 'भूसा' [बकवुं
भूँकना अ०क्रि०(कूतरानुं)भसवुं(२)व्यर्थ
भूँचाल, भूँडोल पुं० भूकंप
भूखा वि० भूख्युं
भूतिनी स्त्री० भूतडी
भूनना स०क्रि० भूंजवुं;शेकवुं(२)तळवुं
भूभल स्त्री०भरसाडना जेवी गरम राख, रेती, धूळ वगेरे
भूमिया पुं०जमीनदार (२) ग्रामदेवता
भूमिहार पुं०बिहार,यू. पी.नी एक जात
भूलभुलैयाँ स्त्री० भुलभुलामणी(२)बहु गूंचवाडावाळी वात के घटना
भूसा पुं०भूसुं;घउं जुवार इ०नां डूंडां के डूंणसांनुं गोतुं; कुशका
भूसी स्त्री० जुओ 'भूसा' (२) कुशकी
भेंगा वि० बाडुं
भेंट स्त्री० भेट (मुलाकात के उपहार)
भेंटना स०क्रि० भेटवुं [वाना)
भेजना स०क्रि० मोकलवुं (प्रेरक भेज-

भेड़ स्त्री० घेटी
भेड़ा पुं० घेटो
भेड़िया पुं० वरु
भेड़िया धसान पुं० गाडरियो प्रवाह
भेदिया, भेदी पुं० भेदु
भेली स्त्री० गोळनो गोळो
भेष(–स) पुं० भेख; वेश
भैंस स्त्री० भेंस
भैंसा पुं० पाडो
भैक्ष पुं० [सं.] भीख
भैन(–ना,–नी) स्त्री० वहेन
भैया पुं० भाई. –चारी स्त्री०भाईचारो
भोंडा वि० बेडोळ; कदरूपुं
भोंदू वि० मूर्ख
भोगना अ०क्रि० 'भुगतना' जुओ
भोगबंधक पुं० गीरो-हक
भोट पुं० भुतान देश
भोटिया पुं०भुतानवासी(२)स्त्री०भुतानी भाषा. –बादाम=आलु(२)मगफळी
भोथरा वि० बुठ्ठी धारवाळुं
भोपा पुं० मिलनुं भुंगळुं (२) मूर्ख
भोर पुं०सवार;प्रभात(२)(प.)भ्रम(३) वि० भोळुं (४) मुग्ध; चकित
भोरा वि० भोळुं; 'भोर'
भोला वि० भोळुं; सरळ (२) मूर्ख
भोलाभाला वि०भोळुंभाळुं;साव भोळुं
भौं स्त्री० जुओ 'भौंह'
भौंकना अ०क्रि० जुओ 'भूँकना'
भौंर पुं० भमरो (२) पाणीनो भमरो
भौंरा पुं०भमरो(२)एक रमकडुं (३) भरवाडनो कूतरो (४) भोंयरुं
भौंरी स्त्री०'भांवर';चोरीमां वरकन्यानो फेरो(२)वाळनो के पाणीनो भमरो
भौंह स्त्री०भमर; भृकुटि. –चढ़ाना, –तानना =भमरो चडाववी. –जोहना=खुशामत करवी
भौचक वि० स्तंभित; चकित
भौज,भौजाई स्त्री० भोजाई; भाभी
भ्रमी वि० भ्रमित (२) चकित
भ्रामर पुं० [सं.] मध

म

मंगता(–न) पुं० मागण; भिखारी
मँगनी स्त्री० उछीनुं लेवुं ते (२) मागुं
मँगवाना,मँगाना स०क्रि० मंगाववुं
मँगेतर वि० जेनुं कोईने माटे मागुं थयुं होय तेवुं; मागुं करायेलुं
मँजना अ०क्रि० मंजावुं

मंज़िल स्त्री० [अ.] 'मजल'; उतारो; पडाव(२)मकाननो खंड. –मारना =दूर मजल करवी (२) भारे मोटुं काम करवुं
मंज़िलत स्त्री० [अ.] पद; होद्दो
मँझा पुं० 'माँझा'; मांजो(२)वि०मध्यनुं. –देना=दोर पावो [पार करवी
मँझा(–झिया)ना स०क्रि०नदी चालीने
मँझार(–रि) अ०(प.)वचमां; मोझार
मँझियाना स०क्रि० जुओ 'मँझाना'
मँडरा(–ला)ना अ०क्रि० चक्कर चक्कर घूमवुं (२) चोतरफ फरवुं
मँडवा पुं० मांडवो; मंडप
मंडी स्त्री० मोटुं बजार
मँडुआ पुं० एक जातनुं धान
मंत पुं० मंत्रणा; सलाह
मंतिक़ पुं० [अ.] तर्कशास्त्र
मंदा वि०मंद; धीमुं के ढीलुं (२) सस्तुं (३)हलकी जातनुं [(२)आशय
मंशा(–सा) स्त्री० [अ.] मनिषा; इच्छा
मंसब पुं० [अ.] पद; होद्दो (२) कार्य
मंसूख़ वि० [अ.] रद करेलुं; बातल
मअदन पुं० [अ.] धातुनी खाण
मअदनियात स्त्री०[अ.] खनिज; धातु
मअबूद पुं० [अ.] आराध्य; ईश्वर
मअरूज़ वि०[अ.]अरज करेलुं;निवेदित
मअक़ूल वि० [अ.] तर्कसिद्ध (२) पुं० निष्कर्ष; सार [रक्षा करे
मआज़-अल्लाह श० प्र० [अ.] ईश्वर
मआनी पुं० [अ.] मायनो; अर्थ; उद्देश
मआश स्त्री० [अ.] आजीविका; निर्वाह
मआशरत स्त्री०[अ.] समूहजीवन
मक(–का)ई स्त्री० मकाई
मकड़ा पुं० मोटी 'मकड़ी'
मकड़ी स्त्री० करोळियो
मकतब पुं० [अ.] मदरेसा; निशाळ
मक़तल पुं०[अ.]कतलनुं स्थान [कडी
मक़ता पुं०[अ.]मकतो; गझलनी छेल्ली
मकतूब पुं०[अ.]पत्र;लेख(२)वि०लखेलुं
मक़तूल वि०[अ.]कतल करायेलुं(२)प्रेमी
मक़दूर पुं० [अ.] मगदूर; शक्ति
मक़नातीस पुं० [अ.] चुंबक पथ्थर
मक़फ़ूल वि० [अ.] गीरो राखेलुं
मक़बरा पुं० [अ.] मकबरो; रोजो
मक़बूज़ा वि०[अ.]कबजे करायेलुं;वश
मक़बूल वि०[अ.] कबूलेलुं (२) सरस; पसंद करायेलुं
मक़रूज़ वि०[अ.]करजदार [खराब
मकरूह वि०[अ.] घृणापात्र; गंदुं ने
मक़सद पुं० [अ.] मकसद; मुराद
मक़सूद वि० [अ.] धारेलुं; अभिप्रेत
मक़सूम वि०[अ.]विभक्त; वहेंचायेलुं (२) पुं० तगदीर [बदलो
मकाफ़ात स्त्री०[अ.] पापनुं फळ (२)

मक़ाला पुं० [अ.] ग्रंथ
मकु अ० (प.) भले; चाहे
मकुना पुं० दांत वगरनो हाथी(२)मूछ वगरनो–वडमूछो माणस
मक़ूला पुं० [अ.] कहेवत; उखाणो
मकोड़ा पुं० मंकोडो
मक्का पुं० मकाई [(नाम, –री)
मक्कार वि० [अ.] फरेबी; मक्करबाज.
मक्खन पुं० माखण
मक्खी स्त्री० माखी
मक्र पुं० [अ.] फरेब; दगो
मख़ज़न पुं०[अ.]खजानो(२)शब्दकोष
मख़दूम पुं० [अ.] शेठ; स्वामी; सेव्य
मख़दूश वि० [अ.] जोखम भरेलुं
मख़मसा पुं०[अ.]विकट प्रश्न के प्रसंग
मख़मूर वि० [अ.] नशामां चकचूर
मख़रज पुं०[अ.]मूळ;ऊगम(२)शब्दनी व्युत्पत्ति (३) मों [सृष्टि
मख़लूक़ वि०[अ.]रचेलुं;सृष्ट(२)स्त्री०
मख़लूक़ात स्त्री०[अ.]सृष्टिनां जीवजंतु
मख़लूत वि० [अ.] मिश्र
मख़सूस वि० [अ.] खास; विशेष
मख़ौल पुं० मश्करी; ठठ्ठो
मग पुं० मार्ग; रस्तो
मग़ज़ पुं० मगज (भेजुं; फळनो गर). –खाना,–चाटना=मगज खावुं; भेजुं पकववुं
मग़ज़पच्ची स्त्री० मगजमारी
मग़ज़ी स्त्री० मुगजी; गोट
मग़फ़रत स्त्री० [अ.] क्षमा; माफी
मग़फ़ूर वि० [अ.] मृत; स्वर्गस्थ
मग़मूम वि० [अ.] दुःखी; व्यथित
मग़रिब पुं०[अ.]पश्चिम दिशा. –की नमाज़=सांजनी नमाज
मग़लूब वि० पराजित; हारेलुं
मगस स्त्री० [अ.] माखी
मग़्ज़ पुं० [अ.] मगज
मग़्ज़ी स्त्री० जुओ 'मगज़ी'
मचक स्त्री० दबाववुं ते के तेथी थती पीडा [मच' थाय
मचकना स०क्रि० दबाववुं जेथी 'मच
मचल स्त्री० हठ
मचलना अ०क्रि० हठ करवी
मचला वि० जिद्दी(२)जाणीबूजीने न बोले एवुं; मींढुं
मचलाना अ०क्रि०ऊलटी थवा जेवुं लागवुं (२) स०क्रि० 'मचलना'नुं प्रेरक
मचान स्त्री०शिकारनी मांची के खेतरनो माळो [(कर्मणि, मचना)
मचाना स०क्रि० मचाववुं; जमाववुं.
मचिया स्त्री० पलंगडी
मच्छड़(-र) पुं० मच्छर
मछुआ(-वा) पुं० माछी
मज़कूर(-रा), मज़कूरा बाला वि०[अ.]

उपरोक्त; आगळ कहेलुं; मजकूर
मजनूँ वि०[अ.]मजनू(२)दूबळा शरीरनुं
मजबूर वि० [अ.]लाचार(नाम,–री)
मजबूरन् अ०[अ.]लाचारीथी;न चाल्ये
मजमा पुं०[अ.]भीड के भीडनी जगा
मजमूआ पुं०[अ.]संग्रह(२)वि०संघरेलुं
मजमूई वि० [अ.] कुल; बधुं
मज़मून पुं० [अ.] लेख के तेनो विषय.
–**बाँधना**=गद्यपद्यमां नवुं लखवुं
मज़रअ पुं० [अ.] खेतर (२) गाम
मज़रूआ वि०[अ.]खेडीने वावेलुं (खेतर)
मजरूह वि० [अ.] घायल; जखमी
मजल स्त्री०[फा.]जुओ 'मंजिल';पडाव
मज़लूम वि०[अ.]जुलमनुं भोग बनेलुं
मज़हका पुं० [अ.] मजाक; हांसी
मज़ा पुं० [फा.] स्वाद(२)आनंद; सुख (३)मजाक. –**चखाना**=गुना बदल सजा करवी
मज़ाक़ पुं०[अ.] मजाक(२)रुचि;स्वाद
मज़ाक़न् अ० [अ.] मजाकमां;हांसीमां
मज़ाक़िया वि० [अ.] मजाकी
मजाज़ पुं० [अ.] मिजाज;स्वभाव(२) अधिकार [प्रमाणे
मजाज़न् अ० [अ.] नियमसर; कायदा
मजाज़ी वि०[अ.]बनावटी(२)सांसारिक
मज़ार पुं०[अ.]कबर;समाधि के मकबरो
मज़ाहिब पुं० [अ.] 'मज़हब'नुं ब०व०
मजीद वि० [अ.] पवित्र(२) वडुं (३) अधिक(४)पुं० कुरान(५)अधिकता
मजीरा पुं० मंजीरो [मध्य; वच
मझधार स्त्री० (नदीनी) मध्य धारा(२)
मझला वि० मझलुं; वच्चेनुं
मझाना अ०क्रि० दाखल थवुं; पेसवुं
मझार अ० मोझार; मध्ये [कदनुं
मझोला वि० मझलुं; वचलुं(२)मध्यम
मझोली स्त्री० एक जातनी बळदगाडी
मटकना अ०क्रि० मटको करीने चालवुं (२) आंख मटमटाववी
मटका पुं० मटकुं; माटलुं [चाळो
मटकी स्त्री० मटकी;माटली(२)मटको;
मटकीला वि० मटकावाळुं
मटमँगरा पुं०वरध जेवो एक लग्नविधि
मटमैला वि० माटीना रंगनुं
मटर पुं० वटाणा [सहेल
मटरगश्त पुं० सहेलसपाटो(२)फरवुं ते;
मटिया मसान,मटियामेट वि० सत्तानाश; नष्टप्राय; 'मलियामेट'
मट्ठर वि० सुस्त; जड
मट्ठा, मठा पुं० छाश
मठोर स्त्री० वलोणानी गोळी
मड़ई स्त्री० नानो मांडवो; पर्णकुटी
मड़वा पुं० 'मँडवा'; मांडवो
मडुआ पुं० 'मँडुआ' जुओ
मड़ैया स्त्री० जुओ 'मड़ई'

मढ़ वि०अडियल(२)पुं०मठ [पाकुं
मतन पुं०[अ.]मध्य भाग (२)वि०दृढ;
मतबख़ पुं० [अ.] रसोडुं
मतबा पुं० [अ.] छापखानुं
मतब्ब पुं० [अ.] दवाखानुं
मतरूक वि० [अ.] छोडायेलुं; त्यक्त
मतलब पुं० [अ.] मतलब; आशय(२) अर्थ(३)स्वार्थ(४) संबंध; लेवादेवा. **–गांठना,–निकालना** = मतलब काढवी, सरे एम करवुं
मतला पुं०[अ.]पूर्व दिशा(२)गजलनी पहेली बे कडी
मतली स्त्री० ऊलटी थाय एवुं थवुं ते
मतवारा(-ला) वि० मदमस्त; केफथी चकचूर (२) पागल
मतानत स्त्री० [अ.] दृढता; मजबूती
मतालिब पुं०[अ.]'मतलब'नुं ब०व०
मतीन वि० [अ.] दृढ; पाकुं
मतीरा पुं० तडबूच
मतेई स्त्री०(प.)सावकी मा [नमवुं
मत्था पुं०माथुं.**–टेकना**=माथुं नमाववुं;
मथना स०क्रि०मथवुं; वलोववुं(२)नाश करवो(३)खूब श्रमपूर्वक कांई करवुं
मथनी स्त्री०वलोणानी गोळी(२)वलोववुं ते के तेनुं साधन–वांस
मथानी स्त्री०वलोववानो वांस.**–पड़ना, –बहना**=खळभळाट मचवो

मद स्त्री०[अ.]विभाग(२)खातुं(३) पुं० [सं.]मद [पीवानो एक पदार्थ
मदक स्त्री०अफीणना सत्त्वनो चलममां
मदकची पुं० मदक पीनार
मदक(-ग)ल वि०[सं.]मत्त; 'मतवारा'
मदख़ला वि०[अ.]दाखल के जमा करेलुं
मदख़ूला स्त्री० [अ.] रखात
मदफ़न पुं० [अ.] कबरस्तान
मदरसा पुं० [अ.] मदरेसा; शाळा
मद व जज़र पुं० [अ.] भरतीओट
मदह स्त्री० [अ.] प्रशंसा
मद-होश वि० (नाम, **–शी**) मदमत्त
मदाख़िल स्त्री० [अ.] प्रवेशद्वार (२) आमदानी
मदाख़िलत स्त्री०[अ.]अधिकार जमाववो ते; दखल करवी के रोकवुं ते. **–बेजा** स्त्री०अनधिकार प्रवेश के दखल
मदार पुं० आकडो (२)[अ.] मदार; आधार (३) एक पीरनुं नाम
मदारात स्त्री० [अ.] आगतास्वागता
मद्धिम वि० मध्यम; साराथी ऊतरतुं
मद्रसा पुं० 'मदरसा' जुओ
मधुमक्खी स्त्री० मधमाख
मनका पुं०मणको(२)गरदननुं करोडनी तरत ज उपरनुं हाडकुं
मनक़ूला वि०स्त्री०[अ.]जंगम(मिलकत)

मनक़ूहा वि० [अ.] परणेतर(स्त्री)
मन-गढ़ंत वि० कपोलकल्पित; कल्पी ज लीधेलुं(२)स्त्री०कल्पना ज मात्र
मनचला वि० हिंमतवान;नीडर(२)रसिक
मनचाहा,मनचीता वि०मनवांछित;इष्ट
मनज़र पुं० [अ.] दृश्य; देखाव
मनमाना वि० मनगमतुं; फावतुं (२) मनमान्युं; खूब
मनमुटाव पुं० अणबनाव; वैमनस्य
मनमौजी वि० मोजी; लहेरी
मनशा स्त्री० जुओ 'मंशा'
मनसब पुं०[अ.]पद;होद्दो(२)अधिकार
मनसूख़ वि०[अ.](नाम, –खी) खोटुं ठरावेलुं;रद करेलुं(२)त्यक्त;छोडेलुं
मनसूबा पुं०[अ.]युक्ति (२) मनसूबो; इरादो. **–बाँधना**=युक्ति विचारी राखवी; मनमां गोठवी राखवुं
मनहूस वि०[अ.]अशुभ;अपशुकनियाळ
मना वि० [अ.] मना करेलुं; निषिद्ध
मनाक्(–ग्) वि० [सं.] थोडुं
मनादी स्त्री०जुओ 'मुनादी' [ति
मनावन पुं०मनामणी;रूठेलाने मनाववुं
मनाही स्त्री० [अ.] मनाई
मनिहार पुं०(स्त्री०-रिन)चुडगर [वीर्य
मनी स्त्री०(प.)मान;अहंकार(२) [अ.]
मनुआँ(-वाँ) पुं० मन (२) मनुष्य
मनुहार स्त्री० विनंती;प्रार्थना (२)मनाववुं–राजी करवुं ते (३)खुशामत
मनेजर पुं० मॅनेजर; व्यवस्थापक
मनोज्ञ वि० [सं.] मनोहर; सुंदर
मनोनीत वि०[सं.]पसंद करेलुं;चूंटेलुं; 'निर्वाचित'
मनोविज्ञान पुं० [सं.] मानसशास्त्र
मनौती,मन्नत स्त्री० मानता; बाधा. **–मानना** = मानता मानवी के राखवी. **–उतारना या चढ़ाना**= मानता पूरी करवी
मन्ज़र पुं० [अ.] जुओ 'मनज़र'
मन्सूख़ वि० [अ.] जुओ 'मनसूख़'
मन्सूब वि० [अ.]संबंधवाळुं (२) जेनुं मागुं थयुं होय तेवुं
मन्सूबा पुं० [अ.] जुओ 'मनसूबा'
ममिया ससुर पुं० मामोससरो
ममिया सास स्त्री० मामीसासु
ममेरा भाई पुं० मामानो दीकरो
ममियौरा पुं० मोसाळ
मम्बा पुं० [अ.] झरणुं (२) ऊगम
मयंक पुं० मृगांक; चंद्र
मयंद पुं० मृगेंद्र; सिंह
मयस्सर वि०[अ.] मळेलुं; प्राप्त
मरकज़ पुं० [अ.] केन्द्र; मध्यस्थान
मरक़द पुं०[अ.]सूवानो ओरडो(२)कबर
मरकना अ०क्रि०दबावुं; दवाईने तूटवुं
मरकहा वि० मारकणुं (ढोर–पशु)

मरक़ूम(-मा) वि० [अ.] लखेलुं
मरग़ूब वि०[अ.]प्रिय(२)सुंदर [कीडी
मरग़ोल(-ला) पुं०[फा.]संगीतनी गिट-
मरघट पुं० स्मशान
मरज़ पुं०[अ.मर्ज़]मरज; रोग(२)कुटेव
मरजिया पुं०मरजीवो(२)वि०मृतप्राय;
अधमूउं (३) मरतुं बचेलुं
मरज़ी स्त्री०[अ.]मरजी;खुशी(२)आज्ञा
(३) स्वीकार [वार;फेरो
मरतबा पुं० [अ.]मरतबो; मोभो (२)
मरतूब वि० [अ.] भीनुं
मरदुम पुं० [फा.] माणस
मरदूद वि० [अ.] नीच; तिरस्कृत
मरनी स्त्री० मरण
मरनी-करनी स्त्री० अंत्येष्टि क्रिया
मरफ़ा पुं० [फा. मरफ़] ढोल; मरफो
मरभुक्खा वि० जुओ 'भुक्खड़'
मरमर पुं० [अ.] संगेमरमर
मरसा पुं० एक शाक-भाजी
मरसिया पुं०[अ.]मरसियो;राजियो(२)
मरणशोक [महाराष्ट्री
मरहटा(-ठा) पुं०(स्त्री०-ठिन)मराठो;
मरहबा अ० [अ.] शाबाश; वाहवाह
मर(-ल)हम स्त्री०[अ.] मलम
मरहला पुं०[अ.]जुओ 'मंज़िल'.-तय
करना=कठण काम पूरुं करवुं
मरहून वि० [अ.] गीरो मूकेलुं
मरात स्त्री० [अ.] स्त्री
मरातिब पुं० [अ.]'मरतबा'नुं ब०व०
(२) क्रमिक अवस्थाओ; पगलां
मरियम स्त्री०[अ.]कुमारी(२)ईशुनी मा
मरियल वि० खूब दुर्बळ
मरी स्त्री० महामारी
मरीज़ पुं०[अ.]बीमार;मांदो [मोभारो
मरुआ(-वा) पुं० डमरो(२) छापरानो
मरुस्थ(-थ)ल पुं० मरुभूमि; रण
मरोड़ा पुं० मरोड; वळ(२)चूंक;मरडो
मर्ग पुं० [फा.] मरण
मर्ग़ज़ार पुं० [फा.] लीलुं मेदान
मर्ज़ पुं० [अ.] रोग; बीमारी
मर्ज़ी स्त्री० [अ.] 'मरज़ी'
मर्तबा पुं० [अ.] जुओ 'मरतबा'
मर्तबान पुं० अथाणा इ०नी बरणी;
'अमृतवान'
मर्दक पुं०मर्द;माणस (तुच्छकारवाचक)
मर्दुम पुं० [फा.] माणस [गणना
मर्दुम-शुमारी स्त्री०[फा.]वस्ती के तेनी
मर्दुमी स्त्री० [फा.] मरदानगी
मर्मर पुं० जुओ 'मरमर'
मर्मी वि० मर्मज्ञ; मर्म जाणनार
मलंग पुं० [फा.] एक जातनो फकीर
मलऊन वि० [अ.] निंद्य; शापित
मलक पुं० [अ.] देवदूत; फिरस्तो
मलका पुं०[अ.]प्रतिभा(२) दक्षता(३)

स्त्री० महाराणी; मल्लिका
मलग़ोबा पुं०[तुर्की] गंदकी; मळ; मेल (२) कचरापटी
मलज़ूम वि० [अ.] आवश्यक; जरूरी
मलना स०क्रि० मसळवुं; मर्दन करवुं; घसवुं [धर्माचार्यनुं वचन
मलफ़ूज़ पुं० [अ.] संतमहात्मा के
मलबा पुं०कचरापटी (२) रोडां मटोडुं वगेरे भागला मकाननो काटरडो
मलबूस पुं० [अ.] पहेरवेश; पोशाक
मलमास पुं० [सं.] अधिकमास
मलहम पुं० जुओ 'मरहम'
मलाई स्त्री०दूधनी मलाई(२)सार;तत्त्व (३) 'मलना' परथी नाम
मलामत स्त्री०[अ०] वढवुं ते(२)गंदकी
मलाल पुं०[अ.]दु:ख (२) उदासीनता
मलाहत स्त्री० [अ.] शामळापणुं (२) चहेरानी कान्ति
मलिक पुं० [अ.] (स्त्री० –का) राजा
मलियामेट पुं० सत्तानाश; खुवारी
मलीदा पुं०[फा.] मलीदो; चूरमुं (२) सुलायम ऊननुं एक कापड
मलोला पुं० दु:ख (२) चिंता
मल्लाह पुं० [अ.] माछी के होडीवाळो
मवक्किल पुं० [अ. मुवक्किल] असील
मवाजिब पुं० [अ.] नियमथी मळे ते; जेम के पगार
मवाज़ी वि०[अ.]कुल [भाग
मवाद पुं०[अ.]पाच;परु(२)रद्दी के गंदो
मवास पुं० [सं.] आश्रय के रक्षानुं स्थान (२) किल्लो; गढ
मवासी स्त्री०नानो गढ(२)पुं०किल्लेदार
मवेशी पुं० [अ.] ढोर; जानवर
मवेशीख़ाना पुं० ढोरनो तबेलो
मशक्क़त स्त्री०[अ.] महेनत; मजूरी
मशग़ला पुं०[अ.] विनोद; मनरंजन
मशरफ़ पुं०[अ.] ऊंचुं प्रतिष्ठानुं स्थान
मशरिक़ पुं०[अ.]पूर्व दिशा(वि०–की)
मशवरत स्त्री०;**मशविरा** पुं०[अ.]सलाह
मशीख़त स्त्री० [अ.] शेखी; गर्व
मशीर पुं० सलाहकार
मश्क स्त्री० [फा.] मशक; पखाल
मश्क़ स्त्री० [अ.] महावरो; अभ्यास
मश्कूर वि० [अ.] कृतज्ञ; आभारी
मश्शाक़ वि०[अ.]कुशळ (२)महावरा के अभ्यासवाळुं
मस पुं०[अ.]स्पर्श(२)स्त्री०ऊगती मूछ. –भींजना=मूछनो वाळ फूटवो
मसकना स०क्रि० जोरथी दबाववुं जेथी वस्तु फसकी–फाटी जाय(२) अ०क्रि० फसकी जवुं; फाटवुं
मसकरा पुं० मश्करो; 'मस्खरा'
मसक़ला पुं० [अ.], **–ली** स्त्री० मसकलो; 'मिस्कला'

मसका पुं०[फा.] मसको; माखण(२) ताजुं घी (३) दहींनुं पाणी
मसकीन वि० जुओ 'मिसकीन'
मसख़रा पुं० जुओ 'मस्ख़रा'
मसख़री स्त्री० मश्करी
मसजिद स्त्री० [अ.] मस्जिद
मसनूअ पुं०[अ.]कारीगरीवाळी चीज
मसनूई वि० [अ.] बनावटी; नकली
मसदर पुं० [अ.] मूळ; ऊगम (२) क्रियापदनो धातु
मसरफ़ पुं० [अ.] उपयोगिता
मसरूक़ा वि० [अ.] चोरीनुं; चोरेलुं
मसरूफ़ वि०[अ.]मशगूल;काममां लागेलुं
मसरूर वि० [अ.] प्रसन्न; खुश
मसल स्त्री० [अ.] कहेवत
मसलख़ पुं० [अ.] कतलखानुं
मसलन् अ० [अ.] दाखला तरीके
मसलना स० क्रि० मसळवुं (२) गूंदवुं
मसलहत स्त्री०[अ.]मस्लहत;संतलस; गुप्त सलाह करवी ते
मसलहतन् अ०[अ.]सलाहभेर;समजीने
मसला पुं०[अ.]'मसल'(२)विचारवानो विषय; प्रश्न
मसविदा पुं०मसूदो;खरडो;'मसौदा'
मसहरी स्त्री० मच्छरदानी
मसा पुं० मसो (२) मच्छर
मसाइब पुं०[अ.] 'मुसीबत'नुं ब०व०
मसान पुं०मसाण;श्मसान(२)भूतपिशाच
मसाना पुं० [अ.] मुत्राशय
मसाफ़ पुं० [अ.] युद्ध (२) रणक्षेत्र
मसाफ़त स्त्री०[अ.]अंतर;फासलो (२) श्रम
मसाम पुं० [अ.] चामडी परनुं छिद्र; [रोमकूप
मसायल पुं०[अ.] 'मसला'नुं ब०व०; प्रश्नो;समस्याओ
मसालहत स्त्री० [अ.] मेळ के संधि [करवी ते
मसाला पुं० [फा.] साधनसामग्री (२) मसालो
मसाहत स्त्री०[अ.]मसात;जमीनमापणी [(२) मापवुं ते
मसीत(-द) स्त्री०मसीद
मसीह(-हा) पुं० [अ.] ईशुख्रिस्त(२) [जीवनदाता
मसीहाई,मसीही पुं०ख्रिस्ती(२)स्त्री० 'मसीह'नुं पद के कार्य
मसूड़ा(-रा) पुं० दांतनुं पेढुं
मसूर पुं०,**मसूरा** स्त्री०[सं.]मसूरनी दाळ
मसूरी(-रिका,-रिया) स्त्री०बळिया;ओरी
मसूस(०न) स्त्री० व्यथा; पीडा
मसू(-सो)सना अ०क्रि०मनमां पीडावुं; अंदर व्यथा थवी(२)अमळावुं (३) स०क्रि० आमळवुं (४) निचोववुं
मसौदा पुं०मसूदो;खरडो. **-गाँठना, -बाँधना**=कोई काम करवानी युक्ति के योजना विचारवी
मसौदेबाज़ पुं० युक्तिबाज; चालाक

मस्कन पुं० [अ.] मकान; घर
मस्ख़रा पुं० [अ.] मश्करो
मस्तगी स्त्री०[अ.] एक जातनो गुंदर
मस्ताना अ०क्रि० (२) स०क्रि० मस्त थवुं के करवुं(३)वि०[फा.]मस्तानुं
मस्तूरात स्त्री०[अ.]स्त्रीओ(२)सन्नारीओ
महँ(-हुँ) अ० (प.) मां; महीं
महँगा वि० [सं. महार्घ] मोघुं (नाम, –गाई, –गी)
महँगी स्त्री० मोघवारी (२) दुकाळ
महक स्त्री० महेक; वास (अ०क्रि० महकना;वि०महकदार,महकीला)
महकमा पुं०[अ.] खातुं; विभाग
महकूम(–मा) वि० [अ.] हुकममां आवतुं; आधीन
महज़ वि० [अ.]शुद्ध(२)अ०मात्र;केवळ
महज़-क़ैद स्त्री० [अ.] सादी सजा; आसानकेद
महज़र पुं० [अ.] सूचनापत्र; नोटीस
महता पुं० गामनो मुखी (२) महेतो; मुनशी; लखनार
महताब स्त्री०[फा.]चांदनी(२)पुं० चंद्र
महताबी स्त्री० [फा.] महताब; एक दारूखानुं(२)चांदनीमां बेसवा जेवो चोतरो (बाग के तळाव पासेनो)
महतारी स्त्री० माता
महदूद वि०[अ.]हद बांधेलुं; मर्यादित
महफ़िल स्त्री० [अ.] महेफिल
मह.फ़ूज़ वि० [अ.] सुरक्षित
महबस पुं० [अ.] जेल; केदखानुं
महबूब वि०[अ.] महेबूब (स्त्री०–बा) (नाम, –बियत,–बी)
महमह अ०मघमघ. –हाना अ०क्रि० मघमघवुं. -हा वि० मघमघतुं
महमेज़ स्त्री० [फा.] मिहमेज; घोडेसवारनी एडीनी लोढानी रेख
महरम पुं० [अ.] नजीकनो सगो के मित्र (२) विवाहसंबंध न थई शके एवुं सगुं(३) स्त्री०स्त्रीना कबजानो छातीनो भाग
महरा पुं०कहार;पालखी ऊंचकनार(२) वि० मुख्य; प्रधान
महराब स्त्री० [अ.] महेराब; कमान
महरी स्त्री० 'महरा'नुं स्त्री०
महरू वि० [फा.] चंद्रवदन
महरूम वि०[अ.]वंचित(२)कमनसीब
महल पुं०[अ.]महेल(२) अंतःपुर (३) मोटो ओरडो (४) अवसर; मोको
महलसरा स्त्री०जनानखानुं [व्यंडळ
महली पुं०[अ] अंतःपुरनो चोकीदार;
महल्ला पुं० [अ.] महेल्लो
महशर पुं० [अ.] कयामतनो दिवस. –बरपा करना=भारे आंदोलन करवुं
महसिल पुं० महेसूल वसूल करनार

महसूल पुं० [अ.] महेसूल [पडेलुं

महसूस वि० [अ.] अनुभवेलुं; मालूम

महसूसात स्त्री०ब०व०[अ.] जाणी के अनुभवी शकाय एवा पदार्थो

महाजन पुं०[सं.]महापुरुष(२)धनवान (३) शराफ (४) वाणियो

महाजनी स्त्री० शराफनो धंधो (२) शराफनी चोपडानी एक लिपि

महानिद्रा स्त्री० [सं.] मोत; मृत्यु

महापथ पुं० [सं.] राजमार्ग (२)मरण

महानिशा स्त्री० [सं.] मधरात (२) प्रलयरात्रि

महाबत पुं० [अ.] भय; डर

महामांस पुं०[सं.]गाय के मनुष्यनुं मांस

महार्घ वि० [सं.] मोंघुं

महार स्त्री०[फा.]ऊंटनी नाथ [दक्षता

महारत स्त्री०[अ.]अभ्यास;महावरो(२)

महाल पुं०[अ.'महल'नुं ब०व०]महेल्लो (२) महाल; परगणुं (३) भाग

महावट स्त्री० महा महिनानुं मावठुं

महावर पुं०अळतो (पगे चोपडवानो)

महावरी स्त्री० 'महावर'नी गोटी

महीन वि० पातळुं; वारीक; झीणुं (२) कोमळ; धीमुं (अवाज माटे)

महीना पुं० महिनो(२)मासिक पगार (३)रजोधर्म. **महीनेसे होना**= वेगळुं बेसवुं

महुँ अ० (प.) 'महँ'; महीं

महुअर पुं०[सं. मधुकर] महुवर के ते बजावी करातो एक खेल (२) स्त्री० एक जातनुं घेटुं

महुआ पुं०[सं.मधूक;प्रा.महुआ]महुडो

महुवरि पुं०जुओ 'महुअर' ['महेरा'

महेर पुं० अडचण; पंचात (२) जुओ

महेरा पुं० जुओ 'महेरी'

महेरी स्त्री० छासमां रांधेला अनाजनी एक वानी(२)वि०अडचण नांखनारुं

महोला पुं० (प.) बहानुं (२) दगो

माँ स्त्री० मा

माँखी स्त्री० माखी; 'मक्खी'

माँग स्त्री०मांग;मागणी(२)वाळनी पांती; सेंथो. **–कोख से सुखी रहना**= सौभाग्यवती ने संतानवाळी रहेवुं. **–पट्टी करना**=सेंथो पाडवो;ओळवुं

माँगटीका पुं० सेंथा परनुं एक घरेणुं

माँझा पुं० मांजानी लूगदी (२) नदी वच्चेनो टापु (३) झाडनुं थड

माँझी पुं०मांजी;होडीवाळो(२)मध्यस्थ; झघडो पतवनार

माँठ पुं० मटकुं; माटलुं

माँड पुं० भातनुं ओसामण; मंड

माँडव पुं मांडवो; मंडप

माँड़ा पुं० आंखनो एक रोग; मोतियो (२) 'परांठा' (३) मांडवो

मॉंडी स्त्री० भातनुं ओसामण (२) कपडाने करातो आर

मॉंद स्त्री० बखोल;बोड (२)वि० मंद; हलकुं; ऊतरतुं (३) पराजित

मा स्त्री०[सं.] मा (२)पुं० [अ.] पाणी

मा-उल्-लहम पुं० [अ.] मांसनो एक पौष्टिक सेरवो

मा-क़बल अ० [अ.] आनी पहेलां

माक़ूल वि०[अ.]उचित;योग्य(२)अच्छुं (३)वादविवादमां निरुत्तर थयेलुं के मानी लेनारुं

माक़ूस वि० [अ.] ऊलटुं; ऊंधुं

माख़ालिया पुं० [फा.] गांडपण

माख़ूज़ वि० [अ.] दोषित; आरोपी

माछी स्त्री० माखी [प्रसंग

माजरा पुं०[अ.]हाल;वृत्तांत(२)बनाव;

माजिद पुं० [अ.] बुजरग; वडील

माज़िया अ०[अ.]पछीथी; आगळ

माज़िरत स्त्री० [अ.] बहानुं; उजर

माज़ी वि०[अ.]माजी;भूतपूर्व (२) पुं० भूतकाळ [भांग होय छे)

माजून स्त्री० [अ.] एक अवलेह (जेमां

माज़ूर वि०[अ.] नकामुं(२)असमर्थ

माज़ूल वि०[अ.]रद करेलुं (२) पदभ्रष्ट

मात स्त्री०[अ.] मात थवुं ते; हार (२) वि० मात. **–करना,देना**=मात करवुं. **–खाना**=हारवुं

मातदिल वि० [अ. मुअतदिल]न बहु गरम के ठंडुं; समशीतोष्ण

मातबर वि० [अ. मुअतबर] विश्वास-पात्र;इतबार लायक [वगेरे

मातम पुं० [अ.] मरणनो शोक के रोवुं

मातमदारी स्त्री० शोक पाळवो ते

मातमपुर्सी स्त्री०[फा.]शोकमां सांत्वन देवुं ते; दिलासो; खरखरो

मातमी वि०[फा.]शोकसूचक [–ती)

मातहत वि०[अ.]अधीन;तावानुं(नाम,

माता वि० मातुं;मस्त (अ०क्रि०**–ना**)

मादरज़ाद वि०[फा.]सहोदर (२) नग्न

मादीन स्त्री० मादा

मादूम वि० [अ.] नष्ट; हयाती वगरनुं

माद्दा पुं०[अ.] मूळतत्त्व (२) योग्यता (३) परु; पाच

माद्दी वि०[अ.]तात्त्विक(२)स्वाभाविक

मानअ पुं० [अ.] मनाई (२) आपत्ति

मानमंदिर पुं०[सं.]कोपभवन(२)वेध-शाळा [मनामणुं

मान-मनौती स्त्री०मानता(२)रिसामणुं-

मानवी वि०[अ.]मायना संबंधी (२) अंदरनुं (३) स्त्री० [सं.] नारी

मानहुँ अ०(प.)मानो; समजो; जाणो

मानिंद वि० [फा.] समान; बरोबर

मानिक पुं० माणेक [सोपारी

मानिकचंदी स्त्री० एक जातनी नानी

मानी स्त्री०अर्थ;मायनो; मतलब (२) वि० [सं.] मानी

मानूस वि० [अ.] हळी गयेलुं

माने पुं० 'मानी'; अर्थ

माफ़(-फ़ि)क़त स्त्री०[अ.]माफक होवुं ते; अनुकूलता (२) मेळ; मैत्री

माफ़िक़ वि० [अ. मुआफ़िक़] माफक

माफ़ी स्त्री०[अ.] माफी (२) महेसूल माफ करेली जमीन [होय ते

माफ़ीदार पुं०माफी जमीन जेने मळी

मा-बक़ा वि०[अ.] बचेलुं; अवशिष्ट

मा-बाद अ०[अ.](कशानी)पछी;बाद

माबूद पुं० जुओ 'मअबूद'

मा-बैन अ० [अ.] दरमियान

मामलत स्त्री०[अ.मुआमिलत]मामलो (२) मुद्दो; चर्चानो विषय

मामला पुं० [अ.मुआमिला] कामधंधो (२) व्यवहार के तेनो झघडो (३) विवादनो प्रश्न (४) मुकद्दमो

मामा पुं० मामो (२) स्त्री० [फा.] नोकरडी; दासी (३) रसोइयण

मामाग(-गी)री स्त्री० [फा.] 'मामा' दासीनुं काम के पद

मामूर वि०[अ.]पूर्ण(२)नियुक्त;मुकरर

मामूल पुं० [अ.] रीत; रिवाज

मामूली वि० साधारण; सामान्य

मायका पुं० पियर

मायल वि० [अ.] वळेलुं; झूकेलुं (२) मिश्रित

मायूब वि०[अ.]एबवाळुं(२)खराब;निंद्य

मायूस वि०[अ.]निराश (नाम, -सी)

मार स्त्री०मार;मारवुं ते(२)पुं०[सं.]मार

मारका पुं०[अ.]लडाई (२)भारे मोटी घटना (३)[इं.] मारको; निशान. मारकेका=महत्त्वपूर्ण

मारतौल पुं० हथोडो

मारपेच पुं० पेच; युक्ति; चालबाजी

मारामार अ० जलदीथी

मारू पुं०मारू राग(२)एक मोटुं नगारुं (३)वि० मारु; मारनारुं (४) हृदय-वेधी; कातील

मारूफ़ वि०[अ.] जाणीतुं; प्रसिद्ध

मारे अ० -नुं मार्युं; कारणथी

माल स्त्री०माळा(२)रेंटियानी माळ(३) पुं० [अ.] माल (४) मालमलीदा

माल-ए-मुफ़्त पुं० मफतियो माल

मालकँगनी स्त्री० मालकांगणी

मालकियत स्त्री० [अ.] मालकी

मालगुज़ार पुं० [अ.+फा.] जमीनदार

माल-गोदाम पुं० स्टेशननी गोदी

मालन स्त्री० माळण

मालामाल वि० खूब मालदार; अमीर

मालिकाना पुं० [फा.] मालकी हक (२) वि० मालिकनुं

मालियत स्त्री०[अ.]संपत्ति; पूंजी (२) किंमत (३) कीमती चीज
माली पुं०(स्त्री. –लिन,–लिनी)माळी (२)वि०[फा.]माल संबंधी;आर्थिक
मालीदा पुं० जुओ 'मलीदा'
मावस स्त्री० 'अमावस'; अमास
मावा पुं० सत्त्व (२) मंड (३) मावो
माश पुं० [अ.] आखा मग
माशा(–सा) पुं० मासो; आठ रती
माशा अल्लाह श०प्र० [अ.] ईश्वर बूरी नजरथी बचावो
माश्की पुं० मशकवाळो; भिस्ती
मा-सबक़ वि०[अ.]पूर्वोक्त;पहेलां कहेलुं
मा-सलफ़ वि०[अ.]थई गयेलुं; विगत
मासियत स्त्री० [अ.] आज्ञा न मानवी ते (२) गुनो
मा-सिवा अ० [अ.] सिवाय
मासूम वि०[अ.]निरपराध(नाम,-मियत)
माह पुं०[फा.]चांदो (२) माह; महिनो (३) [सं. माघ] माह महिनो
माहज़र वि० [अ.] मोजूद; वर्तमान
माहत स्त्री० महत्ता; मोटाई
माहताब पुं० [फा.] चंद्र के चांदनी
माहर वि० [अ.] जुओ 'माहिर'
माह-रू,माह-लक़ा वि०[फा.]चंद्रमुखी
माहवारी स्त्री० मासिक पगार
माहवार अ०(२)वि०मासिक;माहवारी
माहसल पुं०[अ.]ऊपज(२)प्राप्ति(३) परिणाम
माहिं(–हीं) अ०(प.) मांही;मां; अंदर
माहिर वि० [अ.] माहेर; माहितगार
माहिला पुं० जुओ 'मल्लाह'
माहीं अ० जुओ 'माहिं'
माही स्त्री० [फा.] माछली
माही-ख़्वार पुं० [फा.] बगलो
माहीगीर पुं० [फा.] माछी
माही-मरातिब पुं०[फा.]राजानी आगळ हाथी पर चालता सात झंडा
माहुर पुं० विष; झेर
मिंबर पुं० [अ.] मसीदमां ज्यां मुल्लां वेसीने उपदेश करे छे ते जगा
मिअयार पुं०[अ.]कसोटीनो पथ्थर(२) सोनाचांदी तोलवानो कांटो
मिक़द स्त्री० [फा.] गुदा; मळद्वार
मिक़दार स्त्री० [अ.] परिमाण; माप
मिक़नातीस पुं०[फा.]जुओ'मक़नातीस'
मिचकना अ०क्रि० आंखो पलकवी
मिचना अ०क्रि० ['मीचना'नुं कर्मणि] मिचावुं [थवा जेवुं थवुं
मिचलाना अ०क्रि० 'मचलाना';ऊलटी
मिज़गाँ स्त्री०[फा.] 'मिज़ह'नुं ब०व०
मिज़राब स्त्री० [अ.] मिजराफ; नखी
मिज़ह स्त्री० [फा.] आंखनो पलकारो
मिज़ाज पुं०[अ०]प्रकृति; स्वभाव (२)

शरीर के मननी दशा(३)अभिमान. **–ख़राब होना,–बिगड़ना**=मनमां क्रोध, नाराजी, के अस्वस्थता इ० उत्पन्न थवुं. **–पाना**=स्वभावथी परिचित होवुं.**–पूछना**=तबियतनी खबर पूछवी.**–न मिलना**=अभिमानने लईने कोई साथे बोलवुं नहि. **–आली,–शरीफ़**=मजामां छो ? एवो कुशळ-प्रश्न

मिज़ाजदार वि०मिजाजी;भारे अभिमानी

मिटना अ०क्रि०मटवुं;रद थवुं के नाश पामवुं के हयात न रहेवुं

मिटाना स०क्रि० 'मिटना'नुं प्रेरक

मिट्टी स्त्री०जमीन(२)माटी; धूळ(३) राख(४)शव;लाश. **–करना**=माटी भेगुं-धूळधाणी करवुं. **–के मोल**= पाणीने भावे; खूब सस्तुं. **–देना**= दफनाववुं. **–पलीद या बरबाद करना**=दुर्दशा करवी

मिट्टीका तेल पुं० ग्यासतेल

मिट्ठी स्त्री० मीठी; चुंबन

मिट्ठू पुं०पोपट(२)मीठुं–मधुर बोलनार

मिठाई स्त्री० मीठाई

मिठास स्त्री० मीठाश [(शाळा)

मिडिल वि० [इं. मिडल] माध्यमिक

मिडिलची पुं० 'मिडिल' पास थयेलो

मिती स्त्री० मिति; देशी तारीख

मिनक़ार पुं० [अ.] चांच (२) सारडी

मिन्–जुमला अ० कुल; बधुं थईने

मिनवाल पुं० [अ.] वणायेलुं कपडुं लपेटवानो साळनो भाग; तर

मिनहा वि०[अ.]कापी लीधेलुं;घटाडेलुं

मिन्नत स्त्री०[अ.]मिन्नतजारी;आजीजी

मिमियाना अ०क्रि०बकराघेटानुं बोलवुं

मियाँ पुं[फा.]स्वामी;शेठ के पति (२) महाशय (संबोधन) (३) मियां

मियाँ मिट्ठू पुं०जुओ'मिट्ठु'(२)बेवकूफ

मियान पुं०[फा.]मध्य भाग(२)कमर (३)स्त्री०म्यान [पुं०म्यानो

मियाना वि०[फा.]मध्यम कदनुं(२)

मियानी स्त्री०पायजामानो वच्चेनो भाग

मिरगी स्त्री०[सं. मृगी] वायुथी मूर्छा आववानो एक रोग; अपस्मार

मिरचा पुं० मरचुं; 'मिर्च'

मिरज़ई स्त्री० एक जातनुं डगलुं

मिरज़ा पुं० [फा.] अमीर-जादो (२) राजकुंवर (३) एक उपाधि

मिरात स्त्री० [अ.] दर्पण

मिर्च स्त्री० मरचुं (२) मरियुं

मिलना स०क्रि०मळवुं (प्रेरक **मिलाना**)

मिलनी स्त्री०लग्नमां बेउ पक्षना लोके मळवानो एक विधि

मिलान पुं०मळवुं के मेळववुं ते;मेळाप; मिलन(२)मळतापणुं;मुकाबलो(३)

मेळवी के बरोबर छे के केम ते तपासी लेवुं ते
मिलाना स०क्रि० मिलाववुं; मेळववुं
मिल्क स्त्री०[अ.]जागीर(२)जमीनदारी
मिल्कियत स्त्री०[अ.]'मिल्क'(२)मिलकत
मिल्लत स्त्री० मेळ (२) मिलनसारपणुं (३) [अ.] पंथ; संप्रदाय
मिश्क पुं० [फा.] मुश्क; कस्तुरी
मिसकीन वि० [अ.] मिस्कीन;गरीबडुं
मिसरा पुं० [अ.] मिसरो; तूक; चरण
मिसवाक स्त्री०[अ.]दातण [कहेवत
मिसाल स्त्री०[अ.]उपमा(२)उदाहरण(३)
मिसिल स्त्री० तुमार; फाईल
मिस्कल(–ला) पुं० [अ.] मसकलो
मिस्तर पुं०[अ.]लखवामां लीटी सीधी रहे ते सारु कागळ नीचे रखातुं आंकेलुं साधन
मिस्तरी पुं० मिस्त्री; कारीगर
मिस्र पुं० [अ.] मिसर; ईजिप्त
मिस्ल वि० [अ.] बरोबर; समान
मिस्सी स्त्री० दांत रंगवानुं एक काळुं मंजन [सामग्री
मिस्सी-काजल पुं० सधवानी शृंगार-
मींगी स्त्री० बीनो अंदरनो गर; मींज
मींज(–ड़)ना स०क्रि० मसळवुं; गूंदवुं
मीआद स्त्री०[अ.] अवधि(वि०,–दी)
मीज़ान स्त्री० [अ.]सरवाळो(२)त्राजवुं
मीठा वि० मीठुं; मधुर
मीठा तेल पुं० तलनुं तेल
मीठा पानी पुं० पीवानो 'लेमन'
मीठी छुरी स्त्री०विश्वासघातक(२)कपटी
मीना पुं० [फा.] मीनो; मीनाकारी
मीनाकार पुं०[फा.] मीनानो कारीगर
मीनार स्त्री० [अ. मनार] मिनारो
मीर पुं०अमीर(२)धर्माचार्य(३)समासमां 'सौथी मोटुं, वडुं' ए अर्थमां. उदा० –अदल पुं० वडो न्यायाधीश
मीरास स्त्री० [अ.]वारसो(वि०,–सी)
मील पुं० माईल
मुँगरा पुं० मोगरो– मोटी मोगरी
मुँगरी स्त्री० ठोकवानी मोगरी
मुँड़चिरा पुं० पोता पर घा करी मागतो फकीर [के ठगावुं
मुँडना अ०क्रि० माथुं मूंडावुं(२)लूंटावुं
मुँडाई स्त्री० मूंडामण
मुँडेर स्त्री०,–रा पुं० मकाननी छतनी सौथी उपरनी धारनी दीवाल
मुंतक़िल वि० जुओ 'मुन्तक़िल'
मुंतख़िब वि० जुओ 'मुन्तख़िब'
मुंतज़िम वि० जुओ 'मुन्तज़िम'
मुंतज़िर वि० जुओ 'मुन्तज़िर'
मुंतही वि० जुओ 'मुन्तही'
मुँदना अ०क्रि० बुरावुं,ढंकावुं; बंध थवुं
मुंशी पुं० [अ.] मुनशी; लखनार

मुंसरिम पुं० [अ.] (दफतरनो) मुख्य कामदार; व्यवस्थापक
मुंसिफ़ पुं० [अ.] न्यायाधीश;मुनसफ
मुंसिफ़ी स्त्री० मुनसफनुं काम, पद के कचेरी
मुँह पुं० मों. -**भरना**=लांच आपवी. -**देखेका**=उपर उपरनुं; देखाव पूरतुं. -**मुलाहजेका**=परिचित
मुँहकाला वि०काळुं मों करेलुं;बेआबरू
मुँहज़ोर वि० बहुबोलुं (२) आखाबोलुं
मुँहतोड़ वि० जडबांतोड (उत्तर)
मुँहदेखा वि० देखाडा पूरतुं; कृत्रिम
मुँहफट वि० आखाबोलुं
मुँहमाँगा वि० मोंमाग्युं
मुँहामुँह अ० छलोछल; मों सुधी
मुँहासा पुं० जुवानीमां थतो खील
मुअज़्ज़(-ज़्ज़ि)न पुं० [अ.] मसीदनो आझान पोकारनार [(माणस)
मुअज़्ज़म वि० [अ.] प्रतिष्ठित, मोटुं
मुअज़्ज़िज़ वि०[अ.]इज्जतदार;प्रतिष्ठित
मुअज़्ज़िन पुं० जुओ 'मुअज़्ज़न'
मुअत्तल वि० [अ.] (दंडरूपे) अमुक समय कामथी बरतरफ करायेलुं
मुअद्दिब वि०[अ.] अदबवाळुं; विनयी
मुअन्नस पुं० [अ.]मादा (२) स्त्रीलिंग
मुअम्मा पुं०[अ.]भेद;रहस्य(२)गोटाळो
मुअल्लक वि० [अ.] लटकतुं
मुअल्ला वि० [अ.] सर्वोच्च (२) मान्य
मुअल्लिम वि०[अ.]'इल्म'—ज्ञान देनार; शिक्षक (नाम, -मी) [युक्त
मुअस्सिर वि०[अ.]असरकारक;प्रभाव-
मुआफ़ वि० [अ.] माफ (नाम,-फ़ी)
मुआफ़िक़ वि० [अ.] माफक;अनुकूळ (२)समान;बराबर [(२)मित्रता
मुआफ़िक़त स्त्री०[अ.] माफक होवुं ते
मुआमला पुं० [अ.] जुओ 'मामला'
मुआयना पुं० [अ.] तपास; निरीक्षण
मुआलिज पुं०[अ.] इलाज करनार
मुआलिजा पुं० [अ.] इलाज;चिकित्सा
मुआवज़ा पुं० [अ.]मुआजेब;बदलो के महेनताणुं या वळतर
मुआह(-हि)दा पुं०[अ.] निश्चय;करार
मुकत्ता वि० [अ.] कापी करीने ठीक करेलुं (२) सभ्य; शिष्ट
मुकद(-द्द)मा पुं०[अ.]मुकद्दमो;दावो
मुकद्दर वि०[अ.] गंदु; मेलुं (२) क्षुब्ध
मुक़द्दर पुं० [अ.] नसीब
मुक़द्दस वि० [अ.]पाक; पवित्र
मुकम्मल वि०[अ.]संपूर्ण [जवुं
मुकरना अ०क्रि०मुकरी जवुं;कहीने फरी
मुक़र्रब पुं० [अ.] घनिष्ट मित्र
मुकर्रर अ० [अ.] बीजी वार; फरीथी
मुक़र्रर वि०[अ.]मुकरर;नक्की थयेलुं(२) नियुक्त (नाम,-री)

मुक़व्वी वि० [अ.] पौष्टिक
मुक़ैयद वि० [अ.] केद करायेलुं
मुख़तार पुं० [अ.] मुखत्यार; एलची; वकील
मुख़तार-याम, –ए-आम पुं० [अ.] मुखत्यारनामावाळो; प्रतिनिधि
मुख़तारनामा पुं० मुखत्यारनामुं
मुख़न्नस वि० [अ.] नपुंसक
मुख़फ़्फ़फ़ वि०[अ.]संक्षिप्त(२)पुं०संक्षेप
मुख़बिर पुं० [अ.] जासूस
मुखर वि०[सं.]बोलकणुं(२)कडवाबोलुं
मुख़लिस वि०[अ.]एकलुं(२)अविवाहित
मुख़लिसी स्त्री०[अ.] छुटकारो; मुक्ति
मुख़ातिब वि०[अ.] कहेवा के सांभळवा प्रवृत्त थनार; सन्मुख थनार
मुखापेक्षा स्त्री० [सं.] कोईना मों सामे ताकवुं ते; आश्रितता
मुखापेक्षी पुं० आश्रित;मुखापेक्षावाळो
मुख़ालिफ़ वि०[अ.]विरोधी (२) शत्रु (३) ऊलटुं (नाम,–फ़त)
मुख़ासमत स्त्री०[अ.] शत्रुता
मुखिया पुं० मुखी; नायक
मुख़िल वि०[अ.]खलेल पाडनारुं;विघ्नकर
मुख़्तलिफ़ वि०[अ.] विविध (२)भिन्न
मुख़्तसर वि० [अ०] मुखतेसर; टूंकुं
मुख़्तार पुं० [अ.] जुओ 'मुख़तार'
मुगदर पुं० [सं.मुद्गर] मगदळियो
मुग़ालता पुं०[अ.] छळ;कपट; दगो
मुग़ीस वि० [अ.] (दावामां) वादी
मुग्घम वि० मोघम;अस्पष्ट. –रहना= चूप रहेवुं(व्यक्तिए)(२)स्पष्ट न थवुं
मुचलका पुं०[तु.]मुचरको;जामिनखत
मुछंदर पुं० मोटो मुछाळो (२) कुरूप ने मूर्ख माणस
मुज़क्कर पुं० [अ.] पुंल्लिंग (२) नर
मुज़दा स्त्री० [अ.] शुभ खबर
मुज़फ़्फ़र वि० [अ.] विजयी
मुज़बज़ब वि०[अ.] गोटाळामां पडेलुं; अनिश्चित; अस्थिर
मुज़म्मत स्त्री० [अ.] बूराई; निंदा
मुजरा पुं०[अ.] जारी करेलुं ते (२) मुजरे के मजरे करवुं ते; मजरो (३) मुजरो; सलाम (४) वेश्यानुं नाच वगरनुं सादुं गायन
मुजरिम पुं० [अ.] आरोपी; गुनेगार
मुज़र्रत स्त्री० [अ.] हानि; नुकसान
मुजर्रद वि०[अ.] कुंवारुं (२) एकलुं
मुजर्रब वि०[अ.] अजमावेलुं; तपासेलुं
मुजल्लद वि० [अ.] 'सजिल्द' (ग्रंथ)
मुजस्स(–स्सि)म वि० [अ.] साक्षात्; मूर्तिमंत
मुज़ाअफ़ वि० [अ.] मुजाफत; बमणुं
मुज़ायक़ा पुं० [अ.] वांधो; नुकसान
मुज़ारा वि० [अ.] समान; बराबर

मुजाव(-वि)र पुं०[अ.]'मजार'-कबर जेवां स्थाननो रक्षक के पूजारी
मुज़िर वि० [अ.] हानिकारक; खराब
मुझ स०'मैं'नुं १ली तथा ६ठ्ठी विनानी विभक्तिओमां थतुं रूप. उदा. 'मुझको', 'मुझसे'
मुझे स० मने (२जी, ४थीनुं रूप)
मुटका पुं० मुकटो; रेशमी अबोटियुं
मुटाई स्त्री० स्थूलता; जाडपण (२) मोटाई; अभिमान
मुटाना अ०क्रि०'मोटा' (शरीरे जाडा के अभिमानी) थई जवुं
मुटासा वि० बेपरवा ने घमंडी
मुटिया पुं० मजूर; हेलकरी
मुठभेड़ स्त्री० झघडो;लडाई;अथडामण
मुठिया स्त्री० दस्तो; हाथो (२) मुठ्ठी
मुड़ना अ०क्रि०मोडावुं;वळवुं;वांकुं थवुं
मुड़हर पुं०साल्लानो माथावटीनो भाग
मुड़िया पुं० मूंडियो; माथुं मूंडावेलो
मुतअद्दद वि० [अ.] अनेक; कंई
मुतअल्लिक़ वि०[अ.] 'ताअल्लुक'-संबंध राखतुं (२) अ० ए संबंधे; विषे; बावत [प्रभावित
मुतअस्सिर वि०[अ.]असरतळे आवेलुं;
मुतफ़न्नी वि०[अ.]पहोंचेल;चालाक;धूर्त
मुतफ़र्रिक़ वि०[अ.]तफरके-अस्तव्यस्त थयेलुं (२) विविध; तरेहवार
मुतबन्ना पुं०[अ.]दत्तक पुत्र [पवित्र
मुतबर्र(-र्रि)क वि०[अ.]मुबारक(२)
मुतमैयन वि० [अ.] संतुष्ट (२) शांत
मुतमौवल वि० [अ.] धनी; अमीर
मुतरज्जिम वि० [अ. मुतरजिम]अनुवादक; तरजुमो करनार
मुतरिब पुं०[अ.]गायक(नाम, -बी)
मुतलक़ अ०[अ.] जरा पण; मुतलग
मुतलाशी वि० [अ.] तलास करनार
मुतवज्जह वि० [अ.] ध्यान देनार
मुतवातिर अ०[अ.]सतत;लगातार
मुतसद्दी पुं०[अ.]मुत्सद्दी;मुनशी;महेतो के प्रबंध करनार [सहनशील
मुतहम्म(-म्मि)ल वि०[अ.] सहिष्णु;
मुतहैयर वि० [अ.] आश्चर्यचकित
मुताबिक़ अ०[अ.] अनुसार; प्रमाणे (२)वि०अनुकूल(नाम,**मुताबिक़त**)
मुतालबा पुं०[अ.] बाकी मागती रकम
मुताला पुं० [अ.] भणवुं ते; अध्ययन
मुताह पुं०[अ.मुताअ]शिया मुसलमानोमां थतो एक प्रकारनो अस्थायी विवाह [रखात
मुताही स्त्री०'मुताह' करेली स्त्री (२)
मुत्तफ़िक़ वि०[अ.]सहमत;एकतावाळुं
मुत्तसिल वि० [अ.] पासेनुं; संबद्ध
मुदब्बिर पुं०[अ.]सलाहकार; अमात्य
मुदम्मिग़ वि० [अ.] अभिमानी

मुदर्रिस पुं० [अ.] शिक्षक
मुदल्लल वि० [अ.] दलीलवाळुं; तर्कसिद्ध
मुदल्लिल वि० [अ.] दलील करनार
मुदाम अ० [अ.] सदा (२) सतत
मुदामी वि० सदा हयात
मुद्दआ पुं० [अ.] मुद्दो; अभिप्राय; मतलब
मुद्दई पुं० [अ.] (स्त्री० मुद्दैया) दावो करनार; वादी (२) शत्रु; मूदई
मुद्दत स्त्री० [अ.] मुदत; अवधि (२) समय; अरसो
मुद्दा-अलेह, मुद्दालेह पुं० [अ.] प्रतिवादी
मुद्दैया स्त्री० जुओ 'मुद्दई'मां
मुधा अ० [सं.] वृथा (२) वि० व्यर्थ (३) असत्य [नास्तिक
मुनकिर वि० [अ.] इन्कार करनार (२)
मुनगा पुं० सरगवो
मुनसिफ पुं० जुओ 'मुंसिफ' [सूकलुं
मुनहनी वि० [अ.] वळेलुं; वांकुं (२)
मुनहरिफ़ वि० [अ.] वक्र (२) विरोधी
मुनहसर वि० [अ.] आश्रित; आधारवाळुं
मुनाज़रा पुं० [अ.] वादविवाद; चर्चा
मुनादी स्त्री० [अ.] ढंढेरो
मुनाफ़ा पुं० [अ.] नफो
मुनीब(–म) पुं० [अ.] मुनीम (२) मददगार [के थयेलुं
मुन्तक़िल वि० [अ.] स्थानांतर करेलुं
मुन्तख़िब वि० [अ.] चूंटायेल; 'मनोनीत'
मुन्तज़िम वि० [अ.] 'इंतज़ाम' करनार
मुन्तज़िर वि० [अ.] इंतेजार
मुन्तही वि० [अ.] पूर्ण
मुन्ना पुं० प्रिय; प्यारा (नानाने माटे प्रेमनो शब्द) [दंगो
मुफ़सदा पुं० [अ.] फिसाद; बखेडो (२)
मुफ़सिद वि० [अ.] फिसादखोर; उपद्रवी
मुफ़स्सल वि० [अ.] विगतवार; विस्तृत (२) पुं० मुफसिल
मुफ़ारक़त स्त्री० [अ.] जुदाई; वियोग
मुफ़ीज़ वि० [अ.] गुणकारक; उपकारक
मुफ़ीद वि० [अ.] फायदेमंद; लाभकारी
मुफ़्त वि० [अ.] मफतनुं. –में = मफत (२) व्यर्थ; नकामुं
मुफ़्तखोर पुं० मफतियो
मुफ़्ती वि० मफतनुं (२) पुं० [अ.] मुफती; मुसलमान धर्मशास्त्री
मुबत(-ती)ला वि० जुओ 'मुब्तला'
मुबद्दल वि० [अ.] बदलायेलुं
मुबनी वि० [अ.] आश्रित
मुबर्रा वि० [अ.] पवित्र; साफ (२) निर्दोष
मुबलिग़ पुं० [अ.] रकम (धननी)
मुबादला पुं० [अ.] मोंबदलो; अवेज
मुबादा अ० [फा.] कदाच; रखे ने
मुबारकबाद (-दी), मुबारकी स्त्री० धन्यवाद
मुबाल(-लि)ग़ा पुं० [अ.] अतिशयोक्ति

मुबाहिसा पुं० [अ.] वादविवाद; चर्चा
मुब्तदी पुं० [अ.] शिखाउ
मुब्तला वि० [अ.] (रोग के संकटमां) सपडायेलुं
मुमकिन वि० [अ.] संभवित;शक्य
मुमताज़ वि० [अ.] माननीय
मुमलकत स्त्री० [अ.] राज्य; सल्तनत
मुमानअत स्त्री०[अ.]मुमानियत;मनाई
मुम्तहन पुं० [अ.] परीक्षार्थी;परीक्षानो उमेदवार
मुम्तहिन पुं० [अ.] परीक्षक
मुरकना अ०क्रि० मरडावुं;वळवुं;झूकवुं (नाम, मुरक स्त्री०)
मुरग़ा पुं०[फा. मुर्ग़](स्त्री० –ग़ी)मुरघो
मुरग़ाबी स्त्री० मुरघाबी; जळकूकडी
मुरचंग पुं० मोरचंग; मोंथी बजाववानुं एक वाद्य
मुरज पुं० [सं.] मृदंग [खिन्न थवुं
मुरझाना अ०क्रि० करमावुं(२)सुस्त के
मुरत्तब वि० [अ.] क्रमबद्ध
मुरत्तिब पुं० [अ.] क्रममां गोठवनार
मुरदन पुं० जुओ 'मुर्दन'
मुरदनी स्त्री० जुओ 'मुर्दनी'
मुरदा पुं० जुओ 'मुर्दा' [अपवित्र
मुरदार वि० [फा.] मुडदाल; मृत (२)
मुरमुराना अ०क्रि० चूरेचूरा थई जवुं
मुरव्वज वि०[अ.]रिवाज पडेलुं;प्रचलित
मुरव्वत स्त्री०[अ.]सज्जनता;शील;सारमाणसाई (२) 'लिहाज़' जुओ
मुरशिद पुं०[अ.] गुरु(२)पूज्य व्यक्ति
मुरस्सा वि०[अ०]जडाउ; नंग जडेलुं
मुर(–ल)हा वि०मूल नक्षत्रमां जन्मेलुं (२) तोफानी (३) अनाथ
मुराद स्त्री० [अ०] इच्छा; अभिलाषा. **–पाना** = मुराद बर आववी. **–माँगना** = मुराद पूरी करवा प्रार्थना करवी
मुरादी वि० [अ.] मुरादवाळुं
मुरासला पुं०[अ.मुरासिल:]पत्र;कागळ
मुरासलात पुं० [अ.] पत्रव्यवहार
मुरीद पुं० [अ.] चेलो; शिष्य
मुरौवज वि० जुओ 'मुरव्वज'
मुरौवत स्त्री० जुओ 'मुरव्वत'
मुर्ग़ पुं० [फा.] मुरघो
मुर्तहन वि० [अ.] गीरो राखेलुं
मुर्तहिन पुं० [अ.] गीरो राखनार
मुर्दा पुं० [फा.] मडदुं
मुर्दन पुं० [फा.] मरण
मुर्दनी स्त्री०[फा.]मरणनां(मुख परनां) चिह्न (२) मरणयात्रामां जवुं ते
मुर्रा पुं० मरडो
मुर्री स्त्री०दोरानी एक सांध(२)कपडानी कली करी टंगावता पहेलां वळ आपे छे ते(३) आमळीने करेली दिवेट

मुर्शिद पुं० [अ.] जुओ 'मुरशिद'

मुलज़िम वि०[अ.]आरोपी; अपराधी

मुलमची पुं० गिलेट चडावनार

मुलम्मा पुं० [अ.] गिलेट; ढोळ

मुलहा वि०जुओ 'मुरहा' [परिचय

मुलाक़ात स्त्री० [अ.] मेळाप (२) मेळ;

मुलाक़ाती पुं० परिचित व्यक्ति

मुलाज़िम पुं० [अ.] नोकर; सेवक

मुलाज़िमत स्त्री० [अ.] नोकरी; सेवा

मुलायम वि०[अ.]मृदु;नाजुक(२)मंद; धीमुं. **–करना**=नरम, शांत करवुं. **–चारा**=हलको खोराक(२)सहेजे बीजानी वातमां फसाय एवुं (३) सुप्राप्य (४) नाजुक शरीरनुं

मुलायम(–मि)यत, मुलायमी स्त्री० मुलायमपणुं

मुलाहज़ा पुं०[अ.] मलाजो; मर्यादा; संकोच;जुओ'मुलायना'(२)आदर-युक्त नम्र वर्तन

मुलेठी स्त्री० जेठीमध

मुलैयन वि० [अ.] रेचक

मुल्क पुं० [अ.] मुलक; देश (२) राज्य

मुल्तवी वि० [अ.] मुलतवी; स्थगित

मुवक्क(–क्कि)ल पुं०[अ.]वकीलनो असील

मुवज्जह वि० [अ.] तर्कशुद्ध; योग्य

मुवर्रिख़ पुं० इतिहासकार

मुशब्बह वि० [अ.] समान; तुल्य

मुशफ़िक़ वि०[अ.]दयावान; महेरवान (२) दोस्त; मित्र

मुशर्रफ़ वि० [अ.] उच्च(२)माननीय

मुशाबह वि०[अ.]मळतुं;समान(नाम, **मुशाबहत** स्त्री०)

मुशाहरा पुं० [अ.] मुसारो; पगार

मुशाहिद वि० [अ.] देखनार;प्रेक्षक

मुशाहिदा पुं० [अ.] देखवुं ते; दर्शन

मुशाहीर पुं० [अ.] मशहूर लोक

मुशीर पुं०[अ.] सलाहकार (२) वजीर

मुश्क पुं० [फा.] कस्तुरी (२) स्त्री० भुजा;खभा कोणी वच्चेनो हाथनो भाग. **मुश्कें कसना या बाँधना**= मुश्केटाट बांधवुं [मुश्केली

मुश्किल वि० [अ.] मुश्केल (२) स्त्री०

मुश्किल-कुशा पुं०[अ.+फा.] दुःख-भंजन;परमेश्वर [(२)कस्तूरीवाळुं

मुश्की वि०[फा.]कस्तूरीना रंगनुं;काळुं

मुश्त पुं० [अ.] मूठी

मुश्तबह वि० [अ.] संदिग्ध

मुश्तमिल वि० [अ.] भेगुं; सामेल थयेलुं; संमिलित; जोडायेलुं

मुश्तहर वि० [अ.] प्रसिद्ध; प्रकाशित

मुश्तहिर वि०[अ.]प्रकाशक;प्रसिद्धकर्ता

मुश्ताक़ वि० [अ.]मुस्ताक;आतुर;भारे कामनावाळुं (२) शोखवाळुं

मुसकराना अ०क्रि० मुस्कावुं;मंद हसवुं

मुसकराहट स्त्री० स्मित; मुस्कावुं ते
मुसकाना अ०क्रि० मुस्कावुं
मुसद्दस पुं० [अ.] षट्कोण
मुसन्ना पुं० [अ.] नकल
मुसन्निफ़ पुं० [अ.] लेखक
मुसफ्फ़ा वि० [अ.] शुद्ध; साफ
मुसम्मम वि० [अ.] पाकुं; दृढ
मुसम्मा वि० [अ.] नामी; नामवाळुं
मुसम्मात स्त्री० [अ.] स्त्री
मुसर्रत स्त्री० [अ.] खुशी; आनंद
मुसलमीन पुं० ['मुस्लिम'नुं ब०व०] मुसलमान लोक
मुसलसल वि०[अ.] क्रमबद्ध; क्रमिक
मुसलेह वि० [अ.] सुधारक
मुसल्लम वि० [फा.] साबूत; अखंड
मुसल्लस पुं० [अ.] त्रिकोण
मुसल्लह वि० [अ.] सशस्त्र
मुसव्विर पुं० [अ.] चित्रकार
मुसव्विरी स्त्री० [अ.] चित्रकळा
मुसहर पुं०एक जंगली जातनो माणस
मुसहिल वि० [अ.] रेचक
मुसाफ़हा पुं०[अ.]मळती वखते मित्र जोडे हाथ मेळववो ते
मुसाफ़िर पुं०[अ.]मुसाफर [फरी
मुसाफ़िरत,मुसाफ़िरी स्त्री०[अ.]मुसा-
मुसावात स्त्री०[अ.] बराबरी;समानता
मुसावी वि० [अ.] बराबर; तुल्य

मुसाहब पुं०[अ.]साथी;हजूरमां रहेनार
मुस्किरात पुं० [अ.] मादक पदार्थो
मुस्टंडा वि० हृष्टपुष्ट (२) बदमाश
मुस्तअफ़ी वि०[अ.]'इस्तीफ़ा'–राजी-नामुं देनार
मुस्तक़बिल पुं० [अ.] भविष्यकाळ
मुस्तक़िल वि०[अ.]दृढ;स्थिर;मुस्ताक
मुस्तक़ीम वि० [अ.] सीधुं; टटार
मुस्तग़ीस पुं०[अ.]दावेदार; फरियादी
मुस्ततील पुं० [अ.] लंबचोरस
मुस्तनद वि० [अ.] प्रमाणभूत
मुस्तफ़ा वि०[अ.]शुद्ध (२) पुं० शुद्ध दुर्गुणरहित पुरुष [आशावाळुं
मुस्तफ़ीज़ वि०[अ.]लाभ के उपकारनी
मुस्तफ़ीद वि० [अ.] फायदो चाहतुं
मुस्तवी वि० [अ.] समतल; सपाट
मुस्तस्ना वि०[अ.] अलग पडतुं; जुदुं (२) अपवादरूप [पात्र
मुस्तहक़ वि०[अ.] अधिकारी; हकदार;
मुस्तहकम वि०[अ.]दृढ; (२) वाजबी
मुस्तैद वि० [अ.मुस्तअद] तत्पर (२) चालाक (नाम, –दी)
मुस्तौफ़ी पुं०[अ.]अन्वेशक;'ऑडिटर'
मुहकम वि० [अ.] दृढ; पाकुं
मुहकमा पुं० [अ.] विभाग
मुहक़्क़क़ वि०[अ.] अजमावी जोयेलुं (२) ठीक; सारुं

मुहक़्क़िक़ पुं०[अ.]परीक्षक;अजमावनार
मुहज़्ज़ब वि० [अ.] शिष्ट; सभ्य
मुहतमिम पुं० [अ.] व्यवस्थापक
मुहताज वि०[अ.] गरीब; कंगाळ (२) आश्रित (नाम,-जी) [जाणनार
मुहद्दिस पुं० [अ.] 'हदीस'–धर्मशास्त्र
मुहन्दिस पुं० [अ.] गणिती
मुहब्बत स्त्री० [अ.]महोबत;प्रेम;चाह
मुहरा पुं०सामेनो–मोरनो भाग.–**लेना** =सामे आवीने लडवुं
मुहर्रम पुं०[अ.]महोरम; अरबी वर्षनो पहेलो मास.–**की पैदाइश**=रोतल के शोकातुर चहेरानुं माणस
मुहर्रमी वि०महोरम अंगेनुं के लगतुं (२) शोकदर्शक; दुःखी. –**सूरत** पुं० जुओ 'मुहर्रम की पैदाइश'
मुहर्रिक वि०[अ.] संचालक (२) नेता
मुहर्रिर पुं० [अ.] मुनशी; महेतो; कारकुन; लहियो (नाम, –**री**)
मुहलत स्त्री० [अ.] फुरसद (२) छुट्टी (३) अवधि; महेतल
मुहल्ला पुं० [अ.] महोल्लो
मुहसिन वि०[अ.]अहेसानमंद;आभारी
मुहसिल वि०उघरावनार;वसूल करनार (२) पुं० पायदळ सैनिक
मुहाजरत स्त्री०[अ.]अलग थवुं ते (२) हिजरत करवी ते

मुहाफ़ज़त स्त्री० [अ.] 'हिफ़ाज़त'; संभाळ; रक्षा
मुहाफ़ा पुं०[अ.] माफो;रथ(स्त्री माटे)
मुहाफ़िज़ वि०[अ.]'हिफ़ाज़त'करनार; संरक्षक; संभाळ लेनार
मुहाफ़िज़-खाना पुं०दफतरखानुं;कागळ दस्तावेज संभाळी राखवानुं स्थान
मुहाल वि०[अ.] असंभव;अघरुं(२)पुं० महोल्लो [भाषानो रूढिप्रयोग
मुहावरा पुं०[अ.]महावरो; आदत(२)
मुहासरा पुं० [अ.] घेरो
मुहासिब पुं० [अ.] हिसाबनीस (२) अन्वेषक (३) गणिती
मुहासिरा पुं० जुओ 'मुहासरा'
मुहासिल पुं०[अ.] आवक (२) नफो
मुहिब्ब पुं० [अ.] दोस्त
मुहिम स्त्री० [अ.] भारे काम (२) लडाई (३) चडाई [घेरो
मुहीत वि० [अ.] घेरो घालनारुं(२)पुं०
मुहीब वि०[अ. महीब]डरामणुं;भयानक
मुहैया वि० [अ.] तैयार; हाजर
मूँग स्त्री०; पुं० मग
मूँगफली स्त्री० मगफळी
मूँगा पुं० परवाळुं; एक लाल रत्न
मूँछ स्त्री०मूछ. –**उखाड़ना**=अभिमान उतारवुं. **मूँछों पर ताव देना**= मूछ पर ताल देवो; मूछ मरडवी

मूँछें नीची होना=मूछ नीची थवी; पाछा पडवुं; आबरू जवी
मूँड पुं०मुंड;माथुं.–मारना=माथाझीक करवी. –चढ़ाना = मोढे चडाववुं
मूँदना स०क्रि० ढांकवुं
मू, मूए पुं० [फा.] मुवाळो; वाळ
मूजिद वि०[अ.]शोधक;'ईजाद' करनार
मूजिब पुं० [अ.] कारण
मूज़ी वि० [अ.] दुष्ट; पीडा करनार
मूठ(–ठि,–ठी) स्त्री० मूठी (२) दस्तो; हाथो (३) मूठनो मंत्रतंत्र
मूढगर्भ पुं०[सं.]गर्भमां बगाड–विक्रिया
मूत पुं० मुत्र; मूतर
मूतना अ०क्रि० मूतरवुं
मूनिस पुं० [अ.] मित्र (२) मददगार
मू-ब-मू अ० [अ.]वारीकाईथी(२) सौ वातोमां [(२) जडीबुट्टी
मूर पुं०,मूरि(–रो) स्त्री० मूळी; मूळ
मूल धन पुं०[सं-] वेपारनी मूळ मूडी (२) रोकडुं धन; पूंजी
मूस पुं० 'मूसा'; उंदर
मूसदानी स्त्री० उंदरियुं
मूसना स०क्रि० चोरवुं
मूसर(–ल) पुं०मुसळ; सांबेलुं
मूसलचंद पुं० गमार; मूर्ख
मूसल(–ला)धार अ०मुसळधार(वर्षा)
मूसा पुं० ऊंदर
मूसीक़ी स्त्री० [अ.] संगीतशास्त्र
मृगी स्त्री० [सं.] हरणी(२) 'मिरगी'
मृणाल स्त्री० [सं.] कमळदंड
में 'मां'; सातमीनो प्रत्यय
मेंगनी स्त्री० लींडी
मेअराज पुं० [अ.] सीडी
मेचक पुं० [सं] अंधारुं (२) वि० काळुं
मेज़ स्त्री० [फा.] मेज; टेबल
मेज़बान पुं० [फा.] मिजबान
मेट पुं० [इं.] मजूरोनो जमादार
मेटना स० क्रि० जुओ 'मिटाना'
मेड़ पुं० नानो बांध; पाळ
मेढक पुं० मेंडक; देडको
मेढ़ा पुं० मेंढो; घेटो
मेथौरी स्त्री० मेथीनी भाजीनुं वडुं
मेदा स्त्री० [सं.] एक औषधि–मूळियुं (२) [अ. मेअदः] पेट; जठर
मेना स०क्रि० मोवुं; करमोववुं [राणी
मेम स्त्री० मडम; गोरी (२) गंजीफानी
मेमना पुं० घेटानुं बच्चुं [–री)
मेमार पुं०[अ मेअमार] कडियो(नाम,
मेय वि० [सं] मापी शकाय एवुं
मेरवना स०क्रि० (प.) मेळववुं; भेगुं–मिश्रित करवुं
मेरा स० मारुं (स्त्री० –री)
मेराउ(–व) पुं०मेळाप(२)स्त्री०अहंकार
मेरे स० 'मेरा' साथे ब०व० शब्द के

विभक्तिवाळो शब्द आवतां थतुं रूप
मेल पुं०[सं.]मेळ;मळवुं ते (२) एकता; मेळ के बनतुं होवुं ते(३)मळतुं होवुं के आववुं ते;बराबरी(४)प्रकार;तरेह (५)मिश्रण; मेळववुं ते
मेला पुं० भीड; जमावट (२) मेळो
मेली पुं० साथी (२) वि० मळतावडुं
मेवा पुं० [फा.] सूको मेवो
मेहँदी स्त्री० [सं. मेन्धी] मेंदी
मेहतर पुं०[फा.] महापुरुष (२) नायक (३) महेतर (स्त्री० -रानी)
मेहनत स्त्री० [अ.] महेनत
मेहनताना पुं०[अ.+फा.]महेनताणुं
मेहनती वि० महेनतु
मेहमान पुं०[फा.]महेमान(नाम,-नी)
मेहर स्त्री० महेर; कृपा
मेहरबानी स्त्री०महेरबानी;कृपा के दया
मेहरा पुं० स्त्री जेवो माणस; बायलो
मेहराब स्त्री० [अ.] महेराब, कमान
मेहरी स्त्री० ओरत (२) पत्नी
मेह्र स्त्री०[फा.] महेर;कृपा(२)सहानुभूति (३) पुं० सूरज
मैं स० हुं
मै स्त्री० [फा.] दारु (२) अ० [अ.] साथे
मैका पुं०'मायका';पियर [मदगळ
मैगल पुं० मेगळ; मस्त हाथी(२) वि०
मैदा पुं० [फा.] मेंदो
मैदान पुं० [फा.] मेदान
मैन पुं० मीण(२)(प.)मदन; कामदेव
मैना स्त्री० [सं. मदना] मेना; सारिका
मैयत स्त्री० [फा.] मोत (२) मडदुं
मैल स्त्री०[सं. मलिन, प्रा. मइल]मेल; गंदकी(२)दोष;विकार(३)पुं०[अ.] वलण; झोक (४) चाह; प्रेम (५) सुरमो आंजवानी सळी
मैलख़ोरा वि० मेलखाउ [मेलुं; गू
मैला वि० मेलुं; गंदुं; अस्वच्छ (२)पुं०
मैला-कुचैला वि० बहु मेलुं [आसन
मोंढा पुं० मूडो; सरकट इ०नुं गोळ
मोकल(-ला) वि० (प.) मोकळुं; छुटाशवाळुं; छूटुं
मोखा पुं०(प.)नानी बारी के जाळियुं
मोच स्त्री० अंगनी मचकोड
मोछ स्त्री० मूछ (२) पुं० (प.) मोक्ष
मोजज़ा पुं० [अ. मुअजज़ः] मोजेजो; अद्‌भुत कृत्य; चमत्कार
मोज़ा पुं० [फा.] पगनुं मोजुं
मोट स्त्री०पोटली(२)पुं०पाणीनो कोस
मोटरी स्त्री० (प.) पोटली
मोटा वि०जाडुं;स्थूल(कद के दळमां). -ताज़ा = जाडुं; हृष्टपुष्ट; स्थूल. मोटी बात=साधारण के सामान्य वात. मोटे हिसाबसे=अंदाज़थी
मोटाई स्त्री०जुओ 'मुटाई'(२)दुष्टता.

—चढ़ना=बदमाश के गर्विष्ठ थवुं
मोटाना अ०क्रि० जुओ 'मुटाना'(२) स०क्रि० जाडुं करवुं (बीजाने)
मोटिया पुं० जाडुं खद्दड कपडुं (२) मोटियो; कूली
मोठ स्त्री० [सं. मकुष्ठ; प्रा. मउट्ठ] मठ
मोड़ पुं० वळवुं ते के वळांक
मोड़ना स०क्रि०फेरववुं;वाळवुं(२)मोडवुं; मरडवुं के (धार) कुंठित करवी
मोतक़िद वि०[अ. मुअतक़िद]विश्वास करनार (२) कोई धर्मनो अनुयायी
मोतबर वि० [अ.] विश्वासपात्र
मोतमिद वि०[अ. मुअतमिद]विश्वास करनार
मोतियाबिंद पुं० आंखनो मोतियो
मोतीझ(-झि)रा पुं०छातीए मोती जेवी फोल्ली थाय छे एवो एक ताव
मोम पुं० [फा.] मीण
मोमजामा पुं०[फा.]मीणकप्पड;मीणियुं
मोमबत्ती स्त्री० मीणवत्ती
मोमिन पुं०[अ.] आस्तिक, ईमानदार मुसलमान(२)मुसलमान वणकरनी जात; (मोमनो ?)
मोमियाई स्त्री०[फा.]नकली शिलाजीत
मोमी वि० [फा.] मीणनुं
मोयन पुं० मोण
मोर स० मारुं;मोरुं (२)पुं० मयूर (३) [[अ.] कीडी
मोरचा पुं०[फा.]काट (लोढानो) (२) दर्पण परनो मेल (३) किल्लानी खाई (४) मोरचो. —जीतना या मारना = शत्रुनो मोरचो जीतवो. —लेना=युद्ध करवुं
मोरछल पुं० मोरनां पीछांनी चमर
मोरनी स्त्री० मोरडी; ढेल [मोरडी
मोरी स्त्री० मोरी; गटरनी नीक (२)
मोल पुं० मूल्य; किंमत. —करना= वधारे भाव कहेवो (२) मूलववुं. —लेना=खरीदवुं
मोष पुं० (प.) मोक्ष; छुटकारो
मोहड़ा पुं० पात्रनुं मोढुं (२) वस्तुनुं मोढुं—उपरनो के आगलो भाग
मोहतमिम पुं०'मुहतमिम';व्यवस्थापक
मोहताज वि० जुओ 'मुहताज'
मोहनभोग पुं० एक मीठाई—मोहनथाळ
मोहमिल वि०[अ. मुहमिल] निरर्थक (२) छोडेलुं; त्यक्त
मोहर स्त्री० [फा. मुह्र] महोर
मोहरा पुं०जुओ 'मुहरा', 'मोहड़ा'(२) [फा.] महोरुं
मोहर्रिर पुं० [अ.] जुओ 'मुहर्रिर'
मोहलत स्त्री० जुओ 'मुहलत'
मोहलिक वि०[अ.मुहलिक]मारी नांखे एवुं; जीवलेण (रोग)
मोहसिन वि० जुओ 'मुहसिन'

मोहिं स० (प.) मने
मौक़ा पुं० [अ.] मोको
मौक़ूफ़ वि०[अ.] मोकूफ;बंध पाडेलुं (२) रद के बरखास्त करेलुं (३) निर्भर; आधारवाळुं
मौज स्त्री०[अ.] मोज (वि० **–जी**)
मौज़ा पुं०[अ.] गाम(२) खेतर; वांटो
मौज़ूँ वि० [अ.] योग्य; ठीक
मौजूद वि०[अ.]मोजूद (नाम,**–दगी**)
मौजूदा वि०[अ.] वर्तमानकाळनुं;प्रस्तुत
मौजूदात स्त्री० [अ.] समस्त सृष्टि
मौत स्त्री० [अ.] मोत; मरण
मौताद स्त्री० [अ.] (दवानी) मात्रा; प्रमाण
मौर पुं०[सं. मुकुट, प्रा. मउड़]लग्ननो मोड (२)शिरोमणि; सरदार (३) [सं. मुकुल, प्रा. मउल] मोर
मौरना स०क्रि० मोर आववो; मोरवुं
मौरूसी वि० [अ.]वारसानुं; पैतृक
मौलसिरी स्त्री० बोरसळी; बकुल
मौला पुं०[अ.]मित्र(२)धणी(३) ईश्वर
मौलूद पुं० [अ.] जन्मेलुं बालक (२) महमद पेगंबरनो जन्मोत्सव
मौसा पुं० मासो
मौसिम पुं० [अ.] मोसम(वि०**–मी**)
मौसी स्त्री० मासी
मौसिया वि०मासी जेवुं. **–सास**=मासी सासु. **–ससुर**=मासोससरो
मौसूफ़ वि० [अ.] वर्णवेलुं; उल्लेखेलुं
मौसूल वि० [अ.] मळेलुं; प्राप्त
मौसूम वि० [अ.]नामवाळुं; नामे
मौसेरा वि०मसियाई;मासीने लगतुं
म्याँवँ, म्यौं अ० म्याउं
म्युनिसिपैल्टी स्त्री० म्युनिसिपालिटी

य

यंत्र पुं० [सं] यंत्र(२) वाजुं
यंत्रणा स्त्री० [सं] तकलीफ; पीडा
यंत्रालय पुं०[सं.]कारखानुं(२)छापखानुं
यक वि०[फा.]एक
यक-क़लम वि० पूरुं; कुल(२)अ० एक साथे; एकझपट
यकजा अ० [फा.] एकत्र; एकठुं
यकता वि०[फा.]एक्को; अद्वितीय(नाम, **यकताई**)
यक-बयक, यक-बारगी अ० [फा.] अचानक
यकमुश्त अ० [फा.] एकसाथे
यकसाँ वि० [फा.] एकसरखुं
यकसू वि०[फा.]एक ज तरफनुं(२)स्थिर

यकायक अ०[फा.]एकाएक; अचानक
यक़ीन पुं० [अ.] विश्वास; खातरी. **-दिलाना** = खातरी आपवी. **-लाना**=विश्वास करवो; मानवुं
यक़ीनन् अ०[अ.] जरूर; खातरीपूर्वक
यक़ीनी वि०[अ.]निश्चित;खातरीबंध
यकुम वि० [फा.] प्रथम; पहेलुं
यक्का वि०[फा.]एक्को;अजोड(२) एकलुं (३) पुं० एका-गाडी
यख़ पुं०[फा.]हिम;बरफ(२)वि०बहु ठंडुं
यख़नी स्त्री० [फा.] मांसनो शेरवो
यगानगत,यगानगी स्त्री० [फा. यगाँ] सगपण; संबंध (२) मेळ; एकता
यगाना वि० सगुंसंबंधी(२)अजोड(३) पुं० मित्र [-नी)
यज़दान पुं० [फा.] ईश्वरनुं नाम (वि०
यतीम पुं० [अ.] अनाथ (नाम,-मी)
यथातथ्य अ० आबेहूब;बरोबर तेम ज
यमज,यमल पुं०[सं.] जोडकां बाळक
यरक़ान पुं० [अ.] कमळो; पांडुरोग
यह स० आ (विभक्तिनां रूपमां 'इस' थाय छे. उदा० 'इसको'; व्रज-भाषामां 'या' थाय छे. 'याको')
यहाँ अ० अहीं
यही स० 'यह+हि'; आ ज
यहूदिन स्त्री० यहूदी स्त्री
यातायात पुं० [सं.] आवागमन
यात्रावाल पुं० यात्रीओने तीर्थमां देव-दर्शनादि करावनार पंडो
यादगार स्त्री०[फा.]स्मारक;स्मृतिचिह्न
याददाश्त स्त्री०[फा.]याददास्त(२)याद राखवा लखी के नोंधी लीधेलुं ते
यानी(-ने) अ० [अ. यअनी] याने; अर्थात्; एटले के
यापन पुं० [सं.] वीतवुं-पसार थवुं ते
याफ़्त स्त्री० [फा.] प्राप्ति (२) आवक
याफ़्तनी स्त्री० [फा.] बाकी लेणुं
याब [फा.] 'प्राप्त करनार' ए अर्थमां. उदा. काम-याब (नाम, **-बी**)
याबू पुं० [फा.] टट्टु
यार-बाश वि० [फा.] मिलनसार (२) यारबाज; विषयी
यार-मार वि० मित्रद्रोही
यारान पुं० [फा.] 'यार'नुं ब.व.; यारो
याराना वि०[फा.]मित्रतानुं; मित्र जेवुं (२) पुं० मैत्री [सिंह इ० नी)
याल स्त्री०[तु.]गरदन(२)याळ(घोडा
यावा वि० [फा.] उटपटांग; ढंगधडा वगरनी(वात).**-होना**=उल्लु बनवुं
यास स्त्री० [अ.] निराशा
युग युग श०प्र० बहु दिवसो सुधी; घणो समय [शत्रुता
युयुत्सा स्त्री०[सं.]लडवानी इच्छा(२)
युयुत्सु वि० [सं.] लडवा इच्छनार

यूँ अ० जुओ 'यों'
यूनान पुं० युनान देश
यूनानी वि०युनाननुं(२)स्त्री०युनाननी भाषा के वैदक-पद्धति
यूरिश स्त्री० [तु.] हल्लो; आक्रमण
ये स० 'यह'नुं ब०व०; आ बधा
यों अ० आम; आ प्रमाणे
योंही अ०आम ज(२)व्यर्थ;विना खास प्रयोजन
योगरूढि स्त्री०[सं.] खास अर्थमां प्रचलित समास. उदा० चंद्रभाल
योम,यौम पुं० [अ.] दिवस
यौमिया पुं०[अ.]रोजी(२)वि०रोजनुं (३) अ० रोज

र

रंग पुं०[सं.]कलाई;'रांगा'(२) रंगभूमि (३) रंग (वर्णं वगेरे अर्थमां). –निखरना=चहेरो साफ ने चमकतो होवो. –चूना या टपकना= भरजुवानीमां होवुं. –लाना = प्रभाव के गुण देखाडवो. –रलना= लहेर करवी. –मारना=जीतवुं
रंगत स्त्री०रंग(२)मजा;आनंद(३)दशा
रंगतरा पुं० संतरुं
रँगना स०क्रि० रंगवुं
रंगबिरंगा वि० रंगबेरंगी
रंगर(–रे)ली स्त्री० आनंद;लहेर;रंगरस
रँगरूट पुं० लश्करमां दाखल थनार
रँगरेज़ पुं०[फा.](स्त्री० –ज़िन)रंगरेज
रंगरेली स्त्री० जुओ 'रंगरली'
रंगारंग वि० [फा.] रंगबेरंगी
रंच(०क) वि० रज; थोडुं; जरा
रंजिश स्त्री० [फा.] रंज पामवुं ते; अणबनाव [रंजाडायेल
रंजीदा वि०[फा.](नाम,–दगी)नाराज;
रँडुआ(–वा) पुं० विधुर
रँदना स०क्रि० रंदवुं; रंदाथी छोलवुं
रंदा पुं०[फा.] रंदो [बांगरडवुं
रँभाना अ०क्रि० [सं. रंभण] (गायनुं)
रअय्यत स्त्री० [अ.] रैयत; प्रजा
रई स्त्री० रवैयो (२) रवो
रईस पुं०[अ.] जागीरदार; तालुकदार (२) अमीर; मोटो माणस
रउरे स०आप;बीजा पुरुषनुं मानवाचक
रऊनत स्त्री० [अ.] अभिमान
रक़बा पुं० [अ.] क्षेत्रफळ
रक़म स्त्री० [अ.] लखवुं ते (२) छाप;

महोर (३) रकम; दागीनो के धन (४) तरेह; प्रकार
रकाब स्त्री० [अ.] रकाव; पेंगडुं
रकाबदार पुं० [फा.] कंदोई (२) खानसामो (३) खवास
रकीक वि० [अ.] दुर्बळ (२) तुच्छ
रक़ीक़ वि० [अ.] पाणी जेवुं पातळुं (२) कोमळ (३) दयाळु [बीजो आशक
रक़ीब पुं० [अ.] रकीब; एकनी प्रियानो
रक्तबीज पुं० [सं.] दाडम (२) एक राक्षस
रक्तार्श पुं० दूझता हरस
रक्तिका [सं.] रती [जेवो नाच
रक़्स पुं० [अ.] नृत्य. **रक़्से ताउस**=मोर
रखना स०क्रि० राखवुं. **रख छोड़ना**= राखी मूकवुं [दोष
रख़ना पुं० [फा.] बारी (२) खलेल (३) एब;
रख़ना-अंदाज़ वि० [फा.] विघ्न नांखनारुं; अडचणकर्ता (नाम, –ज़ी)
रखनी स्त्री० रखात
रखवाई, –ली, रखाई स्त्री० रखवाळी
रखवार, –ल पुं० रखवाळ
रखेली स्त्री० रखात
रगड़ स्त्री० रगडवुं, घूंटवुं के घसवुं ते (२) रगड; भारे महेनत (३) रगडो; झघडो पंचात (४) घसावाथी थतुं चिह्न; उझरडो
रगड़ना स०क्रि० रगडवुं; घसवुं के घूंटवुं (२) खूब महेनतपूर्वक करवुं (३) हेरान करवुं (४) अ०क्रि० खूब महेनत करवी
रगड़ा पुं० जुओ 'रगड़'
रग़बत स्त्री० [अ.] रुचि; चाह; इच्छा
रग-रेशा पुं० पांदडानी नसो (२) शरीरनी रगेरग–अंदरनां वधां अंग
रगेदना स०क्रि० खदेडवुं; दोडाववुं
रज़ पुं० [फा.] अंगूर [अनुमति
रज़ा स्त्री० [अ.] रजा (मंजूरी; छूटी) (२)
रजाइ स्त्री० (प.) आज्ञा; हुकम
रज़ाई स्त्री० ओढवानी रजाई
रज़ामंद वि० [फा.] सहमत (नाम, –दी)
रज़ील वि० [अ.] रजाळु; नीच; हलकट
रज़्ज़ाक़ पुं० [अ.] रोजी आपनार (२) ईश्वर
रज़्म स्त्री० [फा.] युद्ध
रट स्त्री० रटवुं ते; रटन (२) गोखण
रटना स०क्रि० रटवुं (२) गोखवुं
रणसिंघा पुं० रणशिंगुं
रतजगा पुं० जागरण (उत्सवादिनुं)
रतनार (–रा) वि० रतूमडुं [वजन
रतल स्त्री० [अ.] शरावनो प्यालो (२) रतल
रतालू पुं० रताळु
रतूबत स्त्री० [अ.] भेज; भीनाश [-धिया
रतौंधा पुं०, –धी स्त्री० रतांधळापणुं (वि०
रत्ती स्त्री० रती वजन (२) रती; चनोठी
रत्तीभर वि० रतीभार; बहु थोडुं
रथी स्त्री० ठाठडी

रद पुं० दांत [सं.] (२) वि० 'रद्द'
रदीफ़ स्त्री०[अ.]गजलमां काफिया बाद वारंवार आवतो शब्द
रदीफ़वार वि० अक्षरक्रममां आवेलुं
रदच्छद,रदछद(प.),**रदपट**[सं.]पुं०होठ
रद्द वि०[अ.]रद करेलुं(२)खराब;नकामुं 'रद्दी' (३) स्त्री० ऊलटी
रद्द-बदल पुं० रदबदल; फेरफार
रद्दा पुं० थर; पड
रनबंका,रनबाँकुरा पुं० रणवंको;शूरवीर
रन(-नि)वास पुं०रणवास; राणी-वास
रपट स्त्री०लपसवुं ते(२)ढाळ;उतार(३) लांबी दोड;रपेटी(४)रिपोर्ट;सूचना; निवेदन [चालवुं; झपाटवुं
रपटना अ०क्रि०लपसवुं (२) झपाटामां
रपट्टा पुं० लपसवुं ते(२)रपेटी;झपाटो
रफ़ल स्त्री० राईफल-बंदूक(२)ओढवानुं एक गरम रग
रफ़ा, रफ़ादफ़ा वि० [अ.]दूर करेलुं (२) निवृत्त; शांत [परोपकार
रफ़ाह स्त्री० [अ.] सुख; आराम (२)
रफ़ीक़ पुं० [अ.]साथी;सहायक; मित्र
रफ़ू-चक्कर वि०रफुचक्कर;गेब;भागी गयेलुं
रफ़्त वि०[फा.]गयेलुं;गत (नाम,-गी)
रफ़्तनी स्त्री०[फा.]बहार जवुं ते(२)निकास
रफ़्तार स्त्री० [फा.] चाल; गति
रफ़्ता रफ़्ता अ० [फा.] रफ्ते रफ्ते
रब पुं०[अ.]पालनपोषण करनार;ईश्वर
रबड़ पुं० रबर
रबड़ना अ०क्रि०घुमाववुं; चलाववुं(२) प्रवाहीने घुमरडी खवडाववी (३) अ०क्रि० रवडवुं; रखडवुं
रबड़ी स्त्री० बासूदी
रबदा पुं० चालवानो थाक (२)कीचड. -पड़ना=खूब वरसाद थवो
रबी स्त्री०[अ.रबीअ]वसंत के ते ऋतुनी फसल-रवी [त्रीजो मास
रबी-उल्-अव्वल पुं०[अ.]अरबी वर्षनो
रबी-उल्-आख़िर, रबी-उस्सानी पुं० [अ.] अरबी वर्षनो चोथो मास
रबीब पुं० [अ.] आंगळियो पुत्र (२) पालक-पितानो पुत्र
रब्त पुं० [अ.] रफ्त;महावरो (२)मेळ; संबंध.-**ज़ब्त** पुं०मेळ; खूब संबंध
रमक़ स्त्री०[अ.]अंतिम श्वास(२)थोडोक भाग(३)वि० थोडुंक; जराक
रमज़ानी वि० रमजानने लगतुं के ते मासमां जन्मेलुं (२) भुखारवुं
रमना अ०क्रि० रमवुं;आनंद के भोग विलास करवो(२)घूमवुं;विचरवुं(३) पुं० रमणुं;चोगान के चरो(४)बाग के तेवुं रम्य स्थान
रमाना स०क्रि० मोहित करवुं;लोभाववुं
रमूज़ स्त्री०[अ.'रम्ज़'नुं ब०व०]आंखनो

इसारो (२) रहस्य; झीणी वात

रम्ज़ स्त्री० [अ.] जुओ 'रमूज़'

रम्हाना अ०क्रि० जुओ 'रँभाना'

रय्यत स्त्री० 'रअय्यत'; रैयत

रली स्त्री० मजा; आनंद; खेल

रवन्ना पुं० रवानगीनो भरतिया जेवो कागळ (२) नाकेथी जवा देवानो परवानो–नाकानी रसीद

रवाँ वि० [अ.]वहेतुं(२)जारी;चालु(३) प्रचलित [उचित;वाजबी

रवा पुं०दाणो;कण(२)रवो(३)वि०[फा.]

रवादार वि०संबंध राखनारुं(२)कणकीदार

रवाज स्त्री० [फा.] रिवाज

रवा-रवी स्त्री० जलदी; उतावळ

रविश स्त्री० [फा.] गति;चाल(२)ढंग; रीत;रवेश (३)क्यारीओमां वच्चे थई जती केडी के नानो रस्तो

रवैया पुं० [फा.] रवैयो; परिपाटी

रशीद वि०[अ.]बोध पामेलुं (२)सभ्य ने शिक्षित; संस्कारी

रश्क पुं० [फा.] ईर्षा; दाझ

रसद वि० [सं.] रसप्रद(२)स्वादिष्ठ(३) स्त्री०[फा.]भाग;वहेंचणी(४)सीधुं-सामान (५) [अ.] वेधशाळा

रसना अ०क्रि०चूवुं के झमवुं या धीरे धीरे झरवुं (२) रसमग्न के तन्मय थवुं (३) स्त्री० [सं.] जीभ

रसम स्त्री० जुओ 'रस्म'

रसमसा वि० तरबोळ (२) रसमय

रसाँ वि०[फा.]'पहोंचाडनार' ए अर्थमां शब्दने अंते. दा. त. 'चिट्ठी-रसाँ'

रसा स्त्री०[सं.] रसना(२)पृथ्वी(३)पुं० रसो (४) वि० [फा.] पहोंचनार

रसाई स्त्री० [फा.] पहोंचवुं ते

रसाल पुं०[सं.]शेरडी(२)आंबो(३)वि० रसाळ; मीठुं के सुंदर

रसाव पुं०झमवुं के चूवुं–'रसना'–ते

रसावर(–ल) पुं०जुओ 'रसौर'-'वखीर'

रसिया पुं०रसियो(२)फागणमां गवातुं एक प्रकारनुं गायन [पावती

रसीद स्त्री० [फा.] पहोंचवुं ते के तेनी

रसुन पुं० [सं.] लसण

रसूम पुं०[अ. 'रस्म'नुं ब०व०]नियम; धारो (२) धारा प्रमाणे आपवाना लागानुं धन. उदा० रसूम अदालत =अदालतमां केस करवा आपवुं पडतुं धन; कोर्ट-फी

रसोई स्त्री० रसोई (२) रसोडुं

रसोई-घर पुं० रसोडुं

रसौर पुं० जुओ 'वखीर'

रसौली स्त्री० रसोळी [मेळ; संबंध

रस्म स्त्री० [अ.] 'रसम'; रिवाज(२)

रस्सा पुं० रसो; जाडुं दोरडुं

रस्सी स्त्री० रसी; दोरडी

रहँकला पुं० रेंकडी के तेवी (तोप लादवानी) नानी गाडी

रहँट पुं० [सं. आरघट्ट] रहेंट

रहँटा पुं० रेंटियो

रहन स्त्री० रहेणी के रहेवुं ते

रहन-सहन स्त्री० रहेणीकरणी

रहना अ०क्रि०रहेवुं. **रहा जाना**=रहेवावुं (प्रायः आ प्रयोग नकार साथे). **रहा सहा**=थोडुं घणुं बचेलुं; रह्युंसह्युं [राहबर

रहनुमा, रहबर वि०[फा.] मार्गदर्शक;

रहम पुं० [अ.] रहेम (२) गर्भाशय

रहमत स्त्री०[अ.] रहेमत; दया

रहमान वि०[अ.]दया करनार(२) पुं० ईश्वर; रहेमान

रहल स्त्री० जुओ 'रिहल' [रवाल

रहवाल स्त्री० [फा. रहवार] घोडानी

रहाइश स्त्री०रहेणीकरणी(२) रहेठाण

रहाई स्त्री० 'रहेन' (२) चेन; आराम

राँगा पुं० सीसुं

राँभना अ०क्रि० (गायनुं) बांगरडवुं

राई काई करना=राई जेवडा टुकडा करवा [आपनुं; 'रावर'

राउर पुं०रणवास;जनानो(२)वि०(प.)

राक़िम वि० [अ.] राकिम; लेखक

राखी स्त्री० राखडी (२) राख; खाक

राखी पूनो स्त्री०बळेव;राखडीनी पूनम

राछ पुं० वणकरनुं राच (२) जान के सरघस (३) घंटीनो खीलडो

राज पुं० राज्य (२) राजा (३) कडियो

राज़ पुं० [फा.] रहस्य; मर्म

राजकर पुं० [सं.] जुओ 'राजस्व'

राजगीर पुं० 'राज'; कडियो

राजश्री स्त्री०[सं.]राज्यलक्ष्मी;राजानी विभूति [क्रोध; गुस्सो

राजस वि० [सं.] रजोगुणी (२) पुं०

राजस्व पुं० राजाने आपवानो कर

राज़िक़ पुं० [अ.] अन्नदाता(२)ईश्वर

राज़ी वि० [अ.]राजी;संमत(२)नीरोग (३)राजी;खुश(४) सुखी(५) स्त्री० 'रज़ामंदी'; सहमती

राज़ीनामा पुं०[फा.](वादी प्रतिवादीना) झघडानी पतावटनुं सुलेहनामुं

राड़ वि० नीच; क्षुद्र (२) कायर

रातिब पुं० [अ.]रातब; रोजनुं बांधेलुं सीधुं (प्रायः हाथी वगेरे पशुनुं)

रान स्त्री० [फा.] जांघ

राना पुं० राणो; राजा

रानी स्त्री० राणी(२)शेठाणी; स्वामिनी

राब स्त्री० शेरडीना रसने उकाळी मध जेवो करे छे ते पदार्थ

राबता पुं० [अ. राबित] मेळ(२)संबंध

राम वि० [फा.] सेवक (२)आज्ञांकित

राम-कहानी स्त्री० लांबु रामायण;लांबुं

लांबुं वर्णन

राम राम करके=भारे मुश्केलीथी

राम राम हो जाना=मरी जवुं

रामशरण होना=साधु थवुं(२)मरी जवुं

रामतरोई स्त्री० भींडो [राममंत्र

रामतारक पुं० [सं.]'रां रामाय नमः'ए

रामनामी पुं० रामनाम छापेलुं कपडुं

रामरज स्त्री० गोपीचंदन–पीळी माटी

राय स्त्री०मत;अभिप्राय;सलाह[अ.](२) पुं० राजा (३) सरदार (४) भाट

रायगाँ वि० [फा.] व्यर्थ; नकामुं

रायज वि० [अ.] प्रचलित

रार पुं० राड; झघडो; तकरार

राल स्त्री० [सं] राळ(२) [सं. लाला] लाळ; थूंक. **–गिरना, चूना, टपकना**=लाळ गळवी

रावटी स्त्री० नानो तंबू–डेरो(२)नानी छापरी के खुल्ली अडाळी

रावर पुं०(२)वि०जुओ'राउर' [लखनार

रावी पुं० [अ.] कथावार्ता कहेनार के

राशी पुं० [अ.]लांचियो; रुश्वत लेनार

रास पुं०[अ.]भूसिर(२)पशुओनी संख्या जोडे वपराय छे. उदा. 'चालीस रास बैल'=चालीस बळद(३)स्त्री० लगाम (४) [सं.] रासक्रीडा

रासिख़ वि०[अ.] दृढ; पकुं

रास्त वि० [फा.]ठीक;साचुं;वाजबी(२) सीधुं; सरळ (३) अनुकूळ

रास्तगो वि० [फा.] साचुं कहेनार

रास्ता पुं० [फा.] रस्तो (२)उपाय(३) प्रथा; चाल

राह स्त्री० [फा.] राह; रस्तो

राहख़र्च पुं० [फा.] वाटखरची

राहगीर पुं० [फा.] वटेमार्गु; मुसाफर

राहचलता पुं०'राहगीर'(२) रस्ते जतो –त्राहित माणस

राहज़न पुं०[फा,]लूंटारो;डाकु;वाटपाडु

राहज़नी स्त्री० [फा.] लूंट; धाड

राहदार पुं०[फा.]नाकुं लेनार; नाकेदार

राहदारी स्त्री० [फा.]रस्तानो कर;नाकुं

राह व रब्त या रस्म स्त्री० [फा.+अ.] मेळ; एकता; बनाव

राहिन पुं० [अ.] गीरो राखनार

राही पुं० [फा.] वटेमार्गु

रिंद पुं० [फा.] नास्तिक(२) स्वच्छन्दी (३) वि० मस्त; मदमस्त

रिंदा वि० निरंकुश; उद्दाम

रिआयत स्त्री०[अ.]नरम के दयाभर्यो व्यवहार (२) कमी; छूटछाट (३) ख्याल; विचार

रिआयती वि०[अ.] 'रिआयत'वाळुं

रिआया स्त्री० [अ.] रैयत

रिज़क़ पुं०[अ. रिज़्क] रोजी; निर्वाह

रिज़ाली स्त्री० रजाळुपणुं; नीचता

रिझा(०व)ना स०क्रि० रीझववुं
रिझाव पुं० रीझवुं ते
रिमझिम अ० झरमर झरमर (वरसवुं) (२) स्त्री० वर्षानी फरफर [तप
रियाज़ पुं०[अ.] परिश्रम; महेनत(२)
रियाज़ी स्त्री०[अ.]गणित,ज्योतिष इ० विद्याओ; गणितविद्या [नो वायु
रियाह स्त्री०[अ. 'रेह'नुं ब०व०]शरीर-
रिश्ता पुं० [फा.] नातो; संबंध
रिश्तेदार पुं० [फा.] सगो; संबंधी
रिस स्त्री० रीस; गुस्सो
रिसानी स्त्री० (प.) रीस
रिसाल पुं० राज्यनो कर
रिसालदार पुं० [फा.] रसालदार
रिसाला पुं० [फा.] रसालो
रिहल स्त्री०[अ.]पुस्तक राखवानी घोडी
रिहलत स्त्री०[अ.] कूच; रवानगी (२) मरण
रिहा वि० [फा.] मुक्त; छूटं
रिहाइश स्त्री० जुओ 'रहाहिश'
रिहाई स्त्री० [फा.] छुटकारो; मुक्ति
रींधना स०क्रि० 'राँधना'; रांधवुं
रीछ पुं० (स्त्री० **रीछनी**) रींछ
रीठा पुं०, **रीठी** स्त्री०अरीठी के अरीठुं
रीढ़ स्त्री० करोड; मेरुदंड
रीता वि० रिक्त; खाली
रीस स्त्री०'रिस';क्रोध (२) ईर्ष्या; दाझ (३) स्पर्धा; बराबरी. **–करना**= बराबरी करवी; स्पर्धवुं
रीसना अ०क्रि० रिसावुं; गुस्से थवुं
रीह स्त्री०[अ.]अपान वायु(२)वात;वायु
रुँदवाना स०क्रि० 'रौंदना'नुं प्रेरक
रुँधना अ०क्रि०रुंधावुं ('रूँधना'नुं कर्मणि)
रुकना अ०क्रि० रोकावुं; अटकवुं
रुकाव पुं० 'रुकावट'; रोकाण;अंतराय
रुक़्क़ा पुं० [अ.] रुक्को; चिट्ठी
रुक्न पुं० [अ.] स्तंभ
रुक्म पुं० [सं.] सोनुं
रुख़ पुं०[फा.]गाल(२) मों (३) मों पर जणाती मननी इच्छा (४) कृपादृष्टि (५) शेतरंजनुं महोरुं–हाथी (६) अ०तरफ;बाजूए [छुट्टी;रजा
रुख़सत स्त्री०[अ.]आज्ञा(२)रवानगी(३)
रुख़सती स्त्री०विदाय;वळाववुं ते [धन
रुख़सताना पुं०विदाय देती वेळा अपातुं
रुख़सार पुं० [फा.] गाल; कपोल
रुखाई स्त्री०रूक्षपणुं;शुष्कता(२)कठोरता
रुखानी स्त्री०सुतारनी फरसी [पीडा
रुज पुं०,**रुजा** स्त्री० [सं.] भांग(२)रोग;
रुजी वि० बीमार; रोगी
रुजू वि० [अ.] कशामां प्रवृत्त थयेलुं
रुठ पुं० क्रोध; गुस्सो
रुठाना स०क्रि० रूठववुं
रुतबा पुं० [अ.] होद्दो; पद(२) प्रतिष्ठा

रुनझुन, रुनुकझुनुक स्त्री० रूमझूम करतो झणकार
रुपना अ०क्रि० रोपावुं;'रोपना'नुं कर्मणि
रुपया पुं० रूपियो (२) धन; संपत्ति
रुपया-पैसा पुं० धन; संपत्ति
रुपहला वि० रूपेरी; चांदी जेवुं
रुब्रा वि० [अ.] चोथा भागनुं
रुबाई स्त्री० [अ.] रुबायत; एक चरण
रुमाली स्त्री० पट्टीवाळो त्रिकोणाकार लंगोट (२) मगदळनो एक दाव
रुलाई स्त्री० रोवुं ते
रुलाना स०क्रि० रडाववुं(२)रोवडाववुं; नष्ट के खराब करवुं
रुसवा वि०[फा.]बदनाम(नाम,रुसवाई)
रुसूख़ पुं० [अ.] दृढता; धैर्य(२) मेळ (३) विश्वास
रुसूम पुं० ब०व० [अ.] जुओ 'रसूम'
रुस्तम पुं०[फा.]प्रसिद्ध फारसी पहेलवान (२) बहादुर; वीर
रुस्तमी स्त्री० बहादुरी (२) जबरदस्ती
रू पुं०[फा.]मों(२)कारण;सबब. **-से**= रूए; अनुसार
रूई स्त्री० रू. **०दार** वि० रू भरेलुं
रूईदगी स्त्री० [फा.] वनस्पति
रूए स्त्री०[फा.] 'रू'; चहेरो (२)कारण
रूएदाद स्त्री० [फा.] जुओ 'रूदाद'
रूखा वि० लूखुं;रूक्ष;सूकुं(२)नीरस(३) कठोर (४) उदासीन; वेरागी
रूखासूखा वि०लूखुंसूकुं;सादुं साधारण (खावानुं)
रूदाद स्त्री० समाचार;हेवाल(२)दशा; [हाल(३)वर्णन
रूपा पुं० रूपुं; चांदी
रूपोश वि० [फा.] छूपुं; गुप्त (२) मों छुपावतुं; भागी छूटेलुं
रूबकार पुं०[फा.]रूबरू करवुं ते (२) हुकमनामुं
रूबराह वि०[फा.]सज्ज;तैयार(२)दुरस्त; [ठीक
रूम पुं०[फा.]तुर्कस्तान (वि०, -मी)
रूरा वि० रूडुं; सरस; सुंदर
रू-रिआयत स्त्री०[फा.+अ.] पक्षपात; तरफदारी [-ती)
रू-शनास वि० [फा.] परिचित (नाम,
रूस पुं० [फा.] रशिया (वि०, -सी)
रूसना अ०क्रि० रूठवुं;रोषावुं [खोडो
रूसी स्त्री०रशियन भाषा (२) माथानो
रूसियाह वि०[फा..] काळा मोंनुं (२) पापी (३) बदनाम (नाम, -ही)
रूह स्त्री०[अ.] आत्मा (२) सत्त्व; सार
रूहानी वि०[अ.]आत्मानुं के ते संबंधी; आध्यात्मिक
रेंकना अ०क्रि० भूंकवुं
रेंगटा पुं० खोलकुं
रेंगना अ०क्रि०धीरे धीरे, कीडीनी जेम, चालवुं (२) पेटे चालवुं

रेंट पुं० लींट; शेडा
रेंड़ पुं० एरंडो
रेंड़ी स्त्री० एरंडी
रेख स्त्री० रेखा; लीटी(२) निशानी (३) नवी फूटती मूछ. –भींजना या भीनना=मूछ फूटवी
रेग स्त्री० [फा.] रेती
रेगिस्तान पुं० [फा.] रेतीनुं रण
रेज़गारी, रेज़गी स्त्री० आनी बेआनी वगेरे परचूरण
रेज़ा पुं० [फा.] नानो टुकडो (२) कडिया-कामनो मजूर (३) रेजो; सोनीनी धातु गाळवानी नळी
रेज़िश स्त्री० [फा.] शरदी; सळेखम
रेत स्त्री० रेती (२) रेतीनुं मेदान (३) पुं० [सं.] वीर्य (४) पारो
रेतना स० क्रि० रेतडीथी घसवुं
रेता पुं० रेती के रेतीनुं मेदान (२) माटी
रेती स्त्री० रेतडी; कानस (२) नदी के दरियानो रेताळ किनारो
रेतीला वि० रेताळ
रेलठे(–पे)ल स्त्री० जुओ 'रेलपेल'
रेलना स० क्रि० धकेलवुं(२) खूब खावुं (३) अ० क्रि० ठसोठस भरावुं
रेलपेल स्त्री० खूब भीड (२) भरमार
रेला पुं० रेलो(२) हल्लो; धक्कंधक्का
रेह स्त्री० खारी माटी; ऊस
रेहन पुं० [फा.] गीरो [राखनार
रेहनदार पुं० [फा.] गीरवीदार; गीरो
रेहननामा पुं० [फा.] गीरो-खत
रैदास पुं० रहीदास भक्त (२) चमार
रैन(–नि) स्त्री० रात
रोंगटा पुं० रूवुं; रोम [बोलवुं ते
रोंगटी स्त्री० अणची; रमतमां वांकुं
रोआब पुं० 'रुआब'; रोफ [मुनीम
रोकड़िया पुं० खजानची; रोकड लेनार
रोगन पुं० [फा. रौग़न] रोगान
रोगनी वि० रोगानी; रोगान करेलुं
रोज़ पुं० [फा.] दिवस(२) अ० रोज
रोज़गार पुं० [फा.] धंधो(२) वेपार
रोज़गारी पुं० [फा.] वेपारी
रोज़-नामचा पुं० [फा.] डायरी; रोजनीशी
रोज़-ब-रोज़ अ० [फा.] दररोज; प्रतिदिन
रोज़मर्रा अ० [फा.] रोज; नित्य(२) पुं० व्यवहारमां चालती भाषा
रोज़ा पुं० [फा.] रोजो (२) उपवास
रोज़ाख़ोर पुं० [फा.] रोजो न करनार
रोज़ादार पुं० [फा.] रोजो करनार
रोज़ाना अ० [फा.] रोज; हमेश
रोज़ी स्त्री० [फा.] रोजी
रोज़ीना पुं० [फा.] दिवस के मासनी मजूरी; रोजी के पगार
रोटी स्त्री० रोटली (२) रसोई. –दाल चलना=निर्वाह थवो

रोड़ा पुं०रोडुं. –अटकाना, डालना= विघ्न पाडवुं

रोदसी पुं० [सं.] स्वर्ग (२) पृथ्वी

रोना अ०क्रि०रोवुं;रडवुं(२) चिडावुं के दुःख मानवुं (३)वि० रोतल (स्त्री० –नी) (४) पुं० दुःख; खेद

रोपनी, रोपाई स्त्री० रोपणी

रोब पुं० रुआब;रोफ;प्रभाव [आववी

रोयाँ पुं०रूवुं; रोम.–पसीजना=दया

रोर स्त्री०रोळ; कळाहोळ (२) धमाल; आंदोलन [धमसाण

रोला पुं० रोळ; शोरबकोर (२)

रोली स्त्री० कंकु [थयेलुं

रोवासा वि० (स्त्री० –सी) रडुं रडुं

रोशन वि०[फा.] प्रकाशमान(२)प्रसिद्ध (३) जाहेर; प्रगट

रोशन-चौकी स्त्री० शरणाई [वारी

रोशन-दान पुं०[फा.]प्रकाश आववानी

रोशन-दिमाग़ पुं०[फा.]उत्तम दिमाग-वाळो (२) छींकणी

रोशनाई स्त्री०[फा.] रुशनाई;शाही(२) जुओ 'रोशनी'

रोशनी स्त्री०[फा.]अजवाळुं;प्रकाश(२) दीवो के तेनो प्रकाश

रौंद स्त्री०कचडवुं ते(२) 'राउन्ड';चक्कर

रौंदना अ०क्रि० पगथी कचडवुं

रौ स्त्री० गति;चाल(२)वेग(३)पाणीनो प्रवाह (४) धून (कशी वातनी)

रौज़न पुं०[फा.]छिद्र;बाकुं(२)नानी बारी

रौज़ा पुं०[अ.]रोजो;समाधि(२)बगीचो

रौताइन स्त्री० रावनी स्त्री; ठकराणी

रौताई स्त्री० रावपणुं; सरदारी

रौनक़ स्त्री० [अ.] रोनक

रौरे स०(प.)'रउरे';आप(आदरवाचक)

रौला पुं० 'रोला'; शोरबकोर; धमाल

रौहाल स्त्री० (प.) घोडानी रवाल

ल

लंग पुं० [फा.] लंगडापणुं(२)वि०लंगडुं

लँगड़ा वि० लंगडुं (अ०क्रि० –ना)

लँगोट(–टा) पुं० लंगोट

लँगोटबंद पुं० ब्रह्मचारी

लँगोटिया यार पुं० लंगोटियो मित्र

लँगोटी पर फाग खेलना=थोडुं जोर छतां बहु करवुं

लंठ वि० मूर्ख; जड

लँडूरा वि० बांडुं (पक्षी) [वातो

लंतरानी स्त्री० शेखी;डिंग;मोटी मोटी

लंप पुं० 'लेम्प'; दीवो

लंबतड़ंग वि० लांबुं ताड जेवुं

लंबा वि० लांबुं.–करना=(माणसने) रवाना करवुं (२) जमीन पर लांबुं करी देवुं.
लंबाई(–न) स्त्री० लंबाई; लंबाण
लंबी तानना=लांबा थवुं; सूवुं
लअन-तअन स्त्री० [अ.] गाळो ने टोणा
लक्कड़हारा पुं० कठियारो
लकड़ा पुं० लाकडानुं डीमचुं
लकड़ी स्त्री० लाकडुं (२) बळतण; ईंधण (३) लाकडी
लकनत स्त्री० [अ.] तोतडापणुं
लक़ब पुं० [अ.] इलकाब; पदवी
लक़लक़ पुं० [अ.] सारस पक्षी; लगलग (२) वि० बहु दूबळुं पातळुं; नाजुक
लक़लक़ा पुं० वारंवार जीभ काढी हलाववी ते (२) महाकांक्षा (३) दमाम; रोब [लकवो थवो
लक़वा पुं० [अ.] लकवो. –मारना=
लकसी स्त्री० जुओ 'लग्गा'
लक़ा पुं० [अ.] चहेरो (२) एक पक्षी
लकीर स्त्री० लीटी. –का फ़क़ीर=विना समज्ये जूनाने वळगी रहेनार; चीलाचलु. –पीटना = वगर समज्ये रूढिने वळगवुं
लकुट(–टी) स्त्री० लाकडी
लक्कड़ पुं० लाकडानुं मोटुं डीमचुं
लक्क़ा पुं० [अ.] 'लक़ा'; एक पक्षी; लक्की
लक्खी वि० लाखी; लाखना रंगनुं (२) पुं० लखपति [एक सुगंधी वस्तु
लख़लख़ा पुं० [फा.] मूर्छा दूर करनार
लखलुट वि० उडाउ; अपव्ययी (आदमी)
लखेरा पुं० लाखनी चूडी इ० बनावनार
लखौटा पुं० कंकु वगेरे शृंगारनी सामग्री राखवानी पेटी के डवो
लख़्त पुं० [फा.] टुकडो
लग अ० लगी; सुधी (२) स्त्री० लगनी
लग़ज़िश स्त्री० [फा.] लपसवुं के ठोकर खावी ते
लगन स्त्री० लगनी (२) प्रेम (३) संबंध (४) पुं० विवाहनुं महुरत (५) [फा.] एक जातनी मोटी थाळी; परात
लगनपत्री स्त्री० कन्यानो बाप वरना पिताने लग्नमुहूर्त लखी मोकले ते
लगनवट स्त्री० लगनी; प्रेम
लगना अ० क्रि० लागवुं
लगनी स्त्री० नानी थाळी
लगमात स्त्री० कानो मात्रा वगेरेनां चिह्न
लगलग वि० जुओ 'लक़लक़'
लगातार अ० सतत; चालु; एक पछी एक
लगान पुं० लागवुं के लगाडवुं ते (२) महेसूल [पर्यन्त
लग़ायत अ० [अ.] लागु; साथे (२) सुधी;
लगार स्त्री० (प.) लागो; रिवाज (२) संबंध; 'लगाव' (३) लगनी; प्रीति (४) लागलागट थवुं ते; क्रम (५) मेदु

लगाव पुं०लागतुंवळगतु होवुं ते;संबंध
लगि अ० (प.) लगी; 'लग'
लग्गा पुं०लांबो वांस (२)वांसी के तेना जेवुं फळ वगेरे पाडवानुं साधन. –लगना=कामे लागवुं; काम शरू करवुं
लग्गी स्त्री० जुओ 'लग्गा'
लग़ियात स्त्री० [अ.]नकामी,वाहियात के जूठी वातो
लग्घड़ पुं० बाज पक्षी
लग्घा पुं० जुओ 'लग्गा'
लच(०क)ना अ०क्रि०लची पडवुं;लचकवुं
लजाना अ०क्रि०लाजवुं; शरमावुं (२) स०क्रि० लजववुं
लजारू(-लू) पुं० लजामणीनो छोड
लज़ीज़ वि०[अ.] लहेजतदार; स्वादिष्ठ
लजीला,लजोहा,लजौहाँ वि० लज्जाळु
लज्जालु पुं०[सं.] लजामणी; 'लजालू' (२) वि० लज्जाळु [आनंद
लज़्ज़त स्त्री०[अ.]लहेजत;मजा;स्वादनो
लटका पुं०चाल;हींडछा(२)लटको(३) बोलवामां लहेंको इ०करवुं ते–तेवी कृत्रिमता (४) नानो मंत्रोपचार के नुसखो
लटना अ०क्रि० थाक के कमजोरीथी लटी जवुं; नरम पडवुं (२) (प.) लोभावुं; लट्टु थई जवुं
लटपटा वि०लपटुं; ढीलुं(२)भांग्युंतूटयुं (शब्द माटे) (३) थाकेलुं (४) अस्तव्यस्त
लटपटाना अ०क्रि० (नाम, लटापटी, लटपटान)लथडावुं के अडबडियां खावां (२) लपटावुं
लटूरी स्त्री० वाळनी लट
लट्टू पुं० भमरडो. –होना=(कोई पर) लट्टु थवुं; लोभावुं के आसक्त थवुं
लट्ठ पुं० लट्ठ; मोटी लाठी
लट्ठमार वि०लठ मारनार(२)अप्रिय ने कठोर (वात के वचन)
लट्ठा पुं०जाडुं मोटुं लाकडानुं डीमचुं के पाटडो के थांभलो (२)एक जातनुं जाडुं कपडुं(३)५॥ वारनुं जमीननुं एक माप
लठैत पुं० लाठी चलावी जाणनार
लड़ंत स्त्री० लडाई; सामनो
लड़ स्त्री० लडी; सेर; माळा; लट
लड़का पुं०छोकरो(२)पुत्र(स्त्री०,–की)
लड़का-बाला पुं० संतान; परिवार
लड़खड़ाना अ०क्रि०लथडावुं; लडथड़ावुं
लड़ाका वि०लडनार(२)लडाकु;लडकणुं
लड़ाकू वि०लडवामां काम लागनार(२) लडाकु
लड़ुआ(–वा) पुं० लाडवो; लड्डु
लड़ैता वि०लाडकुं;'लाडला'(२)लडनार

लड्डू पुं० लड्डु. (मनके) लड्डू खाना या फोड़ना = खाली तरंग करवा (शेखचल्ली जेवा)
लढ़िया स्त्री० बेलगाडी
लतख़ोर(-रा) वि० लात खातुं (२) नीच; क्षुद्र (३) पुं० पगलुछणियुं
लतर स्त्री० लता; वेल
लताड़ना स०क्रि० गूंदवुं; कचडवुं(२) लताडवुं; हेरान करवुं
लताफ़त स्त्री०[अ.] सूक्ष्मता;कोमळता (२) स्वाद (३) उत्तमता
लतियाना स०क्रि० लाताटवुं
लतीफ़ वि० [अ.]मजेदार;स्वादिष्ठ(२) उत्तम (३) सूक्ष्म; कोमळ
लतीफ़ा पुं० [अ.] लतीफो; टुचको; मजेदार के गमतनी वात
लत्ता पुं० चींथरुं (२) कपडानो टुकडो
लत्ती स्त्री० (पशुनी) लात (२) धजा (३) पतंगनुं पूंछडुं
लथपथ वि० लदबद; तरबोळ
लथाड़ स्त्री० जमीन पर पटकी बरोबर रगडवुं ते (२) हार
लथा(-थे)ड़ना स०क्रि० रगदोळवुं (२) जमीन पर पटकी रगडवुं(३)लताडवुं; हेरान करवुं (४) वढवुं
लदना अ०क्रि० लदावुं
लदाव पुं० लादवुं ते (२) बोजो
लदुवा, लद्दू वि० बोजो उठावनारुं
लद्धड़ वि० सुस्त; आळसु
लप पुं० पोश; अंजलि
लपक स्त्री० आगनी ज्वाळा(२)चमक (३) वेग; तेजी
लपकना अ०क्रि०वेगथी धसवुं;कूदी पडवुं
लपट स्त्री० ज्वाळा (२)आंच(३)महेक
लपटना अ० क्रि० 'लिपटना'; लपटावुं
लपलपाना स०क्रि० (२) अ०क्रि० लपलप करवुं के थवुं (जीभ) (२) चाबुक फटफट करवी के थवी(३) चाकु इ० चमकवुं के चमकाववुं
लपसी स्त्री० लापसी (२) राब
लपेट(०न) स्त्री० लपेटवुं ते(२) लपेटो; लपेटवानुं चक्कर (३) घेराव (४) लपटामण; पंचात
लफंग(-गा) वि० [फा.] लफंगुं
लफ़्ज़ी वि० [अ.] शाब्दिक. -मानी पुं० शब्दार्थ
लफ़्फ़ाज़ वि०शेखी मारनार(नाम,-ज़ी)
लब पुं० [फा.] होठ(२)थूंक;लाळ (३) किनारो
लबड़-धोधों स्त्री० नकामी धमाल(२) गोटाळो; अंधेर(३) लबाडीपणुं
लबरेज़ [फा.] जुओ 'लबालब'
लब व लहजा पुं०[फा.]बोलवानी रीत
लबादा पुं०[फा.]एक लांबो रुयेल डगल

लबार वि० लबाड; जूठो (२) गप्पी
लबारी वि०लबाडी(२)स्त्री०लबाडीपणुं
लबालब अ०[फा.] ठेठ काना सुधी–छलोछल भरेलुं
लबे-गोर वि० [फा.] घोर नजीक पहोंचेलुं; मरणने कांठे आवेलुं
लबेद पुं० वेदमां नहि एवुं पण लोकाचारनुं वचन [प्रतिष्ठित
लब्ध-प्रतिष्ट वि०[सं.] प्रतिष्ठा पामेलुं;
लमतड़ंग वि० जुओ 'लंबतड़ंग'
लमधी पुं० वेवाईनो बाप
लमहा पुं० [अ.] क्षण; जरा वार
लरज़ना अ०क्रि०कंपवुं;हालवुं(२)डरवुं
लरज़ा पुं० कंप (२) भूकंप
ललक स्त्री० प्रबळ के ऊंडी इच्छा; लालच (अ०क्रि०, ललकना)
ललकार स्त्री०पडकार;आह्वान (स०क्रि० ललकारना) [ललचना)
ललचाना स०क्रि०ललचाववुं(अ०क्रि०,
लला पुं० (स्त्री० –ली) प्रिय पुत्र के नायक या पति (संबोधन)
ललाई स्त्री० लाली
ललाना अ०क्रि० इच्छा के लालच करवी; मेळववा आतुर बनवुं
लली स्त्री० 'लला'नुं स्त्री०
लल्ला पुं० जुओ 'लला'
लल्लो पुं० जीभनो लोलो–जीभ
लल्लो-चप्पो,–पत्तो स्त्री० खुशामत
लवनि(–नी) स्त्री० लणणी(२)माखण
लवलीन वि० तल्लीन; मग्न
लवाज़मा,लवाज़िम [अ.]पुं० साथेनो रसालो के सरसामान (२) जरूरी सामग्री [वियायेली गाय
लवाई स्त्री०जुओ 'लुनाई'(२)(प.)तरत
लशकर पुं० [फा.] लश्कर(२) छावणी (३) खलासीओनी टुकडी
लशु(–सु)न पुं० [सं.] लसण
लस पुं० [सं.] चीकाश के चीकणी वस्तु (२) आकर्षण
लसदार वि० चीकणुं
लसना स०क्रि० चोटाडवुं; चिपकाववुं (२)अ०क्रि०लसवुं;शोभवुं;चळकवुं
लसम वि० खोटुं; जूठुं; दूषित
लसलसा वि० चीकणुं
लसी स्त्री० जुओ 'लस' (२) लोभ; फायदानी नजर (३) संबंध (४) दूध पाणीनुं शरबत
लसीला वि०चीकणुं (२) रसीलुं; सुंदर
लस्टम पस्टम अ० गमे तेम करीने
लस्त वि० थाकेलुं (२) अशक्त
लस्सान वि० [अ.] वातोडियुं [छाश
लस्सी स्त्री०चीकाश; 'लसी' (२)जाडी
लहँगा पुं० घेरदार घाघरो
लहक स्त्री०लहेकवुं ते(२)लळक;चमक

लहकना अ०क्रि० लहेकवुं(२) चमकवुं

लहकौर(-रि) स्त्री०वरकन्या अरसपरस खवडावे ते विधि

लहजा पुं०[अ.]गावा बोलवामां लहेंको –आरोहअवरोह

लहज़ा पुं० [अ.] लहेजो; पळ; क्षण

लह ज़ा ब लहज़ा अ० प्रतिपळ;क्षणे क्षणे

लहद स्त्री० [फा.] कबर; घोर

लहनदार वि० लेणदार

लहना स०क्रि०[सं.लभन]लहेवुं; मेळवुं (२) पुं० लेणुं

लहबर पुं० एक जातनो मोटो चोगो–अंगरखुं (२) झंडो

लहमा पुं० [अ.] 'लहज़ा'; क्षण

लहर स्त्री०लहेर(अ०क्रि०,लहर(-रा)ना)

लहरा पुं० लहेर; मोजुं के मजा

लहलहा वि० भर्युंभादर्युं (२) प्रफुल्ल; फूल्युंफाल्युं (अ०क्रि०, –ना)

लहसुन पुं० [सं. लशुन] लसण

लहालोट वि० आनंदमग्न (२) मुग्ध; लट्टु थयेलुं [माटे)

लहुरा वि० (स्त्री०–री) लघु; नानुं(भाई

लहू पुं० लोही. –लुहान=लोहीलुहाण

लाँग स्त्री० काछडी

लाँघना स०क्रि० ओळंगी जवुं; लंघवुं

ला अ० [अ.] नकार दर्शावतो पूर्वग. उदा० ला-चार, ला-इलाज

लाई स्त्री० जुओ 'लावा'

लाई लुतरी स्त्री० चाडीचुगली (२) चुगलीखोर स्त्री

ला-कलाम वि० [अ.]निस्संदेह;निश्चित

लाख टकेकी बात=खूब महत्त्वनी वात

लाग स्त्री० संबंध(२)लाग; आधार(३) प्रेम (४)लाग; युक्ति (५) विवाहनुं दापुं (६) जुओ 'लागडाँट'

लाग-डाँट स्त्री० शत्रुता (२) प्रतिस्पर्धा

लागत स्त्री० पडतर खर्च [-री

लाग़र वि० [फा.] दूबळुं; सूकलुं (नाम,

लागि अ०(प.) लईने; लीधे; कारणथी

लागू वि० लागु; लागे एवुं

लाजवर्द पुं० [फा.] एक जातनो हीरो

ला-जवाब वि०[फा.]अनुपम(२)निरुत्तर

ला-ज़वाल वि० [अ.] अविनाशी

लाजा स्त्री०[सं.]चोखा(शेकेला)(२)धाणी

लाज़िम वि०[अ.]जरूरी;अनिवार्य (२) लाजम; योग्य

लाज़िमी वि० [अ.] आवश्यक;जरूरी

लाट(–ठ) स्त्री० मोटो ऊंचो थांभलो (२)पुं० लोट;जथ्थो(३)लाट साहेब

लाटी स्त्री० (प.) होठ जीभनुं सुकावुं ते

लाड़लड़ैता, लाड़ला वि०लाडीलुं;प्यारुं

लाद स्त्री० लादवुं ते(२)पेट(३)आंतरडुं

लादवा वि० [अ.]लाइलाज;जेनी दवा

नथी एवुं
लादी स्त्री० लादेडो; लादवानो भार
लानत स्त्री०[अ. लअनत]ल्यानत;धिक्कार
लाना स०क्रि० लाववुं;लई आववुं (२) सामे राखवुं; रजू करवुं
ला-पता वि० पत्ता वगरनुं; गूम; गेब
लापरवा(०ह) वि० [फा.] बेदरकार
लापरवाही स्त्री०[फा.]लापरवाई [फूल
लाफ़-ज़नी स्त्री०[फा.]शेखी मारवी ते;
लाबुद वि० [अ.] जरूरी; आवश्यक
लाम पुं० [फा.] सेना; लश्कर [शब्द
लाम-काफ़ पुं०[फा.]मम्मोचच्चो;अप-
लार स्त्री०लाळ(२)लार;हार. **–लगाना**= मधलाळ लगाडवी
लारी स्त्री० [इं. 'लोरी'] मोटर-बस
लालची वि० लालचु; लोभी
लालटेन स्त्री० दीवो; फानस
लालबुझक्कड़ पुं० वातनो उटपटांग अर्थ काढनार
लाल मिर्च स्त्री० लाल मरचुं
लालित वि०[सं.]प्यारुं(२)पाळेलुं पोषेलुं
लाली स्त्री० लालाश (२) आबरू
लाले पुं० लालसा. **–पड़ना**=(कोई चीजनी) लालसा थवी–तरसवुं
लाव स्त्री० दोरडुं; वरत [ललणी
लावनी स्त्री० लावणी छंद (२) लाणी;
लावल्द वि०[अ.]निःसंतान(नाम,-ल्दी)
लावा पुं० 'लाजा'; धाणी
ला-वारिस पुं० [अ.](वि०-सी)वारस वगरनुं माणस [पदार्थ
लासा पुं० 'लस';गुंदर के एवो चीकणो
ला-सानी वि० [अ.]अद्वितीय;अजोड
लाह स्त्री०लाख(२)पुं०(प.)लाभ;फायदो
लाहक़ वि०[अ.] जोडायेलुं; संबद्ध(२) निर्भर; आश्रित
ला-हासिल वि० [अ.] निरर्थक;नकामुं
लाहु पुं० (प.) जुओ 'लाह'
लाहौल पुं०[अ.]भूतप्रेतादिने भगाडवा बोलाता अरबी वाक्यनो पहेलो शब्द. **–पढ़ना,–भेजना**=ए मंत्र भणवो
लिंगी पुं० चिह्नवाळो(२) आडंबरी
लिए अ० माटे; वास्ते
लिक्खाड़ पुं०भारे मोटो लेखक(व्यंगमां)
लिक्षा स्त्री० [सं.] लीख
लिखत स्त्री० लिखित; लेख
लिखना स०क्रि०लखवुं(प्रेरक,**लिखाना**)
लिखाई स्त्री०लखवुं ते के तेनी ढब के मजूरी (२) लेख
लिखापढ़ी स्त्री०लखापट्टी; पत्रव्यवहार (२)कशाने लखी लई नक्की करवुं ते
लिटाना स०क्रि० 'लेटना'नुं प्रेरक
लिथड़ना अ०क्रि०लदबद थवुं;रगदोळावुं
लिपटना अ०क्रि०लपटावुं(२)गळे वळगवुं

(३) तन्मय थईने कोई काममां पडवुं
लिपना अ०क्रि० लींपावुं, धोळावुं, के रंगावुं; 'लीपना'नुं कर्मणि
लिपाई स्त्री० लींपवुं ते के तेनी मजूरी
लिपाना स०क्रि० 'लीपना'नुं प्रेरक
लिपिबद्ध वि० [सं.] लखेलुं
लिफ़ाफ़ा पुं०[अ.]परबीडियुं(२)उपरनो आडंबर(३) देखावडो पहेरवेश
लिफ़ाफ़िया वि० आडंबरी
लियाक़त स्त्री०[अ.]लायकात;योग्यता
लिल्लाह अ० [अ.] ईश्वरना नामथी
लिवाना स०क्रि०लवडाववुं(२)लेवडाववुं
लिवाल पुं० खरीदनार के लेनार; लेवाल करनार
लिहाज़ पुं०[अ.] ख्याल; कोई वातनुं ध्यान(२) विवेकमर्यादा; अदब
लिहाड़ा वि० नीच (२) खराब
लिहाफ़ पुं०[अ.]ओढवानुं गोदडुं के रजाई
लीक स्त्री०लीक(रेखा के हद)(२)चीलो (३)पडेली प्रथा; रूढि. **-खिंचना**= अटल के दृढ निश्चय करवो (२) मर्यादा बांधवी.**-खींचकर**=नक्की (२) जोर दईने. **-पीटना**=रूढि प्रमाणे चालवुं; चीले चालवुं
लीचड़ वि०नकामुं;'बेकाम' (२) लेण-देणमां ठीक न होय एवुं
लीतड़ा(-रा) पुं० जूनो फाटेलो जोडो
लीद स्त्री० (पशुनी) लाद
लीपना स० क्रि० लींपवुं. **-पोतना**= लींपवुं गूपवुं. **लीप पोतकर बराबर करना**=सत्यानाश वाळवुं
लीलना स०क्रि० गळवुं; गळे उतारवुं
लुँगाड़ा पुं० लफंगो [ठूंठुं (झाड)
लुंज,०पुंज वि० हाथपग वगरनुं(२)
लुंड पुं० धड; कबन्ध
लुंडमुंड वि०हाथपग के माथा वगरनुं (२)पान वगरनुं;ठूंठुं [पक्षी)
लुंडा वि०पांख के पूछडी वगरनुं (पशु,
लुआठा पुं० खोरियुं; उबाडियुं
लुआब पुं० [अ.] जुओ 'लासा'
लुक स्त्री० 'लूक'; झोळ
लुक(-का)ना अ०क्रि० संतावुं; छुपावुं
लुकठी स्त्री०जुओ'लुआठा' [खाई जवुं
लुक़मा पुं०[अ.] कोळियो. **-करना**=
लुकाना अ०क्रि० 'लुकना'(२)स०क्रि० तेनुं प्रेरक [कोश
लुग़त स्त्री०[अ.] भाषा;बोली(२)शब्द-
लुगरी स्त्री० जूनी फाटेली साडी
लुग़ात स्त्री०['लुगत'नुं ब०व०]शब्दकोश
लुगाई स्त्री० स्त्री; ओरत
लुग़वी वि० [अ.] शाब्दिक
लुच्चा वि० दुराचारी; लफंगुं; बदमाश
लुटना अ०क्रि० लूंटावुं(२)बरबाद थवुं
लुटिया स्त्री० नानी लोटी

लुटेरा पुं० लुटारो [ढ़काना)
लुढ़कना अ०क्रि०गबडवुं (प्रेरक —लु-
लुतरा वि० चुगलीखोर; निंदक
लुत्फ़ पुं०[अ]मजा;आनंद(२)रुचि;स्वाद
लुनना स०क्रि० लणवुं
लुनाई स्त्री० लणणी के तेनी मजूरी
लुनेरा पुं० लणनार
लुब्ब-लुबाब पुं० [अ.] सार; सत्त्व
लुभाना अ०क्रि० लोभावुं;ललचावुं के
मोहावुं (२) स०क्रि० लोभाववुं
लुहारी स्त्री० लुहारण (२) लुहार-काम
लू मारना,लगना=लू लागवी
लूक स्त्री० झोळ(२)लू(३)खरतो तारो.
—लगाना=आग लगाडवी
लूका स्त्री० झोळ (२) खोरियुं
लूटपाट,लूटमार स्त्रीं० लूटफाट; डाको
लूलू पुं० [फा.] हाउ (२) मूर्ख
लेंड़ी स्त्री० [सं. लेंड] लींडी के लींडुं
लेंहड़(—ड़ा) पु० समूह;लंगर(पशु माटे)
ले अ० लईने; शरू करीने; 'लेकर'
लेई स्त्री० लाही
लेकिन अ० [अ.] पण; परंतु
लेज़िम स्त्री० [फा.] लेजीम
लेटना अ०क्रि०लेटवुं (प्रेरक, लेटाना)
लेन पुं० लेवुं ते (२) लेणुं
लेनदेन पुं० लेणदेण
लेना स०क्रि० लेवुं.आड़े हाथों लेना=
छूपो टोणो मारी शरमाववुं —
झंखवाणुं पाडवुं. लेनेके देने पड़ना=लेवाने बदले देवुं पडवुं; लाभने
बदले हानि थवी. लेना एक न
देना दो=कशी लेवादेवा नथी:
कानमें लेना=सांभळवुं
लेपना स०क्रि० लींपवुं; लेपन करवुं
ले-पालक पुं० दत्तक पुत्र
लेबुल पुं० लेबल; नामठामनी चिठ्ठी
लेव पुं० लेप (२) कंटेवाळो
लेवा-देई स्त्री० लेणदेण
लेवाल पुं० जुओ 'लिवाल'
लेसना स०क्रि०लगाडवुं;बाळवुं(२)लेप
करवो; 'पोतना'(३) चोटाडवुं(४)
अहींनुं तहीं कही लडाडवुं;चुगली
करवी [माटे
लेह(—हा)ज़ा अ० [अ.] एटला वास्ते;
लेहड़ा पुं० लार; लांबी हार
लैत व लअ़ल पुं०[अ.]बहानुं;(वात के
कांई) टाळवुं ते [कामळी
लोई स्त्री०कणकनो लूओ(२)एक जातनी
लोकना स०क्रि० झीलवुं (२) अध्धर
उठावी लेवुं; वच्चेथी ज उठाववुं
लोखर पुं०हजाम के लुहारनां ओजार
लोग पुं०ब०व० लोको
लोट स्त्री० लोटवुं ते
लोटिया स्त्री० नानो लोटो; लोटी

लोढ़ना स०क्रि०लोढवुं(२)चूंटवुं;तोडवुं
लोढ़ा पुं० निशातरो; वाटवानो पथ्थर
लोढ़िया पुं० नानो 'लोढ़ा'
लोथड़ा पुं० मांसनो लोचो
लोन पुं० लूण; मीठुं (२) लावण्य
लोना वि० मीठावाळुं;खारुं(२) लवण; सुंदर(३)पुं० दीवालनो लूणो (४) खारी माटी
लोबिया पुं०[फा.] शाकनी एक फळी
लोरी स्त्री० हालरडुं
लोहा पुं० लोह; लोढुं (२) हथियार (३)लोढानुं ओजार. **–बजना**= युद्ध थवुं. (किसीका) **लोहा मानना**=हारवुं. **–लेना**=लडवुं
लोहार पुं० (स्त्री०लोहाइ(–रि)न) लुहार
लोहारी स्त्री० 'लुहारी'; लुहारकाम
लोहिया पुं० लोढानो वेपारी (२) मारवाडीनी एक जात
लोहू पुं० लोही
लौंग पुं० लविंग
लौंडा पुं०छोकरो स्त्री०,–डी,–डिया)
लौंडी स्त्री० लूंडी
लौंद पुं० अधिक मास
लौंदा पुं० लोंदो; 'लोंदा'
लौ स्त्री० आगनी झोळ(२)दीवानी शग (३) लगनी; चाह (४) आशा
लौकी स्त्री० दूधी
लौटना अ०क्रि० पाछुं आववुं (२) ऊलटुं थवुं (नाम, लौट स्त्री०)
लौट पौट स्त्री० ऊलट सूलट करवु ते (२)बेउ बाजू सरखुं छापकाम
लौट फेर पुं० फेरफार; परिवर्तन
लौटाना स०क्रि० पाछुं आपवुं (२) उलटाववुं; फेरववुं
लौनी स्त्री० लाणी (२) (प.) माखण
लौलीन वि० (प.) जुओ 'लवलीन'
लौस पुं० [अ.] संबंध (२) मेळ
लौह पुं०[सं.]लोह(२)स्त्री०[अ.]लाकडानुं पाटियुं (३) पुस्तकनुं मुखपृष्ठ
ल्यारी पुं० वरु; 'भेड़िया'

व

वंकट वि० वांकुं (२) विकट
वंकनाल पुं०,–ली स्त्री० सुषुम्णा नाडी
वंद [फा.] 'वाळुं' ए अर्थमां शब्दने अंते लागतो प्रत्यय
वंदीगृह पुं० बंदीगृह; जेल
वंदीजन पुं० [सं.] बंदीजन

वंशी स्त्री० [सं.] वंसी; वांसळी

वंशीवट पुं० [सं.] वृंदावननो वंसीवट

व अ० [फा.] अने ['वरना'

व-इल्ला अ०[अ.] नहीं तो;अगर तो;

वक़अत स्त्री० [अ.] ताकात (२)शाख; आबरू (३) किंमत; महत्त्व

वक़ाया पुं०ब०व० [अ.] बनावो के तेनी खबरो [स्थिरता

वक़ार पुं०[अ.]शील;चारित्र्य(२)मननी

वकालतन् अ. [अ.] वकील द्वारा

वक़ूअ(-आ) पुं० [अ.] घटना; बनाव

वक़ूफ़ पुं० [अ.] ज्ञान; समज

वक़्त पुं० [अ.] वखत

वक़्तन्-फ़वक़्तन्,-फ़ौक़्तन् अ०[अ.] कोई कोई वार; वखते वखते

वक्तव्य पुं० जाहेर निवेदन; 'स्टेटमेन्ट'

वक़्फ़ पुं० [अ.] वकफ-धर्मादा माल-मिलकत

वक़्फ़ा पुं० [अ.] छुट्टी; आराम

वगर अ० 'अगर'; यदि; जो

वगर-ना अ० नहीं तो; अगर तो

वग़ैरह अ० [अ.] वगेरे [दशा

वजद पुं०[अ.वज्द] अति हर्षनी मस्त

वज़न पुं० [अ.] वजन; भार

वज़नी वि. [फा.] वजनदार; भारे

वजह स्त्री० [अ.] कारण; हेतु

वजा पुं० [अ.] पीडा; दरद

वज़ा स्त्री० [अ.] बनावट; रचना (२) दशा; हाल(३) प्रसव; जणवुं ते

वज़ादार वि० सरस रचनावाळुं; सुंदर

वज़ारत स्त्री०वजीरपदुं के तेनी कचेरी

वज़ीफ़ा पुं० [अ.] वजीफो; विद्वान, विद्यार्थी के त्यागी वगेरेने दानमां अपाती वृत्ति (२) जप के पाठ

वज़ीर पुं० [अ.] वजीर (नाम, -री)

वज़ू पुं० [अ. वुज़ू] वजू; नमाज पहेलां कराती शौचविधि

वजूद पुं० [अ.वुजूद] सिद्धि; सफळता (२) अस्तित्व; हयाती (३) देह; शरीर.-पाना=स्थपावुं; हयातीमां आववुं. -में लाना = हयातीमां आणवुं; स्थापवुं

वजूहात स्त्री०['वजह'नुं ब०व०]कारणो

वतीरा पुं० [अ.वतीर] रंगढंग; पद्धति

वफ़ा स्त्री० [अ.] वफा; प्रामाणिकता; ईमानदारी (२) सुशीलता

वफ़ात स्त्री०[अ.]मरण [महामारी

वबा स्त्री० [अ.] कोलेरा, प्लेग जेवी

वबाल पुं० [अ.] भार; बोजो (२) आफत (३) ईश्वरी कोप

वयस्क वि० [सं.] उंमरनुं (समासमां) (२) उंमरे पहोंचेलुं; सगीर मटेलुं

वरंच अ० [सं.] बल्के (२) परंतु

वर [फा.] 'वाळुं' ए अर्थनो प्रत्यय.

उदा० 'हुनरवर'
वरक़ पुं० [अ.] सोनाचांदीनो वरख (२) पुस्तकनुं पानुं
वरग़लाना स०क्रि० बहेकाववुं; फटववुं (२) उश्केरवुं
वरज़िश स्त्री०[फा.] व्यायाम; कसरत
वरण पुं०[सं.] वरवुं के पसंद करवुं ते (२) मंगळकार्यमां होता वगेरेने देवातुं दान
वरदी स्त्री० [अ.] असलदार वगेरेनो खास पोशाक; 'युनिफॉर्म'
वरन् अ० बल्के
वरना अ०[अ.] नहीं तो; अगर तो
वरसा पुं० [अ.वर्सः] वारसो
वरासत स्त्री०वारसो के वारस होवुं ते
वरुणालय पुं० [सं.] समुद्र
वर्ग़लाना स० क्रि० जुओ 'वरग़लाना'
वर्ज़िश स्त्री० [फा.] जुओ 'वरज़िश'
वर्दी स्त्री०जुओ 'वरदी' [आवेश
वलवला पुं०[अ.] शोर (२) उत्साह;
वलादत स्त्री० [अ.विलादत] प्रसव
वलाहक पुं०[सं.] वादळ (२) पर्वत
वलि(-ली) पुं०[सं.] रेखा; करचली
वली पुं०[अ०]मालिक(२)पीर;फकीर. -अल्लाह पुं० मोटो फकीर. -अहद पुं० युवराज
वले,वलेक,वलेकिन [अ.]अ०परंतु;पण
वल्द पुं० [अ.] पुत्र ('वलदे, विन' ए अर्थमां दस्तावेजमां वपराय छे)
वल्दियत स्त्री० [अ.] बापनुं नाम दई परिचय आपवो ते
वल्लाह अ०[अ.]ईश्वरना सोगन;खरेखर
वल्लाह-आलम [अ.]दैव जाणे;कोण जाणे
वसअ,वसअत स्त्री० विस्तार; फेलावो (२)क्षेत्रफळ(३) वसात; सामर्थ्य
वसमा पुं०[अ] वाळनो कलफ
वसवास पुं०[अ.]वसवसो;आशंका;संदेह
वसी पुं० [अ.] वारस; जेने नामे वसियत करी होय ते
वसीक़ा पुं० [अ.] वकफनो दस्तावेज
वसीयत स्त्री० [अ.] वसियत
वसीला पुं०[अ.]वसीलो;संबंध;सहाय के आशरो(२)रस्तो;कार्यसिद्धिनो मार्ग
वसूली स्त्री० वसूलात; वसूल करवुं के करवावुं ते; प्राप्ति
वस्त पुं०[अ.](वि० -स्ती) मध्यभाग
वस्फ़ पुं० [अ.] गुण; विशेषता; खूबी
वस्ल पुं० [अ.] मिलन (२) मृत्यु
वस्साफ़ वि०[अ.]प्रशंसक; वखाणनार
वह स० ते (२) वि० पेलुं
वहदत स्त्री० [अ.] एकता
वहदानियत स्त्री०एकता(२)अद्वितीयता
वहम पुं० [अ.] (वि० -मी) वहेम
वहशत स्त्री०[अ.]जंगलीपणुं;असभ्यता

(२)गांडपण(३)चंचळता;अधीराई (४) डर;भय; भयंकरता
वहशी वि०[अ.] जंगली; असभ्य (२) अधीर; चंचळ
वहाँ अ० त्यां [तेनो अनुयायी
वहाबी पुं० एक मुसलमान संप्रदाय के
वहीं अ० त्यां ज
वही स० [वह ही] ते ज (व्यक्ति) (२) स्त्री० [अ.] खुदानो पेगाम
वहीद वि० [अ.] अनुपम; अजोड
वाइज़ पुं०[अ.] धर्मोपदेशक; वायेज
वाक़अ पुं० [अ.] घटना; बनाव
वाक़ई वि० [अ.] यथार्थ;साचुं(२)अ० खरेखर; साचे; वस्तुतः
वाक़फ़ियत स्त्री० [अ.] वाकेफगारी; जाण (२) परिचय
वाक़या पुं० [अ. वाक़िअ] बनाव (२) समाचार [आवेलुं; स्थित
वाक़ा वि० [अ.] बननारुं; थनारुं (२)
वाक़िफ़ वि० [अ.] वाकेफ
वाक़िफ़कार वि० वाकेफगार; प्रवीण
वाक़ियात स्त्री०[अ.]'वाक़या'नुं ब०व०
वाक़ूफ़ियत स्त्री० जुओ 'वाक़फ़ियत'
वागुरा स्त्री० [सं.] जाळ; फांदो
वाग्मी पुं० [सं.] अच्छुं बोलनार (२) बृहस्पति (३) पंडित
वाज़ पुं०[अ.]उपदेश(२)धार्मिक कथा
वाज़ा वि० [अ.] जाहेर; खुल्लुं; स्पष्ट
वाजिब(-बी) वि०[अ.]वाजबी [कार्यो
वाजिबात स्त्री० ब०व०[अ.] आवश्यक
वाज़ेह वि० [अ.] मालूम; प्रतीत. **-होना**=मालूम पडवुं
वातुल वि० [सं.] गांडुं; पागल
वादा पुं०वायदो;करार;वचन.**-खिलाफ़ी करना**=वायदाथी विरुद्ध करवुं
वापस वि० [फा.] पाछुं. **-करना**=पाछुं आपवुं. **-होना**=पाछुं फरवुं (२) पाछुं अपावुं [पाछुं फरवुं ते
वापसी वि०पाछुं फरतुं-वळतुं(२)स्त्री०
वाफ़िर वि० [अ.] खूब; पुष्कळ
वाफ़ी वि० [अ.] पूरतुं; जोईए तेटलुं
वाबिस्ता पुं०[फा.] वाबस्तुं;सगुं; संबंधी
वाय अ०[फा.] 'हाय' अर्थनो उद्गार
वारदात स्त्री० [अ.] दुर्घटना (२)दंगो फिसाद; मारामारी
वारना स०क्रि० ओवारवुं (२) पुं० वारणुं. **वारने जाना**=वारी जवुं
वारपार पुं०(नदीनी)आ पारथी ते पार; पूरो विस्तार (२) अ० पारोपार
वारफेर स्त्री० बलि; न्योछावर करेलुं ते
वारा पुं०करकसर(२)लाभ(३)वि०सस्तुं (४) (व्रजमां) वाळुं; 'वाला' (५) वारी गयेलुं; न्योछावर
वारा-न्यारा पुं० फेंसलो; निवेडो

वारिद वि० [अ.] आवनार (२) पुं० महेमान (३) दूत
वारिस पुं० [अ.] वारस [वालो)
वाला 'वाळुं' अर्थनो प्रत्यय (स्त्री०
वाला वि० [फा.] उच्च; श्रेष्ठ
वालिद पुं० [अ.] पिता
वालिदा स्त्री० [अ.] माता
वालिदैन पुं०ब०व० [अ.] मावाप
वावैला पुं० [अ.] रोककळ(२)शोरबकोर
वास पुं० [सं.] वास; घर के रहेठाण (२) सुवास; सुगंध
वासिक़ वि० [अ.] दृढ; पाकुं
वासिल वि० [अ.] वसूल थयेलुं; मळेलुं
वासिल बाकी स्त्री० [अ.] वसूल बाकी. –नवीस पुं० वसूल बाकीनो हिसाबनीस; वसूलदार
वास्ता पुं० [अ.] संबंध; लेवादेवा
वाहवाही स्त्री० वाहवाह; प्रशंसा
वाहिद वि० [अ.] एक मात्र(२)पुं० ईश्वर
वाही वि० [अ.] नवरुं; नकामुं(२)सुस्त; ढीलुं (३) मूर्ख (४) बेहूदुं
वाही-तबाही वि० बेहूदुं (२)ढंगधडा वगरनुं (२) स्त्री० तेवी वातो
विगंध वि० [सं.] निर्गंध (२) गंधातुं
विगर्हित वि० [सं.] निंद्य; तुच्छकारायेलुं (२) खराब
विचिकित्सा स्त्री० [सं.] शक; संदेह
विछलना अ०क्रि० चळवुं; 'फिसलना'
विछोह पुं० वियोग; विच्छेद (वि० –ई)
विज़ारत स्त्री० [अ.] जुओ 'वज़ारत'
विजोर वि० कमजोर
विज्जु स्त्री० वीजळी [करवुं
विडारना स०क्रि० वेरणछेरण–नष्टभ्रष्ट
वितरण पुं० [सं.] दान (२)वहेंचणी
वितरना स०क्रि० (प.) वहेंचवुं
वितरेक अ०(प.)सिवाय; 'व्यतिरिक्त'
वितुंड पुं० [सं.] हाथी
विथकना अ०क्रि०(प.)थाकवुं; ढीलुं थवुं (२)मोह के आश्चर्यथी चूप थई जवुं
विदा स्त्री०विदाय [त्यारे अपातुं धन
विदाई स्त्री० विदाय(२)विदायगीरी के
विदाही वि० [सं.] दाही; दाहक
विदूषना स०क्रि० दोष देवो (२) सताववुं (३) अ०क्रि० दुःखी थवुं
विधना स०क्रि० मेळववुं (२) पुं० विधि; भावी
विधर्म(–र्म्म) पुं० परधर्म
विधि बैठना = मेळ खावो; फाववुं
विनश(–स)ना अ०क्रि०वणसवुं; नाश पामवुं
विनु अ० (प.) विना
विपत्ति स्त्री० [सं.] संकट; आफत(२) दुःखदशा (३) मुश्केली; पंचात. –ढहना = दुःख आवी पडवुं

विपन्न वि०[सं.]दु:खी;विपत्तिमां आवेलुं
विपर्यस्त वि०[सं.]विपर्यय पामेलुं(२) अस्तव्यस्त
विमत पुं० विरुद्ध मत (२) असंमति
विमाता स्त्री० [सं.] सावकी मा
विमुद वि० [सं.] अप्रसन्न; उदास
वियोगान्त वि०[सं.]अशुभान्त (नाटक इ०) [रंगोनुं
विरंग वि०[सं.]खराब रंगनुं(२)विविध
विरत वि०[सं.] विशेष रत–लीन (२) विरतिवाळुं; विरक्त
विरद पुं० [सं. विरूद] बिरद; ख्याति
विरदावली स्त्री०.बिरदावली;यशोगान
विराजना अ०क्रि० विराजवुं;शोभवुं(२) विराजवुं; बेसवुं (३) हाजर होवुं
विरासत स्त्री० [अ.] जुओ 'वरासत'
विरुद पुं० [सं.] ख्याति; प्रशस्ति
विरुदावली स्त्री०[सं.]जुओ 'विरदावली'
विलंबना अ०क्रि० विलंब करवो
विलखना अ०क्रि० जुओ 'बिलखना'
विलग वि०(२)पुं० जुओ 'बिलग'
विलगाना अ०क्रि०(२)स०क्रि० जुओ 'बिलगाना'
विलायत पुं०; स्त्री० [अ.] पारको के दूरनो देश
विलायती बैंगन पुं० टॉमेटो
विवाहना स०क्रि० परणवुं; 'ब्याहना'
विश्वकोश पुं०[सं०]सर्वसंग्रह; 'एन्साई-क्लो-पीडिया' [घर
विषकी गाँठ=उपद्रवकारी के पंचातनुं
विसाल पुं० [अ.] संयोग (२) मृत्यु
वीरान वि०[फा.] वेरान (नास, –नी)
वीराना पुं०[फा.]वेरान जगा; जंगल
वुज़ू पुं० [अ.] जुओ 'वज़ू'
वुजूद पुं० जुओ 'वजूद'
वुसूल वि० जुओ 'वसूल'
वैनतेय पुं० [सं.] गरुड (२) अरुण
वैमात्र(–त्रेय) वि०[सं.]सावकुं;'सौतेला'
व्यग्र वि०[सं.]व्याकुल(२)काममां लीन
व्यतिरिक्त अ० सिवाय, 'अलावा'
व्यलीक वि०[सं.]अप्रिय(२)दु:खद(३) पुं० अपराध (२) दु:ख
व्यस्त वि० [सं.] जुओ 'व्यग्र'
व्याल्ू स्त्री०; पुं० वाळु
व्याहार पुं० [सं.] वाक्य
व्युत्पन्न वि० [सं.] विद्वान; पंडित
व्रज पुं० [सं.] जवुं ते (२) समूह;टोळुं (३) व्रज प्रदेश
व्रतिक,व्रती,व्रत्य पुं० [सं.] व्रती; व्रत-धारी (२) ब्रह्मचारी

श

शंजरफ़ पुं० [फा.] 'शिंगरफ़'; हिंगळोक

शंठ पुं० शंढ (२) बेवकूफ

शंड(–ढ) पुं० [सं.] शंढ;नपुंसक (२) सांढ

शअबान पुं० [अ.] शाबान; अरबी ८मो मास

शऊर पुं०[अ.] शहूर; अकल; आवडत (२) काम करवानी रीत, पहोंच

शऊरदार पुं० शहूरवाळुं; काबेल

शकर स्त्री० [फा.] 'शक्कर'; खांड

शकरक़ंद पुं० शकरियुं

शकल स्त्री०[अ.शक्ल]सिकल; चहेरो; रूप (२) उपाय; रस्तो [वाळुं

शकील वि०[फा.]रूपाळुं;सुंदर सिकल-

शकुन पुं० [सं.] शुकन. **–विचारना, –देखना**=शुकन जोवा

शकी वि० शकवाळुं; शंकाशील

शक्त पुं० [सं.] सशक्त;समर्थ

शक्तु पुं०[सं.]सकतु; साथवो

शक्ल स्त्री०[अ.]जुओ 'शकल'

शख़्स पुं० [अ.] शखस;माणस;व्यक्ति

शख़्सियत स्त्री० [अ.] व्यक्तित्व

शग़ल पुं०[अ.शग्ल] वेपार; कामधंधो (२) विनोद; मनोरंजन

शग़ाल पुं० [अ.] शृगाल; शियाळ

शगुन पुं०शुकन(२)सगाई थयानो चांल्लो इ० करवानो विधि. **–लेना**= शुकन जोवा [जोषी

शगुनियाँ पुं०शुकन जोई खानार साधारण

शगुफ़्ता वि०[फा.]खीलेलुं;प्रफुल्ल(नाम, **–फ़्तगी**) [कोई नवी घटना

शगूफ़ा पुं०कळी(२)फूल(३)विलक्षण

शगून,शगूनियाँ जुओ'शगुन,शगुनियाँ'

शजर पुं० [अ.] वृक्ष; झाड

शजरा पुं०[अ.]'शजर'(२)वंशवृक्ष(३) तलाटीनो खेतरोनो नकशो

शतरंज स्त्री० [अ. ?] शेतरंज

शतरंजी स्त्री०[फा.] शेतरंजी(२) शेतरंज रमवानुं खानांनुं कपडुं(३)पुं० सरस शेतरंज रमी जाणनार

शदीद वि० [अ.] भारे; खूब; सखत

शनाख़्त स्त्री० [फा. शिनाख़्त] पिछान

शनास वि०[फा. शिनास] पिछाननार; परिचित (समासने अंते)

शफ़क़ स्त्री०[अ.]संध्या के उषानी लाली

(२) वि० खूब सुंदर
शफ़क़त स्त्री० [अ.] कृपा; महेरबानी
शफ़ा स्त्री०[अ. शिफ़ा]तंदुरस्ती;आरोग्य
शफ़ाख़ाना पुं० [अ.+फा.] दवाखानुं
शफ़ी वि० [अ. शफ़ीअ] वच्चे पडी पतावट करनार
शफ़ीक़ वि० [अ.] दयाळु; महेरबान
शफ़्फ़ाफ़ वि० [अ.] स्वच्छ
शब स्त्री० [फा.] रात
शब-कोर वि०[फा.](नाम,–री)रतांधळुं
शबनमी स्त्री० [फा.] मच्छरदानी
शब-बरात स्त्री० [फा.] एक इस्लामी तहेवार [सौंदर्य
शबाब पुं०[अ.] यौवन;जुवानी(२)खूब
शबाहत स्त्री० [अ.] सूरत; सिकल
शबीह स्त्री० [अ.] चित्र; छबी
शबेक़द्र स्त्री०[फा.+अ.]रमजान मास-.नी २७मी तारीखनी रात (एम मनाय छे के त्यारे खुदा जुए छे के कोण मारी बंदगी करे छे)
शबे-तार,शबे-तारीक स्त्री०[फा.]अंधारी रात [चांदनी रात
शबे-माह,शबे-माहताब स्त्री० [फा.]
शब्बीर वि० [फा. ?] नेक; भलुं (२) सुंदर; खूबसूरत
शमला पुं०[अ.]पाघडी के फेंटानो तलो
शमस पुं० जुओ 'शम्स'
शम्बा पुं० [फा.] शनिवार
शम्मा वि०[अ.]जराक;तनीक(२)पुं० मृदु – जरा सुवास
शम्स पुं० [अ.] सूर्य [बाण
शर पुं०,स्त्री०[अ.]दुष्टता (२)पुं०[सं.]
शरअ स्त्री०[अ.] शर; कुराननी आज्ञा (२) मुसलमाननुं धर्मशास्त्र (३) दीन; मजहब
शरई वि०[अ.]शर–धर्मशास्त्र प्रमाणेनुं (२) धर्मने अनुसरी चालनार
शरक़ी वि० जुओ 'शर्क़ी'
शरफ़ पुं०[अ.] मोटाई (२) उत्तमता
शरमसे गड़ना या पानी पानी हो जाना=शरमना मार्या मरी जवुं; खूब शरमावुं
शरमाऊ (–लू) वि० शरमाळ
शरमाशरमी अ०शरमे शरमे;शरमथी
शरमीला वि० शरमाळु
शरर पुं० [अ.] चिनगारी
शरह स्त्री०[अ०]टीका;भाष्य;स्पष्टीकरण (२) भाव; दर
शरह-लगान स्त्री०'लगान'नो दर;विघोटी
शराकत स्त्री० [फा.] शरीक थवुं ते; हिस्सेदारी; सामेलगीरी; सहयोग
शराफ़त स्त्री० [अ.] शरीफपणुं; भल-मनसाई; सुजनता
शराब स्त्री० [अ.] दारू

शराबी पुं० दारूडियो

शराबोर वि० [फा.] तरबोळ;बिलकुल पलळीने लदपद थयेलुं

शरायत स्त्री०[अ.शर्तनुं ब०व०]शरतो

शरार पुं० [अ.] 'शरर'; चिनगारी

शरारत स्त्री० [अ.] दुष्टता; 'शर'

शरारतन् अ० [अ.] दुष्टताथी

शरारा पुं० [अ.] चिनगारी

शरीअत स्त्री० [अ.] शरियत; 'शरअ'

शरीक वि०[अ.] सामेल(२)पुं० भागीदार (३) मददगार

शरीफ़ पुं० [अ.] खानदान के भलो माणस (२) वि० पवित्र

शरीफ़ा पुं० सीताफळ के सीताफळी

शरीर वि० [अ.] दुष्ट;शरारतवाळुं(२) पुं०[सं.]शरीर [पूर्व दिशा

शर्क़ पुं०[अ.](वि० –क़ीं)सूर्योदय(२)

शर्त स्त्री० [अ.] शरत

शर्तिया अ०[अ.] शरत साथे;नक्की(२) वि० निश्चित

शर्ती वि० शरती; शरतवाळुं

शर्फ़ पुं० [अ.] जुओ 'शरफ़'

शर्म स्त्री० [फा.] जुओ 'शरम'

शर्मसार वि०[फा.]शरमाळ(२)शरमिंदुं

शर्व पुं० [सं.] शिव के विष्णु

शलग़म,शलजम [फा.] पुं० सलगम; गाजर जेवुं एक कंद

शलभ पुं० [सं.] तीड (२) पतंगियुं

शलूका पुं० [फा.] (स्त्रीओनो) एक जातनो कबजो

शश-माही वि० [फा.] छमासिक

शस्त स्त्री० जुओ 'शिस्त'

शहंशाह पुं० [फा.] शहेनशाह

शह पुं० शाह;बादशाह(२)वरराजा(३) वि० श्रेष्ठ; उत्तम (४) स्त्री० शेह

शहज़ोर वि० [फा.] बळवान

शहतीर पुं० [फा.] लांबो पाटडो

शहतूत पुं० [फा.] एक फळझाड-शेतूर

शहद पुं०[अ.]मध.–लगाकर चाटना= मध मूकीने चाटवुं

शहनाई स्त्री० [फा.] शरणाई;नफेरी

शहबाला पुं० [फा.] वर जोडे जतो नानो छोकरो

शहमात स्त्री० [फा.] शेहमात करवुं ते

शहर पुं०[फा.] शहेर [–बहिष्कृत

शहर बदर वि०[फा.]शहेर बहार काढेलुं

शहर-पनाह स्त्री०[फा.]कोट;शहेर-कोट

शहरी वि० [फा.] शहेरी

शहरयार पुं०[फा.]एक मोटो बादशाह (२) शहेरनो रक्षक ने सहायक

शहरियत स्त्री०नागरिकता; शहेरीपणुं

शहवत स्त्री०[अ.] शहेवत;कामातुरता

शहादत स्त्री०[अ] साक्षी (२) साबिती (३) साक्षी थवुं ते (४) शहीदी

शहाना वि०[फा.] शाही; राजवी (२) उत्तम (३) पुं० एक राग

शहाब पुं० [फा.] एक जातनो घेरो लाल रंग (वि० –बी)

शाइस्तगी स्त्री०[फा.]शिष्टता; सभ्यता (२)सारमाणसाई [भलुं; नम्र

शाइस्ता वि० [फा.] शिष्ट; सभ्य(२)

शाक़ वि०[अ.]कठण;मुश्केल(२) असह्य

शाकल पुं० [सं.] टुकडो(२)ऋग्वेदनी एक शाखा

शाकिर वि० [अ.] कृतज्ञ (२) संतोषी

शाकी वि०[अ.]फरियादी(२)चुगलीखोर

शाख़ स्त्री०[फा.]शाखा.–निकालना= दोष काढवो (२) एकमांथी बीजुं काम काढवुं

शागिर्द पुं०[फा.]शिष्य (नाम, -र्दगी)

शाज़, शाज़-व-नादिर अ० [अ.] कदी कदी; क्यारेक क्यारेक

शाद वि०[फा.]खुश;राजी(२)पूर्ण;भरेलुं

शाद-बाश अ०[फा.]राजी रहो(२)शाबाश

शादमान वि० [फा.] राजी; खुश

शादाब वि० [फा.] भर्युभादर्यु

शादियाना पुं० [फा.] खुशीनां वाजां वागे ते (२) मुबारकवादी के तेने अंगे अपाती भेट

शादी स्त्री० [फा.]खुशी;आनंद(२)लग्न

शान स्त्री०[अ.] ठाठमाट; भपको;छटा (२)भव्यता (३)शक्ति; वैभव(४) प्रतिष्ठा (किसी की) शान में= कोई मोटाना संबंधमां

शान-शौकत स्त्री० [अ.] शानसोगात; भपको; ठाठ

शाना पुं०[फा.]कंधो;खभो(२)कांसकी

शाब पुं० [अ.] २४ थी ४० उंमरनो – आधेड वयनो पुरुष [देश

शाम स्त्री० [फा.]सांज(२)पुं० सीरिया

शामत स्त्री० [अ.] कमनसीब(२)दुर्दशा (३)आफत; विपत्ति. –का घेरा या मारा=दुर्दशामां सपडानार–आवेलुं

शामिल वि० [फा.] सामेल; साथे मळेलुं

शाम्मा पुं०[अ.] सूंघवानी शक्ति

शायक़ वि० [अ.] शोखीन

शायद अ० [फा.] कदाच

शायर पुं०[अ.शाहर](स्त्री०–रा) कवि

शाया वि० [अ.] प्रगट; जाहेर (२) छपावेलुं;प्रकाशित [काम करनार

शालदोज़ पुं०[फा.] शाल पर भरत-

शाहंशाह,शाहन्शाह पुं०[फा.]शहेनशाह

शाहंशाही स्त्री० शहेनशाहपणुं (२) शाहवट; चोख्खो वहेवार

शाहाना वि०(२)पुं० जुओ 'शहाना'

शाहिद पुं०[अ.]शाहेद;साक्षी(नाम,–दी)

शिंगरफ़ पुं०हिंगळोक (वि० –फी)

शिंबी स्त्री० [सं.] शिंग; फळी

शिंबी धान्य पुं० [सं.] द्विदळ; दाळ
शिकंजा पुं०[फा.]सकंजो. **शिकंजेमें** **खिचवाना**=खूब कष्ट देवडाववुं
शिकन स्त्री०[फा.] दबावाथी के बीजी रीते पडती गडी
शिकम पुं०[फा.] पेट (वि०, **–मी**)
शिकमी काश्तकार पुं० [फा.] सांथियो
शिकरा पुं० [फा.] शकरो बाज
शिकवा पुं० [अ.] शिकायत; फरियाद
शिकस्त स्त्री० [फा.] हार; पराजय
शिकस्ता वि०[फा.] तूटयुंफूटयुं; भागलुं (२) घसडी नांखेलुं (लखाण)
शिकायत स्त्री० [अ.] फरियाद (२) चाडीचुगली (३) रोग; बीमारी
शिकेब पुं० [फा.] संतोष [पेय
शिखरन स्त्री० दहीं खांड इ० नुं एक
शिगाफ़ पुं०[फा.]चीरो;नस्तर(२)फाट (३) काणुं; छेद ['शगूफ़ा'
शिगुफ़्ता,शिगूफ़ा जुओ 'शगुफ्ता',
शिताब अ० [फा.] (नाम, **–बी**) सिताबीथी; जलदी
शिद्दत स्त्री०[अ.]तेजी;जोर(२)अधिकता
शिनाख़्त स्त्री०[फा.]जुओ 'शनाख़्त'
शिनास(–सा) वि०[फा.]जुओ'शनास'
शिफर पुं०[फा.सिपर]ढाल ['शराकत'
शिरकत, शिराक़ात स्त्री० [अ.] जुओ
शिरहन पुं० ओशीकुं
शिर्क पुं०[अ.]ईश्वर जेवुं बीजाने मानवुं ए पाप (इस्लाममां)
शिवरानी स्त्री० पार्वती
शिवाला पुं० शिवालय (२) मंदिर
शिविर पुं०[सं.] शिविर; छावणी; डेरो (२) कोट; किल्लो
शिस्त स्त्री० [फा.] माछली पकडवानो कांटो (२) निशान; लक्ष्य
शीआ(-या) पुं० [अ.] शिया संप्रदाय
शीर पुं० [फा.] दूध; क्षीर
शीर-गर्म वि० [फा.] साधारण गरम; कोकरवायुं [खमीरनी रोटी
शीर-माल स्त्री० [फा.] एक जातनी
शीरा पुं०[फा.]शरबत (२) चासणी
शीराज़ा पुं०[फा.]पुस्तकनी बांधणीनी पट्टी के त्यांनुं सीवण(२) व्यवस्था
शीरीं वि०[फा.]शीरीन;मीठुं(२)प्यारुं
शीरीनी स्त्री०[फा.] मीठाश(२)मीठाई
शीशम पुं० [फा.] सीसम
शीशा पुं० [फा.] काच (२) दर्पण(३) काचनी बनेली वस्तु
शुआअ स्त्री० [अ.] सूर्यकिरण
शुकराना पुं०शुक्राना; कृतज्ञता;आभार
शुक्र(–क्रिया) पुं० [फा.] आभार; 'धन्यवाद' [कृतज्ञ
शुक्रगुज़ार वि०(नाम, **–री**) आभारी;
शुक्रिया पुं० जुओ 'शुक्र'. –अदा

करना=आभार मानवो
शुग़ल पुं० जुओ 'शग़ल'
शुजाअ वि० [अ.] वीर; बहादुर
शुजाअत स्त्री० [अ.] वीरता
शुतुर पुं० [फा.] उष्ट्र; ऊंट
शुदनी स्त्री०[फा.]भविष्यनी वात;भावी
शुदबुद स्त्री०[फा.]कोई विषयनुं थोडुंक ज्ञान के समज—शूधबूध
शुदा वि०[फा.]थई चूकेलुं; गयुंगुजर्युं(२) थयेलुं (समासमां) उदा० 'तयशुदा'
शुफ़ा पुं० [अ.] पडोस [भ्रम
शुबहा[अ.],**शुभा** पुं० शक(२) वहेम;
शुमाल स्त्री०;पुं० [अ.] उत्तर दिशा
शुमूल वि० [अ.] पूरुं; कुल; बधुं
शुरू पुं०[अ.]शरूआत;आरंभ(२)ऊगम
शुस्त-व-शू स्त्री० [फा.] नाहवुंधोवुं ते (२) धोई करी शुद्ध करवुं ते
शुस्ता वि० [फा.] धोयेलुं (२) स्वच्छ
शूप पुं० [सं. शूर्प] सूंपडुं; 'सूप'
शूम वि० [अ.] खराब(२)अभागी(३) सूम; कंजूस
शृंगारना स०क्रि० शणगारवुं; सजवुं
शृंगारहाट स्त्री० वेश्यावाडो
शेख़चिल्ली पुं० शेखचल्ली [हांकवी
शेख़ी बघारना = शेखी मारवी के
शेफ़्ता वि०[फा.](नाम,–फ़्तगी)आसक्त; आशक
शेर पुं० [फा.]वाघ (२) भारे बहादुर साहसिक माणस
शेरनी स्त्री० वाघण
शेर-बबर पुं० [फा.] सिंह
शेरवानी स्त्री०उत्तर हिंदनी ढबनो कोट
शेवा पुं०[फा.]रीत;ढंग(२)दस्तूर;प्रथा
शै स्त्री० [अ.] चीज; वस्तु(२)भूतप्रेत
शैतनत स्त्री०[अ.] शेतानियत
शैतान पुं०[अ.]शेतान. –**की आँत**=बहु लांबी वस्तु (नाम, वि०, –नी)
शैदा वि० [फा.] शयदा; आशक
शैलेय वि० [सं.] पथ्थरनुं (२) पहाडी
शोख़ वि० [फा.] (नाम,–ख़ी) धीट; धृष्ट (२) नटखट (३) चपळ (४) (रंगमां) चटकदार
शोध पुं० [सं.] शुद्धि (२) दुरस्ती (३) पतावट; अदा करवुं ते (४) शोध; तपास; खोळ
शोब पुं०[फा.] धोवुं ते के तेनी मजूरी
शोबदा पुं० [अ. शअबदः] जादु (२) दगोफटको
शोर पुं० [फा.] क्षार (२) शोरबकोर
शोरबा पुं० [फा.] सेरवो
शोरा पुं०[फा. शोर]एक खार(सूरोखार?) **शोरेकी पुतली**=बहु गोरी स्त्री
शोरापुश्त वि० [फा.] झघडाळु
शोरिश स्त्री०[फा.]शोरबकोर(२)झघडो

(३) खळभळाट
शोरीदा वि० [फा.] व्याकुळ; विकळ
शोरीदा-सर वि० [फा.] पागल
शोला पुं०[अ.] आगनी झोळ;शोलो.
शोला-ख़ू वि० उग्र स्वभावनुं
शोला-रू वि० बहु सुंदर
शोशा पुं० [फा.] अद्भुत वात
शोहदा पुं० [अ.] व्यभिचारी; लफंगो (२) गुंडो
शोहरत स्त्री०, **शोहरा** पुं० ख्याति; [प्रसिद्धि
शौक़ पुं०[अ.]शोख;होंस(२)वलण;झोक
शौकत स्त्री०[अ.] शान;ठाठ(२)ताकात (३) रोफ; प्रभाव
शौक़ीन वि० शोखीन (नाम, -नी)
शौक़िया वि०शोखवाळुं(२)अ०शोखथी
शौत स्त्री०'सौत';शोक;पतिनी बीजी स्त्री
शौहर पुं० [फा.] स्वामी; मालिक
श्याल पुं० शियाळ(२) [सं.] साळो के बनेवी
श्लील वि० [सं.] सारुं; शुभ
श्लेष्मा पुं० [सं.] श्लेष्म; कफ
श्वासा स्त्री० श्वास; दम (२) प्राण

ष

षंड पुं० [सं.] षंढ; हीजडो
षट्तिला स्त्री०[सं.]महा वद एकादशी
षड्यंत्र पुं०[सं.]कावतरुं(२)जाळ;फांदो
षाण्मासिक वि० [सं.] छमासिक
ष्ठीवन पुं० [सं.] थूंकवुं ते

स

सँइतना स०क्रि०लींपवुं;अबोट करवो
सँकरा वि०सांकडुं(२)पुं० सांकड; कष्ट
संकीर्ण वि०[सं.]संकुचित (२) संकीर्ण; मिश्र (३) क्षुद्र (४) पुं० मिश्र राग (५) संकट
सँकेलना स०क्रि० संकेलवुं; समेटवुं
सँकोचना स०क्रि० संकोचवुं
संकोची वि० [सं.] संकोचायेलुं (२) संकोचवाळुं; शरमाळ
संक्षिप्त लिपि स्त्री० लघुलिपि

संखिया पुं० सोमल के तेनी भस्म
संग अ०साथे;संगाथे(२)पुं०[फा.]पथ्थर
संगत स्त्री० संगति (२) उदासी साधुनो मठ [पहाण
संग-मर्मर पुं०[फा.]संगेमरमर;आरस-
संग-मूसा पुं०[फा.]एक जातनो काळो लीसो कीमती पथ्थर [पथ्थर
संग-यशब पुं०[फा.]एक लीलो कीमती
संग-लाख़ पुं०[फा.]पहाडी स्थान (२) वि०कठण;कठोर [ईंटाळीनी सजा
संग-सार पुं०[फा.] 'संगसारी'–पंच-
संगाती पुं० संगाथी (२) दोस्त
संगीन वि०[फा.](नाम,–नी)पथ्थरनुं (२) संगीन; मजबूत; टकाउ (३) विकट;अटपटुं(४)पुं०बंदूकनुं संगीन
संघ(–घा)रना स०क्रि०संघारवुं;संहारवुं
संजाफ़ स्त्री०[फा.],**संजाब** पुं० संजाप; झूल; कोर (२) मगजी; गोट
संजीदा वि० [फा.] (नाम, –दगी) गंभीर; धीर; शांत (२) समजु
सँजोइल वि० सुसज्ज (२) एकत्रित
संड मुसंड वि०पाडा जेवुं; खूब जाडुं
सँड़सा पुं०(स्त्री० –सी) साणसो
सँडा वि० जुओ 'संड मुसंड'
संतरी पुं० संत्री; पहेरेगीर
संदल पुं० [फा.] चंदन
संदली वि०चंदनना रंगनुं; आछुं पीळुं
संदूक़ पुं०[अ.] संदूक; पेटी
संदूक़चा पुं०,संदूक़ची(–डी) स्त्री० नानी पेटी
सँदेसा पुं०संदेशो; कहेवडावेली खबर
सँदेसी पुं० संदेशो लई जनार; दूत
संदोह पुं० [सं.] समूह; टोळुं
संधना अ०क्रि० संधावुं; जोडावुं
संधाना पुं० संधानुं; अथाणुं
संपुट पुं०[सं.]पात्राकार वस्तु(२)पडियो (३)डब्बो(४) खोबो;अंजलि (५) फूलनी पांदडी वच्चेनो पात्राकार भाग (६) बे शकोरांनो संपुट
सँपेरा पुं० (स्त्री० –रिन)सापनो मदारी
सँपोला पुं० सापोलियुं
संबल पुं० वटेशरी [सं.] (२) सोमल
सँभलना अ०क्रि० 'सँभालना'नुं कर्मणि
सँभारना स०क्रि० जुओ 'सँभालना' (२)संभारवुं; याद करवुं
सँभाल स्त्री० संभाळ; देखरेख
सँभालना स०क्रि० भार उपाडवो (२) पडतुं रोकवुं;टेकववुं (३) संभाळवुं
संभूय अ०[सं.] साथे; भागमां
संभूय समुत्थान पुं० भागीदारीथी थतुं काम
सँवरना अ०क्रि० 'सँवारना'नुं कर्मणि
सँवारना स०क्रि०सजवुं (२) समारवुं; ठीक करवुं(३)बरोबर क्रमथी राखवुं

संशोधन पुं० [सं.] शुद्धि; सफाई (२) सुधारो (जेम के ठरावमां) (३) (ऋण आदि) अदा करवुं ते
संसृष्ट वि० [सं.] साथेनुं; मिश्रित (२) संबद्ध (३) सामेल
संहत वि० [सं.] संयुक्त; एकठुं (२) संपवाळुं
सआदत स्त्री० [अ.] सद्भाग्य
सई स्त्री० [अ.] प्रयत्न (२) वृद्धि
सईद वि० [अ.] शुभ; सारुं
सऊबत स्त्री० [अ.] मुश्केली; आफत
सकता पुं० [अ.] मूर्छानो रोग; मृगी (२) कवितामां यतिभंग
सकना अ०क्रि० शकवुं
सकपकाना अ०क्रि० अचरज पामवुं (२) अचकावुं (३) शरमावुं
सकरना अ०क्रि० 'सकारना'नुं कर्मणि
सकारना स०क्रि० स्वीकारवुं (२) शिकारवुं
सक़ील वि० [अ.] पचवामां भारे (२) वजनदार (नाम, सक़ालत)
सकुच स्त्री० संकोच; शरम
सकुचना अ०क्रि० संकोच करवो; शरमावुं
सकून पुं० जुओ 'सुकून' [निवास
सकूनत स्त्री० [अ.] 'सुकूनत'; रहेठाण;
सकेलना स०क्रि० एकत्र करवुं; संकेलवुं
सकोरा पुं० शंकोरुं; 'कसोरा'
सक़्क़ा पुं० [अ.] भिस्ती
सक़्फ़ पुं० [अ.] मकाननी छत
सखरा पुं०, **सखरी** स्त्री० सखडी; बोटाय एवी रसोई, दाळभात जेवी
सख़ुन पुं० [फा.] वातचीत (२) बोल; वचन; सुखन (३) काव्य
सख़ुन-चीन वि० [फा.] चुगलीखोर
सख़ुन-तकिया पुं० [फा.] 'तकिया कलाम'
सख़ुन-दाँ वि० (नाम, –दानी) काव्यरसिक
सख़ुन-परवर वि० [फा.] वचन पाळनार (२) हठीलुं; मूढाग्रही
सग पुं० [फा.] कूतरो
सग-पहती स्त्री० शाक साथे कराती दाल
सगरा वि० सघळुं; बधुं
सग़ीर वि० [अ.] नानुं. **सग़ीर-सिन**= सगीर; नानी उंमरनुं
सगुन पुं० (प.) शुकन (२) सगुण
सगोती पुं० सगोत्र (२) सगुं
सच वि० साचुं (नाम, –चाई)
सचमुच अ० खरेखर; साचे; साचमाच
सचान पुं० सींचाणो; बाज
सचिक्कण वि० खूब चीकणुं
सच्चा वि० साचुं (२) साचुं बोलनार
सज स्त्री० सजावट (२) शोभा
सजग वि० सावधान; जाग्रत; सचेत
सजदार वि० सुंदर
सज-धज स्त्री० सजावट; ठाठमाठ
सजवाई स्त्री० सजाई; सजवुं सजाववुं ते के तेनी मजूरी

सज़ा [फा.],सजाइ स्त्री०सजा; शिक्षा
सज़ायाफ़्ता वि० [फा.] सजा पामेलुं
सज़ायाब वि०[फा.]सजापात्र(२)सजा पामेलुं [उघरावनार अमलदार
सजावल पुं०[तु.सज़ावुल]कलेक्टर;कर
सज़ावार वि०[फा.]सजावर; योग्य(२) सजावार; सजापात्र
सजीला वि० छेलबटाउ (२) सुन्दर
सजूरी स्त्री० एक मीठाई
सज्जादा पुं०[अ.] मुसल्लो; नमाजनी चटाई (२) फकीरनो तकियो
सज्जी स्त्री०, **०खार** पुं०साजीखार
सटक स्त्री० सटकी जवुं ते;छटक (२) लांबी वळी शके तेवी हूकानी नेह (३) पातळी सोटी; साटको
सटकाना स०क्रि० सटकाववुं;सोटी के सटका (साटका)थी मारवुं
सटकारा वि० लांबा सुंवाळा (वाळ)
सटना अ०क्रि० बे चीजोनां पडखां बरोबर साथे बंधबेसवां के गोठवावां
सटपट स्त्री० दुविधा;गूंचवण;सपटामणी
सटपटाना अ०क्रि० गूंचवावुं; सपटावुं
सटरपटर वि०तुच्छ;मामूली (२) स्त्री० सटरपटरियुं के नकामुं काम
सटाना स०क्रि० जोडवुं; बंध बेसाडवुं
सट्टा बट्टा पुं०युक्ति;चालबाजी(२)मेळ
सट्टी स्त्री० हाट; बजार
सठियाना अ०क्रि०साठ वर्षना थवुं(२) साठे बुद्धि नासवी
सड़सठ वि० सडसठ; ६७
सड़ाइँ(-यँ)ध स्त्री० सडेलानी दुर्गंध
सड़ियल वि० सडेलुं(२)रद्दी (३) तुच्छ
सत पुं०सच्चाई.–पर चढ़ना=सती थवुं. –पर रहना=पतिव्रता रहेवुं
सतनजा पुं० सात अनाजनो खीचडो
सतफेरा पुं०सप्तपदी;विवाहना सात फेरा
सतमासा पुं०गर्भाधानने सातमे मासे थतो विधि(२)सातमे महिने अवतरेलो ते
सतर स्त्री०[अ.]लीटी(२)हार;कतार(३) वि० वांकुं (४) क्रोधे भरायेलुं
सत(–त्त)रह वि० १७; सत्तर
सतराना अ०क्रि० चिडावुं; गुस्से थवुं
सतसई स्त्री० सतसाई; सप्तशती
सतह स्त्री०[अ.]सपाटी; तल; क्षेत्रफळ
सतहत्तर वि०सित्तोतर;७७ [वखाण
सताइश स्त्री० [फा. सिताईश] प्रशंसा;
सतुआ पुं० सत्तु; साथवो
सतून पुं० [फा.] स्तंभ
सत्त पुं० सत्त्व; सार
सत्तर वि० सित्तेर; ७०
सत्तरह वि० सत्तर; १७
सत्ताईस वि० सत्तावीस; २७
सत्तानबे वि० सत्ताणुं; ९७

सत्तासी वि० सित्यासी; ८७
सत्तू पुं० सत्तु; साथवो
सत्यसंध वि० [सं.] सत्य-वचनी
सत्यानास पुं० सत्यानाश; खुवारी
सत्यानासी वि० सत्यानाश करनार
सथिया पुं० साथियो (२) शस्त्रवैद
सदक़ा पुं०[अ.] दान (२) कोईने माथे उतारीने रस्ते मुकाय ते; उतार
सदफ़ स्त्री०[अ.] मोतीनी छीप
सदमा पुं०[अ.]आघात;धक्को(२)दुःख
सदर वि०[अ.सद्र] प्रधान;मुख्य;प्रमुख (२) पुं०केन्द्रस्थान (३) कशानो आगलो भाग (४) सभानो प्रमुख
सदर-आला पुं० नानो न्यायाधीश
सदर-नशीन पुं० सभापति
सदरी स्त्री० [अ.] सदरो
सदहा वि० [फा.] सेंकडो; अनेक
सदा स्त्री०[अ.] प्रतिध्वनि;पडघो (२) अवाज;शब्द(३)पोकारनो शब्द
सदाक़त स्त्री० [अ.] सत्य
सदाबरत, सदावर्त पुं० सदाव्रत
सदा-बहार वि० हंमेश खीलेलुं रहे एवुं (२) सदा लीलुं रहेतुं
सदारत स्त्री०[अ.]सदरपणुं;सभापतित्व
सदा-सुहागिन स्त्री० वेश्या (व्यंग्य)
सद्र पुं०[अ.]जुओ 'सदर' [सधाववुं
सधना अ०क्रि०सधावुं (प्रेरक **सधाना**=

सन पुं०शण (२)वि० स्तब्ध;सूम (३) [अ.] सन; साल
सनअ़त स्त्री०[अ.]कारीगरी;कळाकौशल्य
सनक स्त्री०धून;मननुं घेलुं (२)झनून. **–सवार होना**=धून आववी
सनकना अ०क्रि० पागल थवुं
सनद-याफ़्ता वि०[फ़ा.] सनद पामेलुं
सनना अ०क्रि० पलळीने एकसरखुं थवुं (जेम के, आटो) (२)कशामां मळी के लीन थई जवुं;तरबोळ थवुं
सनसनाहट पुं० सणसणाट (२)जुओ 'सनसनी'
सनसनी स्त्री०झझणाट (२)सनसनाटी
सनहकी स्त्री०[अ.सनहक] (मुसलमानो-मां प्रायः वपरातुं) माटीनुं एक वासण
सना स्त्री०[अ.] वखाण; स्तुति (२) जुओ 'सनाय'
सनाअ़त स्त्री० जुओ 'सनअ़त'
सनाय स्त्री० सोनामुखी
सनाह पुं०[सं.सन्नाह] कवच; बखतर
सनीचर पुं० शनिश्चर; शनिवार
सनीचरी पुं० शनिनी दशा
सनोबर पुं०[अ.] सनूबर;चीडनुं झाड
सन्न वि०सूम; शून्य; 'सन'
सन्नाटा पुं० शून्यता; नीरवता (२) एकांत (३) स्तब्धता (४) हवानो सणसणाट(५)वि०नीरव (६)एकांत.

—खींचना या मारना=एकदम चूप थई जवुं. सन्नाटेमें आना= स्तब्ध थई जवुं

सन्निविष्ट वि० [सं.] साथे बेठेलुं; एकठुं (२) स्थापेलुं (३) दाखल थयेलुं

सन्निहित वि० [सं.] पासेनुं (२) पासे राखेलुं (३) तत्पर; तैयार

सपरदाई पुं० [सं.संप्रदायी] नाचनारी साथेना साजनो माणस; साजिंदो

सपरना अ०क्रि०पूरुं थई शकवुं; निपटावुं

सपरिकर वि० [सं.] अनुचरो इ० ना ठाठ साथे

सपुर्द स्त्री० [फा.सिपुर्द] सुपरत; सोंपण

सपुर्दगी स्त्री० सोंपवुं ते; सुपरत करवी ते

सपेत(—द) वि० सफेद

सपोला पुं० सापोलियुं

सफ़ स्त्री० [अ.] पंक्ति; हार

सफ़र पुं० [अ.] सफर; मुसाफरी (२) अरबी बीजो मास

सफ़रा पुं० [अ.] पित्त

सफ़री वि० [अ.] सफरमां कामनुं (२) पुं० सफर—खर्च

सफ़हा पुं० [अ.] सफो; पानुं

सफ़ा वि० [अ.] साफ (२) पाक; पवित्र (३) लीसुं; सपाट

सफ़ाई स्त्री० सफाई; स्वच्छता (२) मामलानी पतावट; तोड

सफ़ाया पुं० सफाचट—पूरुं थई जवुं ते (२) सत्यानाश

सफ़ी वि० [अ.] साफ (२) पवित्र (३) पुं० एक फारसी फकीर

सफ़ीना पुं० [अ.] अदालती समन्स (२) नोंधपोथी (३) होडी

सफ़ीर पुं० [अ.] एलची; राजदूत

सफ़ूफ़ पुं० [अ.सुफ़ूफ़] चूर्ण; भूको

सफ़ेद वि० [फा.सुफ़ैद] सफेद; धोळुं (२) कोरुं; कशुं लख्या वगरनुं

सफ़ेद-पोश पुं० सफेद कपडांवाळो (२) शिष्ट माणस; बाबु

सफ़ेदी स्त्री० सफेदी; धोळाश (२) चूनाथी धोळवुं ते. —आना= घरडा थवुं; वाळ धोळा थवा

सब वि० सौ; बधुं (२) पूरुं; सारुं

सबक़ पुं० [अ.] पाठ; शिखामण

सबक़त स्त्री० [अ.] बीजाथी आगळ के विशेष होवुं ते

सब का सब वि० बधुं ज; पूरेपूरुं

सब कुछ वि० एकेएक; बधुं ज

सबर पुं० सबूर; 'सब्र'

सबील स्त्री० [अ.] सडक; रस्तो (२) उपाय; युक्ति (३) परब

सबू पुं० [फा.] माटीनो घडो

सबूचा पुं० [फा.] नानो 'सबू'

सबूत पुं० [अ.] साबूती; संगीनता;

दृढता (२) साबिती; प्रमाण
सवेरा पुं० जुओ 'सवेरा'
सब्ज़ वि०[फा.] काचुं ताजुं (फळफूल इ०)(२)लीलुं. **–बाग़ दिखलाना**= पोतानुं काम काढी लेवा मोटी मोटी आशाओ देखाडवी
सब्ज़ा पुं०[फा.] हरियाळी(२)सबजी; भांग [लीलुं शाक
सब्ज़ी स्त्री०[फा.] जुओ 'सब्ज़ा' (२)
सब्बल पुं० कोश; नराज
सब्र पुं०[अ.] सबर;धीरज. (किसीका) **सब्र पड़ना**= कोकने कष्ट दीधानां फळ मळवां
समंत पुं० [सं.] सीमा; हद
सम पुं० [अ. सम्म] झेर
समअ़ पुं० [अ.] कान
समअ़–ख़राशी स्त्री०[फा.]नकामीवातोथी कान फोडवा के माथुं खावुं ते
समझ स्त्री० समज; बुद्धि
समझौता पुं० समजूती; आपसमां समजीने आणेलो निकाल
समदना अ०क्रि० (प.) प्रेमथी मळवुं; भेटवुं (२) भेट करवुं; आपवुं
समधियाना पुं० पुत्र के पुत्रीनुं सासरुं
समधी पुं०पुत्र के पुत्रीनो ससरो;वेवाई
समन पुं० [अ.] मूल्य; किंमत
समर(–रा) पुं० [अ.] परिणाम; फळ (२) लाभ; वदलो
समसाम स्त्री० [अ.] नागी तलवार
समाँ पुं० समय. **–बँधना**=(संगीत वगेरे)एवुं थवुं के लोक छक थई जाय
समाँ पुं० [अ.] आसमान; आकाश
समाअत स्त्री० [अ.] सांभळवुं ते
समाई वि०[अ.]सांभळेलुं; कोईनुं कहेलुं
समुहा वि०सामेनुं(२)अ०सामे;सन्मुख
समुहाना अ०क्रि०सामे आववुं;सन्मुख थवुं [उंमरतुं
समौरिया वि० समोवडियुं; समान
सयानपत स्त्री०,**सयानपन** पुं० शाणपण (जुओ 'सयाना')
सयाना वि०शाणुं; समजु; चतुर (२) चालाक;पहोंचेल(३)उंमरे पहोंचेलुं
सर पुं०[फा.] शिर (२)टोच (३) वि० सर–तावे करेलुं; पराजित
सर-अंजाम पुं० [फा.] सरंजाम
सरक स्त्री०'सरकना'–परथी नाम (२) दारूनो नशो
सरकना अ०क्रि० सरकवुं; खसवुं (२) नियत समयथी मोडुं थवुं–मुहूर्त खसवुं (३) काम नभवुं के चालवुं
सरकश वि०[फा.]उद्धत(२)सामे थाय एवुं
सरकारी काग़ज़ पुं० सरकारी कागळियुं (२) पैसानी नोट
सरकोबी स्त्री० [फा. सर+कोब] दमन

(२) शिक्षा; दंड
सरख़त पुं० [फा.] भाडा-चिठ्ठी (२) ऋण चूकते कर्यानी पहोंच
सरग़ना पुं० [फा.] नेता; आगेवान
सरगम पुं० संगीतनी सारीगम
सरगरदाँ वि० [फा.] गभरायेलुं; हेरान
सरगरम, सरगर्म वि० [फा.] जोशीलुं (२) उत्साही (३) तत्पर; चालाक
सरगश्ता वि० [फा.] (नाम, -श्तगी) दुर्दशामां सपडायेलुं; बेहाल
सर-गुज़श्त स्त्री० [फा.] आपवीती (२) वर्णन (३) जीवनचरित
सर-गोशी स्त्री० [फा.] कानफूसियां
सरघा स्त्री० [सं.] मधमांख
सर-चश्मा पुं० [फा.] नदीनो उगम (२) पाणीनो झरो
सरज़द वि० प्रगट; जाहेर
सर-ज़मीन स्त्री० [फा.] देश (२) जमीन
सरजा पुं० सिंह (२) सरदार
सरज़ोर वि० [फा.] शिरजोर (२) जुओ 'सरकश' (नाम, -री)
सरताज पुं० [फा.] सर्वश्रेष्ठ; शिरताज
सरतान पुं० [अ.] करचलो
सर-ता-पा अ० [फा.] माथाथी पग लगी; आदिथी अंत लगी
सरद वि० जुओ 'सर्द'
सरदा पुं० [फ़ा.] एक जातनुं ख़डबूचुं
सरदी स्त्री० जुओ 'सर्दी'
सर-नविश्त स्त्री० [फा.] नसीब; तकदीर
सरना अ० क्रि० सरवुं; चालवुं; (२) निपटवुं (३) नभवुं; चाली जवुं
सरनाम वि० [फा.] नामीचुं; प्रख्यात
सरनामा पुं० [फा.] (लेखनुं) मथाळुं; शीर्षक (२) सरनामुं
सरपट अ० पूरपाट; पूरजोश
सरपत (-ता) पुं० [सं. शरपत्र] सरपट; कुश जेवुं छाजनुं घास
सरपरस्त वि० [फा.] संरक्षक (नाम-स्ती)
सर-फ़राज़ वि० [फा.] प्रतिष्ठित (नाम, -जी)
सरफ़ा पुं० जुओ 'सर्फ़ा'
सर-बराह (०कार) पुं० [फा.] सरभरा करनार; व्यवस्थापक (२) मुकादम
सर-बराही स्त्री० [फा.] सरभरा; बंदोबस्त
सर-बस्ता वि० [फा.] छूपुं; गुप्त
सर-बाज़ वि० [फा.] जानना जोखमथी वर्तनार; वीर; बहादुर
सर-बुलंद वि० [फा.] प्रतिष्ठित (२) नसीबदार
सरमस्त वि० [फा.] मस्त; मदमत्त
सरमा स्त्री० [सं] देवनी कूतरी (वेदोमां) (२) कूतरी (३) पुं० [फा.] शियाळो
सरमाया पुं० [फा] मूंडी (२) संपत्ति (३) कारण; सबब
सरवत स्त्री० [अ.] समृद्धि; वैभव

सरवरे-कायनात पुं० [फा.] सृष्टिनो सरवर–नेता (२)महंमद पेगंबरनो एक इल्काब
सरसठ वि० सडसठ; ६७
सरसब्ज़ वि०[फा.]हरियाळुं; भर्युभादर्युं
सरसरी अ० सरसर; झटझट
सरसाम पुं० [फा.] सन्निपात; मूंझारो
सरसार वि० मग्न (२) चकचूर
सरसेटना स०क्रि० वढवुं; झाटकवुं
सरसों स्त्री० सरसव
सरहज स्त्री० साळावेली
सरापा अ० [फा.] जुओ 'सर-ता-पा'
सराफ़ पुं०[अ.सर्राफ़]शराफ; नाणावटी (२) सोना चांदीनो वेपारी
सराफ़ा पुं० सराफी (२)सराफ-बजार (३) बॅन्क
सराबोर वि०तरबोळ;साव पलळेलुं
सराय स्त्री० [फा.] सराई; धर्मशाळा
सरायत स्त्री० घूसवुं ते; प्रवेश (२) असर; प्रभाव
सरावग(–गी) पुं० श्रावक; जैन
सरासर अ०[फा.]सरार;सराधरा; हरार
सरासरी स्त्री०[फा.] जलदी; उतावळ (२)सरेराश;अंदाज(३)अ०जलदी (४) सरासरी; अंदाजथी
सराहत स्त्री०[अ.] टीका (२) स्पष्टता
सराहना स्त्री०सराह;स्तुति(२)स०क्रि० सराहवुं;वखाणवुं [वि० मिश्रित
सरिश्त स्त्री०[फा.]स्वभाव(२)गुण(३)
सरिश्ता पुं०[फा. सरेरिश्तः]कचेरी(२) कार्यालयनुं खातुं; दफतर
सरिश्तेदार पुं०शिरस्तेदार(२)खातानो मोटो अमलदार
सरीअ वि०[अ.]जल्दी करनार;उतावळुं
सरीखा वि० सरखुं; समान
सरीह वि० [अ.] स्पष्ट; खुल्लुं
सरीहन् अ०[अ.]सरेतोरे;जाहेर;छ्चोक
सरुज वि० [सं.] रोगी
सरूर पुं० जुओ 'सुरूर'
सरे-दस्त अ०[फा.]हमणां ज;अबघडी (२)हाल पूरतुं; 'फिलहाल'
सरे-नौ अ० [फा.] तद्दन शरूआतथी
सरे-बाज़ार अ०[फा.]छडेचोक;सरेतोरे
सरो पुं०[फा.]बागमां शोभा माटे होतुं एक झाड ['वास्ता'
सरोकार पुं० [फा.] संबंध; लेवादेवा;
सरो-सामान पुं० सरसामान
सरौता पुं० सरोतो; सूडी
सर्द वि०[फा.]ठंडुं;शीतळ(२)ढीलुं;मंद (३) नामरद; निर्वीर्य
सर्द-मिज़ाज वि० उत्साह वगरनुं (२) शुष्क; कठोर
सर्दी स्त्री०[फा.]'सर्द' परथी नाम(२) शरदी; सळेखम (३) शियाळो

सर्फ़ पुं०[अ.]व्यय;खरच(२)व्याकरण
सर्फ़ा पुं० [अ.] खरच; वापर; व्यय
सर्राफ़ पुं० [अ.] 'सराफ' जुओ
सर्राफ़ा पुं० जुओ 'सराफा'
सर्वकाम पुं०[सं.] सौ कामनाओ पूरी करनार (२) शिव
सर्वग्रास पुं० [सं] खग्रास ग्रहण
सर्वतोभाव अ० [सं] 'भली भाँति'; सौ रीते; बरोबर
सर्षप पुं० [सं.] सरसव
सलतनत स्त्री० सल्तनत (२) प्रबंध; गोठवण (३) आराम; निरांत
सलना अ०क्रि० साल पडवुं; वींधावुं
सलफ़ वि० [अ.] गत; व्यतीत
सलब वि० [अ.शल्ब] बरबाद; नष्ट
सलमा पुं० सोनाचांदीनो तार
सलहज स्त्री० जुओ 'सरहज'
सला स्त्री० [अ.] नोतरुं; आमंत्रण
सलाई स्त्री० पातळो सळियो (२) दीवासळी
सलाख स्त्री० सळियो
सलाबत स्त्री० [अ.] दृढता; मजबूती
सलाम पुं०[अ.]सलाम;वंदन.–लेना= सामे सलाम करवी; सलाम झीलवी. –देना=सलाम करवी
सलामत-रवी स्त्री०[अ.+फा.]मध्यम-मार्ग (२) मापसर खरच
सलीक़ा पुं०[अ.]ढंग;रीत(२)कुशळता; होशियारी (३) सभ्यता (४)वर्तन; रीतभात
सलीब स्त्री०[अ.]शूळी(२)ख्रिस्ती क्रॉस
सलीम वि०[अ.] ठीक;सारुं(२)तंदुरस्त (३) साफ दिलनुं (४) शांत; धीर
सलीम-उत्तबा वि०[अ.]कोमळ दिलनुं (२) धीर; गंभीर (३) बुद्धिमान
सलीस वि० [अ.] सुगम; सरळ
सलूक पुं०[अ.] वर्तन;रीतभात(२)मेळ (३) भलाई; नेकी
सलोतर पुं०सालोत्रीनी विद्या;ढोर-वैदुं
सलोतरी पुं० सालोत्री [सुंदर
सलोना वि०लूण–मीठावाळुं(२)सलूणुं;
सलोनो पुं०बळेव;रक्षाबंधननो तहेवार
सलख़ स्त्री० [अ.] सुद बीज
सवत(–ति) स्त्री०'सौत';शोक;सपत्नी
सवन पुं० [सं.] प्रसव
सवाब पुं० [अ.] पुण्य (२) भलाई
सविनय अवज्ञा स्त्री० [सं.] सविनय कानूनभंग
सवेरा पुं० सवार; प्रभात
सवैया पुं०सवाशेरनुं वजन (२)सवाना आंक (३) सवैया छंद
ससुर पुं० ससरो
ससुराल स्त्री० सासरी
सस्ता वि०सस्तुं. **सस्ते छूटना**=थोडामां

के थोडी महेनते पतवुं
सस्ती स्त्री० सस्तापणुं
सस्त्रीक वि०[सं.]साथे पत्नी के स्त्री वाळुं
सहत पुं० 'शहद'; मध [आंगणुं
सहन पुं० [सं] सहेवुं ते(२)[अ.]चोक;
सहनीय वि० [सं.] सह्य
सहभोज पुं० सहभोजन
सहभोजी पुं० सहभोजन करनार
सहम पुं० [फा.] भय;डर (२) संकोच
सहमना अ०क्रि०डरवुं(प्रेरक-सहमाना)
सहर पुं०[अ.]सवार;प्रभात(२)[अ.सेह्र]
जादु(३)अ०धीमे धीमे;मंद गतिए
सहर-ख़ेज़ वि०[अ.+फा.]चोर;उठावगीर
सहर-गही स्त्री० 'सहरी'; सरगी
सहरा पुं०[अ.]खाली मेदान(२)जंगल
सहरी स्त्री० शफरी माछली(२)सरगी;
रोजामां करातो मळस्कानो नास्तो
सहल वि० [अ.] सहेलुं
सहलाना स०क्रि० थाबडवुं; धीरेथी
पंपाळवुं या घसवुं के हाथ फेरववो
(२) गलीपची करवी(३)अ०क्रि०
गली थवी के वलूर आववी
सहाइ(–ई,–उ) पुं० सहाय;मददगार
सहाब पुं० [अ.] वादळुं
सहाबा पुं० [अ.] मित्र; दोस्त
सहाय पुं०[सं.]सहाय;मदद(२)सहायक
सहार पुं० सहन (२) सहनशीलता
सहारना स०क्रि० सहवुं; खमवुं
सहारा पुं०सहाय;मदद(२)आशरो;हूंफ
सहालग पुं० लगनगाळो
सहावल पुं० 'साहुल'; ओळंबो
सहिजन पुं० [सं. शोभांजन] सरगवो
सही भरना=मानी लेवुं
सही-सालिम वि० [अ.] बरोबर; पूरुं
सहूलत [अ.], **सहूलियत** [फा.]स्त्री०
सहेलाई (२) अदब; विनय; विवेक
सहेजना स०क्रि०संभाळीने तपासवुं के
जोई लेवुं (२) कही समजावीने
सोंपवुं
सहेली स्त्री० साहेली; सखी (२) दासी
सहो पुं० [अ. सह्व] भूल; चूक
सहूवन् अ० [अ] भूलथी
साँई पुं० स्वामी(२) प्रभु (३) फकीर
साँकड़ा पुं० पगनुं सांकळुं
साँच वि० साच; सत्य
साँचला वि० साचकलुं; सत्यवादी
साँचा पुं०सांचो;बीबुं;फरमो. **साँचेमें
ढालना**=बहु सुंदर बनाववुं
साँची पुं० पोथी आकारनी छपाई
साँट स्त्री०सोटी के कोयडो या तेनुं सोळ
साँटा पुं० सोटो (२) सांठो (शेरडीनो)
साँठ पुं० सांठो (२) पगनुं सांकळुं
साँठ-गाँठ स्त्री० गांठ;मेळाप (२)अनुचित
गुप्त संबंध

साँड़ पुं० सांढ; गोधो

साँड़नी स्त्री० सांढणी [सवार

साँड़िया पुं० वेगवाळुं ऊंट(२)सांढणीनो

साँप पुं० (स्त्री० **साँपिन**) साप. **कलेजे पर साँप लोटना**=भारे दुःख थवुं. **–सूँघ जाना**=मरी जवुं

साँपिन स्त्री० सापण

साँभर पुं० सांभर सरोवर के तेमांथी पकवातुं मीठुं (२) वटेसरी; भाथुं

साँवला वि० शामळुं; काळाश पडतुं (२) पुं० श्रीकृष्ण

साँस स्त्री०सास;श्वास (२) दमनो रोग. **–उखड़ना, –टूटना**=श्वास ऊपडवो के तूटवो (मरती वेळा.) **–चढ़ना, –फूलना**=श्वास चडवो. **–लेना**=सास खावो; विराम लेवो

साँसत स्त्री०श्वास लेवानी मुश्केली(२) सांसता;सांसा;मुश्केली [अंधेरी

साँसत-घर पुं०जेलनी काळी कोटडी;

साँसा पुं०सास;दम (२) प्राण;जिंदगी (३) संशय;सांसो (४) डर;दहेशत

सा वि०पुं० जेवुं;समान. उदा. कौनसा

साअ(–इ)त स्त्री० [अ.] एक कलाक (२) पळ (३) महुरत

साइक़ा स्त्री० [अ.] वीजळी

साईं पुं० 'सांई' जुओ

साई स्त्री० बानुं; 'पेशगी'

साका पुं०शक; संवत(२)कीर्ति के तेनुं स्मारक

साकिन वि० [अ.] निवासी; रहेवासी

साक़ी पुं०[अ.]दारू पानार(२) प्रेमीनुं संबोधन. (स्त्री० **साक़िन**)

साकेत पुं० [सं.] अयोध्या

साक्ष्य पुं० [सं.] साक्षी; शाहेदी

साख पुं० साक्षी; शाहेद (२) साख

साखना स०क्रि० (प.) साख पूरवी

साखी पुं०साक्षी देनार(२) स्त्री०साक्षी (३) साखी काव्य. **–पुकारना**=साक्षी आपवी [वात

साख़्त स्त्री० [फा.] बनावट(२)कल्पित

साग पुं० शाक

सागपात पुं० लूखुंसूकुं भोजन

साग़र पुं० [अ.] प्यालो (शराबनो)

सागूदाना पुं० सागुचोखा

साज़ पुं०[फा.?]साज;सजावटनी सामग्री

साजन पुं०स्वामी (२) ईश्वर (३) सज्जन

साज-बाज पुं०तैयारी(२)मेळ;खूब संबंध

साज़-सामान पुं०[फा.]साजसरंजाम; सामग्री(२)ठाठमाठ

साज़िंदा पुं०[फा.]साजिंदो;'सपरदाई'

साज़िश स्त्री० [फा.] मेळ; संप(२) दावपेच; षडयंत्र

साझा पुं० भाग; हिस्सो

साझी, साझेदार पुं०भागियो;हिस्सेदार

साटन पुं० साटीन कपडुं
साटना स०क्रि० जुओ 'सटाना'
साठा पुं० सांठो (२)वि०साठ उंमरनुं
साढ़(-ढ़े)साती स्त्री० साडासात वर्ष मास के दिवसनी (अशुभ) दशा
साढ़ू पुं० साढु; साळीनो वर
साढ़े वि० साडा. उदा. साढ़ेचार
साढ़ेसाती स्त्री० जुओ 'साढ़साती'
सात वि० ७. **-पाँच**=चालाकी;धूर्तता. **-राजाओंकी साक्षी देना**=कोई वातनी सत्यता पर खूब जोर देवुं
सात-फ़ेरी स्त्री० लग्नना सात फेरा
साथ पुं० साथ; संघात (२) मेळ; संबंध (३) अ० साथे. **-ही**=एनी साथे; उपरांत. **-ही साथ**=साथे साथे
साथिन स्त्री० 'साथी'नुं स्त्री०
सादगी स्त्री०[फा.]सादाई(२)सरळता; निष्कपटता
सादा वि०[फा.]सादुं(२)एकलुं;निर्भेळ (३) निष्कपट (४) भोळुं; मूर्ख
सादिक़ वि० [अ.] साचुं (२) सत्यनिष्ठ
सादिर वि०[अ.] जारी; चालु होनारुं (२) नीकळनारुं
साध पुं०साधु(२)सज्जन(३)स्त्री०इच्छा
साधुवाद पुं०[सं.] 'साधु साधु' कही शाबाशी आपवी ते
सान पुं० सल्ली;अस्त्रो घसवानी पथरी. **-देना,-धरना**=पथरी पर अस्त्रो चडाववो; धार काढवी
सानना स०क्रि०'सनना'नुं प्रेरक. जुओ 'सनना'
साना,सानिअ पुं० [अ.] रचनार (२) [कारीगर
सानिहा पुं० [अ.] दुर्घटना
सानी स्त्री० पाणीमां पलाळी पशुने अपातुं खाण(२)वि० [अ.] बीजुं; 'दूसरा'(३)जोडियुं; समान; साथी
सानु पुं० [सं.] शिखर; टोच(२) अंत
साफ़ा पुं० [अ.]साफो; फेंटो (२)पाघडी (३)पहेरवानां कपडां धोवां ते
साफ़ी स्त्री० [अ.]हाथरूमाल(२)साफी; चलम पीवानो कपडानो ककडो(३) भांग गाळवानो रूमाल
साबक़ा पुं० जुओ 'साबिक़ा'
साबिक़ वि० [अ.] पूर्वनुं; पुराणुं
साबिक़ दस्तूर अ० पूर्ववत्; यथापूर्वम्
साबिक़ा पुं० [अ.] पिछान (२) संबंध
साबित वि० [अ.] साबूत; आखुं; पूरुं (२)ठीक;बरोबर(३)[फा.] साबित
साबिर वि० [अ.] सबूर करनार
साबु(-बू)न पुं० [अ.] साबू
साबूदाना पुं० साबुचोखा
सामना पुं० सन्मुख थवुं के आववुं ते (२) सामनो; सामे थवुं ते
सामने अ० सामे

सामा पुं० श्रोता [(२)बंदोबस्त
सामान पुं०[फा.]सामान; साधनसामग्री
सामिष वि० [सं.] आमिष—मांस साथेनुं
सायत पुं० जुओ 'साअत'
सायबान पुं० [फा. साय:बान] मकान आगळनो वरंडा के ओसरी
सायर वि० [अ. साईर] बधुं; कुल (२)अवशिष्ट; बाकी(३)पुं०जकात
सायल पुं० [अ.] प्रश्नकर्ता (२) मागण
साया पुं० [फा.] छाया; छांयडो(२) भूतप्रेत (३) असर; छाया (४) [इं. शेमीज़] स्त्रीओनुं घाघरा जेवुं एक वस्त्र
सारभाटा पुं० ओट(समुद्रना पाणीनी)
सारबान पुं० [फा.] ऊंट पर बेसनार
सारा वि०(स्त्री०—री) सारुं; बधुं; पूरुं
सार्वराष्ट्रीय वि०[सं.]अनेक राष्ट्रो साथे संबंधवाळुं; आंतरराष्ट्रीय
साल स्त्री० वींधवुं ते(२)साल; छेद(३) सालवुं ते: पीडा (४) पुं० [फा.] साल; वर्ष
साल—ख़ुर्दा वि० [फा.] पुराणुं; जूनुं (२) घरडुं [वर्षगांठ
साल—गिरह स्त्री० [फा.] सालगरेह;
सालन पुं० मसालेदार शाक
सालना अ०क्रि०सालवुं (२) स०क्रि० साले तेम करवुं (३) सालववुं
सालरस पुं० [सं.] राळ
सालस पुं०'सालिस';पंच(नाम,—सी)
सालहा-साल अ० [फा.] वर्षो सुधी; घणा वखत सुधी
साला पुं० साळो (२) सालो गाळ
सालाना वि० [फा.] वार्षिक
सालार पुं० [फा.] नेता. —जंग पुं० सेनापति [माणस
सालिक पुं०[अ.]यात्राळु (२) धर्मिष्ठ
सालिम वि०[अ.]संपूर्ण;पूरुं(२)तंदुरस्त
सालियाना वि०जुओ 'सालाना' [स्थ
सालिस वि०[अ.]त्रीजुं(२)पुं०पंच;मध्य-
साली स्त्री० साळी
सालेह वि० [अ.सालिह] (स्त्री०—हा) नेक;भलुं(२)सदाचारी(३)नसीबदार
साव पुं० 'साहु' जुओ
सावन पुं० श्रावण (वि० —नी)
सास स्त्री० सासु
साह पुं० शाह; शेठ (२) 'साहु'
साहब पुं०[अ.साहिब](स्त्री०**साहिबा**) मित्र (२) मालिक (३) ईश्वर (४) साहेब; गोरो(५)सन्माननुं संबोधन
साहब-सलामत स्त्री० [अ.] सामसामे जय जय — प्रणाम
साहबी वि०साहेबनुं (२) स्त्री० साहेबी
साहा पुं० लग्नमुहूर्त के तेनी पत्रिका
साहिब पुं० [अ.] साहेब

साहिर पुं० [अ.] जादुगर
साहिल पुं० [अ.] किनारो; तट
साही स्त्री० साहुडी
साहु पुं० साधुपुरुष (२) साहुकार
साहुल पुं० ओळंबो; 'सहावल'
साहू पुं० जुओ 'साहु'
साहूकार पुं० साहुकार; मोटो वेपारी
साहूकारा पुं० साहुकारी; शराफी (२) साहुकारोनुं बजार
सिंकना अ०क्रि० सेकावुं; 'सेंकना'
सिंगा पुं० रणसिंगुं
सिंगार पुं० शृंगार(२)शणगार(३)शोभा
सिंगारदान पुं० शणगार सजवानी वस्तुओनी पेटी [पूजारी
सिंगारिया पुं०देवना शणगार सजनार;
सिंगिया पुं० एक झेरी मूळियुं
सिंगी पुं०'सिंगा' जुओ(२)स्त्री०खराब लोही चूसीने खेंचवानी नळी
सिंगौटी स्त्री० जुओ 'सिंगार-दान'
सिंघाड़ा पुं०[सं. शृंगाटक] शिंगोडुं
सिंजाफ़ पुं० [फा. सिजाफ़] संजाप; कपडानो गोट, ओटेली किनार
सिंदोरा पुं० जुओ 'सिंधोरा'
सिंधूरा पुं० सिंधुडो राग
सिंधोरा पुं०(सिंदूर राखवानी)कंकावटी
सिंहनी, सिंही [सं.] स्त्री० सिंहण
सिआ(-या)र पुं० (स्त्री०-री) शियाळ
सिकंजबीन स्त्री० [फा.] लींबु के सरकानुं एक शरबत
सिकंदरा पुं० रेलवेनो हाथ; सिग्नल
सिकड़ी स्त्री० बारणानी सांकळ (२) गळानी सांकळी–एक घरेणुं
सिकता स्त्री०[सं.]रेती के रेताळ जमीन
सिकत्तर पुं० सेक्रेटरी; मंत्री
सिकली स्त्री०[अ. सैक़ल]सिकलीगर–सराणियानुं काम
सिकहर पुं० [सं. शिक्य+घर] शींकुं
सिकुड़न स्त्री०संकडावुं ते; संकोच(२) गडी; 'शिकन'
सिकुड़ना अ०क्रि० संकडावुं; संकोचावुं (२) गडी पडवी [(२) समेटवुं
सिकोड़ना स०क्रि० संकोडवुं; संकोचवुं
सिकोरा पुं० 'सकोरा'; शकोरुं
सिक्का बैठना या जमना=अधिकार स्थापित थवो (२) रोफ पडवो
सिक्ख,सिख स्त्री० शीख; 'सीख'(२) पुं० शिष्य (३) शीख; नानकपंथी
सिखरन स्त्री० 'शिखरन'; दहीं खांडनी मीठी प्रवाही वानी [वाडवुं
सिखलाना, सिखाना स०क्रि० शिख-
सिखावन पुं० शिखामण; शीख
सिगरा(-रो) वि०(प.) (स्त्री०-री)सघळुं
सिजदा पुं० [अ.] सिजदो;प्रणाम;वंदन
सिझना अ०क्रि० सीझवुं;चडवुं; पाकवुं

सिझाना स॰क्रि॰ सीझववुं;चडववुं;रांधवुं

सिटकिनी स्त्री॰ कमाड बारीनी इस्टापडी

सिटपिटाना अ॰क्रि॰ सपटावुं;दबावुं(२) धीमुं पडवुं (३) मूंझावुं; सपटावुं

सिट्टी स्त्री॰ वाचाळपणुं. **–भूलना**= सपटावुं; गभरावुं

सिठनी स्त्री॰ लग्ननुं फटाणुं

सिठाई स्त्री॰ फीकापणुं; 'सीठापन'

सिड़ स्त्री॰ गांडपण; उन्माद (२) धून

सिड़ी वि॰(स्त्री॰**–ड़िन**)पागल(२)धूनी

सितम–ज़दा, –रसीदा वि॰ [फा.] सितमनुं भोग बनेलुं

सिताइश स्त्री॰[फा.]धन्यवाद; शाबाशी (२) आभार; 'शुक्रिया'

सिताब अ॰ [फा. शिताब] जल्दी;झट

सितारा पुं॰[फा.] सितारो (२) सोना-चांदीनी बिंदी-टीलडी.**–चमकना, –बलंद होना**=नसीब ऊघडवुं

सिदरी स्त्री॰त्रण दरवाजा के कमान-वाळो ओरडो के वरंडा

सिदिक वि॰ जुओ 'सिद्दीक़'

सिद्क़ पुं॰ [अ.] सत्यता

सिद्दीक़ वि॰ [अ.] सत्यनिष्ठ

सिद्ध-पीठ पुं॰ [सं.] ज्यां साधना झट फळे एवुं स्थान

सिद्धरस पुं॰ [सं] पारो

सिद्धाई स्त्री॰ सिद्ध होवुं ते;सिद्ध दशा

सिधाई स्त्री॰ सीधापणुं [मरवुं

सिधारना अ॰क्रि॰ सिधाववुं;जवुं (२)

सिन पुं॰ [अ.] उंमर; अवस्था

सिनक स्त्री॰ लींट; नाकनो मेल

सिनकना अ॰क्रि॰ नाक नसीकवुं

सिन-बुलूग़त पुं॰ [अ.]उंमरे पहोंचवुं ते (२) युवानी

सिन्नी स्त्री॰ मीठाई (प्राय: खुशीमां के देवना प्रसाद तरीके वहेंचाय ते)

सिपर स्त्री॰[फा.] आड;ओथ (२) ढाल

सिप(–पा)ह स्त्री॰ [फा.] सेना

सिप(–पा)हगरी स्त्री॰[फा.] सिपाईगीरी

सिपह-सालार पुं॰ [फा,] सेनापति

सिपारा पुं॰ [फा. सीपार:] कुराननो अध्याय के खंड

सिपास स्त्री॰ [फा.] धन्यवाद; आभार

सिपाह स्त्री॰ [फा.] जुओ 'सिपह'

सिप्पा पुं॰ युक्ति; उपाय (२) प्रभाव

सिफ़र पुं॰ [इं. साइफर] शून्य; मीडुं

सिफ़ला वि॰[अ.]सिफलुं; हलकुं; क्षुद्र (२)छीछरुं(नाम,**–लगी**) [काम

सिफ़ारत स्त्री॰[फा.]'सफीर'–राजदूतनुं

सिफ़ारिश स्त्री॰ [फा.] सिफारस

सिफ़ारिशी वि॰ सिफारसवाळुं (२) जेनी सिफारस करी होय तेने लगतुं

सिफ़ारिशी टट्टू पुं॰सिफारसथी ज पद पर पहोंचेल माणस

सिमटना अ०क्रि०समेटावुं;निपटावुं(२) संकडावुं; संकोचावुं (३) गडी के करचोली पडवी

सिमरन पुं० (प.) स्मरण

सिमरना स०क्रि० समरवुं; 'सुमिरना'

सिय स्त्री० (प.) सीता

सियरा वि०(प.)शीतळ(वि०स्त्री०–**री**; नाम, –**राई**)

सिया स्त्री०(प.)सीता [(२)हकूमत

सियादत स्त्री०[अ.]सरदारी;आगेवानी

सियापा पुं०स्त्रीओनुं कूटवुं ते [शियाळ

सियार(–ल) पुं० (स्त्री० –**रिन,–री**)

सियाला पुं० शियाळो

सियासत स्त्री० [अ.] राजव्यवस्था

सियासी वि० राजद्वारी; राजकीय

सियाह वि० [फा.] काळुं (२) अशुभ

सियाहत स्त्री० [अ.] सफर; मुसाफरी

सियाहा पुं० [फा.] हिसाबनो चोपडो

सिर पुं०शिर;माथुं. –**आँखों पर होना** =माथे चडाववुं; मानवुं. –**के बल जाना**=आदरथी कोई पासे जवुं. –**मुड़ाते ही ओले पड़ना**=प्रारंभमां ज विघ्न नडवुं. –**होना** = पीछो पकडवो

सिरका पुं० [फा.] सरको

सिरकी स्त्री० सरकटनी सोटी के तेनी बनेली सादडी के छाज

सिर-ता-पा अ० जुओ 'सर-ता-पा'

सिरधरा(–रू) पुं० आगेवान; नायक

सिरनामा पुं० जुओ 'सरनामा'

सिरपाव पुं० सरपाव; 'सिरोपाव'

सिरबंद पुं० साफो; फेंटो

सिरबंदी स्त्री० माथानुं एक घरेणुं

सिरहाना पुं० पथारीनो माथानो भाग

सिरा पुं० छेडो; अंत (२) (शरूना के अंतना) छेडानो भाग(३)अणी (४) शिरा;नाडी (५) पाणीनो ढाळियो. सिरेका=अवल दरज्जानुं

सिरा(०व)ना स०क्रि० ठंडुं करवुं (२) व्यतीत करवुं (३) अ०क्रि० ठंडुं के निरुत्साह थवुं(४)वीतवुं;पसार थवुं

सिरावन पुं० (खेडूतनो) समार

सिरावना स०क्रि०(२) अ०क्रि० (प.) जुओ 'सिराना' [सरिश्तेदार'

सिरिश्ता,सिरिश्तेदार जुओ'सरिश्ता,

सिरोपाव पुं० [सिर+पाँव] जुओ 'सिरपाव'

सिल स्त्री०शिला;पथ्थर (२) निशातरो (३) पुं० [अ.] क्षयरोग

सिलगना अ०क्रि०सळगवुं [सत्यानाश

सिलपट वि०बरोबर;सपाट(२)'चौपट';

सिलफ़(–ब)ची स्त्री० हाथमों धोवानुं वासण;'चिलमची' [पथ्थर

सिलबट्टा पुं० निशातरो ने वाटवानो

सिलवट स्त्री॰ गडी; 'सिकुड़न'
सिलवाना स॰क्रि॰ सिवडाववुं;'सिलाना'
सिलसिला पुं॰[अ.] सिलसिलो; क्रम; परंपरा(२)सांकळ(३)व्यवस्था (४) वंशपरंपरा(५)वि॰भीनुं(६)लपसणुं
सिलसिलेवार वि॰ क्रम प्रमाणे; सिलसिलाबंध
सिलह पुं॰ हथियार; 'सिलाह'
सिलहख़ाना पुं॰ शिलेखानुं; शस्त्रागार
सिलहिला वि॰ 'सिलसिला'; लपसणुं
सिला स्त्री॰ शिला (२) पुं॰ शिलोंछ; खेतरमांथी दाणा वीणी लेवा ते
सिलाना स॰क्रि॰ जुओ 'सिलवाना'
सिलावट पुं॰ सलाट
सिलाह पुं॰ [अ.] जुओ 'सिलह'
सिलाही पुं॰ सैनिक; सिपाही
सिलौट(–टा) पुं॰ 'सिल'; निसातरो
सिल्ली स्त्री॰ सल्ली; अस्त्रानी पथरी
सिवई स्त्री॰ घउंनी सेव; 'सिवैयाँ'
सिवा(॰इ,॰य) अ॰ [अ.] सिवाय
सिवान पुं॰ हद; सीमा (२) भागोळ
सिवार स्त्री॰ शेवाळ; लील
सिवाल पुं॰; स्त्री॰ 'सिवार'; सेवाळ
सिवाला पुं॰ शिवालय; महादेव
सिसकना अ॰क्रि॰ डूसकां भरवां (२) छाती धडकवी; जीव गभरावो (३) कशा माटे तलसवुं
सिसकारना अ॰क्रि॰ सिसकारो भरवो; सीत्कारवुं (नाम, सिसकारी स्त्री॰)
सिसकी स्त्री॰ डूसकुं (२) सिसकारो
सिहरना अ॰क्रि॰ थथरवुं (डर के ठंडीथी)
सिहरी स्त्री॰ ध्रुजारी; कंप (२) रोमांच
सिहाना अ॰क्रि॰ ईर्षा करवी(२)हरीफाई करवी (३) स॰क्रि॰ आतुर भावे जोवुं; लालच करवी
सींक स्त्री॰ ताड मूंज वगेरेनुं सकतुं
सींग पुं॰ शिंगडुं. **–समाना**=ठेकाणे पडवुं.**–कटाकर बछड़ोंमें मिलना** =मोटा छतां बाळकोमां भळवुं
सींचना स॰क्रि॰ पाणी पावुं(२)सिंचवुं
सींचाई स्त्री॰(झाड इ॰ने)पाणी पावुं ते
सींव पुं॰ सीम; हद
सी वि॰स्त्री॰ 'सा'नुं स्त्री॰; जेवी
सीकल स्त्री॰जुओ'सैक़ल'(२)पुं॰आंबा पर पाकेली केरी; साख
सीकस पुं॰ ऊषर; खारी जमीन
सीकुर पुं॰[सं. शूक]घउं मकाई वगेरेना दूंडाने छेडे होय छे ते फूमताना रेषा
सीख स्त्री॰ शीख; सलाह; शिखामण
सीख़ स्त्री॰[फा.]लोढानी शीख–पातळो सळियो [सळियो
सीख़चा पुं॰ [फा.] मांस शेकवानो
सीखना स॰क्रि॰ शीखवुं
सीग़ा पुं॰ [अ.] भाग; खातुं

सीठना पुं०,**सीठनी** स्त्री० फटाणुं
सीठा वि० फीकुं; नीरस
सीठी स्त्री० कूचो; रस काढ्या पछीनो रहेतो कूचो; निःसत्त्व चीज
सीड़ स्त्री० भीनाश के भीनाशभूमि
सीढ़ी स्त्री० सीडी; निसरणी
सीदना अ० क्रि० दुःखी थवुं
सीधा वि० (२) पुं० सीधुं
सीधा-सादा वि० भोळुं; सरळ
सीधे अ० सीधी रीते; सीधुं
सीना स०क्रि० सीववुं (२) पुं० [फा.] सीनो;छाती [जोर; जबरदस्त
सीना-ज़ोर वि०[फा.](नाम,–**री**) शिर-
सीना-बंद पुं० [फा.] स्त्रीनी चोळी
सीना-सिपर अ०[फा.] सामी छातीए
सीप पुं०छीप के तेनी अंदर रहेतो जंतु
सीप-सुत, सीपिज पुं० मोती
सीपी स्त्री० सीप; छीप
सीम पुं० सीमा; हद (२)स्त्री० [फा.] रूपुं; चांदी (३)धनदोलत
सीमाब पुं० [फा.] पारो
सीमी वि० [फा.] 'सीम'–चांदीनुं
सीय स्त्री० 'सिय'; सीता
सीर स्त्री०सहियारी के जेमां जमीनदार पोते जाते खेती करतो होय एवी जमीन(२)रक्तशिरा (३)पुं० [सं.] हळ. –**में**=एक साथे मळीने
सीरत स्त्री० [अ.] प्रकृति;टेव(२)गुण; विशेषता
सीरा पुं०[फा. शीर] चासणी(२)शीरो
सील स्त्री० 'सीड़'; जमीननी भीनाश
सीला पुं०'सिला';शिलोंछ(२)वि०भीनुं
सीवन पुं०, स्त्री० [सं.] सीवण
सीस पुं० शीश; माथुं
सीसक [सं.], **सीसा** पुं० सीसुं
सीसी स्त्री० सीसको
सीसों पुं० 'सीसम;' शीशम
सीह पुं० जुओ 'साही'
सुँघनी स्त्री० छींकणी [प्रेरक
सुँघाना स०क्रि० सूंघाडवुं; 'सूँघना'नुं
सुअन पुं० (प.) सुत; पुत्र
सुआमी पुं० (प.) स्वामी
सुआर पुं० (प.) रसोइयो
सुआसिन(–नी) स्त्री० (प.) सुवासण
सुक़रात पुं० सोक्रेटिस
सुकून पुं०[अ.]स्थिरता(२)मननी शांति
सुकूनत स्त्री० [अ.] जुओ 'सकूनत'
सुक्कान पुं० [अ.] सुकान; 'पतवार
सुखंडी वि० सूकलकडी (२) पुं० जेमां बाळक सुकाई जाय एवो एक बाळरोग
सुख़(–ख़ु)न पुं० जुओ 'स.ख़ुन'
सुखलाना, सुखाना स०क्रि० सुकाववुं
सुख़ुन पुं० जुओ 'स.ख़ुन'
सुगना (प.), **सुग्गा** पुं० तोतो; पोपट

सुगुरा पुं० सद्‌गुरु पासेथी मंत्र पामेल
सुघट वि०[सं.]सुंदर(२)सुकर; सुसाध्य
सुघड़(–र) वि० सुघड;सुंदर(२)निपुण
सुचाना स०क्रि० ('सोचना'नुं प्रेरक) विचारवा प्रेरवुं(२)देखाडवुं;ध्यान खेंचवुं
सुचाल स्त्री० सदाचार (वि०, –ली)
सुजनी स्त्री०[फा. सोज़नी]एक जातनुं बिछानुं
सुजान वि० सुजाण
सुडौल वि० सुंदर; सुघटित
सुढंग पुं०सारो ढंग(२)वि०'सुढंग'वाळुं
सुतरां अ० तोपण; छतां
सुतरी(–ली) स्त्री० सूतळी; दोरी
सुतार वि०अच्छुं;उत्तम(२)पुं०सगवड
सुतारी स्त्री० मोचीनो सोयो
सुतुही स्त्री० सीप
सुतून पुं० [फा.] स्तंभ; थांभलो
सुथना पुं०,**सुथनी** स्त्री० 'सूथन' जुओ
सुथरा वि०स्वच्छ;साफ [जूनो सूको मळ
सुद्दा पुं०, **सुद्दी** स्त्री०[अ. सुद्दः] पेटनो
सुद्धा(–द्धाँ) अ०सुध्धां; समेत; साथे
सुध स्त्री०सूध. सुधबुध=सूधबूध;भान
सुधवाना स०क्रि० सुधराववुं
सुधाई स्त्री० सीधापणुं
सुधार पुं० सुधारो [सुधारवुं
सुधारना वि० सुधारनार (२)स०क्रि०
सुधारा वि० सीधुं; निष्कपट
सुन वि० 'सुन्न' जुओ
सुनति स्त्री० (प.) सुन्नत
सुनना स०क्रि० सुणवुं; सांभळवुं
सुनबहरी स्त्री० हाथीपगानो रोग
सुनवाई स्त्री० सांभळवुं ते(२)सुनावणी
सुनसान वि० सूमसाम; निर्जन के उज्जड(२)पुं० 'सन्नाटा'; सूमसाम
सुनहरा(–ला) वि० सोनेरी
सुनहा पुं० (प.) श्वान; कूतरो
सुनाई स्त्री० जुओ 'सुनवाई'
सुनार पुं० सोनी (स्त्री० **–रिन,–री**)
सुनावनी स्त्री० मृत्युनी खबर आववी ते के ते आव्ये करातुं सनान
सुन्न पुं०शून्य;मीडुं(२)वि०निश्चेष्ट;अचेत
सुन्ना पुं० शून्य; मीडुं
सुपच पुं० (प.) श्वपच; चांडाळ
सुपत वि०(प.) सारी पतवाळुं;प्रतिष्ठित
सुपन(–ना) पुं० सपनुं
सुपारी स्त्री० सोपारी
सुपास पुं० आराम; सुख; निरांत
सुपुर्द,सुपुर्दगी जुओ 'सपुर्द, सपुर्दगी'
सुफ़ूफ़ पुं० [अ.] जुओ 'सफ़ूफ़'
सुबह स्त्री० [अ.] सवार; प्रातःकाळ
सुबहान वि०[अ.]पवित्र. **–अल्ला** अ० [अ.]हर्ष के अचंबो प्रगट करनारुं संबोधन; वाह ! धन्य !

सुबास(०ना) स्त्री० सुवास; सुगंध
सुबिस्ता,सुबीता पुं० जुओ 'सुभीता'
सुबुक वि०[फा.] हलकुं; कम वजननुं (२) सुंदर; रूपाळुं
सुबुक-दस्त वि०[फा.] फुरतीलुं;चपळ
सुबुकी स्त्री० [फा.] हलकापणुं (२) अपमान; तुच्छकार
सुबूत पुं० जुओ 'सबूत'
सुभाइ(-उ,-य,-व) पुं०(प.) स्वभाव
सुभिक्ष पुं० [सं.] सुकाळ
सुभीता पुं०सरळता;सहेलाई(२)सुयोग; सवड; अनुकूळता
सुम पुं० [फा.]पशुनी खरी; 'टाप'
सुम(-मि)रन पुं० (प.) स्मरण
सुम(-मि)रनी स्त्री० नानी (२७ दाणानी) जपमाळा
सुर पुं०सूर;अवाज.**–में सुर मिलाना**= हाजी हा करवुं; गायुं गावुं
सुरकना स०क्रि० सीसका साथे खेंचवुं
सुरख़ाब पुं० [फा.]'चकवा'; चातक. **–का पर लगना**=विशेषता होवी
सुरख़ी स्त्री० ईंटनो चूरो–झिकाळो(२) जुओ 'सुर्ख़ी'
सुरत(-ता) स्त्री० सूरत; ध्यान; सरत
सुरती स्त्री० खावानो जरदो–तमाकु
सुरदार वि० सुरीलुं; सुस्वर
सुरधुनी स्त्री सुरनदी; गंगा
सुरमई वि० [फा.] सुरमाना रंगनुं; भूंखरुं नील
सुरमचू पुं० सुरमो आंजवानी सळी
सुराख पुं० छेद; काणुं
सुराग़ पुं० [तु.] भाळ; पत्तो
सुराग़-रसाँ वि० भाळ काढनार
सुरुख वि० प्रसन्न; राजी (२) 'सुर्ख़'
सुरुखरू वि० जुओ 'सुर्ख़रू'
सुरूर पुं० [फा.] आनंद (२) नशानी आछी लहेर–लहेजत
सुरैत(–तिन) स्त्री० रखात
सुर्ख़ वि० (२) पुं० [फा.] लाल
सुर्ख़-रू वि० [फा.]तेजस्वी(२)यशस्वी (३) प्रतिष्ठित
सुर्ख़ी स्त्री०[फा.]लाली(२)लेख वगेरेनुं मथाळुं (३) लोही
सुर्ता वि० समजु; होशियार
सुलग अ०पासे [सुलगाना)
सुलगना अ०क्रि०सळगवुं;लागवुं(प्रेरक
सुलझन स्त्री० सूझ; उकेल (गूंचनो)
सुलझना अ०क्रि० रस्तो सूझवो; गूंच ऊकलवी. (प्रेरक **सुलझाना**)
सुलझाव पुं० जुओ 'सुलझन'
सुलटा वि० सूलटुं
सुलफ़ा पुं० [फा.] सुल्फो; नशावाळी तमाकु (२) चडस [पीनार
सुलफ़ेबाज़ वि०[फा.] गांजो या चडस

सुलह स्त्री० [अ.] सुलेह [डावबुं
सुलाना स०क्रि० 'सोना'नुं प्रेरक;सुव-
सुलेमान पुं०[अ.] यहूदीओनो प्रसिद्ध राजा सोलोमन
सुवन पुं० जुओ 'सुअन'
सुवार पुं० जुओ 'सुआर'
सुषमा स्त्री० [सं.] परम शोभा
सुसताना अ०क्रि० थाक खावो; आराम करवो
सुसर(–रा) पुं० ससरो
सुसराल स्त्री० 'ससुराल'; सासरी
सुस्ताना अ०क्रि० जुओ 'सुसताना'
सुहबत स्त्री० सोबत; 'सोहबत'
सुहबती पुं० सोबती
सुहाग पुं० सुहाग; सौभाग्य (२) लग्न प्रसंगनुं वरनुं वस्त्र के वरपक्षनी स्त्रीओनुं गीत. **–उतरना**=सौभाग्य टळवुं; विधवा थवुं. [वती
सुहाग(–गि)न स्त्री०सुहागण;सौभाग्य-
सुहागा पुं० टंकणखार
सुहागिन(–नी) स्त्री०जुओ 'सुहागन'
सुहाता वि०खमाय एवुं;सह्य(२) मजेदार (३) कोकरवरणुं (पाणी)
सुहाना अ०क्रि०सोहावुं; शोभवुं (२) फाववुं; सारुं लागवुं
सुहावना वि० सोहामणुं; सुंदर (२) अ०क्रि० जुओ 'सुहाना'

सूंघा पुं० पाणी-सूंघो;सूंघीने जमीननुं पाणी बतावनार (२) जासूस
सूँस स्त्री० जुओ 'सूस'
सूअर पुं० (स्त्री०, –री) सूवर; शूकर
सूआ पुं० सोयो (२) शूक; सूडो
सूई स्त्री०सोय (२) (घडियाळना जेवो) कोई पण कांटो
सूखना अ०क्रि० सुकावुं
सूखा वि० सूकुं; शुष्क; लूखुं (२) पुं० सुकवणुं; दुकाळ (३) सूको; जरदो (४) पाणी वगरनी सूकी जगा
सूच्यार्थ पुं० [सं.] व्यंग्यार्थ
सूजन(–नी) स्त्री० सूज; सोजो
सूजा पुं० 'सूआ'; सोयो
सूज़ाक पुं० [फा.] एक मूत्ररोग
सूजी स्त्री० रवो–जाडो लोट
सूझ-बूझ स्त्री० समज; सूझ
सूत पुं० सूतर (२) दोरो
सूती वि० सूतरनुं (२) स्त्री० सीप
सूथन(–नी) स्त्री० स्त्रीओनी सूंथणी
सूद पुं० [फा.] लाभ (२) व्याज
सूद दर सूद=व्याजनुं व्याज
सूदी वि० व्याजुकुं
सूधा वि० (प.) सीधुं
सूधे अ० (प.) 'सीधे'
सूना वि० सूनुं (२) पुं० एकांत जगा
सूप पुं० सूंपडुं (२) [सं.] सूप

सूफ़ पुं० [अ.] ऊन के गरम कपड्डां
सूबा पुं०[फा.]प्रांत;देशनो भाग(२)सूबो
सूर पुं० सूरदास (२) वि० शूर(प.)(३) पुं०सूवर(४)[अ.]क्यामतने दिवसे वागनारुं एक वाजुं(५)[फा.]खुशी; आनंद (६) लाल रंग
सूरज पुं० सूरज. –**पर थूकना या धूल फेंकना**=निर्दोष के पवित्रने लांछन लगाडवुं. –**को दीपक दिखाना**= स्वयं जे प्रसिद्ध के गुणी होय तेनो परिचय कराववो
सूरत स्त्री०[अ.]शिकल;रूप(२)रस्तो; उपाय(३)हाल;दशा.–**दिखाना**= मों बताववुं;सामे आववुं. –**बनाना** =रूप काढवुं;वेश बदलवो(२) मों मरडवुं. –**बिगड़ना**=चहेरो फीको पडवो; निस्तेज थवुं
सूरतन् अ० [अ.] देखवामां; उपरथी; बाह्यतः [-परस्त
सूरत-परस्त वि०सौंदर्य-पूजक(२) बूत
सूरत-हराम वि० अंदरथी निस्सार पण उपरथी देखावडुं
सूरन पुं० सूरण
सूरमा(–वाँ) पुं० वीर; योद्धो
सूराख़ पुं० [फा.] सुराख; छिद्र
सूल पुं० शूळ; सूळ
सूली स्त्री० शूळी (२) फांसी
सूस(०मार) पुं० 'सूँस'; एक जळचर
सूहा पुं० एक जातनो लाल रंग(२) एक संकर राग (३) वि० लाल
सेंक स्त्री० शेक; शेकवुं ते
सेंकना स०क्रि० शेकवुं
सेंत स्त्री० खर्च वगर–मफत थवुं ते
सेंतमें, सेंत-मेंत अ० मफत(२)व्यर्थ
सेंदुर पुं०सिंदूर.–**चढ़ना**=स्त्रीए परणवुं
सेंध स्त्री०दीवालमां खातर पाडे ते;बाकुं
सेंधना स०क्रि० भींतमां खातर पाडवुं
सेंधा पुं०सिंधव [ग्वालियरनो सिंधिया
सेंधिया वि०खातर-पाडु (चोर)(२)पुं०
सेंवई स्त्री० घउंनी शेव
सेंहुड़ पुं० जुओ 'सेहुँड़'
सेग़ा पुं० 'सीग़ा'; विभाग
सेटना स०क्रि०गणतरीमां लेवुं;मानवुं; लेखामां लेवुं
सेठ पुं० (स्त्री०–**ठानी**) शेठ
सेब पुं० [फा.] सेप; सफरजन; 'सेव'
सेम स्त्री०पापडी के वालोळ
सेमई स्त्री० 'सेंवई'; सेव (घउंनी)
सेमल पुं० शाल्मली झाड
सेर पुं०शेर(वजन)(२)शेर; सिंह(३) वि० [फा.] तृप्त; संतुष्ट
सेरा पुं०खाटलानुं माथा आगळनुं लाकडुं (२) पायेली जमीन
सेराब वि० [फा.] पाणीथी तरबोळ;

पाणी पीधेलुं [संतोष
सेरी पुं०शेरी;रस्तो(२)स्त्री०[फा.]तृप्ति;
सेल पुं० बरछो; भालो
सेला पुं० सेलुं; शेलुं
सेली स्त्री०नानो'सेल'-भालो(२)सेली; योगी साधु इ.नी गळानी एक माळा
सेवईं स्त्री० जुओ 'सेंवई'
सेव पुं०चणानी सेव(२)सेब; सफरजन
सेवा-टहल स्त्री० सेवा; खिदमत
सेवाधारी पुं० पूजारी
सेवा-बंदगी स्त्री० पूजापाठ; सेवा
सेवार(-ल) स्त्री० शेवाळ
सेसर पुं० पत्तांनी एक बाजी (२) जाळ
सेसरिया पुं०जाळमां फसावनार;कपटी
सेह वि० [फा.] त्रण
सेहत स्त्री०[अ.] आरोग्य(२)रोगमांथी मुक्ति (३) सुखचेन; राहत (४) (भूलोनी) शुद्धि
सेहत-ख़ाना पुं० पायखानुं
सेहत-नामा पुं० शुद्धिपत्रक
सेहर पुं० [अ. सिहर] जादु; इंद्रजाळ
सेहरा पुं० वरराजानो खूंप
सेहशंबा पुं० [फा. सिहशंबः] मंगळवार
सेही स्त्री० [सं. सेधा] 'साही'; साहुडी
सेहुँआ पुं० एक चर्मरोग; करोळिया
सेहुँड़ पुं० 'सेंहुड़'; थोर [राखवुं
सैंतना स०क्रि०एकठुं करवुं(२)संभाळीने
सैंतालि(-ली)स वि०४७;सुडताळीस
सैंति(-ती)स वि० ३७; साडत्रीस
सैंधव पुं० [सं.] सिंधव (२) सिंधनो निवासी के घोडो (३) वि० सिंधनुं के सिंधु-समुद्रनुं
सै पुं० [सं.शत,प्रा.सय] 'सैं'-सो जेम वपराय छे. उदा.'सोरह सै इकतीस'
सैकड़ा पुं सेंकडो; सैको
सैकड़े अ० सेंकडे; 'प्रति शत'
सैकड़ों वि० सेंकडो;अनेक सो(२)घणुं
सैकत वि०[सं०]रेताळ;रेतीनुं [काम
सैक़ल पुं०[अ.]सिकलीगर-सराणियानुं
सैक़लगर पुं० सराणियो; सिकलीगर
सैद पुं० [अ.] शिकार
सैदानी स्त्री० सैयद स्त्री; 'सैयदानी'
सैन स्त्री० (प.) इशारो (२) सैन्य
सैनभोग पुं० मंदिरोनो शयनभोग
सैनासैनी स्त्री० सामसामे इशारा करवा ते
सैफ़ स्त्री० [अ.] तलवार
सैफ़ी वि० वांकुं; वळेलुं
सैयाँ पुं० स्वामी
सैयार पुं०[फा.] खूब सेर-सहेल करनारो
सैयाल वि० [अ.] प्रवाही; पाणी जेवुं
सैयाह वि०[अ.]यात्री; सफर करनार
सैयाही स्त्री० [अ.] सफर; यात्रा
सैर स्त्री०[फा.] सेर;मोज खातर फरवुं ते;सहेल(२)मजा; आनंद(३)मोज

खातर पर्यटने जवुं ते
सैल पुं०, स्त्री० [अ.] प्रवाह; वहेण
सैलानी वि० सहेलाणी; लहेरी
सैलाब पुं० [फा.] रेल (पाणीनी)
सैलाबी स्त्री०[फा.] भीनाश(२)नदीनी रेलथी सींचाती जमीन (३) रेल
सों प्रत्यय 'सें' या 'से'नुं पद्यनुं रूप
सोंचर-नमक पुं० संचळ
सोंटा पुं० सोटो; लाठी
सोंठ स्त्री० सूंठ
सोंध(-धा) वि०सुगंधीदार(२)पुं०एक सुगंधी पदार्थ (तेलमां नंखातो)
सो स० ते (२) अ० तेथी; अतः
सोआ पुं० एक शाक; सुवा
सोई स० (प.) 'वही'; ते ज; सोय
सोखना स०क्रि० शोषी लेवुं; चूसवुं
सोख़्तनी स्त्री०[फा.]बळतण;सूकुं लाकडुं
सोख़्ता पुं० शाहीचूस कागळ (२)वि० [फा.] बळेलुं; दग्ध
सोग पुं० शोक (वि०-गी)
सोच पुं० विचारवुं ते; (२) चिंता (३) शोक; पस्तावो
सोचना अ०क्रि० विचारवुं; गोर करवुं (२) चिंता करवी (३) खेद करवो
सोचविचार पुं० 'समझ-बूझ'; बधी रीतनो-पूरो विचार
सोज़ पुं० [फा.] बळतरा (२) दुःख
सोज स्त्री० सोज; सोजो
सोज़न स्त्री० [फा.] सोय
सोज़िश स्त्री० [फा.] सोजो
सोझ(-झा) वि० (प.) सीधुं; सरळ
सोता पुं० स्रोत; झरणुं
सोनकेला पुं० सोनेरी केळुं
सोनहरा(-ला) वि० सोनेरी
सोना पुं० सोनुं (२) अ०क्रि० सूवुं; ऊंघवुं (३) अंगे झराणी चडवी **सोनेका घर मिट्टी होना**=खेदान-मेदान थई जवुं. **सोनेमें घुन लगना** असंभव वस्तु बनवी.**सोनेमें सुगंध** =उत्तम चीजमां वळी उत्तमता
सोनामक्खी स्त्री०एक उपधातु-सुवर्ण-माक्षिक
सोनार पुं० 'सुनार';सोनी [फुरसद
सोफता पुं० एकांत अलग जगा (२)
सोफियाना वि० सूफी संबंधी(२)सादुं पण सारुं लागतुं; सुफियाणुं
सोमवारी वि० सोमवारनुं (२) स्त्री० सोमवती अमास ['सो'; ते
सोय स० (प.) 'वही' 'सोई' (२)
सोरनी स्त्री० सावरणी
सोलह वि०१६;सोळ. **सोलहो आने**= सोळे आना; पूरेपूरुं
सोला पुं० जे झाडनां छोडां सोला टोपीमां वपराय छे ते

सोवा पुं० जुओ 'सोआ'
सोसनी वि० [फा. सौसनी] जांबुडियुं
सोहन वि०(स्त्री० –नी)शोभीतुं;सुंदर
सोहना अ०क्रि०सोहवुं;शोभवुं(२)नींदवुं
सोहनी स्त्री०झाडु;सावरणी(२)नींदामण (३) वि०स्त्री० सुंदर
सोहबत स्त्री०[अ.] सोबत (२)संभोग
सोहबती पुं० सोबती; साथी
सोह(–हि)ला पुं० मंगळगीत
सोहाई स्त्री० नींदामण
सोहाग,सोहागिन जुओ 'सुहाग, सुहागिन' [समार
सोहागा पुं०जुओ 'सुहागा'(२)खेडूतनो
सोहाता(–या) वि० सुंदर; सोहातुं
सोहिला पुं० जुओ 'सोहला'
सौंचना स०क्रि० शौच जवुं के जईने धोवुं के त्यार बाद हाथपग धोवा
सौंचर पुं० संचळ; 'सोंचर नमक'
सौंचाना स०क्रि० 'सौंचना'नुं प्रेरक
सौंपना स०क्रि० सोंपवुं; 'सोंपना'
सौंफ स्त्री० वरियाळी
सौंह स्त्री० (प.) सोगन
सौ वि० सो; १००. **–बातकी** एक बात=सारांश; टूंकमां; तात्पर्य के
सौक(०न) स्त्री० 'सौत'; शोक
सौगंद(–ध) स्त्री०[फा.!] सोगंद;कसम
सौगंध पुं० [सं.] अत्तरियो (२) सुगंध (३) स्त्री० सोगंद
सौग़ात स्त्री० [तु.] सोगात; भेट
सौग़ाती वि० भेट तरीके शोभे एवुं; उत्तम; नमूनेदार; विरल
सौज स्त्री० (प.) साज; सामग्री
सौजा पुं० शिकारनुं प्राणी; शिकार
सौत(०न,–तिन) स्त्री०शोक; 'सवत'
सौतिया डाह स्त्री० शोको वच्चेनी ईर्षा(२) भारे ईर्षा [संबंधी
सौतेला वि०(स्त्री० –ली)शोकनुं;शोक
सौदा पुं०[अ.]सोदो(२)सोदानी चीज; माल(३)वेपार(४)पागलपणुं;गांडपण (५) धून (६) वि० काळुं
सौदाई पुं० पागल; गांडो; धूनी
सौदागर पुं० [फा.] सोदागर; वेपारी (नाम,–री) [नी चीजो
सौदा-सुलुफ़,–सुल्फ़ पुं०सोदोकरवा-
सौदा-सूत पुं० व्यवहार
सौध पुं०[सं.] महेल; भवन (२)चांदी
सौभग पुं० [सं.] सद्भाग्य (२) सुख (३) धनदोलत (४) सौंदर्य
सौभागिनी स्त्री० [सं.] सौभाग्यवती
सौरी स्त्री०प्रसूतिघर;प्रसवस्थान
सौवर्चल पुं०[सं.]संचळ;'सोंचरनमक'
सौहृद पुं०[सं.] मित्रता (२) सुहृद
स्तन पीना = धाववुं
स्तर पुं०[सं.] थर;पड (२)सेज;पथारी

स्तोक पुं० [सं.] बुंद; बिंदु
स्त्रीव्रत पुं० पत्नीव्रत; अव्यभिचार
स्थानापन्न वि०[सं.]अवेजी;कामचलाउ
स्थायी समिति स्त्री० [सं.] 'स्टेन्डिंग कमिटी'; वरस दरम्यान कायमी कार्यवाहक समिति
स्पर्द्धा स्त्री०[सं.]स्पर्धा. (वि०, –र्द्धी)
स्पर्शी वि० [सं.] स्पर्शनार
स्पृही वि० [सं.]स्पृहा करनारुं
स्यात् अ० [सं.] कदाच; 'शायद'
स्यानप(०न) पुं० शाणपण; डहापण
स्याना वि० शाणुं; डाह्युं (२) उंमरे पहोंचेलुं; 'वयस्क'
स्यापा पुं० जुओ 'सियापा'
स्याम वि०श्याम(२) पुं० सियाम देश
स्याह वि० [फा.] जुओ 'सियाह'
स्याही स्त्री०[फा.] शाही (२) श्यामता
स्राप पुं० (प.) शराप; शाप
स्रावक,स्रावी वि०[सं.]स्रव करावनारुं
स्वतोविरोधी पुं० पोते ज पोतानी वस्तुनो विरोध करनार; वदतो–व्याघातवाळुं
स्वरोद पुं० एक तंतुवाद्य
स्वाँगी पुं० बहुरूपी; स्वांग काढी पेट भरनारो
स्वादी वि०[सं.]स्वाद माणनारुं; रसिक
स्वायत्त शासन पुं० स्थानिक स्वराज
स्वेच्छासेवक पुं० स्वयंसेवक

ह

हँकवा पुं०वाघने हांकाहांक करी शिकारी पासे लाववो ते
हँकाई स्त्री० हांकवुं ते के तेनी मजूरी
हँकार स्त्री० होकारो; ताणीने बोलाववुं ते; बूम
हँकारना स०क्रि० जोरथी बोलाववुं; पोकारवुं (२) आह्वान करवुं
हंकारना अ०क्रि०होकारो करवो;गर्जवुं
हंकारा पुं०होकारो(२)नोतरुं; आमंत्रण
हंगामा पुं०[फा.]हंगामो;हल्लो; तोफान
हंजार पुं० [फा.] मार्ग (२) ढंग; रीत
हंडा पुं० हांडो; देगडो
हँडिया,हंडी स्त्री० हांडी; हांल्ली
हँफनि स्त्री०हांफ.–**मिटाना**=थाक खावो
हंस पुं० [सं.] हंस (२) सूर्य
हँसता-मुखी पुं० हसमुखो आदमी
हँसना अ०क्रि० (२) स०क्रि० हसवुं
हँसमुख वि०हसमुखुं(२)विनोदी;टीखळी

हँसली स्त्री० गळानी हांसडी–ते नामनुं हाडकुं के घरेणुं

हँसाई(–य) स्त्री० हसवुं ते (२) हांसी

हँसिया स्त्री०दातरडुं [हसवुं आववुं

हँसी स्त्री० हास्य (२)हांसी. –छूटना=

हँसुआ(-वा) पुं० जुओ 'हँसिया'

हँसोड़(–र) वि० हांसीखोर; मजाकी

हक़ वि० [अ.] हक; योग्य; वाजबी (२) साचुं (३) पुं०अधिकार (४) फरज (५) न्यायी के वाजबी वात के पक्ष (६) खुदा

हक़तलफ़ी स्त्री० [अ.] अन्याय

हक़ताला पुं० [अ.] परमेश्वर; खुदा

हक़नाहक़ अ० हकनाक; वगरफांसु

हकबकाना अ० क्रि० गभरावुं

हकला(०हा) वि० तोतडुं बोलतुं

हकलाना अ० क्रि० तोतडावुं

हकलाहा वि० जुओ 'हकला'

हक़श(-स)फ़ा पुं० [अ.] कोई जमीन जायदाद वेचाण पर होय तो तेने खरीदवानो पहेलो हक कोईने होवो ते

हक़-शिनास वि० [फा.]कदरदान (२) न्यायी (३) आस्तिक (नाम,–सी)

हक़ारत स्त्री०[अ.] घृणा (२) बेआवरू

हक़ीक़त स्त्री०[अ.]हकीकत; असल के साची वात; तथ्य

हक़ीक़तमें अ० वस्तुताए; खरुं जोतां

हक़ीक़ी वि० [अ.] असली; मूळ (२) सगुं; पोतानुं

हक़ीयत स्त्री० [अ.] जुओ 'हक़्क़ियत'

हक़ीर वि० [अ.] दूबळुं (२) तुच्छ

हक़ूक़ पुं०ब०व०[अ.]हको; अधिकारो

हक्क़ा अ० [अ.] ईश्वरना सोगन

हक्का-बक्का वि० गभरायेलुं

हक़्क़ियत स्त्री० [अ.] हकदारी; हक–अधिकार होवो ते

हक़्क़े-तस्नीफ़ पुं० [अ.+फा.]'कोपी-राईट'; लेखकनो अधिकार

हगना अ०क्रि० अघवुं

हगास स्त्री० अघवानी हाजत

हचका, हचकोला पुं० आचको; धक्को; उछाळो (गाडी खाटलो वगेरेमां बेसतां लागे छे ते)

हज पुं० [अ.] मक्कानी हज

हज़ पुं०[अ.]सद्भाग्य (२) खुशी (३) मजा; लहेजत

हज़म पुं० (२) वि० जुओ 'हज़्म'

हज़रत पुं० [अ.] महात्मा के महापुरुष माटे संबोधन (२) (व्यंग्यमां) दुष्ट के पाजी माणस

हज़रत सलामत पुं० [अ.] बादशाहनुं 'हजूर' जेवुं संबोधन

हजरे-असवद पुं०[अ.] काबानो पथ्थर

हज़ा स० [अ. हाज़ा] आ; 'यह'
हजाब पुं० जुओ 'हिसाव'
हजामत बनाना=हजामत करवी (२) [ला.]लूंटवुं(३)मारवुं झूडवुं
हज़ार वि०[फा.]१०००; हजार (२) हजारो;अनेक(३).अ०गमे तेटलुं
हज़ार-पा पुं० [फा.] कानखजूरो
हज़ारहा वि० [फा.] हजारो; बहु ज
हज़ारा पुं०[फा.]हजारीगोटो(२)फुवारो
हज़ारी पुं० [फा.] हजार सिपाईनो नायक – सरदार
हज़ीमत स्त्री० [अ.] हार; पराजय
हजूम पुं० जुओ 'हुजूम'
हज़ूर पुं० हजूर (जुओ 'हुज़ूर')
हजूरी पुं० हजूरियो; अनुचर
हजो स्त्री० [अ.] निंदा
हज्ज पुं० हज; मक्कानी यात्रा
हज्जाम पुं० [अ.] हजाम (नाम,–मी)
हज़्म वि०[अ.] हजम; पचेलुं(२) पुं० पाचन; हजमियत
हट(–ठ) स्त्री० हठ;जिद्द [करवी
हटकना स०क्रि०अटकाववुं;रोकवुं;मना
हट(–ड़)ताल स्त्री० हडताल; पाकी
हटना अ०क्रि० हठवुं
हटवा पुं० हाटवाळो; दुकानदार
हटवाई स्त्री०दुकानदारी;'हटवा'नो धंधो
हट्टा-कट्टा वि० हृष्टपुष्ट; स्थूल
हट्टी स्त्री० दुकान [प्रतिज्ञा लेवी
हठना अ०क्रि० (प.) हठ करवी(२)दृढ
हठी(०ला) वि० हठीलुं; जिद्दी(२)दृढ-प्रतिज्ञ; टेकीलुं
हड़ स्त्री० हरड
हड़कंप पुं० खळभळाट
हड़क स्त्री० हडकवा (वि०, हड़काया)
हड़कना अ०क्रि०हडकवा लागवो;कशा माटे खूब तलसवुं [एक पक्षी
हड़गिल्ल,हड़गीला पुं० (वगला जेवुं)
हड़प वि० गब दईने खाधेलुं के गेब करेलुं. –करना=हजम करी जवुं; उडावी जवुं [करना'
हड़पना स०क्रि० हप करी जवुं; 'हड़प
हड़फूटन स्त्री० हाडकांमां थतुं कळतर
हड़बड़ स्त्री० उतावळनो रघवाट
हड़बड़ाना अ०क्रि०हडबडवुं; उतावळ करवी;रघवावुं(२)स०क्रि० उतावळ करवा कहेवुं
हड़बड़िया वि० उतावळियुं; रघवाटियुं
हड़बड़ी स्त्री० जुओ 'हड़बड़'
हड्डा पुं० भमरी; 'बेंर'
हड्डी स्त्री०हाडकुं(२) (ला.) कुळ;खान-दान. –उखड़ना=हाडकुं ऊतरी जवुं
हतक, हतक इज़्ज़ती स्त्री० बेआबरू; मानभंग; बदनक्षी
हत्ता अ०[अ.]त्यां सुधी, एटली हदे के

हत्था पुं० हाथो;दस्तो(२)केळांनुं घोड
हत्थे अ० हाथमां. **–चढ़ना**=हाथमां आववुं; हाथे चडवुं [घातकी
हत्यारी स्त्री०हत्यानुं पाप(२)वि०स्त्री०
हथ पुं० समासमां वपरातुं 'हाथ'नु रूप
हथकंडा पुं० हाथचालाकी
हथउधार पुं० जुओ 'हथफेर' अर्थ ३
हथछूट वि० हाथनुं छूटुं–झट मारी बेसे एवुं
हथनी स्त्री० हाथणी
हथफेर पुं० वहालमां हाथ फेरववो–पंपाळवुं ते(२)हाथ मारी जवानी चालाकी (३) थोडा दिवस माटे ऊचक लेवाती के देवाती रकम
हथलेवा पुं० लग्ननो हस्तमेळाप
हथवाँस पुं० नाव चलाववानो वधो सरसामान
हथवाँसना स०क्रि० कोई चीजनो प्रथम वापर शरू करवो
हथिया पुं० हाथियो; हस्त नक्षत्र
हथियाना स०क्रि० हाथमां–कबजामां लेवुं(२)हाथ मारी जवुं;उडावी लेवुं
हथेरी(–ली) स्त्री० हथेळी
हथौटी स्त्री० हथोटी; हस्तकौशल्य(२) कशामां हाथ नाखवो ते
हथौड़ा पुं० हथोडो (**हथौड़ी** स्त्री०)
हद समाअत स्त्री० [अ.] कचेरीमां दावो दाखल करी देवानी नक्की अवधि [अधिकारनी हद
हद सियासत स्त्री० [अ.]न्यायाधीशना
हदफ़ पुं० [अ.] निशान; लक्ष्य
हदूद स्त्री० [अ.] 'हद्द'नु ब०व०
हद्द स्त्री० [अ.] हद; सीमा
हनोज़ अ० [फा.] अत्यार सुधी
हफ़–नज़र [फा.]= श०प्र० ईश्वर करे ने नजर न लागे
हफ़्त वि०[फा.] सप्त; सात [संसार
हफ़्त–अक़लीम स्त्री०साते देश; आखो
हफ़्ता पुं० [फा.] हपतो; सप्ताह
हफ़्ताद वि० [फा.] १७; सत्तर
हबकना अ० क्रि० करडवा के बचकुं भरवा मों फाडवुं (२) स०क्रि० करडवुं
हबन्नक़ वि०[अ.] मूर्ख; बेवकूफ
हबर द(–ह)बर अ० झटझट; जलदी
हबीब पुं०[अ.] मित्र (२) प्रियजन
हबूब पुं० [अ.] परपोटो
हब्बा पुं०[अ.] अनाजनो दाणो; कण (२) दाणा जेटलुं; जराक; चपटी
हब्बा डब्बा पुं०उटांटियुं–एक बाळरोग
हब्शी पुं० [अ.] 'हब्श' देशनो रहेवाशी; हबसी
हब्स पुं० [अ.] केद; बंधन (२) पवन न होवाथी थतो घाम

हम स० अमे (२) आपणे (३) पुं० हमडी; अहंता (४) अ० [फा.] साथे(५)समान (समासमां. उदा० हमदर्दी; हमदीन)
हम-असर वि० समकालीन
हम-आहँग वि० [फा.] एक साथे बधानी जोडे बोलनारुं (नाम,–गी)
हम-उम्र वि० [फा.] समान उंमरनुं
हम-क़दम वि०[फा.]साथे चालनार;साथी
हम-कलामी स्त्री० [फा.] वातचीत
हम-जिन्स वि० सजातीय
हमजोली पुं० समोवडियो; साथी
हमदम पुं०[फा.] दिलोजान, घनिष्ठ मित्र
हमदर्द पुं०[फा.] सहानुभूति राखनार
हम-नफ़स, हम-नशीं वि०[फा.]साथी
हम-निवाला वि० साथे खानारपीनार
हम-पल्ला वि० बरोबरियुं; जोडीदार
हम-पाया वि०बरोबरियुं;सरखा पदवाळुं
हम-प्याला वि० एक प्याले पीनार; साथे खानारपीनार
हम-मकतब वि० सहाध्यायी
हमराह अ० [फा.] साथे; संगाथे
हमल पुं० [अ.] हमेल; गर्भ
हमला पुं०[अ.]हुमलो(२)आघात;प्रहार
हमला-आवर वि० [फा.] हुमलो करनारुं; आक्रमणकारक
हमवतन पुं० देशबंधु; देशभाई
हमवार वि० [फा.] सपाट; समतल
हमशीर(–रा) स्त्री० बहेन
हम-सबक़ पुं० [फा.] सहाध्यायी
हमसर वि० [फा.] समान; जोडीदार; बरोबरियुं (नाम,–री)
हम-साज़ पुं० [फा.] मित्र
हमसायगी स्त्री०[फा.] पडोशी होवुं ते
हमसाया पुं०[फा.] पाडोशी
हमसिन वि० समोवडियुं
हमहमी स्त्री० जुओ 'हमाहमी'
हमा वि० [फा.] कुल; बधुं; पूरुं
हमा-तन अ० पगथी माथा सुधी (२) आखुं; बधुं [पराई
हमाम-दस्ता पुं०हमामदस्तो;खांडणी-
हमारा स० अमारुं (२) आपणुं
हमा-शुमा वि० मारा तमारा जेवा सामान्य (लोक)
हमाहमी स्त्री० पोतपोताना स्वार्थनी खेंचताण; अहमहमिका
हमें स० 'हमको'; अमने
हमेल स्त्री० जुओ 'हुमेल'
हमेशा अ०[फा.]हमेशां(नाम,हमेशगी)
हम्द स्त्री० [अ.] ईश्वरस्तुति
हम्माम पुं० [अ.] 'हमाम'; नावणियुं
हम्माल पुं०[अ.]'हमाल';कूली [करवो
हयना स०क्रि०(प.) वध करवो; नाश
हया स्त्री० [अ.] लाज; शरम

हयात स्त्री० [अ.] हयाती(२) जिंदगी
हयादार,हयामंद वि०शरमवाळुं;लज्जाळु
हरकत स्त्री० [अ.] गति (२) चेष्टा; क्रिया (३) दुष्ट व्यवहार
हरकारा पुं० [फा.] हलकारो; कासद (२) टपाली
हरगिज़ अ०[फा.] कदी;कदापि;हरगिज
हरचंद अ०[फा.] जोके; यद्यपि (२) अनेक वार
हरज(-जा) पुं० जुओ 'हर्ज'
हरजाई वि०[फा.]ज्यांत्यां भटकतुं(२) स्त्री० कुलटा; भटकण स्त्री
हरजाना पुं०[फा.] नुकसाननी भरपाई
हरता धरता पुं०कर्ताहर्ता;पूर्ण अधिकारी
हरनी स्त्री० हरणी; मृगली
हरफ़ पुं० 'हर्फ़'. (किसी पर) हरफ आना=(कोई पर) एक अक्षर पण आववो;कसूर नीकळवी.–उठाना= अक्षर वांचतां आवडवुं. –बैठाना =बीबां गोठववां. –बनाना=सरस अक्षर काढवा (२) दस्तावेजमां कपटथी फेरफार करवो
हरफ़त स्त्री० जुओ 'हिरफ़त'
हरबा पुं०[अ.] हथियार; शस्त्रास्त्र (२) चडाई; हुमलो
हरबोंग वि०गमार(२)मूर्ख; जडसु(३) पुं० अंधेर; अराजक

हरम पुं०[अ.]झनानो;अंत:पुर(२)स्त्री० रखात (३) लूंडी; दासी
हरमज़दगी स्त्री० दुष्टता; बदमाशी
हरमसरा स्त्री० [अ.] अंत:पुर
हरवाह(-हा) पुं० खेडूत; 'हलवाही'
हरसिंगार पुं० पारिजातकनुं झाड
हरहट, हरहा वि० हरायुं
हरहाई वि०स्त्री० हराई (गाय)
हरा वि० लीलुं(२)ताजुं(३)काचुं(फळ, दाणो इ०) (४) पुं० लीलो रंग. –बाग़=खोटी आशा आपती– खाली वात
हराभरा वि०लीलुं; ताजुं (२) हरियाळुं
हराम वि०[अ.] हराम;निषिद्ध(२) पुं० निषिद्ध वस्तु (३) अधर्म; पाप(४) व्यभिचार.–करना=करवुं करवानुं कठण करी मूकवुं.–होना=मुश्केल थवुं [बदमास
हराम-ज़ादा पुं० वर्णसंकर (२) हरामी;
हरामी वि० व्यभिचारथी उत्पन्न (२) हरामी; बदमास
हरारत स्त्री० [अ.] गरमी(२)धीकडी; जीर्ण ज्वर [आगलो भाग
हरावल पुं० [तु.] 'हरौल'; सेनानो
हरास पुं० [फा. हिरास] डर; आशंका (२)खेद; दुःख(३)निराशा
हरासत स्त्री० जुओ 'हिरासत'

हरासाँ वि० जुओ 'हिरासाँ'
हरिआ(-या)ली स्त्री० हरियाळी (२) झाड,छोड इ०लीलोतरीनो विस्तृत समूह. **-सूझना** = बधे आनंद आनंद देखावो
हरिन पुं० (स्त्री०, **-नी**) हरण
हरिवासर पुं०[सं.]रविवार(२)एकादशी
हरि(-री)स स्त्री० [सं. हलीषा] हळनुं लांबुं लाकडुं जेणे धूसरी बंधाय छे
हरीरा पुं० [अ.] राबडी जेवुं एक पेय
हरीस स्त्री०जुओ 'हरिस'(२)वि०[अ.] लालचु(३) ईर्षाळु
हरुअ(-आ) वि०(प.) हलकुं
हरुए अ० हळवे; धीमेथी के चुपचाप
हरूफ़ पुं० [अ. 'हरफ़'नुं ब० व०] अक्षरो; हरफो
हरौल पुं० हरोल; 'हरावल' जुओ
हर्ज पुं० [अ.] अडचण; विघ्न (२) हानि; नुकसान
हर्जाना पुं० जुओ 'हरजाना'
हर्फ़ पुं० [अ.] हरफ; अक्षर
हर्फ़गीर वि० दोषदर्शी
हर्फ़-ब-हर्फ़ अ० [अ.] अक्षरशः; अक्षरेअक्षर
हर्र(-र्रे) स्त्री० हरड
हर्रा पुं० मोटी हरड [पहोंचेल
हर्राफ़ वि० [अ.] पाकुं; चालाक;
हल पुं०[सं.]हळ(२)[अ.]उकेल;फेंसलो. **-करना** = फेंसलो करवो;उकेलवुं (२)भळे के मळी जाय एम करवुं. **-होना** = उकेलावुं (२) भळवुं; मळी जवुं
हलकंप पुं० 'हड़कंप'; हिलचाल; आंदोलन (२) खळभळाट
हलक़ पुं०[अ.] हलक; कंठ; गळुं.**-के नीचे उतरना**=पेटमां जवुं (२) गळे ऊतरवुं; समजावुं
हलकई स्त्री० हलकाश; हलकापणुं(२) नीचापणुं; वट के शोभाने हानि
हलकना अ०क्रि० हेलारे चडवुं; लहेरो खावी
हलका वि० हलकुं. **-करना** = हलकुं पाडवुं; अपमानवुं
हलक़ा पुं० [अ.] गोळाकार; वृत्त (२) परिघ (३) मंडळ; समूह (४) गामोनो खास समूह; गोळ
हलकान वि० जुओ 'हैरान'; हलाक; कंटाळेलुं [अ०क्रि०हलकुं थवुं
हलकाना स०क्रि० हेल्ले चडाववुं(२)
हलचल स्त्री०खळभळ;उपद्रव.**-मचना** =धांधळ मचवी; खळभळवुं
हलद-हात स्त्री० पीठी चोळवानो विवाहनो विधि
हलदी स्त्री०हळदर.**-उठना,-चढ़ना**

=पीठी चडवी. –लगना=विवाह थवो. –लगे न फिटकरी = मफत; वगर खरचे

हलफ़ पुं०[अ.]कसम;सोगन.–**उठाना**= सोगन खावा

हलफ़न् अ० [अ.] सोगनथी

हलफा पुं० लहेर; मोजुं; हेलारो

हलराना स०क्रि० (बाळकने) हाथ पर लई झुलाववुं

हलवा पुं०[अ०]शीरो. **हलवे माँडेसे काम**=केवळ पोतानी मतलब

हलवाई पुं०[अ.] (स्त्री० –**ईन**) कंदोई

हलवाह(–हा) पुं०[सं.] हळजोडु;खेडूत

हलहलाना स०क्रि० जोरथी हलाववुं; हचमचाववुं

हलाक वि०[अ.] मरेलुं(२)थाकेलुं(३) नाश पामेलुं [नाश

हलाकत, हलाकी स्त्री०[अ.] मोत(२)

हलाकान वि० जुओ 'हलकान'

हलाकानी स्त्री० हेरानगत; 'परेशानी'

हलाकी(–कू) वि० मारो; घातक; अत्याचारी

हला भला पुं० तोड; निकाल

हलाल वि०[अ.] कुरानथी विहित(२) पुं० खावा माटे विहित पशु. –**करना**=झबे करवुं; हणवुं

हलाल का वि० 'हरामनुं'थी ऊलटुं; वाजबी रीते मेळवेलुं के मळेलुं

हलालख़ोर पुं०प्रामाणिकताथी महेनत-मजूरी करनार (२) भंगी

हलीम वि० [अ.]सहनशील; शांत(२) पुं० महोरममां करातुं एक मांसनुं भोजन

हलूक स्त्री० 'हुलकी'; ऊलक

हलोरना स०क्रि० हेलारे चडाववुं(२) ऊपणवुं (३) संघरवुं; एकठुं करवुं

हलोरा पुं० हेलारो; मोजुं; 'हिलोरा'

हल्क़ पुं० [अ.] गरदन

हल्दी स्त्री० जुओ 'हलदी'

हल्ला पुं०शोर;कोलाहल (२)लडाईनी हाक (३) हल्लो; हुमलो

हवन्नक़ वि० जुओ 'हवन्नक़'

हवलदार पुं० हवालदार [तृष्णा

हवस स्त्री०[अ.]हवस,लालच(२)इच्छा;

हवा स्त्री० [अ.] हवा; वायु (२)भूतप्रेत (३) आंट; साख. –**उखड़ना**= साख जवी. –**उड़ना** = खबर फेलावी. –**करना**=पंखो नांखवो. –**बताना** = उडावी देवुं; टाळवुं; डिंगो बताववो.–**बिगड़ना**=चेपी रोग फेलावो (२)चाल बगडवो के खराब विचार फेलावा. (**किसीकी हवा**) **लगना** = संगनो प्रभाव पडवो. –**बँधना** = नामना थवी

(२) साख होवी. **–हो जाना**= झट जता रहेवुं; ऊडी जवुं

हवाइयाँ (मुँह पर) **उड़ना** = चहेरो फीको पडी जवो

हवापरस्त वि०[अ.+फा.] इंद्रियारामी

हवाला पुं०[अ.] साबिती;प्रमाण (२) उदाहरण; दाखलो (३) हवालो; सुपरत

हवालात स्त्री०[अ.] हवाले करवुं ते (२) काची केद; हाजतमां राखवुं ते के तेनी जेल

हवास पुं०[अ.] इंद्रियो (२) होश; भान. **–गुम होना**=होशकोश ऊडी जवा [बक्का' जुओ

हवास-बाख़्ता वि० [अ.+फा.] 'हक्का-

हवेली स्त्री० हवेली (२) स्त्री; पत्नी

हव्वा स्त्री० [अ.] बावा आदमनी स्त्री; 'Eve' (२) पुं० हाउ

हशमत स्त्री० [अ.] गौरव; मोटाई (२) वैभव

हशर पुं० जुओ 'हश्र'

हश्त वि० अष्ट; आठ

हश्तुम वि० आठमुं

हश्र पुं० [अ.] कयामतनो दिन; हशर (२)शोक; आक्रंद (३) शोरबकोर

हश्शाश वि० [अ.] खूब प्रसन्न; राजी

हसद पुं० [अ.] हसद; ईर्षा; झेर

हसब अ० [अ.] 'हस्ब'; अनुसार; प्रमाणे(२) पुं० 'नसब'थी ऊलटुं; (मातृपक्षनुं) कुळ; वंश

हसब–नसब पुं [अ.] मावापनुं कुळ–खानदान

हसरत स्त्री 'हस्रत' जुओ

हसीन वि० [अ.] सुंदर; खूबसूरत

हसूल पुं० जुओ 'हुसूल'

हस्त(–स्ती) स्त्री० [फा.] हस्ती; हयाती (२) जिंदगी

हस्ब अ० [अ.] जुओ 'हसब'

हस्रत स्त्री० हसरत; शोक; अप्राप्तिनुं दुःख (२) कामना; लालच

हाँ अ० हा. **–करना** =हा कहेवी (२) संमत थवुं. **–में हाँ मिलाना**= हाजियो भणवो

हाँक स्त्री० हांक; बोलाववा माटे बूम. **–देना, लगाना, मारना**=हांक मारवी. **–पुकारकर कहना**=बधा सामे भय के संकोच वगर कहेवुं

हाँगा पुं० हांजा; शरीरनी ताकात (२) जबरदस्ती.**–छूटना**=हांजा वछूटवा; कमजोर के नाहिंमत थई जवुं

हाँगी स्त्री०'हामी';हा;संमति.**–भरना**= हा पाडवी

हाँप(–फ)ना अ०क्रि हांफवुं

हाँफा पुं० हांफ

हाँसी स्त्री० 'हँसी'; हास्य (२) हांसी
हाई स्त्री० दशा; हाल (२) ढंग; रीत
हाकिम पुं [अ.] हाकेम
हाकिमी वि० (२) स्त्री० हाकेमी
हाजत स्त्री० [अ.] हाजत; जरूर (२) चाह (३)पहेरो; केद; 'हवालात'. **—में देना या रखना**=पहेरामां राखवुं [नक्रिया
हाज़मा पुं०[अ.]पाचनशक्ति के पाच-
हाज़ा स० [अ.] आ; 'यह'
हाज़िम वि०[अ.] पाचक; पचावे एवुं
हाज़िर वि०[अ.] हाजर; उपस्थित(२) हयात;विद्यमान [हाजरजवाबी
हाज़िर-जवाब वि०[अ.] (नाम,–बी)
हाज़िरी स्त्री०[अ.]हाजरी (२)बपोरनी हाजरी–नास्तो
हाट स्त्री०हाट;बजार के दुकान.**–करना** =दुकान काढवी(२)बजार करवा जवुं
हाता पुं०[अ. इहातः]वाड़ो;आंगणुं(२) प्रांत; 'सूबा' (३) सीमा (४) वि० (स्त्री० –ती)(प.)अलग; दूर करेलुं
हातिम पुं० [अ.] चतुर आदमी (२) उस्ताद; तज्ज्ञ (३) हातिमताई के तेना जेवो दानी
हाथपाँव फूलना=डर के शोकथी गभरावुं
हाथपान पुं० हाथपहोंचियुं–एक घरेणुं
हाथा पुं० हाथो (२) हाथनो थापो
हाथापाई, हाथाबाँही स्त्री० हाथपगथी मारामारी; धोलधापट
हाथीपाँव पुं० हाथीपगानो रोग
हाथोंहाथ अ०हाथोहाथ(२)जोतजोतामां
हाद(-दि)सा पुं० दुर्घटना; आपत्ति; अकस्मात
हादिस वि० [अ.] नवुं (२) नश्वर
हादिसा पुं० [अ.] जुओ 'हादसा'
हादी पुं० [अ.] नेता; मार्गदर्शक
हाफ़िज़ पुं० [अ.] कुरान कंठस्थ होय एवो मुसलमान
हाफ़िज़ा पुं० [अ.] स्मरणशक्ति
हामिल वि० [अ.] हमाल; बोजो ऊंचकनार के वही जनार
हामिला वि०स्त्री० भारेवाई; गर्भवती
हामी स्त्री० हा; स्वीकार (२) वि०[अ.] हिमायती; सहायक. **–भरना** = हा पाडवी; स्वीकारवुं
हारसिंगार पुं० जुओ 'हरसिंगार'
हारे दर्जे अ० विवश–लाचार थईने
हाल पुं० [अ.] हाल; दशा(२)खबर; समाचार (३) विवरण; वर्णन (४) कथा; चरित्र(५) हॉल [इं.] (६) अ० हाल; हमणां(७)स्त्री० हालवुं ते; हलन(८) पैडानी लोढानी वाट
हाल का वि० नवुं; ताजुं; हालनुं
हालडोल पुं० हालवुं ते (२) हिलचाल

हाल में अ० थोडा वखतथी
हालरा पुं० हींचोळो के हींचको
हालाँ कि अ० [फा.] जोके; यद्यपि
हाला पुं०[अ.]कुंडळ; वर्तुल(२)चंद्रनी चारेकोर देखातो गोळ
हालात पुं० [अ.] 'हाल'नुं ब०व०
हालाहल पुं० हळाहळ; झेर
हाली अ० जलदी; तरत
हावन स्त्री० [फा.] लोढानी खांडणी
हावन-दस्ता पुं० [फा.] खांडणी पराई; 'हमामदस्ता'
हावला बावला वि० हावरुं बावरुं; घेलुं
हावी वि०[अ.] कुशळ; दक्ष (२) बधी तरफथी वशमां राखनारुं
हाशिया पुं०[अ.]कोर; धार (२) गोट; मगजी(३)हांसियामां करेली नोंध. –चढ़ाना=मरचुंमीठुं भभराववुं; रसिक करवा वातने वधारवी
हासिद वि० [अ.] 'हसद'— इर्षा करनारुं; झेरीलुं
हासिल वि०(२)पुं० [अ.] हांसल (२) वद्दी (गणितमां) [तात्पर्य के
हासिल-कलाम अ० [अ.] सारांश के;
हासिल-ज़र्ब पुं०[अ]गुणाकार;गुणनफल
हासिल-जमा पुं० [अ.] सरवाळो
हाहाठीठी स्त्री० हाहाहीही
हाही स्त्री०कांई मेळववा हायहाय करवुं ते
हाहू पुं० हाहो; शोर
हिंकरना अ०क्रि० हणहणवुं
हिंकार पुं० वाछडाने बोलाववा गाय बांगरडे ते के वाघनो अवाज
हिंडोला पुं० हिंडोळो (२)पाळणुं (३) चगडोळ
हिंदवाना पुं० तडबूच
हिंदवी स्त्री० [फा.] हिंदी भाषा
हिंदसा पुं०[अ.]गणित(२) रेखागणित
हिंदू पुं० हिंदु
हिंदोस्तान पुं० हिंदुस्तान
हिंमती वि० [फा.] हिंमतवान
हिंवार पुं० हिम; बरफ
हिअ(–आ) पुं० 'हिय'; हृदय
हिकमत स्त्री० [अ.] विद्या; कळा (२) हिक्मत; युक्ति (३)हकीमी; वैदक
हिकमत-अमली स्त्री०[अ.] चालाकी; होशियारी (२) कूटनीति
हिकायत स्त्री०[अ.] कहाणी; वात
हिक़ारत स्त्री० जुओ 'हक़ारत'
हिचक स्त्री० आनाकानी; घडभांज; खमचावुं ते
हिचकना, हिचकिचाना अ०क्रि० अचकावुं; आनाकानी करवी (२) हेडकी आववी
हिचकिचाहट स्त्री० जुओ 'हिचक'
हिचकी स्त्री० हेडकी

हिजराँ पुं० वियोग; 'हिज्र'
हिजाब पुं० [अ.] पडदो (२) शरम
हिज्जा(–ज्जे) पुं० [अ.] जोडणी
हिज्र पुं० [अ.] वियोग
हिताई स्त्री० नातो; संबंध
हिती(–तु,–तू) पुं० हितेच्छु (२) स्नेही; मित्र (३) संबंधी
हिदायत स्त्री०[अ.]शिखामण(२)आदेश
हिनहिनाना अ०क्रि०हणहणवुं
हिनाई वि० हिनाना–मेंदीना रंगनुं; लाल (२) मेंदीवाळुं [देखरेख
हिफ़ाज़त स्त्री०[अ.]जाळवणी;संभाळ;
हिफ़्ज़ अ० [अ.] कंठस्थ;मोढे(२)पुं० हिफाजत; संभाळ (२) अदब
हिफ़्ज़े-सेहत पुं०[अ.]स्वास्थ्यनी रक्षा
हिब्बा पुं० [अ.] इनाम (२) दान
हिमयानी स्त्री० [फा.] रूपिया कमरे बांधी राखवानी वांसळी
हिमाक़त स्त्री० [अ.] मूर्खता; बेवकूफी
हिमामदस्ता पुं० हमामदस्तो; खांडणीपराई; 'हावनदस्ता'
हिय(–या,०रा) पुं० हृदय; हैयुं (२) छाती. **–हारना** =हिंमत हारवुं. **हियेका अंधा**=हैयाफूटुं;मूर्ख;अज्ञान
हियाव पुं० हिंमत; छाती
हिरन पुं०हरण.**–हो जाना**=नासी जवुं
हिरफ़त स्त्री०[अ.]हाथ-कारीगरी (२) हुन्नरकळा (२) धंधोरोजगार (४) चालाकी (५) चालबाजी
हिरमजी स्त्री० [अ.] लाल माटी; रंगी
हिराना अ०क्रि०गेब थवुं; खोवावुं (२) मटवुं;टळवुं(३)स०क्रि०भूली जवुं
हिरास स्त्री० [फा.] जुओ 'हरास'
हिरासत स्त्री० [अ.] चोकी; पहेरो (२) नजरकेद
हिरासाँ वि०[फा.]भयभीत(२) निराश
हिर्स स्त्री० [अ.] लालच; लोभ (२) इच्छानो आवेग (३) स्पर्धा. **–छूटना**=ललचावुं
हिलकोर(–रा) पुं० हेलकारो; हेलारो
हिलग स्त्री० संबंध (२) ओळख (३) प्रेम; मेळ
हिलगना अ०क्रि० टंगावुं; लागी रहेवुं (२)फसावुं; वाझवुं (३) हळी जवुं; ओळखावुं (प्रेरक **हिलगाना**)
हिलना अ०क्रि० हालवुं (२) हळवुं; गोठवुं. **–मिलना**=हळवुंमळवुं
हिलाल पुं०[अ.] बीजनो चंद्र
हिलोर(–रा) पुं० हिलोळो; हेलारो. **–लेना**=हेलारा खावा [चडाववुं
हिलोरना स०क्रि० हिलोळवुं; हिलोळे
हिल्म पुं०[अ.]सहनशीलता(२)नम्रता
हिवंचल, हिवर पुं० 'हिंवार'; बरफ
हिस स्त्री० होश; भान

हिसका पुं०ईर्षा (२) देखादेखी इच्छा थवी ते; स्पर्धा
हिसका-हिसकी स्त्री० स्पर्धा
हिसाब-किताब पुं०[अ.]हिसाबकिताब; आवक खरचनो हिसाब (२) ढंग; चाल; वर्तन [किल्लो; गढ
हिसार पुं० [अ.] शहेरनो कोट (२)
हिस्सा-रसद अ० [अ.+फा.] हिस्सा प्रमाणे
हिहिनाना अ०क्रि०जुओ 'हिनहिनाना'
हींस स्त्री० हिसारव; हींसारव
हींसना अ०क्रि० हींसारवुं; हणहणवुं
ही अ० ज (२)(प.) अ०क्रि०'होना'नुं भूतकाळ स्त्री० रूप (व्रज भाषा)
हीक स्त्री० हेडकी (२) सूक्ष्म दुर्गंध
हीठना अ०क्रि० (प.) पासे जवुं (२) पहोंचवुं
हीन पुं० [अ.] समय; वखत
हीन-हयात अ०[अ.] आजन्म;उंमर-भर (२) स्त्री० जीवनकाळ
हीरा-कसीस पुं० हीराकसी
हीलतन् अ०[अ.]युक्तिथी;बहानाथी; छेतरीने
हीला पुं० [अ.] बहानुं; मिष (२) निमित्त;कारण. -**हवाला**=बहानुं
हीला-गर,-बाज़ वि०चालाक; फरेबी
हुँकारना अ०क्रि० होकाटवुं; ठपको देवो;वढवुं(२)हुंकारो करवो;गर्जवुं
हुँकारी स्त्री० हांकारो; हा कहेवुं ते
हुँडार पुं० वरु
हुंडा भाड़ा पुं०महेसूल इ० बधुं आपीने माल पहोंचाडवानो ठेको
हुंडा(-डिया)वन स्त्री० हूंडियामण
हुकुम पुं० हुकम
हुकूमत स्त्री० [अ.] हकूमत
हुक़ूक़ पुं०ब०व० हक;जुओ 'हक़ूक़'
हुक्काम पुं० [अ. 'हाकिम'नुं ब०व०] हाकेम-अमलदार-वर्ग
हुक्म पुं०[अ.]हुकम [अवगणना
हुक्म-उदूली स्त्री० [अ.] हुकमनी
हुक्म-नामा पुं०[अ.+फा.]हुकमनामुं; फरमान
हुक्म-बरदार वि०[अ.+फा.]आज्ञाकारी
हुक्म-राँ वि०[अ.+फा.]हुकम देनार; शासक
हुक्मी वि०[अ.] अचूक; अटल (२) आज्ञाकारी (३) अ० सदा
हुचकी स्त्री० हेडकी; 'हिचकी'
हुजरा पुं०[अ.] हुजरो; ओरडी (२) मसीदनी एकांत ध्यान माटेनी ओरडी
हुजूम पुं० [अ.]'हजूम';भीड;'मजमा'
हुज़ूर पुं० [अ.] हजूर-संबोधन (२) हजूर; हाजरी; समक्षता (३)

दरबार; कचेरी

हुज़ूर-वाला पुं० [अ.] जनाब;श्रीमान

हुज़ूरी पुं० हज़ूरियो;नोकर(२)दरबारी (३) वि० सरकारी; हज़ूरनुं

हुज्जत स्त्री० [अ.] खाली तर्कबाजी; दलीलबाजी (२) झघडो; तकरार (वि०,-ती)

हुड़कना अ०क्रि० हेडकी आववी

हुड़दंग पुं० धमाचकडी; धांधल

हुति(-ते) अ०(प.)द्वारा;थी(२)तरफथी (पांचमी ने त्रीजी विभक्तिना अर्थमां)

हुदहुद पुं० [अ.] एक पक्षी

हुदूद स्त्री०[अ.]'हदूद';'हद'नुं ब०व०

हुदूद-अरबा स्त्री०[अ.]चतुःसीमा;चारे बाजूनी हद

हुन पुं०[सं. हून]सोनामहोर (२) सोनुं

हुनर पुं० [फा.] हुन्नर; कारीगरी (२) कौशल; चातुरी (३) गुण

हुनर-मंद वि०[फा.] हुन्नरी; कसबी; कुशळ

हुनूद पुं०ब०व० [अ.]'हिंदू'नुं ब०व०

हुब स्त्री० [अ.] प्रेम (२) दोस्ती (३) इच्छा; मरजी

हुबाब पुं० [अ.] 'हबूब'; परपोटो

हुब्ब पुं०[फा.]प्रेम;'हुब'.-ऊल-वतन =हुब्बेवतन; देशप्रेम

हुमक(-ग)ना अ०क्रि० ऊछळवुं (२) छलंग मारवा पग पर जोर देवुं

हुमा स्त्री० [फा.] हुमा नामनुं एक काल्पनिक पक्षी

हुमेल स्त्री० [अ. हुमायल] 'हमेल'; सिक्का वगेरेनी एक जातनी गळानी माळा

हुरदंग(-गा) पुं० जुओ 'हुड़दंग'

हुरमत स्त्री० [अ.] मान; आबरू

हुलकना अ०क्रि०ऊलक थवी; ओकवुं

हुलकी स्त्री० ऊलक (२) कॉलेरा

हुलसना अ०क्रि० हूलवुं; उल्लासवुं (२) ऊलसवुं; ऊभरावुं; ऊमटवुं

हुलसी स्त्री० 'हुलास'; उल्लास; उमंग

हुलास पुं० उल्लास (२) ऊलट (३) स्त्री० छींकणी

हुलिया पुं० [अ.] रूप, आकार के तेनुं वर्णन. **-कराना, -लिखाना**= पोलीसमां माणसनी ओळख माटे तेनुं वर्णन आपवुं

हुवैदा वि०[फा.]स्पष्ट; जाहेर; 'रोशन'

हुश अ०चुप करवा माटेनो एक उद्‌गार

हुस्न पुं०[अ.]उत्तमता;खूबी(२)हुसन; कांति; खूबसूरती [हुक्को

हुस्ने-महफ़िल पुं० [अ.] एक जातनो

हूँ अ० हा (२) अ०क्रि० छुं; 'है'नुं पहेला पुरुषनुं रूप

हूँठा पुं०[हिं.हूंठ=साडात्रण]ऊठांना आंक

हूँस स्त्री० ईर्षा (२) बूरी नजर लागवी ते (३) गोद; टोक्या करवुं ते

हूँसना स०क्रि० नजर लागे एम करवुं; टोकवुं(२)टोकवुं; 'कोसना'

हूक स्त्री० हृदयनी पीडा; शूळ

हुकना अ०क्रि० दुखवुं (२) शूळ जेवी पीडाथी चोंकवुं

हूटा पुं० डिंगो; टिक्को.–देना=डिंगो करवो; टिक्को बतावबो

हूदा वि० [फा.] वाजबी; ठीक

हूर स्त्री० [अ.] हूरी; अप्सरा (२)वि० खूब सुंदर

हूल स्त्री० अणीदार कशुं भोंकवुं—हुलावी देवुं ते (२) शूळ; पीडा

हूलना स०क्रि० हुलावी देवुं; खोसवुं

हूश वि० असभ्य; जंगली

हेंगा पुं० 'पाटा'; समार (खेतीनो)

हेकड़ वि० हृष्टपुष्ट; स्थूल (२) जबरुं (३) 'उद्दंड; उजड्ड' (नाम–ड़ी)

हेच वि० [फा.] नजीवुं; पामर (२) नकामुं; असार (३) हिचकारुं

हेचकस, हेचकारा वि० [फा.] नकामुं; निरर्थक

हेटा वि० हेठुं; तुच्छ के नीचुं

हेटी स्त्री० हेठुं पडवुं ते; मानहानि

हेरना स०क्रि० ढूंढवुं; खोळवुं(२) हेरवुं; निहाळवुं (३) समजवुं; विचारवुं

हेरना–फेरना स०क्रि० हेरफेर करवी; बदलवुं के अहींनुं तहीं करवुं

हेर–फेर पुं० चक्कर(२)वात लांबी लांबी करवी ते (३) दावपेच (४)हेरफेर; फेरफार; बदलो; आपले के फरक

हेराना स० क्रि० 'हेरना' नुं प्रेरक (२)अ० क्रि० गेब थवुं; न रहेवुं; अभाव होवो के नष्ट थवुं(३)फीकुं के मंद पडवुं(४)लीन–तन्मय थवुं

हेराफेरी स्त्री० हेरफेर; अदलवदल

हेल पुं० छाणां वगेरेनी हेल

हेलना अ०क्रि० हांसीखेल करवा (२) स०क्रि० हेलवुं; अवगणवुं

हेलमेल पुं० मेळ; मित्राचारी (२) संग; साथ (३) परिचय

हेला पुं०हल्लो; चडाई(२)हेल्लो;धक्को(३) एक वार लई जवाय एटली खेप (४) भंगी (५) स्त्री० [सं.] हेला

हैं अ० हैं ! (२) अ०क्रि० 'होना'नुं ब०व० वर्तमानकाळ

हैंडिल पुं० [इं.] 'हेन्डल'; हाथो

है अ०क्रि० 'होना'नुं ए०व०, वर्तमान-काळ

हैकड़ वि० जुओ 'हेकड़'

हैकल स्त्री०[अ.] घोडाना गळानी माळा (२) तावीज (३) जुओ 'हुमेल'

हैज़ पुं० [अ.] स्त्रीनो रजोधर्म

हैज़ा पुं० [अ.] कॉलेरा

हैफ़ अ० [अ.] हाय; अफसोस

हैबत स्त्री० [अ.] हेबत; हवक; धास्ती

हैबत-ज़दा वि०[अ.फा.]हेबताई गयेलुं

हैबत-नाक वि० भयंकर; भीषण

हैरत स्त्री० [अ.] हेरत; अचंबो

हैरत-अंगेज़ वि० [फा.] आश्चर्यकारक

हैरान वि०[अ.] हेरान; 'परेशान' (२) आश्चर्यचकित (नाम, –नी)

हैवान पुं०[अ.]हेवान; पशु (२) गमार

हैवानियत स्त्री० [अ.] हेवानियत

हैवानी वि० हेवान; पशु जेवुं; पाशव

हैसियत स्त्री०[अ.] हेसियत;योग्यता; शक्ति(२)आर्थिक दशा; धनसंपति (३) दरज्जो; कक्षा

हों अ०क्रि०'होना'नुं ब०व०, विध्यर्थ

होंठ पुं० होठ. **–काटना,–चबाना**= होठ करडवा; क्रोध प्रगट करवो

हो अ० हे; अहो (२) अ०क्रि० होत; 'होना'नु त्रीजो पुरुष,विध्यर्थ; के बीजो पुरुष, ब०व०, वर्तमान-काळनुं रूप

होड़ स्त्री० होड; शरत (२) स्पर्धा (३) हठ.**–बदना,–लगाना**=होड बकवी

होड़ाबादी,होड़ाहोड़ी स्त्री० चडसा-सडसी; होड

होतब(–व्य) पुं० थनारुं; भावी

होनहार वि० होनार; भावी (२) श्रेष्ठ नीवडनारुं; सारां लक्षणवाळुं (३) पुं० भावी

होना अ०क्रि० होवुं;थवुं. **हो बैठना**= थई पडवुं;बनी बेसवुं(२) स्त्रीनुं दूर बेसवुं. **होकर रहना**=जरूर थवुं

होनी स्त्री० पेदाश; उत्पत्ति (२) हाल; वृत्तांत(३) भावी के संभवित घटना

होरसा पुं० ओरसियो

होरहा पुं०चणानो छोड के पोपटो

होरा(–ला) पुं० [सं. होलक] चणानो ओळो(२) 'होरहा'; पोपटो

होरिल पुं० तरत जन्मेलुं बाळक

होला स्त्री०(शीखोनी) होळी (२) पुं० जुओ 'होरा'

होश पुं०[फा.] होश; चेतन (२) याद; सूधबूध(३)समज. **–दंग होना**= आश्चर्यथी दंग थवुं. **–की दवा करना** = होश ठेकाणे आणवा. **–दिलाना** = याद देवडाववुं

होशमंद वि० [फा.] समजदार

होश (०व) हवास पुं० होशकोश

हौं अ०क्रि० छुं; 'होना'नुं पहेलो पुरुष ए०व०, वर्तमानकाळनुं रूप (२)स० (व्रज) हुं

हौ अ०क्रि० छे; 'होना'नुं बीजो पुरुष ए०व०, वर्तमान काळनुं रूप

हौआ(–वा) पुं० हाउ; 'हव्वा'
हौज़(–द) पुं० [अ.] होज
हौदा पुं० होद्दो; अंबाडी
हौल पुं०[अ.] डर; दहेशत. –पैठना, बैठना=दहेशत लागवी;डर पेसवो
हौलजौल पुं० उतावळ के तेथी थतो रघवाट के गभराट
हौल-दिल पुं०[फा.] दिल धडकवुं ते के तेनो रोग (२) वि० डरी गयेलुं के डरपोक (३) गभरायेलुं; व्याकुळ
हौल-दिला वि० 'हौलदिल'; डरपोक के गभरायेलुं
हौलनाक वि० [फा.] भयानक
हौली स्त्री० दारूनी दुकान
हौलू वि० 'हौलदिल'; डरपोक; झट डरे एवुं
हौले अ०धीरेथी;आस्ते (२)हलके हाथे
हौवा स्त्री० जुओ 'हव्वा'
हौस स्त्री० [अ.हवस] प्रबळ इच्छा (२) होंस; उमंग; उत्साह
हौसला पुं०[अ.] होंस; उत्साह; उमंग (२) साहस;हिंमत. –निकालना=होंस पूरी थवी.–पस्त होना=होंस शमी जवी; जोर ठंडुं पडवुं
हौसला-मंद वि०[फा.]होंसीलुं;उत्साही के साहसी; उमंगी
ह्रद पुं०[सं.]तळाव के सरोवर(२)ध्वनि
ह्रदिनी स्त्री० [सं.] नदी
ह्रस्व पुं० [सं.] वामन; ठींगणो



पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पुस्तक वितरण की तिथि नीचे अङ्कित है। इस तिथि सहित १५ वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५ नये पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।